अहादीस की अस्री तत्बीक़, दावते फ़िक्र,
लाइहा-ए-अ़मल सन्सनी ख़ेज़ मालूमात तहलका ख़ेज़ इंकिशाफ़ात

दज्जाल

आलमी दज्जाली रियासत, इब्तिदा से इंतिहा तक

मुसन्निफ़
मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

अहादीस की अस्री तत्बीक़, दावते फ़िक्र, लाइहए अमल
सन्सनी ख़ेज़ मालूमात तहलका ख़ेज़ इंकिशाफ़ात

दज्जाल (2)

आलमी दज्जाली सियासत, इब्तिदा से इंतिहा तक

तालीफ़

मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

दज्जाल (2)

आलमी दज्जाली रियासत–इब्तिदा से इंतिहा तक

मुसन्निफ़: मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

बएहतिमाम: मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159, Fax:23279998

DAJJAL-2

Aalami Dajjali Riyasat, Ibtida Se Intiha Tak

Author : Mufti Abu Lubaba Shah Mansoor

Pages: 294 Hindi Edition: 2011

Our Branches:

Delhi: FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.:23256590

Mumbai :FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan.
Dongri, Mumbai-400009, Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at: Farid Enterprises, Delhi

फ़ेहरिस्त

नज़्म

मुक़द्दमा

दिल की दर्ज़ों में

दज्जाल जिल्द अव्वल में "दज्जाल" की शख़्सियत और उसके ज़ुहूर पर गुफ़्तगू की गई थी। "दज्जाल2" में दज्जाली रियासत के क़्यामत पर इब्तिदा से इंतिहा तक एक नज़र डाली गई है। दज्जाल की शख़्सियत जितनी फ़ित्ना अंगेज़ और ज़ुल्म परवर होगी, उसकी रियासत उतनी ही नफ़रत अंगेज़ और फ़ित्ना परवर होगी। फ़ित्नए दज्जाल के हवाले से पहला मौज़ू अगर "बदी का सरचश्मा" है तो दूसरा "बुराई का महवर" है। जो लोग नेकी के सरचश्मे (किताब व सुन्नत) से फ़ैज़ हासिल करना चाहते हैं और ख़ैर के मरकज़ (तक़्वा और जिहाद) से जुड़े रहना चाहते हैं, उन्हें चाहिये वह बुराई और शर से वाक़िफ़ रहें कि बेख़बरी के आलम में फ़ित्ने में न पड़ जाएं। खुसूसन वह फ़ित्ना जिसकी बुन्याद ही धोका, फ़रेब, सच को झूट और झूट को सच बताने पर है।

"दज्जाल 2" के बाद "दज्जाल 3" भी ज़ेरे तरतीब है। इस सिलसिलावार खोज कुरैद, तहक़ीक़ व तफ़तीश और आगाही व ख़बरदारी की ग़र्ज़ फ़क़त यह है कि इस फ़ित्ना ज़दा आख़िर ज़माने में यह मौज़ूअ़ दावते दीन का बेहतरीन ज़रीआ है। मग़रिबी दुनिया बज़ाहिर मावराउत्तबीआत की मुन्कर है और कसीफ़ माद्दा के आगे किसी लतीफ़ शय के क़ाइल नज़र नहीं आती, लेकिन हक़ीक़त यह है......में दोहराता हूं......तअज्जुब ख़ेज़ हक़ीक़त यह है कि......मग़रिब में इस वक़्त दजजाली अलामात व निशानात का सैलाब आया हुआ है और दज्जाल के लिये फैलाए गए शैतान परस्ती के जाल में वहां

के हुक्मरानों, दानिशवरों और सरमायादारों से लेकर अदाकारों, गुलूकारों और आम पैरूकारों के ग़ोल का ग़ोल फंसे हुए नज़र आते हैं। मग़रिब के बुतकदों में अज़ान देने वाले कुछ अह्ले ईमान ने इस मौक़ा पर मग़रिब के फ़हीमुल अक़्ल और सलीमुत्तबअ़ अवाम को मुख़्तलिफ़ किताबचों और बड़ी मेहनत से तैयार की गई डाकू मन्टरेज़ के ज़रीए इन शैतानी फंदों से निकालने की कोशिश की है और कर रहे हैं। अह्ले मशरिक़ को जगाने के लिये यह किताबी सिलसिला इसी नोअ़ की एक आवाज़ है ताकि इंसानियत रुजूअ़ इलल्लाह के हिसार में हिसार में महफ़ूज़ होकर शैतान के इस वारे से बच सके जिसके बारे में अस्सादिक़ुल मस्दूक़ सल्ल0 फ़रमाते हैं आदम अलै0 से लेकर ताआख़िर दम ऐसा फ़ित्ना आया है न आएगा।

तारीकी का राज चाहने वालों के ख़िलाफ़ आप जब भी कोई बात करेंगे तो रौशनी के प्याम्बरों की हिदायत व नसीहत बयान किये बग़ैर आगे नहीं चल सकते। लिहाज़ा इस किताब में "तारीकी के देवता" और उसकी "अंधियारी निगरी' के हवाले से जो कुछ कहा गया है, दज्जाल के लिये मैदान हमवार करने वालों की ग़ैर इंसानी मुहिम्मात के बारे में जो कुछ आगाही दी गई है, पूरी कोशिश रही कि वह हमारी मुअस्सक़ मज़हबियात की तसदीक़ शुदा असरियात पर तत्बीक़ के तनाज़ुर में कही जाए, इसलिये यह इंशा अल्लाह तारीकी का पर्दा चाक कर के नूर की किरनों की तरफ़ लपकने में मुआविन साबित होगी। वह नूर जो ईमाने रासिख़ से फूटता और अमले सालेह से जगमगाता है और जब दिल की दर्ज़ों में उतर जाए तो ऐसी झूटी ख़ुदाई का दावा करने वालों ने दजल व मकर में फंसने के बजाए ऐसे दावों को लपेट कर उनके मुंह पर मार देने की जुर्अत अता करता है।

"दज्जाल 1" मुख्तलिफ़ औक़ात में लिखे गए मज़ामीन का मज्मूआ हैं, उसमें अव्वल ता आखिर तस्नीफ़ी रब्त व तसलसुल"......"हर चंद कहीं कि है, नहीं है"......का मिस्दाक़ था। दज्जाल 2 अलबत्ता मरबूत तालीफ़ के मेअ़यार पर इंशा अल्लाह पूरी उतरेगी। दज्जाल1 की इशाअत के बाद मौसूल होने वाले सवालात के जवाबात किताब के आख़िर में लगा दिये गए हैं। फ़ित्नए दज्जाल के मुक़ाबले के लिये दिफ़ाई व अक़्दामी तदाबीर का खुलासा कुछ इज़ाफ़ों के साथ आख़िर में दोबारा दे दिया गया है ताकि किताब महज़ मालूमात का पुलिंदा न हो, जुर्अत व हौसले के साथ इस्तिक़ामत और मुक़ावमत की तहरीक व तरग़ीब हो।

अल्लाह तआला से दुआ है जब हक़ व बातिल की कशमकश का फ़ैसलाकुन मोड़ आए तो हमारा वज़न "क़ौमे रसूले हाशमी" के पलड़े में हो न कि शैतान के चेलों के साथ खड़े होने वाले दज्जाल के कारिंदों के साथ। आमीन।

दज्जाली रियासत की कहानी

(पहली क़िस्त)

नुक्तए आग़ाज़ व इख़्तितामः

"दज्जाली रियासत" की कहानी बड़ी दिलचस्प है। समेटी जाए तो बहुत मुख़्तसर है। फैलाई जाए तो सदियों पर मुहीत हुई है। इसकी इब्तिदा चूंकि अर्ज़े मुक़द्दस फ़लस्तीन से होती है (यअ़नी यहूद की फ़लस्तीन से जिला वतनी से जो अज़ाबे इलाही के नतीजे में थी) और इंतिहा भी यहीं आकर होगी (यअ़नी यहूद की यहां वापसी की कोशिश जो मकर व फ़रेब और ज़ुल्म व दजल की बुन्याद पर होगी), इसलिये हम गुफ़्तगू की इब्तिदा "नुक्तए आग़ाज़ व इख़्तिमाम" फ़लस्तीन से ही करते हैं जिसका क़दीम नाम "यरोशलम" था।

यरोशलम तीनों मज़ाहिब के पैरूकारों के लिये हमेशा से एक मुक़द्दस शहर रहा है। मुसलमानों के लिये भी और अह्ले किताब के लिये भी। मुसलमान चूंकि तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम पर ईमान रखते हैं। चुनांचे कोई भी ऐसी जगह जो किसी नबी से तअल्लुक़ रखती हो, मुसलमानों के लिये मुक़द्दस है। फ़लस्तीन और बैतुल मुक़द्दस का तअल्लुक़ दीगर बहुत से क़ाबिले एहतिराम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से है। वाक़िअये मेराज भी यहीं से हुआ था और यहां मौजूद मुक़द्दस चट्टान मुसलमानों का क़िब्लए अव्वल भी है, इसलिये मुसलमानों को इससे क़ल्बी तअल्लुक़ व लगाव शक व शुबा से बालातर है। चूंकि हज़रत याक़ूब, हज़रत मूसा और फिर हज़रत दाऊद हज़रत सुलैमान अलैहिमुस्सलाम और दूसरे बहुत से अंबियाए बनी इस्राईल का तअल्लुक़ इसी शहर से रहा है,

इस लिये यहूदी भी इसे मुक़द्दस व मुतबर्रक मानते हैं। ईसाई भी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल के दूसरे अंबिया पर ईमान रखते हैं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह उनका एहतिराम करते हैं, लेकिन इस सर ज़मीन की तक़दीस उनकी नज़रों में इस लिये अहम तर है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम "बैतुल लहम" में पैदा हुए थे और फिर ज़िंदगी का बेशतर हिस्सा अर्ज़े कुद्स में गुज़ारा। "मुस्तक़बिल की आलमी दज्जाली रियासत" की कहानी माज़ी के इन तक़दीस भरे रूपों के बरख़िलाफ़ यहीं से जनम लेगी। यरोशलम की तक़दीस की वजूह तो आपने समझ लीं, आइये! इसकी तहज़ीब यअ़नी यहां दज्जाली क़ुव्वतों की कारफ़रमाई की इब्तिदा को देखते हैं।

मुसलमानों ने तौरात की पेशगोई के मुताबिक़ (इस पेशगोई को ज़िक्र "दज्जाल" नामी किताब में बा हवाला मौजूद है) जब बैतुल मुक़द्दस फ़तह किया तो तीनों मज़ाहिब के लिये उसकी अहमियत को पेशे नज़र रखते हुए किसी भी मज़हब के ज़ाएरीन की यहां आमद पर पाबंदी आइद न की चुनांचे यहूदी और ईसाई ज़ाएरीन की आमद व रफ़्त आज़ादी से जारी रही। यह मामूल सदियों तक बरक़रार रहा। 1095 ई० में ईसाइयों को उस वक़्त सबसे बड़ा मज़हबी रहनुमा "पोप अरबन दोम" था। उसने ईसाई यूरप पर पुरज़ोर दिया कि अर्ज़े मुक़द्दस को काफ़िरों (यअ़नी मुसलमानों) से छीन लिया जाए। पोप अरबन का प्रोपेगंडा था कि मुसलमानों ने हज़ारों मसीह, बहन भाईयों को क़त्ल कर दिया है। दुनिया के बहुत बड़े हिस्सा पर क़ब्ज़ा कर लिया है और यूरोपियों के लिये रहने और हुकूमत करने की जगह तंग कर दी है। ख़ुद मसीह मुअर्रिख़ीन का कहना है कि ईसाईयों के क़त्ल के बारे में पोप अरबन का दावा झूट का पुलिंदा था। इस झूट

का एक तै शुदा मक्सद था।

सियासी और बशारती झूटः

मज़कूरा पोप ने ईसाई अवाम को मुसलमानों के ख़िलाफ़ "मुक़द्दस जंग" पर उभारने के लिये सिर्फ़ यही "सियासी झूट" नहीं बोला, बल्कि उसने ग़र्ज़ के लिये एक "बशारती झूट" भी घड़ा। उसने ईसाई जंगजूओं के लिये खुदाई बशारत वज़अ़ की कि जो मुसलमानों से लड़ेगा, उसके तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और वह जन्नत की बुलंद व बाला वादियों में दाइमी नेअ़मतों का मुस्तहिक़ होगा। यह झूट......जो ईसाइयत की बुन्यादी तालीमात (यअ़नी नज़रियए कफ़्फ़ारा) के भी मनाफ़ी था......घड़ने की ज़रूरत पोप को क्यों पेश आई? इसकी वजह ईसाई मज़हबी रहनुमाओं के सामने खड़ा एक मुश्किल सवाल था। उनको यह बात समझ न आती थी मुसलमान नाक़ाबिले तसख़ीर क्यों हैं और अपने ख़ुदा के लिये अपनी जानें क़ुर्बान करने के लिये हर वक़्त तैयार क्यों रहते हैं? ईसाई इस तरह क्यों नहीं हैं? यह बहुत बड़ा सवाल पोप अरबन और उसके हमअस्र दीगर मसीह अमाइदीन के सामने जवाब तलब था। जब उन्होंने ग़ौर किया तो मुसलमानों के "फ़लसफ़ए शहादत" की रौशनी में इस सवाल का जवाब बहुत सादा और आसान था। मुसलमान जिहाद में अपनी जानें देने के लिये इसलिये तैयार रहते हैं कि उन्हें मौत के बाद जन्नत की ज़िंदगी का वादा दिया गया है। इस पर उन्होंने सोचा कि ईसाइयों के लिये ऐसी कौनसी बशारत हो कि वह भी सलीब के लिये जानें देने पर तैयार हो सकें? बाइबल में ऐसी कोई बशारत न थी। मजबूर होकर मसीही रहनुमाओं ने नऊज़ू बिल्लाह खुदाई इख़्तियारात हाथ में लेते हुए कुछ बशारतें वज़अ़ कर लीं। ईसाई अवाम से वादा कर दिया गया कि जो लोग सलीब के

काज़ के लिये लड़ेंगे उनके तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे और उनके लिये नजात यक़ीनी होगी। पोप अरबन ने यह वादा अपनी मज़हबी हैसियत का ग़लत इस्तेमाल करते हुए किया। यह वादा बुन्यादी तौर पर ईसाइयत की तालीमात के भी मनाफ़ी था। ईसाई अक़ाएद के मुताबिक़ हज़रत ईसा अलै० आदम अलै० के बेटों के गुनाहों के कफ़्फ़ारे में अपना ख़ून पहले से बहा चुके हैं। अब सलीब के बेटों को अपना ख़ून देने की ज़रूरत ही नहीं। यह वादा मशहूर ईसाई नज़रिये "एतिराफ़े गुनाह" (Confession) के तसव्वुर को भी ख़त्म करता था।

सलीबी जंग या नस्ली मअरका आराईः

बहरहाल इस वादा ने अपना असर दिखाया और ईसाई अवाम "यक़ीनी नजात" के हुसूल के लिये जौक़ दर जौक़ "काफ़िरों" से लड़ने निकल खड़े हुए। सबसे पहले पोप की दावत पर लब्बैक कहने वाला एक जुनूनी गिरोह ग़रीब मर्दों और औरतों पर मुशतमिल था जो हंगरी से कुस्तुनतुनिया और कुस्तुनतुनिया से तुर्की व शाम में उतर आया। यह जंगजू दरअसल ग़ैर मुनज़्ज़म शहरी थे जिन्हें पहले तो ख़ुद हंगरी के सिपाहियों ने तहा तैग़ किया और बच रहने वालों को सफ़ाया उस्मानी मुजाहिदीन और तुर्क मुसलमानों ने कर दिया। इसके बाद सलीब के लिये लड़ने वालों की दूसरी लहर उभरी। इस दफ़ा हमलाआवर होने वाले सलीबी जंगजू "नाइट्स" यअ़नी पोप के सरदार थे। उन्होंने अलकुद्स पर तूफ़ानी यलग़ार की और फ़लस्तीन के एक इलाक़ा में कुछ अर्से के लिये एक सलीबी रियासत क़ाइम कर ली। सलीबी परचम के साथ यह पहला कामियाब हमला था जिसने न सिर्फ़ नाक़ाबिले तसख़ीर मुसलमानों के ख़िलाफ़ यूरपियों को

हौसला दिया बल्कि कश्त व खून का एक नया दौर शुरू किया जो बाद की सदियों में भी जारी रहा औ अभी तक......मुख़्तलिफ़ शक्लों और उन्वानों से......जारी है और उस वक़्त तक जारी रहेगा जब ईसाइयों के हक़ीक़ी और सच्चे रहनुमा जनाब मसीह अलै0 तशरीफ़ लाकर फ़ित्ना परवर दज्जाली कुव्वतों को तहा तैग़ नहीं कर देंगे जो सादा लोह ईसाई अवाम को अह्ले इस्लाम के ख़िलाफ़ वरग़लाते रहते हैं। इस हमले को "सलीबी जंग" कहा गया जिसका मतलब काफ़िरों (यअ़नी मुसलमानों) के ख़िलाफ़ "मुक़द्दस जंग" था। इस बअ़ज़ अह्ले क़लम "मसीही जिहाद" कहते हैं जो ग़लत है। इस इस्तिलाह में जिहाद का लफ़्ज़ ग़ैर मुस्लिमों के लिये इस्तेमाल होता है, जबकि जिहाद के मुक़द्दस अमल को तसव्वुर सिर्फ़ मुसलमानों के यहां है। बक़िया मज़ाहिब की तरफ़ से बरपा होने वाली जंगों के लिये यह इस्लामी इस्तिलाह इस्तेमाल नहीं करनी चाहिये। इसमें इस इबादत की तौहीन का पहलू पाया जाता है। इस अव्वलीन सलीबी जंग के पस पर्दा पाए जाने वाले शाही मुहर्रिकात या पोप के मफ़ादात क्या थे? इसके लिये "नाइट्स" यअ़नी यूरपी जंगी सरदारों की इन सरगर्मियों पर एक नज़र डालना काफ़ी रहेगा जो वह यरोशलम आते हुए सरअंजाम दे रहे थे। तारीख़ उनकी कारगुज़ारी सुनाते हुए हमें बताती है:

> "रास्ते में वह मुसलमानों, यहूदियों और सियाह फ़ाम ईसाइयों का क़त्ले आम करते रहे।"

नाइट्स के इन कारनामों को देखा जाए तो सवाल पैदा होता है क्या यह वाक़ई मुक़द्दस मज़हबी जंग थी? नहीं......क़त्अन नहीं! यह तो एक नस्ली मअरका आराई थी। वह नस्ली मअरका आराई जो

मज़हबी जंग के नाम पर वजूद में आई और जो नस्ली एहसासे बरतरी के शिकार बनी इस्राईल के एक मख़्सूस क़बीले को दुनिया के इस मुक़द्दस ख़ित्ते पर तसल्लुत दिलाने के लिये थी जो वह अपनी बद आमालियों की बदौलत गंवा चुका था।

ख़ौफ़नाक ख़्वाब, दहशतनाक ताबीर:

यह सलीबी जंगें जारी रहीं......और जैसे जैसे वक़्त गुज़रा सलीबी जंगों की तादाद और मिक़्दार में इज़ाफ़ा होता गया। इसी तरह नाइट्स की तादाद और हैसियत में भी इज़ाफ़ होता गया। और उनमें ईसाई जोशीले सरदारों की जगह यहूदी ज़ुअ़मा ने लेना शुरू कर दी और यहीं से यह तहरीक रुख़ बदल कर दज्जाल के कारिंदों के हाथ में आती गई। "नाइट्स" के नाम और ख़ुत्बात मुख़्तलिफ़ थे जो उनके तआरुफ़, पसमंज़र और फ़राइज़ के हवाले से रखे जाते थे। उनमें से एक नुमायां गिरोह "टिम्पलर्ज़ नाइट्स" का था जो ईसाई नाइट्स के मुख़्तलिफ़ गिरोहों के ख़त्म हो जाने के बाद भी बाक़ी रहा। इस गिरोह ने तारीख़ में बेइंतिहा शोहरत पाई और आज तक (नाम बदल कर) ज़िंदा है, इसलिये कि यह ईसाई न थे, शुरू में थे भी तो बाद में उनमें एक मख़्सूस "इंसानी बिरादरी" के लोग शामिल हो गए जिन्होंने यह चोला पहन कर शोहरत दवाम हासिल की।

टिम्पलर्ज़ नाइट्स (मअ़बदी सरदार) एक ऐसा गिरोह था जिसके सामने बज़ाहिर कोई मक़्सद और कोई नस्बुल ऐन नहीं था, लेकिन दरहक़ीक़त उनके सामने एक बड़ा नस्बुल ऐन और अहम एजेन्डा था जिस पर वह सलीबी जंगजूओं की मदद से काम करने लगे। उनकी नज़रों में पूरी दुनिया पर ग़ल्बे का हुसूल और अज़ीम तरीन फ़रमांरवाई थी। अगर सवाल उठाया जाए कि थोड़े से लोग जो

मुसलमानों से बैतुल मुक़द्दस न ले सकते थे, पूरी दुनिया पर फ़रमांरवाई का ख़्वाब कैसे देख रहे थे? तो इसका जवाब समझने के लिये हमें उनकी बुन्याद और पसे मंज़र को तफ़सील से देखना होगा। उनके इस ख़्वाब ने दुनिया को बहुत सी आज़माइशों में डाला और उनकी इस अहमक़ाना मुहिम के नतीजे में इंसानियत बहुत सी आज़माइशों में मुब्तला हुई और यह आज़माइशें आज भी जारी हैं। आगे चल कर यह गिरोह मज़हबी तन्ज़ीम से बढ़ कर मआशी इजारा वारी क़ाइम करने वाला गिरोह बना, फिर मआशी तौर पर मुस्तहकम यह गिरोह दुनिया की सियासत में दख़ील होकर "बादशाह गर" बन गया। पस पर्दा रहते हुए दुनिया की हुकूमतों को अपने मक़्सद के लिये इस्तेमाल करना उसका मख़्सूस हुनर ठहरा। इसके बाद उसका रुख़ अस्करियात की तरफ़ हुआ। यहूद की रिवायती तारीख़ के हवाले से यह खुद मैदान में आकर कभी नहीं लड़ा। यह दूसरे को लड़वा कर फ़तह के समरात अपनी झोली में डालने का आदी रहा है। लिहाज़ा दुनिया की इक़्तिसादियात, सियासात और अस्करियात पर कंट्रोल क़ाइम करके यह उस ख़्वाब की तकमील के लिये जुत गया जिसकी ताबीर इंतिहाई ख़ौफ़नाक है यअ़नी इबलीस की आलमी हुक्मरानी का क़याम और "दज्जाल की आलमी रियासत" की तशकील। हम इस गिरोह की दर्जा बा दर्जा पेशक़दमी (मज़हब से मअ़सियत, मअ़सियत से सियासत यअ़नी, जम्हूरियत, सियासत से अस्करियत और फिर आलमी हुकूमत) का जाइज़ा लेते हुए आगे चलेंगे ताकि इंसानियत के ख़िलाफ़ माज़ी, हाल और फिर मुस्तक़बिल क़रीब में जो कुछ उस ज़ेरे ज़मीन पनपने वाले गिरोह ने किया, खुल कर सामने आ सके और वक़्त हाथ से निकलने से पहले उस ग़ैर

इंसानी बल्कि शैतानी मंसूबे के रास्ते में मज़बूत रोक खड़ी की जा सके। उसकी तारीख़ सामने आने से यह सवाल भी हल हो जाएगा कि "दज्जाल" तो यहूदियों की उम्मीदों का आख़िरी सहारा है। सलीबी जंगजूओं का इस यकचश्म यहूद नवाज़ फ़ित्ने के नाम पर क़ाइम होने वाली रियासत से क्या तअल्लुक़ हो सकता है???(जारी है)

☆☆☆

नाइट्स टिम्पलर्ज़ से फ़िरी मैसन तक

(दूसरी क़िस्त)

हैकल के खंडर के क़रीबः

अगर्चे अर्ज़े मुक़द्दस पर मसीही इक़्तिदार मुख़्तसर अर्सा के लिये था, लेकिन उनका यह मुख़्तसर क़ब्ज़ा पूरी दुनिया की तारीख़ को तबदली करने वाला हादसा साबित हुआ। इस मुख़्तसर अर्सा के दौरान नाइट्स की एक ख़ुसूसी तन्ज़ीम तशकील दी गई। जिसका मक़्सद बज़ाहिर मसीही ज़ाइरीन को मुसलमानों के हमलों से महफ़ूज़ रखना था। यह एक मज़हबी तन्ज़ीम थी जिसके फ़राइज़ "मुक़द्दस मअ़बद" (बैतुल मुक़द्दसः हैकल सुलैमानी) को काफ़िरों (यअ़नी मुसलमानों) से बचाना भी शामिल था। चुनांचे यह तन्ज़ीम और इसके अरकान दुनिया भर के ईसाईयों के लिये क़ाबिले एहतिराम बन गए। अपने मज़हबी फ़राइज़ और मसीही तर्ज़े हयात की वजह से उन्हें "राहिब" कहा जाता था। बअ़द अज़ां यह ख़िताब तर्क करके उन्हें टिम्पलर्ज़ यअ़नी "मअ़बदी" कहा जाने लगा। "टिम्पल" मअ़बद यअ़नी इबादतगाह को कहते हैं। टिम्पलर का मअ़नी हुआ मअ़बद यअ़नी इबादतगाह से वाबस्ता ख़ुफ़िया गिरोह। यह तन्ज़ीम बहुत जल्द मुनज़्ज़म अस्करी तन्ज़ीम बन गई और "नाइट्स टिम्पलर्ज़" (मअ़बदी सरदार) कहलाने लगी। पैंगोइन डिक्शनरी आफ़ रेलिचंज़ में नाइट्स टिम्पलर्ज़ के बारे में कुछ इस तरह तहरीर हैः

"एक मज़हबी अस्करी तन्ज़ीम जो 1119 ई0 में यरोशलम में तशकील दी गई जिसका मक़्सद मसीही ज़ाइरीन को मुसलमानों के हमलों से महफ़ूज़ रखना था। यह मअ़बद यअ़नी हैकले सुलैमानी के

खंडर के करीब रहते थे। उनकी बोद व बाश राहिबों जैसी थी, लेकिन उनकी सरगर्मियां बुन्यादी तौर पर अस्करी और इंतेज़ामी थीं। अर्ज़े मुक़द्दस में यूरपी सलीबी सलतनत की निगहदाश्त में अहमियत रखने के साथ साथ उनकी अम्लाक यूरप में भी थीं और वह बैनुल अक़्वामी बंकारों की हैसियत से भी काम करते थे। वह अपने दाख़िली उमूर सख़्त राज़दारी के साथ सर अंजाम देते थे।

मुक़द्दस तबर्रुकात के मुहाफ़िज़ः

इस तन्ज़ीम के बाक़ाएदा क़याम के हक़ीक़ी अग़राज़ के बारे में मुख़्तलिफ़ दास्तानें पाई जाती हैं। शुरू में उन्होंने उन्होंने अपने आप को "हैकल का मुहाफ़िज़" कहलवाया। सवाल यह है यह लोग किस चीज़ का तहफ़्फ़ुज़ कर रहे थे और किससे कर रहे थे? इस नुक्ता पर कुछ मुहक़्क़िक़ीन राए रखते हैं कि टिम्पलर्ज़......उनकी तादाद बारह थी......दरअस्ल किसी ख़ज़ाने या मुक़द्दस तबर्रुकात की हिफ़ाज़त कर रहे थे जो बैतुल मुक़द्दस यह हैकले सुलैमानी से मिले थे। क़दीम ज़माने में जब यहूदी यरोशलम में आकर आबाद हुए तो वह हज़रत मूसा अलै० का संदूक़ भी साथ लाए थे बअ़द अज़ां हैकले सुलैमानी में रखा गया। इस संदूक़ को "ताबूते सकीना" या "ताबूते यहूद" कहा जाता था और इसमें हज़रत मूसा अलै० पर नाज़िल होने वाले तौरात की तख़्तियां (अलवाहे तौरात) रखी गई थीं। अहदनामा क़दीम यअ़नी तौरात का कहना है यह ताबूत ख़ालिस सोने का बना हुआ था। अहदनामा में इसकी शक्ल व सूरत और लम्बाई चौड़ाई की तफ़सीलात मौजूद हैं। अहदनामा के मुताबिक़ इस संदूक़ या ताबूत में वह अस्ल अलवाह (तख़्तियां) मौजूद थीं जो कोहे सीना पर हज़रत मूसा अलै० को अल्लाह तआला की तरफ़ से अता की गई थीं। इसके अलावा हज़रत हारून अलै० का असा (क़ुर्आन करीम के

मुताबिक़ यह हज़रत मूसा अलै0 का असा था) और "मन्न व सल्वा" का बर्तन भी उस ताबूत में महफ़ूज़ था। तारीख़ यह तो बताती है कि उसे हैकले सुलैमानी में रखा गया था लेकिन यह नहीं बताती कि बअ़द अज़ां उसके साथ क्या हुआ? टिम्पलर्ज़ के दौर में हैकलें सुलैमानी का यह हिस्सा जाइरीन के लिये कुछ अर्सा तक मरम्मत के नाम पर मम्नूअ़ क़रार दे दिया गया था। (एक रिवायत के मुताबिक़ 9 साल और दूसरी के मुताबिक़ 13 साल) इस दौरान उसे टिम्पलर्ज़ ने किसी मख़्सूस ख़ुफ़िया मक़ाम पर मुंतक़िल कर दिया था या ख़ुद टिम्पलर्ज़ को भी यह तबर्रुकात हाथ न लगे और वह दुनिया को धोका देने के लिये ख़ुद को पुर अस्रार मशहूर किये हुए हैं? रिवायत मुख़्तलिफ़ हैं और इस हवाले से मशहूर मज़हबी दासतानों में ज़बरदस्त तआरुज़ पाया जाता है। हक़ीक़त यह है कि क़दीम टिम्पलर्ज़ हों या जदीद फ़िरी मैसन, यहूदी क़ौम के रूहानीईन यअ़नी सुफ़ली जादूगर हों या दज्जाल के ख़ुरूज के मुंतज़िर यहूदी रुबाई, इन सब में भी किसी को नहीं मालूम कि यह मुक़द्दस तबर्रुकात कहां हैं? वह उनकी तलाश में सरगर्दां हैं कि उनको दुनिया पर दोबारा ग़ल्बा उनके बग़ैर नहीं मिल सकता, लेकिन तबर्रुकात उनको मिल के नहीं दे रहे......और न यह उनको कभी मिलेंगे। उन्हें तो हज़रत मेहदी रज़ि0 बरआमद करेंगे (कहां से? इस सवाल का जवाब "दज्जाल" नामी किताब में दे दिया गया है) हज़रत के हाथों इनकी बरआमदगी देखकर वह मोतदिल मिज़ाज यहूद जिनकी क़िस्मत में ईमान है, मुसलमान हो जाएंगे और वह शक़ी मिज़ाज यहूद जो इन तबर्रुकात को हज़रत मूसा अलै0 के हाथ में देख कर भी उनकी इताअत करने में लैत व लअल करते रहे थे, वह अब भी दज्जाल के साथ रहने पर ही अड़े रहेंगे और फिर बिलआख़िर उसके साथ अपने दर्दनाक अंजाम

को पहुंचेगे।

नाइट टिम्पलर्ज़ और सूदी बैंकारी'

तबर्रुकात के मुहाफ़िज़ीन के तौर पर सलीबी दुनिया में मज़हबी हैसियत मुस्तहकम करने के बाद टिम्पलर्ज़ को......जो दरहक़ीक़त मौजूदा फ़्री मैसन तन्ज़ीम की साबिक़ा शक्ल थे......अपनी माली हैसियत मुस्तहकम करने और उसे मुस्तकिल बुन्यादों पर तरक़्क़ी देने की फ़िक्र सवार हुई। अवाम की तिजोरियों में महफ़ूज़ दौलत जिसे हर वक़्त लूट लिये जाने का ख़तरा दरपेश रहता है, से बेहतर वह कौनसा ज़रीआ हो सकता था जो दूसरों के माल पर मुफ़्त का ऐश करने की आदी क़ौमे यहूद के काम आता। पैसा अवाम का, मेहनत सरमायाकारों की और बीच में मुफ़्त के मज़े यहूदी सूद ख़ोर महाजनों के। यहूद की सूद ख़ुराना ज़हनियत के हवाले से इससे बेहतर क्या सूरत हो सकती थी कि सरमाया किसी और का हो और नफ़ा यहूदी सूदख़ोरों को मिलता रहे? चुनांचे यह वह लम्हा था जब दुनिया में सूदी बैंकारी का आग़ाज़ हुआ। इसकी इब्तिदा यहूदी सर्राफ़ों ने की।

सर्राफ़ों, यअ़नी सुनारों ने दुनिया के सामने सबसे पहले तजवीरों (लाकर्ज़) का निज़ाम मुतआरिफ़ कराया। उन्होंने लोगों के ज़ेवरात, सिक्के और सोना उज्रत लेकर महफ़ूज़ करना शुरू कर दिया। हिफ़ाज़ती नुक़्तए नज़र से यह "डीपाज़िट सिस्टम" लोगों को पसंद आया और बहुत जल्द मक़्बूल हो गया। आहिस्ता आहिस्ता यहूदी सर्राफ़ों ने इसमें थोड़ी सी तबदीली पैदा की। लोग जब सोने के सिक्कों के एवज़ कोई चीज़ ख़रीदते थे तो पहले यहूदी सर्राफ़ों को रसीद दिखा कर अपना सोना लेते, फिर इसे उस शख़्स के हवाले करते जिससे उन्होंने कुछ ख़रीदा होता। बेचने वाला उस सोने को फिर किसी यहूदी सुनार के पास रखवाकर रसीद ले लेता। रसीद

बनाने और सिक्के जमा कराने का यह अमल यक्सानियत और तिवालत रखता था। इसका हल यहूदी साहूकारों ने यह निकाला कि हिफ़ाज़त के लिये अपनी तहवील में रखे गए लोगों के सोने को दूसरे लोगों को फ़रोख़्त करते हुए उसे अम्लन पुराने मालिक को वपास करके फिर नए मालिक से लेकर तहवील में रखने के बजाए "एक्सचेंज चिट" यअ़नी तबादले की तहरीरी याददाश्त मुतआरिफ़ कराई गई। यअ़नी रसीदों पर लेन देन शुरू हो गया। तबादले के इस निज़ाम से सोना एक दफ़ा वसूल करने और फिर उसे दोबारा जमा कराने का झंझट ख़त्म हो गया। काग़ज़ों के यह पुर्ज़े करंसी नोटों, ट्रेवलर्ज़ चैकों और क्रेडिट कार्डों की बुन्याद है और वह वक़्त दूर नहीं जब कई इलेक्ट्रोनिक करंसी की शक्ल में वाहिद आलमी ज़रीआ तबादला मुताआरफ़ हो जाएगा।

नाइट टिम्पलर्ज़ और सूदी बीमाः

अगला मरहला हन्डी या बीमे का था। कुछ लोगों को दूर दराज़ का सफ़र करना पड़ता था। सफ़र के दौरान उन्हें अपनी और अपने कीमती सामान की हिफ़ाज़त की परेशानी रहती थी। टिम्पलर्ज़ ने लोगों के ख़ाली हाथ सफ़र करने लेकिन इसके बावजूद एक से दूसरी जगह ले जाने का महफ़ूज़ तरीक़ा वज़अ़ किया। टिम्पलर्ज़ एक शहर में लोगों से सोना और चांदी वग़ैरा वसूल करके उन्हें एक चिट जारी कर देते जिस पर कोड वर्ड्ज़ दर्ज होते। इन कोड वर्ड्ज़ को सिर्फ़ टिम्पलर्ज़ ही समझते थे। दूसरे शहर जाकर लोग यह चिट वहां के टिम्पलर्ज़ को देते और उनसे मतलूबा मालियत का सोना, चांदी या करंसी वसूल कर लेते। इन चिटों पर गाहक का नाम पता और पिछले शहर में जमा कराए गए सोने या चांदी की मालियत वग़ैरा दर्ज होती थी। कुछ ही अर्सा बाद जमा कराए गए सोने (डीपाज़िटज़)

को क़र्ज़े के तौर पर जारी करना शुरू कर दिया गया हालांकि हिफ़ाज़ती तहवील में पड़े सोने की शर्त यह थी कि वह इन्दत्तलब मालिकान को लौटाया जाए। मालिकान चूंकि अर्सा दराज़ तक अपना सोना वसूल करने के लिये नहीं आते थे। उनका काम "चिटों" से चलता था, इसलिये अपने पास पड़े "बे मसरफ़" सोने का यह मसरफ़ ढूंढा कि उसे सूदी क़र्ज़ के तौर पर लोगों को देकर सूद कमाया जाए। सोना किसी और का था, इस पर सूद कोई और भर रहा था और मुफ़्त में मौज वह लोग कर रहे थे जिनका हवस ज़दा दिमाग़ इस तरह के शैतानी मंसूबे सोचने का माहिर था।

अलग़र्ज़ जब सर्राफ़ों ने देखा कि उनके पास जमा कराए जाने वाले सोने की सिर्फ़ मामूली मिक़्दार मालिकान निकलवाते हैं। चुनांचे उन्होंने उसमें से कुछ सोना दूसरों को सूद पे "आरियतन" देना शुरू कर दिया। इसके बदले वह अस्ल रक़म और सूद के लिये एक "प्रामीसरी नोट" या दस्तावेज़ लिखवा लेते। इस तरह वक़्त के साथ काग़ज़ी सर्टीफ़िकेट, जिनके बदले सोने के सिक्के लिये जा सकते थे गर्दिश में आ गए। इससे पहले लेन देन के लिये सिर्फ़ सोने के सिक्के गर्दिश में रहते थे। शुरू में यह सर्टीफ़िकेट या नोट जम्अ शुदा सोने की मालियत के बराबर होते थे। फिर हुआ यह कि गर्दिश में रहने वाले नोटों की मालियत जमा शुदा सोने की मालियत से ज़्यादा हो गई।

सूदी बैंकारी का पहला माडलः

सरमाया महफ़ूज़ करने, क़र्ज़ा देने और ज़मानत हासिल करने का यह क़दीम तरीक़ा आज के जदीद बैंकारी निज़ाम की बुन्याद बना। टिम्पलर्ज़ मज़हबी मंज़र रखने की वजह से लोगों के लिये क़ाबिले भरोसा थे। तमाम यूरपी मुमालिक यहां तक कि मश्रिक़े वुस्ता और

अर्ज़े मुक़द्दस में उनकी शाख़ें और दुनिया भर में उनके नुमाइंदे मौजूद थे। यूरप की नशअते सानिया (Renaissance) में हिस्सा लेने वाले दौलतमंद ख़ानदानों मसलन फ़्लोरेंस, इटली के मैडियक्स ख़ानदान ने भी इस निज़ाम की इआनत की और रफ़्ता रफ़्ता यह निज़ाम तरक़्क़ी करके बाक़ाएदा मुस्तक़िल इदारे यअ़नी "बैंक" की शक्ल में वजूद में आ गया। पहला माडर्न बंक स्वीडन का दी रक्स बंक 1656 ई० में आया फिर बंक आफ़ इंगलैंड 1694 ई० में सूदख़ोरी के मुनज़्ज़म इदारे की शक्ल में क़ाइम कर दिया गया। सत्तरहवीं सदी ईसवी के अंग्रेज़ सर्राफ़ों ने दुनिया को सूदी बैंकारी का माडल मुहय्या कर दिया और आहिस्ता आहिस्ता दुनिया सूदी लअ़नत के इस जाल में फंस गई। मक़ामी बैंक, मरकज़ी बैंक से और मरकज़ी बैंक आलमी बैंक से मुंसलिक हो गया और इस तरह दुनिया की मईशत इन लोगों के हाथ में आ गई जो दज्जाल के ख़ुरूज से पहले हर तनफ़्फ़ुस के सीना में हराम का लुक़्मा पहुंचाते या इसके ताक में रहते ताकि हराम के आलमी सौदागर का जब ज़ुहूर हो तो और इबलीसी हराम ख़्वाहों के लिये मैदान हमवार हो चुका हो।

सूद से टेक्स तक:

बाइबल की तालीमात सूद की मुमानिअत करती हैं चुनांचे उस ज़माने में ईसाई मुआशरों में भी सूद से गुरेज़ किया जाता था, लेकिन टिम्पलर्ज़......मुक़द्दस समझे जाने वाले टिम्पलर्ज़......उसकी ज़र्रा बराबर परवाह नहीं करते थे। एक मौक़ा पर एक क़र्ज़दार को 60% तक सूद दर सूद अदा करना पड़ा। क़दीम ज़माने में मुनज़्ज़म बैंकारी निज़ाम के साथ यह लोग अपने दौर के जदीद सरमायाकार बन गए। अवाम तो अवाम, हुकूमतें तक उनसे क़र्ज़ लिया करती थीं। यह मनमानी शराइत पर उन्हें सूदी क़र्ज़े दिया करते थे। बहुत

सी बादशाहतें उनके कर्ज़ों के बोझ तले दब गईं। बक़िया यूरपी मुमालिक को तो रहने दीजिये, अंग्रेज हुक्मरान ख़ानदान भी टिम्पलरों का मक्रूज़ था। बादशाह जान, हुनरी सोम और ऐड वर्ड अव्वल सभी टिम्पलरों से क़र्ज़ा लेते थे। 1260 ई0 से 1266 ई0 के दर्मियान बादशाह हुनरी ने अपने ताज के हीरे टिम्पलरों के पास रहन रखे हुए थे। मुख़्तलिफ़ बादशाहों को मक्रूज़ करने के बाद टिम्पलर्ज़ आग बढ़े। हुक्मरानों के ताजों में जड़े हीरे गिरवी रखने के बाद अब वह अवाम को भी अपने पास गिरवी रखना चाहते थे। इसके लिये उन्होंने जो तरीक़े कार वज़अ किया वह उनकी संगदिलाना शैतानी सोच का अक्कास था। इस तरीक़े ने आज तक दुनिया को उनके हाथों मआशी गुलाम बना रखा है। उन्होंने हुक्मरानों को दिये गए कर्ज़ों की वसूली को यक़ीनी बनाने के लिये वक़्त ज़ाए किये बग़ैर पाबंदी आइद कर दी कि टेक्स की वसूली सिर्फ़ टिम्पलर्ज़ करेंगे। टेक्स वसूली के इख़्तियार ने उनकी ताकत और दौलत में बेपनाह इज़ाफ़ा कर दिया। अब न सिर्फ़ वह पापाइयत को दिये जाने वाले अतयात वसूल करते बल्कि बादशाहों (हुकूमतों) की तरफ़ से टेक्स भी वसूल करते। टिम्पलर्ज़ ने अपनी दौलत और कुव्वत में तेज़ी से इज़ाफ़ा किया। यहां तक कि अब वह अपने मिशन के तीसरे मरहले का आग़ाज़ करने के क़ाबिल हो गए। मज़हबी व माली हैसियत के इस्तिहकाम के बाद अब इक़्तिदार और असकरियत की तरफ़ उनका सफ़र शुरू हुआ।

इबलीसी सियासत या सहीवनी अस्करियतः

इसके लिये उन्होंने यह तरीक़े कार वज़अ किया......और बिला शुब्हा इंसानियत का ख़ून बहाने और इंसानियत की रगों से ख़ून चूसने वाले एक तरीक़े कार को "इबलीसी सियासत" के अलावा

कोई नाम नहीं दिया जा सकता······कि दुनिया में जहां जंग होती यह जंग में शरीक दोनों फ़रीक़ों को क़ाबू में रखते, उनसे फ़ाएदा उठाते। अगर कहीं जंग नहीं हो रही तो यह बग़ावते तख़्लीक़ करते और फिर दोनों फ़रीक़ों को अस्लहा फ़राहम करते। चुनांचे जंग में शरीक दोनों फ़रीक़ उनके मक़्रूज़ और ज़ेरे असर हो जाते। खोए हुए यरोशलम को वापस लेने और पूरी दुनिया पर ग़ल्बा पाने का यह सफ़्फ़ाकाना मिशन हर तरह की अख़्लाक़ियात और इंसानी रिवायात को पामाल करते हुए जारी था यहां तक कि अक्तूबर की तेरह तारीख़ और जुम्आ का दिन आ गया। तेरह तारीख़ नाइट टिम्पलर्ज़ की तारीख़ का सियाह तरीन दिन है। (जारी है)

तेरह तारीख़ का जुम्आ

(तीसरी और आख़िरी क़िस्त)

जुम्आ, 13/अक्तूबर:

हुआ यूं कि टिम्पलर्ज़ बिरादरी की तरक़्क़ी, यूरप के हुक्मरानों और मआ़शियत पर कंट्रोल, आम लोगों की नज़रों से ओझल रहा। यहां तक कि ख़ुद यूरपी बादशाह भी एक तवील अर्सा तक इस बात को न समझ सके कि "बिरादरी" उनके साथ क्या कर रही है और क्या करना चाहती है? बिलआख़िर फ़्रांस का बादशाह फ़िलिप्स चहारुम इस साज़िश को समझ गया। वह उनसे अपना और अपनी क़ौम का पीछा छुड़ाना चाहता था, लेकिन चर्च और ईसाइयत उसकी राह में हाएल थी। चर्च चूंकि टिम्पलर्ज़ के साथ था इसलिये वह उनकी इजारादारी न तोड़ सका। उसने हिक्मत से काम करने का फ़ैसला किया। सबसे पहले उसने उस वक़्त के टिम्पलर्ज़ के साथ मिले हुए पोप "बोनी फ़ीस हिशम" से जान छुड़ाई और फिर उसके जानशीन "बीनी डिकट या ज़दहम" से छुटकारा हासिल किया। 1305 ई० में बादशाह फ़िलिप्स ने नए पोप "क्लीमंट पंजुम" का तक़र्रुर किया। उस मुंसिफ़ पोप की मदद से बादशाह ने टिम्पलर्ज़ के मुआमलात की मुकम्मल छान बीन कराई। तहक़ीक़ात के नतीजे में जो हक़ाइक़ सामने आए वह तवक़्क़ो से ज़्यादा ख़तरनाक थे। ख़तरे की संगीनी ने उसे फ़ौरी और सख़्त क़दम उठाने पर मजबूर कर दिया। चुनांचे उसने मुल्क भर में सरकारी उम्माल को सर बमुहर अहकामात भेजे। तरतीब यह बताई गई कि इन अहकामात को हर जगह बयक वक़्त यअ़नी जुम्आ 13 अक्तूबर 1307 ई० की सुब्ह

तुलूए आफ़ताब पे खोला जाना था। इन खुफ़िया अहकामात के मुताबिक़ मुल्क भर में इस तन्ज़ीम को मुअत्तल करके टिम्पलर्ज़ को गिरफ़्तार और उनकी इम्लाक को ज़ब्त कर लिया गया। टिम्पलर्ज़ पर तौहीने मसीह, बुत परस्ती और हम जिंस परस्ती के इल्ज़ामात आइद किये गये। इन इल्ज़ामात ने पूरे यूरप में टिम्पलर्ज़ के ख़िलाफ़ नफ़रत व कराहियत पैदा कर दी। हर जगह उन्हें मशकूक क़रार देकर गिरफ़्तार कर लिया गया। मुजरिम साबित होने वालों को फांसी दी गई।

जम्हूरियत का आग़ाज़ः

पोप क्लीमंट ने बाज़ाब्ता तौर पर 1312 ई० में टिम्पलर्ज़ की तन्ज़ीम "टिम्पल" को कलअ़दम क़रार दे दिया। तन्ज़ीम के आख़िरी ग्रेन्ड मास्टर जेक्स डी मौलाए को 1314 ई० में धीमी आंच पर रखकर कबाब बना दिया गया। टिम्पलर्ज़ अपने ग्रेन्ड मास्टर की इस क़ुर्बानी को आज भी याद रखे हुए हैं और उसकी यादगार को अपनी तक़रीबात में मज़हबी रस्म के तौर पर मुन्अक़िद करते हैं। जब एक दफ़ा राए आम्मा उनके ख़िलाफ़ हो गई और चर्च उनका दुशमन हो गया तो फिर बिरादरी इन इल्ज़ामात से तन्ज़ीम को मज़ीद तहफ़्फ़ुज़ देने में नाकाम हो गई। उनकी ज़्यादातर इम्लाक यूरप में ज़ब्त कर ली गईं। बज़ाहिर टिम्पलर्ज़ का ख़ातिमा हो गया लेकिन उन्होंने इस सूरते हाल से एक सबक़ सीखा और मुस्तक़बिल में उस पर अमल कियाः "एक हाथ में क़ुव्वत व इक़्तिदार ख़तरनाक हो सकता है चुनांचे उसे तक़सीम कर दिया जाना चाहिये।" इस फ़ैसले ने दुनिया में नए तर्ज़े हुक्मरानी को मुतआरिफ़ करवाया और दुनिया "जम्हूरियत" नामी नए निज़ामे हुकूमत से वाक़िफ़ हुई जो बिरादरी के लिये शिकस्त खा जाने के बाद दोबारा मैदान में

आने......और......ख़म ठोंक कर आने का ज़रीआ साबित हुआ। टिम्पलर्ज़ ज़ेरे ज़मीन चले गए और अब एक नए दौर का आग़ाज़ हुआ......"जम्हूरियत" का आग़ाज़......जो कि बादशाहत का मुतबादिल निज़ाम था। बिरादरी ने समझ लिया था कि "ख़ुफ़िया गिरफ़्त" ही उन जैसी किसी ख़ुफ़िया तन्ज़ीम के लिये ज़्यादा मौज़ूं है। यह ख़ुफ़िया गिरफ़्त मौरूसी बादशाहत लेकर तख़्त पर आने वाले मुतलक़ुल अनान बादशाहों की बा निस्बत अवामी नुमाइंदों पर आसानी से क़ाइम की जा सकती है। जब असम्बलियों में भांत भांत की बोलियां बोलने वाले जमा होंगे तो उनकी बोली लगाना और उनकी बोली को अपनी मर्ज़ी का रुख़ देना आसान होगा। "अवामी नुमाइंदे" अपने इंतेख़ाब के लिये हमेशा सरमाए और तशहीर के मुहताज रहते हैं। बिरादरी का सूदी सरमाया और दरोग़ गो मीडिया निहायत आसानी से इन नुमाइंदों की "अवामियत" ख़त्म करके उन्हें बिरादरी का ताबेअ़ बना सकता है। फिर जम्हूरी फ़ैसलों में इब्हाम बहुत ज़्यादा होता है। कुछ पता नहीं किसने किस राए के हक़ में ख़ुफ़िया वोट डाला। अब्हाम जिस क़दर ज़्यादा होगा "उन" का तहफ़्फ़ुज़ भी ज़्यादा होगा। अगर आप को अपने दुशमन का इल्म नहीं होगा तो क्या करेंगे? आप ख़ुद को इल्ज़ाम देंगे या कहेंगे: "वक़्त ही बुरा चल रहा है।"

फ़िरी मैसन की शक्ल में टिम्पलर्ज़ का नया ज़ुहूर:

फ़्रांस के बादशाह फ़िलिप्स चहारुम के दिलेराना अक़्दाम और हिक्मत से भर पूर कारवाई ने टिम्पलर्ज़ को उसकी तारीख़ का सबसे बड़ा धचका लगाया था। यह अधमूए हो गए थे। अगर उनको एक मौक़ा न मिल गया होता तो उनका ख़ातिमा यक़ीनी हो जाए और इंसानियत की जान उनसे छूट जाती। वह मौक़ा इस्काटलैंड के

मख़्सूस हालात की वजह से उनको मिल गया। बच जाने वाला टिम्पलर्ज़ का गिरोह अपनी जान बचा कर इस्काटलैंड पहुंचने में कामियाब हो गया। इस्काटलैंड काफ़ी अर्से से आज़ादी की जंग लड़ रहा था। टिम्पलर्ज़ के आने से इस्काटलैंड के बादशाह वक़्ते राबर्ट बरूस को हथियार मिल गया। यह हथियार लड़ने और क़र्ज़े देकर वह सौ सालहा जंगी तजुर्बा था जो उन्होंने मुसलमानों की अज़ीम अफ़्वाज के ख़िलाफ लड़ाई में हासिल किया। 1314 ई0 में राबर्ट बरूस की इत्तिहादी फ़ौजों ने 25000 अंग्रेज़ फ़ौज को शर्मनाक शिकस्त से दो चार किया। इस शिकस्त से "टिम्पलर्ज़" की नई ज़िंदगी ने जनम लिया। टिम्पलर्ज़ अपने आप को पस्तियों से निकालने में कामियाब हुए और इस मर्तबा ज़्यादा शान के साथ अब वह आज़ाद इस्काटलैंड के बादशाह को कंट्रोल कर रहे थे। 1603 ई0 में कुइन एलिज़बथ अव्वल की मौत के बाद इस्काट लैंड का बादशाह जेम्ज़ पंजम बर्तानिया का भी बादशाह बन गया। यअ़नी इस नई वसीअ़ रियासत का निज़ाम टिम्पलर्ज़ के हाथ में आ गया।

यूं पूरे बर्तानिया पर उनका तसल्लुत क़ाइम हो गया। दूध का जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है। टिम्पलर्ज़ को नया ठिकाना मिल गया था लेकिन वह इंतिहाई मुहतात थे। तक़रीबन सौ साल तक टिम्पलर्ज़ बिल्कुल पसपर्दा चले गए। अपने काम कम कर दिये ताकि लोग उनको भूल जाएं मगर उन्होंने बर्तानिया पर अपनी गिरफ़्त कम नहीं की। बड़े बड़े उहदों के हुसूल में सरगर्म रहे। यहां तक कि उनकी ताक़त में बेपनाह इज़ाफ़ा होता चला गया। 1717 ई0 में टिम्पलर्ज़ यूरप में फिर से उभरते हैं। इस मर्तबा तादाद और ताक़त दोनों में हम पल्ला हैं। यह नई शिनाख़्त उनकी माज़ी की शोहरत से ज़्यादा ताक़तवर और मुअस्सिर है और यह शिनाख़्त उनकी बर्तानिया

की बादशाहत दे रही है। अपने खुफ़िया हथकंडों पर पर्दा डालने के लिये ज़रूरी हो गया कि वह अपने नाम "टिम्पलर्ज़" को ख़त्म कर दें। अब जो नाम उन्होंने अपने आप को मुतआरिफ़ कराने के लिये रखा वह "फ़िरी मैसन" था। "FREEMASON" इस लफ़्ज़ को बहुत से लोग जानते थे मगर इसका मफ़हूम कम लोग जानते थे। टिम्पलर्ज़ के नए नाम फ़िरी मैसन गुरूप का बर्तानवी शाही ख़ानदान में से पहला मिम्बर प्रिंस आफ़ दी वेल्ज़ फ़्रेडरिक था। बाद में आने वालों में प्रिंस फ़िलिप, इडंबरा कातूयूक और मलिका एलाज़बथ दोम बरतानिया शामिल हैं। बरतानवी जम्हूरी हुक्मरानों में वज़ीरे आज़म व निस्टन चर्चिल और वज़ीरे ख़ारजा जेम्ज़ बिल्फ़ोर्ड का नाम नुमायां है। बरतानवी लार्डज़ की एक तवील फ़ेहरिस्त है जो "बिरादरी" कारकुन बनकर दज्जाली नफ़रत अंगेज़ रियासत के लिये दानिस्ता या नादानिस्ता बुन्याद रखते गए।

इज्तिमाई आबादी से इज्तिमाई बरबादी तकः

इस नई शिनाख़्त और गिरोह में शामिल होने वाले लोग मुआशरे के सर बरआवर्दा लोग थे। मुआशरे में उनकी इज़्ज़त और मक़ाम ने फ़िरी मैसन की क़द्र व क़ीमत में इज़ाफ़ा किया। और वह इस क़ाबिल होते चले गए कि "यरोशलम वापसी के सफ़र" का फिर से आग़ाज़ करें और मुस्तक़बिल की दुनिया के अज़ीम तरीन सानहे "तीसरी जंगे अज़ीम" की बुन्याद रख सकें। बरतानवी शाही ख़ानदान में असर व रुसूख़ हासिल करने, बरतानवी जम्हूरी हुक्मरानों को बस में करने और यहूदी सरमाए से बरतानवी मक़रूज़ रियासत का भरम रखने के एवज़ क़दीम टिम्पलर्ज़ और जदीद फ़िरी मैसन ने यहूद की दज्जाली बरआवरी के लिये "सलतनते उज़्मा" बरतानिया और इसके "शाही ताज" को बेदरेग़ इस्तेमाल किया......अंग्रेज़

जनरल ऐलन बी के हाथों फ़लस्तीन को ख़िलाफ़ते उस्मानिया से छीनने से लेकर इस्राईल के क़्याम के एलान तक बरतानिया को इस्तेमाल करने के हवाले से फ़िरी मैसन की कामियाबी के दावों की तवील तारीख़ है। यहूदी ज़माअ़ अर्ज़े मुक़द्दसम में दज्जाली रियासत के क़्याम को अपनी सबसे बड़ी कामियाबी समझते हैं लेकिन वह जैसे जैसे इस रियासत को अज़ीम से अज़ीमतर बनाने का ख़्वाब पूरा कर रहे हैं वैसे वैसे वह अपने मन्तक़ी अंजाम के क़रीब होते जा रहे हैं। इस्राईल की नो तामीरशुदा, बस्तियों में उनकी इज्तिमाई आबादी इंशा अल्लाह उनकी इज्तिमाई बर्बादी पर ख़त्म होगी। उनकी यह बर्बादी सिर्फ़ "दज्जाली रियासत" का ही इख़्तिमाम न होगा बल्कि दुनिया से शर और फ़साद के मुकम्मल ख़ातिमे के नवीद भी होगा।

खुशक़िस्मत हैं वह लोग जो उस ज़माने में ज़िंदा होंगे और तौफ़ीक़े इलाही से "आलमी दज्जाली रियासत" के मंसूबे को नाकाम बनाते हुए "आलमी इस्लामी ख़िलाफ़त" क़ाइम करेंगे। ऐसी ख़िलाफ़त जो काइनात में बसने वाले हर ज़ी रूह के लिये सायए रहमत होगी।

रहमानी ख़िलाफ़त से दज्जाली रियासत तक

बिरादरे इस्लामी मुल्क "तुर्की" दुनिया का वह मुल्क है जो दुनिया के दो मशहूर बर्रे आज़मों के संगम पर वाक़ेअ़ है। यह दोनों बर्रे आज़म रंग व नस्ल के एतिबार से ही नहीं, मज़हब व नज़रिये के एतिबार से भी एक दूसरे के मुतज़ाद और बाहमी तारीख़ी जदलियत के हामिल रहे हैं। इसका जुग़राफ़ियाई महल्ले वक़ूअ़ ऐसा है कि यहां से ईसाइयत का रूहानी मर्कज़ और मज़बूत अस्करी क़िला क़ुस्तुन्तुनिया था। इसलिये इसके फ़ातिहीन के लिये जनाबे नबी करीम सल्ल0 ने अज़ीम बशारतें सुनाई थीं। इस शहर की फ़तह का वाक़िआ जितना अज़ीमुश्शान था, उसके सुकूत और ख़िलाफ़ते उस्मानिया के इन्हिदाम का हादसा उतना ही दिलदोज़ और अंदोहनाक था। 1288 ई0 के एक मुबारक दिन में यहां रहमानी रियासत ख़िलाफ़ते उस्मानिया की बुन्याद पड़ी थी औ 1924 ई0 के एक नामुबारक दिन में ख़िलाफ़त के सुकूत और दज्जाली रियासत के रास्ते में हाइल रुकावट के ख़ातिमे का एलान हुआ। आइये! इस आग़ाज़ और इख़्तिमाम, इस तज़ाद और तक़ाबुल पर एक नज़र डालते हैं कि मुस्तक़बिल करीब में फिर यही कहानी मअ़कूस अंदाज़ में किर्दार के इख़्तिलाफ़ के साथ दुहराई जाने वाली है।

मौजूदा जम्हूरिया, ख़िलाफ़ते उस्मानिया (1288 ई0-1924 ई0) की जानशीन रियासत है। ख़िलाफ़ते उस्मानिया इस रूए ज़मीन पर आख़िरी ख़िलाफ़त थी। इसके सुकूत से इस ज़मीन पर इलाही रियासत और इलाही निज़ाम वाली मम्लिकत का इख़्तिमाम हुआ और दज्जाली रियासत के क़्याम का आग़ाज़ हुआ। यह आग़ाज़ तकमील से पहले इंशा अल्लाह इख़्तिमाम को पहुंचेगा और फिर अल्लाह के

हुक्म से अल्लाह के मुकर्रब बंदे पूरी दुनिया में आलमी इलाही खिलाफ़त क़ाइम करेंगे जो सहीह मअ़नों में रहमानी रियासत होगी। खिलाफ़ते उस्मानियां, खिलाफ़ते राशिदा (232 ई0-661 ई0), खिलाफ़ते बनू उमय्या मश्रिक़ (661 ई0-750 ई0) खिलाफ़ते बनू उमय्या मग़रिब (756 ई0-1492 ई0) और खिलाफ़ते अब्बासिया (750 ई0-1285 ई0) के बाद क़ाइम हुई थी। खिलाफ़ते उस्मानिया को यह मुन्फ़िरद एज़ाज़ मिला कि उसने 1453 ई0 में क़ुस्तुन्तुनिया (सलतनते रूम का दारुल हुकूमत और ईसाइयत का दिल) को फ़तह किया और इस्लामी सलतनत की सरहदें यूरप के अहम इलाक़ों तक फैला दें। सलतनते उस्मानिया के उरूज के ज़माने में इसमें मौजूदा तुर्की के अलावा अफ़्रीक़ा के बअ़ज़ इलाक़े (मिस्र, तराबिलस), जज़ीरा नुमाए अरब यअ़नी हरमैन व हिजाज़, यूरप में से आस्ट्रिया और हंगरी तक के इलाक़े और इलाक़ा बुल्क़ान का बेशतर हिस्सा (सर्बिया, क्रोशिया, बोसनिया हर्ज़ीगुवैना, मक़्दूनिया, मौंटी निगरो, अलबानिया, बुलग़ारिया, रूमानिया और यूनान) शामिल था। गोया वह तीन बर्रे आज़मों ऐशिया, अफ़्रीक़ा और यूरप के अहम खित्तों पर बयक वक़्त हुक्मरान थी। इस कमाल के बाद ज़वाल ने शामते आमाल के नाम से हमारी राह देख ली। अब हम ज़वाल की आखिरी हद से गुज़र रहे हैं और जब अपने आंसूओं और खून से अपने गुनाहों को धो डालेंगे तो इंशा अल्लाह दोबारा उरूज हमारा मुक़द्दर होगा और वह ऐसा ताबनाक होगा कि तारीखे इंसानी ने इसकी मिसाल न देखी होगी।

यूरपी मुमालिक इस अज़ीम इस्लामी सलतनत को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे जो उनके क़ल्ब में हिलाल वाला परचम बुलंद किये हुए थी? उनकी हमदर्दियां बुल्क़ान के ईसाइयों के साथ थीं और वह उन्हें तुर्कों के खिलाफ़ बग़ावत पर उक्साते रहते थे। यूरप ने यहां

लिसानियत और कौमियत का आज़मूदा हथियार इस्तेमाल किया। दानिशवरों और शाइरों ने पहले यूनानियों को उनके माज़ी की याद दिलाकर उन्हें तुर्कों के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा किया। यहीं से "मशरिक़ी मस्ला" (Eastern Question) पैदा हुआ और यूरपी मुमालिक की मुदाख़िलत से यूनान मार्च 1829 ई० में आज़ादी हासिल करने में कामियाब हो गया। यूनान के बाद दूसरी यूरपी रियासतें भी आज़ादी के लिये हाथ पांव मारने लगीं। साथ साथ सलतनते उस्मानिया के ख़िलाफ़ यूरपी ताक़तों और सहीवनी मंसूबा साज़ों की मुसलसल रेशा दवानियों के नतीजा में कई दूसरे अफ़्रीकी और यूरपी इलाके तुर्कों के कब्ज़े से निकलने लगे। 1830 ई० में फ़्रांस ने अलजज़ाइर पर और 1882 ई० में बर्तानिया ने मिस्र पर क़ब्ज़ा कर लिया। इटली ने 1911 ई० में तराबिलस, (मौजूदा लीबिया) का इलाक़ा छीन लिया। इसके बाद मग़रिबी मुअर्रिख़ीन ने तुर्की का हौसला पस्त करने के लिये "मर्द बीमार" की इस्तिलाह ईजाद कर ली। उस ज़माने में सलतनते उस्मानिया की अंदरूनी हालत बड़ी नाज़ुक थी। फ़्रीमैसन हर तरफ़ से गर्म थे। क़दामत पसंद और तरक़्क़ी पसंद सियासतदान एक दूसरे से दस्त व गिरेबां थे। अप्रेल 1909 ई० में फ़्रीमैसन के तैयार कर्दा तरक़्क़ी पसंद कर्दा (बाग़ी कर्दा) ने सुलतान अब्दुल हमीद को तख़्त व ताज से मअ़ज़ूल करके सुलतान मुहम्मद ख़ामस को तख़्ते ख़िलाफ़त पर बिठा दिया। उसकी पोज़ीशन "शाह व शतरंज" से ज़्यादा न थी।

अक्तूबर 1912 ई० में रूस के उक्साने पर बुल्क़ानी रियासतों ने तुर्की के टुक्ड़े टुक्ड़े करने के लिये उसके ख़िलाफ़ एलाने जंग कर दिया। इस जंग में तुर्की को बेपानह जानी और माली नुक़्सान हुआ। उसके मुतअद्दद इलाक़ों पर ईसाइयों ने क़ब्ज़ा जमा कर लूटमार और

कत्ले आम का बाज़ार गर्म कर दिया। 30 मई 1913 ई0 को लंदन में फ़रीक़ैन के दर्मियान सुलह हो गई, लेकिन इस सुलहनामे की रू से सलतनते उस्मानिया अपने कई इलाक़ों और जज़ीरों की मिलकियत से दस्तबरदार हो गई।

28 जुलाई 1914 ई0 को पहली आलमी जंग शुरू हुई। तुर्की, जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी और बुलग़ारिया का हलीफ़ बन गया। दूसरी तरफ़ बर्तानिया, फ़्रांस, रूस, जापान और अमरीका थे। तुर्की को उम्मीद थी कि फ़तह के बाद जर्मन हुकूमत रूसी तुर्किस्तान, मिस्र, लीबिया, तियूनस और अलजज़ाइर को इत्तिहादी ताक़तों से छीन कर, तुर्की के हवाले कर देगी। उसे यह भी तवक़्क़ो थी कि मग़रिबी मक़्बूज़ात के मुसलमान तुर्की के हक़ में बग़ावत कर देंगे और सलतनत के अरब मुसलमान तुर्कों से पूरा पूरा तआवुन करेंगे लेकिन तुर्की की यह ख़्वाहिशें पूरी न हुई। जंग शुरू होते ही मशहूर अंग्रेज़ शातिर कर्नल लारंस हिजाज़ मुक़द्दस (सऊदी अरब) पहुंच गया और हुसैन (शरीफ़े मक्का) और उसके बेटों अमीर फ़ैसल और अमीर अब्दुल्लाह को तुर्कों के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आसाने लगा। बरतानवी हुकूमत ने "शरीफ़े मक्का" से वादा किया कि तुर्की में ख़िलाफ़त के ख़ातमे के बाद उसे ख़लीफ़ा तसलीम कर लेगी और उसके फ़रजंद फ़ैसल को शाम का और अब्दुल्लाह को फ़लस्तीन व उर्दुन का बादशाह बना देगी जबकि अंग्रेज़ ने किसी को ख़लीफ़ा तसलीम करना था न ख़िलाफ़त के इदारे को बाक़ी छोड़ना था। उसे तो इस्लाम की सरबुलंदी की हर अलामत से दुशमनी थी। एक अंग्रेज़ मुसन्निफ़ा ने अपनी किताब "जज़ीरतुल अरब" में साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में लिखा है:

"बरतानिया और इस्लाम दोनों इस दुनिया में ज़िंदा नहीं

रह सकते।"

उसका कहना थाः "दो कुव्वतें दुनिया में बरतरी के लिये कोशां हैं: एक अंग्रेज़ और दूसरी मुसलमान। दो ज़बानें दुनिया में छाना चाहती हैं: अंग्रेज़ी और अरबी और इन दो में से एक को फ़ना होना चाहिये।"

इससे मालूम होता है कि अरबी की तरवीज कितनी ज़रूरी और उसके ज़रीए इस्लामियत की तबलीग़ कितनी मुफ़ीद है।

उसने लिखा थाः "जब तक इस्लाम की मरकज़ियत न ख़त्म हो और जज़ीरतुल अरब उसकी मरकज़ियत से अलाहिदा करके टुक्ड़े टुक्ड़े न कर दिया जाए इस्लाम की ताक़त का ख़ातमा नहीं हो सकता।"

उसने बाद में दुनिया को यह भी बताया थाः "अंग्रेज़ कीमियावी तरीक़ों से अपने चमड़े गंदुमी रंग में रंग कर ख़िलाफ़त के ज़ेरे इंतेज़ाम इलाके की हुदूद में वहां के मदरसों और मकानों में रहते थे ताकि अरबों की कमज़ोरियों को मालूम कर सकें और उनको तुर्कों के ख़िलाफ़ उक्सा सकें। अर्सा की मशक़्क़त, रियाज़त और क़ुर्बानी का नतीजा था कि मशहूर फ़िरी मैसन एजंट कर्नल लारंस को वह मवाद मिला कि जिससे वह अरबी लिबास पहन कर जंगे अज़ीम अव्वल (1914-19) के दौरान अरबों से तुर्कों को क़त्ल कराता था और हर तुर्क के क़त्ल पर इन्आम मुक़र्रर कर रखा था। ख़ुद कर्नल लारंस ने जो तकालीफ़ बर्दाश्त कीं और जिस तरह जान पर खेल कर तमाशा किया वह एक अजीब दास्तान है।"

वसते जून 1916 ई० में अरब मुसलमानों ने नादानी का मुज़ाहिरा करते हुए हुसैन (शरीफ़े मक्का) की सरबराही में अपने इक़्तिदारे आला और ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी और

अंग्रेज़ों की मदद से हिजाज़े मुक़द्दस में अपनी हुकूमत क़ाइम कर ली। बरतानिया की यह हिक्मते अमली दिलचस्प होने के साथ साथ सबक़ आमेज़ भी है जिसके ज़रीए उसने मुसलमानों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया। इस बग़ावत से क़ब्ल जंगे अज़ीम में तुर्कों ने जिस जांबाज़ी व जवां मर्दी का सबूत दिया था वह उनकी शुजाआना कार्रवाइयों में भी अदीमुल मिसाल है, लेकिन अरबों की नासमझी और फ़्री मैसन के हाथों बग़ावत से तुर्कों को शिकस्त दर शिकस्त का सामना करना पड़ा और देखते ही देखते तमाम अरब इलाक़े इराक़, मिस्र, शाम, उर्दुन और फ़लस्तीन इत्तिहादियों के ज़ेरे तसल्लुत आ गए। 30 अक्तूबर 1918 ई0 को मडलास के मक़ाम पर इल्तवाए जंग के सिलसिले में बातचीत का आग़ाज़ हुआ। बिलआख़िर 14 मई0 1920 ई0 को तुर्की के साथ नाम निहाद सुलह की यक्तरफ़ा शराइत "मुआहिदा स्यूरे" के नाम से मशहूर कर दी गईं।

इस जाबिराना सुलहनामे की रू से तुर्की को तमाम अरब इलाक़ों से महरूम कर दिया गया। हिजाज़ मुक़द्दस में शरीफ़े मक्का की ख़ुद मुख़्तार हुकूमत को तसलीम कर लिया गया। दुर्रा दानियाल और तमाम दीगर अहम दुर्रे बैनुल अक़्वामी कंट्रोल में दे दिये गये। मुख़्तसर यह कि इत्तिहादियों ने तुर्कों की क़ौमी आज़ादी को ख़त्म करने का तहय्या कर लिया और तुर्की इतना बेबस था कि उसने 10 अगस्त 1920 ई0 को इस मुआहिदे की तौसीक़ कर दी। दज्जाली क़ुव्वतों को ख़तरा था कि ईसाइयत के दिल में ख़िलाफ़त क़ाइम करने वाली इस रियासत के आसारे क़दीमा में भी इतना दम ख़म है कि यह फिर से नश्अते सानिया की तहरीक शुरू कर सकती है। इसके सद्देबाब के लिये फ़ौज को जम्हूरियत का निगरान बनाया गया।

मुआसिर दुनिया में तुर्की के सियासी निज़ाम की यह एक मुंफ़रिद ख़ुसूसियत है कि उसमें सियासी इंतिशार और जम्हूरी हंगामों पर क़ाबू पाने के लिये मुसल्लह अफ़वाज को मुस्तक़िल तौर पर आईनी किर्दार दिया गया है। तुर्की की फ़ौज न सिर्फ़ मुल्की सलामत व सालिमियत की ज़ामिन, बल्कि कमाल अता तुर्क की नाम निहाद इस्लाहात और मस्ख़शुदा तहज़ीबी वर्से की भी मुहाफ़िज़ है। चुनांचे फ़ौज की पेशावाराना तरबियत मख़्सूस ग़ैर मज़हबी (सैक्यूलर) माहौल में की जाती है जिसके नतीजे में फ़ौज का मज्मूई मिज़ाज सैक्यूलर हो गया है और वह अता तुर्क की मग़रिबी तर्ज़ की इस्लाहात को हक़ीक़ी रूह के मुताबिक़ नाफ़िज़ करने के लिये कोशां रहती है। इस मक़्सद के हुसूल के लिये फ़ौज को 1960 ई0 और 1980 ई0 में सिविल हुकूमत को बरतरफ़ करना पड़ा। अलावा अज़ीं 1961 ई0 और 1982 ई0 के आईन के तहत क़ौमी सलामती को नस्ल की तशकील भी इसी सिलसिले की कड़ी है। फ़ौजी सर्विस को क़ौमी ख़िदमत क़रार देकर हर तुर्क शहरी पर 18 माह के अर्से पर मुहीत लाज़मी फ़ौजी तरबियत की पाबंदी लगाई गई है। इस तरह शहरी कुछ अर्सा फ़ौज से मुंसलिक रहता है। इस इक़्दाम का मक़्सद यह है कि हर तुर्की शहरी सैक्यूलर मिज़ाज अपनाए और सैक्यूलर निज़ाम की मुहाफ़िज़ फ़ौज से ज़िंदगी भर हम आहंग रहे।

तुर्की के सियासी निज़ाम में फ़ौज का आईनी किर्दार मुतअय्यन करने से सिविल मुआमलात में फ़ौज का असर व रसूख़ बहुत बढ़ गया है। उससे एक तरफ़ फ़ौज की पेशवराना कारकर्दगी मुतअस्सिर हुई है तो दूसरी तरफ़ फ़ौज का सैक्यूलर मिज़ाज अवामी ख़्वाहिशात के सामने रुकावट बन गया है। अब यह फ़ौज पर मुन्हसिर है कि वह जिसकी चाहे उसकी हिमायत करे, ख़्वाह अवाम उसे पसंद करें

या ना करें। तुर्की के सियासी निज़ाम में फौज का आईनी किर्दार फ़िरी मैसन से ज़हन लेने वाले फ़ौजी हुक्मरानों के ज़हन ही की इख़्तिराअ़ है। तुर्की में इसे बदनाम ज़माना फ़िरी मैसन जनरल जमाल गिरसल ने मुतआरिफ़ कराया था। तुर्की में फ़ौज के आईनी किर्दार के तअय्युन के बाद फ़ौज को अब मार्शल ला लगाने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही क्योंकि वह खुद ही "बादशाह गर" बन गई है और वह लाज़िमी तौर पर उस्मानी सलातीन की जगह लेने के लिये ऐसे बादशाहों का इंतिख़ाब करती है जो किसी हालत में तुर्की को जो दुनिया के अहम तरीन जुग़राफ़ियाई ख़ित्ते में वाक़ेअ़ है, इस्लाम की तरफ़ अल्लाह और उसके दीन की तरफ़ यअ़नी रहमानी रियासत वाले निज़ाम की तरफ़ न जाने दे। यह सारा कारनामा अंजाम देने के लिये सहीवनी ताक़तों ने तुर्कों के जिस बदतरीन दुशमन का इंतिख़ाब किया उसे "अतातुर्क" (तुर्कों का बाप) का लक़ब दिया जबकि वह क़ौमे यहूद का अदना गुलाम था। जी हां! वह कोई और नहीं, फ़िरी मैसन का तराशा हुआ फ़न पारा मुस्तफ़ा कमाल था।

मुस्तफ़ा कमाल का वालिद सालूनीका (यूरपी तुर्की) में "चुंगी" का मुहर्रिर था। बाद अज़ां लकड़ी का कारोबार करने लगा। मुस्तफ़ा कमाल अभी कम्सिन था कि वालिद का साया सर से उठ गया। वालिदा बहुत दींनदार लेकिन निहायत ग़रीब ख़ातून थीं। उसने मुस्तफ़ा कमाल को एक दीनी मदरसे में दाख़िल करा दिया लेकिन मुस्तफ़ा कमाल को बचपन ही से फ़ौजी अफ़सर बनने का शौक़ था। चुनांचे चंद बरसों बाद वह खुद एक मिलिट्री स्कूल में दाख़िल हो गया। स्कूल की तालीम करने के बाद कुस्तुन्तुनिया (इस्तन्बूल) के मिलिट्री कालिज में चला गया और 1904 ई० में कालिज से लेफ़्टिनेंट बन कर निकला। फ़ौजी मुलाज़मत के सिलसिले में उसको शाम,

फ़लस्तीन, मिस्र और अलबानिया वग़ैरा में घूमने का मौक़ा मिला। यहां वह बिरादरी के "बिग मास्टर" की नज़र में आ गया। चुनांचे उसके "अंजुमने इत्तिहाद व तरक़्क़ी" के इंक़िलाब पसंद मिम्बरों से तअल्लुक़ात क़ाइम हो गये। यह अंजुमन जैसा कि नाम से ज़ाहिर से सहीवनी दिमाग़ों ने तख़्लीक़ की थी। नौजवान और तालीम याफ़्ता तुर्कों ने सुलतान अब्दुल हमीद ख़ान सानी से नजात हासिल करने के लिये क़ाइम कर रखी थी। अप्रेल 1909 ई0 में तुर्की फ़ौज ने अलमे बग़ावत बुलंद किया और मामूली कशमकश के बाद सुलतान को तख़्त से उतार दिया गया।

मुस्तफ़ा कमाल ने इक़्तिदार में आते ही तुर्की को "तरक़्क़ी पसंद" मुल्क बनाने के लिये हर शोबए ज़िंदगी में मग़रिबी तर्ज़ की जदीद इस्लाहात राइज कीं। उस शख़्स ने छः बरसों के मुख़्तसर अर्से में फ़िरी मैसन दानिशवरों की मदद से तुर्की के समाजी, क़ानूनी, तालीमी और सियासी निज़ाम को मुकम्मल तौर पर बदल दिया। अता तुर्क की इस्लाहात की बुन्याद उसके दर्जे ज़ेल छः तागूती उसूल थे जिनमें से हर एक इस्तिलाह पुकार पुकार कर अपने वज़अ़ करने वाले दिमाग़ों की निशानदही कर रही है कि वह कौन थे और क्या करना चाहते थे? वह छः पुरफ़रेब उसूल यह थेः

1-जम्हूरियत पसंदी — Republicanism
2-क़ौम परस्ती — Nationalism
3-अवामियत पसंदी — Populism
4-लादीनियत — Secularism
5-इस्लाह परस्ती — Reformism
6-मम्लिकती इश्तिराकियत — Etatisme (Fr) Statism

यहूदी गुमाशते मुस्तफ़ा कमाल ने तुर्की को यहूदी सपनों के

मुताबिक़ मग़रिबियत के रंग में रंगने, रहमानी निज़ाम के ख़ातमे और दज्जाली निज़ाम की सरबुलंदी के लिये 4 मार्च 1924 ई० को ख़िलाफ़त का बाबरकत उहदा, जो मुसलमानों के लिये ठंडा साया और रहमत का सायबान था, ख़त्म कर दिया। इसके एक माह बाद क़ैवी असम्बली ने दीवानी मुआमलात में शरई अदालतों के इख़्तियारात को कुल्लियतन ख़त्म कर दिया। इसके साथ ही वज़ारते औक़ाफ़ और मज़हबी तालीमी दर्सगाहों को ख़त्म कर दिया। उलमा और तलबा को मुंतशिर करते हुए मदरसों और ख़ानक़ाहों को बंद कर दिया गया। शैख़ुल इस्लाम का उहदा पहले ही 1922 ई० में ख़त्म किया जा चुका था। मज़हबी मुआमलात से निपटने के लिये इख़्तियारात से महरूम और इस्लामी रूह से आरी "मज़हबी उमूर का बोर्ड" और "मत्रूका इमारात का बोर्ड" क़ाइम किया गया। 24 अप्रेल 1924 ई० को तुर्की का नया आईन मंज़ूर किया गया। आईन की दफ़्आ 2 के तिहत तुर्की को एक नेशनलिस्ट रीपब्लिक, सैकूलर और सोशल रियासत क़रार दिया गया और इक़्तिदारे आला (Sovereignty) का सरचशमा तुर्क क़ौम को माना गया। इस तरह अल्लाह तआला की हाकिमियत के मुक़ाबले में उस इंसान को हाकिमियत का इख़्तियार दिया गया जो दूसरे इंसानों के हाथों में खेलते हुए यह तक नहीं समझता कि वह खिलाड़ी नहीं खिलौना है।

तुर्की में सैकूलर तर्ज़े ज़िंदगी को फ़रोग़ देने के लिये शरई क़वानीन की जगह यूरप के निज़ामे हाए क़ानून को अपनाया गया। स्विटज़रलैंड के नमूने पर सिविल ज़ाब्ता क़वानीन, इतालवी नमूने पर फ़ौजदारी ज़ाब्ता क़वानीन और जर्मन नमूने पर तिजारती क़वानीन राइज किये गए। "मज़हबी इस्लाहात" का नाम निहाद उन्वान देकर सूफ़ियाए किराम के हल्क़ों और उनकी ख़ानक़ाहों पर पाबंदी लगा दी

गई। रूमी और हिज्री कैलन्डर की जगह ईसवी कैलंडर राइज किया गया। पर्दे और तअद्दुद अज़्वाज (एक से ज़्यादा शादियों) को क़ानूनन मम्नूअ़ क़रार दिया गया। औरतों को मर्दों के मसावी हुक़ूक़ दिये गए जो महज़ ख़्याली और फ़र्ज़ी थे। उन पर तमाम मुलाज़मतों के दरवाज़े खोल दिये गये, सिर्फ़ घर का दरवाज़ा बंद कर दिया गया। 1934 ई0 में एक आईनी तर्मीम के ज़रीए औरतों को राएदही का हक़ दिया गया और इसके फ़ौरन बाद बहुत सी औरतें असम्बली की मिम्बर मुंतख़ब हुईं।

तुर्क क़ौम परस्ती (तुर्कियत) के जज़्बे को उभारने के लिये भी मुतअद्दद इक़्दामात किये गए। मसलन तुर्की ज़बान से अरबी और फ़ारसी के हुरूफ़ को ख़ारिज कर दिया गया और इसके लिये अरबी रस्मुल ख़त के बजाए लातीनी रस्मुल ख़त किया गया। हुकूमत ने तुर्क ज़बान को तरक़्क़ी देने के लिये ज़बरदस्त तहरीक चलाई और उसकी तरक़्क़ी व तरवीज का नया दौर शुरू हुआ। मस्जिदों और दीगर मज़हबी इदारों में अरबी ज़बान का इस्तेमाल मम्नूअ़ क़रार दिया गया हत्ता कि अज़ान, नमाज़ और क़ुर्आन की तिलावत के लिये भी अरबी ज़बान का इस्तेमाल नाजाइज़ ठहराया गया। इन जुग़राफ़ियाई नामों को जिनसे बैरूनी अल्फ़ाज़ की बू (या ख़ुशबू) आती थी, ख़ालिस तुर्की नामों से तबदील कर दिया गया। क़ुस्तुन्तुनिया का नाम इस्तन्बूल रखा गया, ऐडरिया नोपिल को "इदाना" और समरना को इज़्मीर में तबदील किया गया। लोगों को हुक्म दिया गया कि वह अपने नाम ख़ालिस तुर्की में रखें। चुनांचे अस्मत पाशा ने अस्मत अनूनू और मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने मुस्तफ़ा कमाल का नाम इख़्तियार किया। ग़ाज़ी, पाशा और "बे" के पुराने ख़िताबात जो दौरे ख़िलाफ़त की यादगार थे, ख़त्म कर दिये गए।

इस्तंबूल के बजाए अन्क़रा को दारुल हुकूमत क़रार दिया गया। नए दारुल हुकूमत में जदीद तर्ज़ की इमारतें तामीर की गई और शहर के नए हिस्से में कोई मस्जिद तामीर नहीं होने दी गई। यूरपी क़ौमों को अंधी तक़्लीद में मुल्क भर में शबीना क्लबों, थियेटरों और नाच घरों को जाल बिछा दिया गया। इस तरह इस्लामी मुआशरे की जगह दज्जाली मुआशरे ने ले ली। जो क़ौम दुनिया के मज़बूत तरीन नज़रिये की तर्जुमान और आलमे इस्लाम की नुमाईंदा थी वह क़ौमियत के नाम पर ऐसी पस्ती में चली गई कि ख़ुद उसे भी शुऊर नहीं कि उससे क्या छीन कर क्या थमा दिया गया है। पूरी इस्लामी दुनिया तुर्कों को अपना क़ाइद और महबूब मानती थी, इस्लामी उख़ुवत की जगह क़ौमियत के चक्कर में पड़ते ही तुर्की दुनिया की नज़रों से गिर गया। पूरी दुनिया के मुसलमान तुर्कों के साथ जीने और उनके साथ मरने पर फ़ख़्र करते थे। ख़िलाफ़त की जगह जम्हूरियत के आते ही तुर्कों से यह एज़ाज़ जाता रहा। हमारे हां भी "इस्लामियत" की जगह पाकिस्तानियत ले रही है, जबकि जिन लोगों ने यह नारा (सबसे पहले पाकिस्तान) लगाया था, ख़ुद उनमें पाकिस्तानियत नाम की कोई चीज़ न कभी थी और न आज है।

एक अंग्रेज मुदब्बिर और सियासतदान ग्लैड स्टोन (Gladstone) ने क़ौम परस्ती में मुब्तला तुर्क क़ौम की हालते ज़ार पर तब्सिरा करते हुए लिखा है: "इस मुल्क या क़ौम की सियाह बख़्ती का कोई अंदाज़ा नहीं कर सकता जो एक दम अपने माज़ी की रिवायात से अपना तअल्लुक़ मुन्क़तअ़ कर ले।"

तुर्की, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान इसी ग़लती का शिकार हुए। मिस्र ने भी यूरप की अंधी तक़्लीद करते हुए मिस्री क़ौमियत का नारा लगाया मगर हर हालत में इन इस्लामिक मुमालिक को

ख़ौफ़नाक नताइज भुगतने पड़े। तरक़्क़ी का राज़ लिबास में नहीं होता। पांच कलियों वाली टोपी की जगह अंग्रेज़ी हैट सर पर रख लेने से अंग्रेज़ की चुस्ती, फ़र्ज़ शनासी और हुब्बुल वतनी की सिफ़ात रासिख़ नहीं हो जातीं। तरक़्क़ी का राज़ पाकीज़ा अख़्लाक़, फ़ौजी तरबियत और किसी मुतहर्रिक नज़रिया को अपनाने में होता है। इस राज़ को अपनी बसीरत के फ़ुक़दान के बाइस अमानुल्लाह ख़ान, रज़ा शाह पहलवी और मुस्तफ़ा कमाल न समझ सके।

इस्लाम चूंकि ग़ालिब रहने के लिये आया है, इसलिये आलमी सहीवनियत जो इस्लामी ख़िलाफ़त की जगह इस्राईली रियासत को बरतर देखना चाहती है, की तमाम तर कोशिशों के बावजूद तुर्की में इस्लाम की तरफ़ रुजूअ़ की तहरीक उलमा और सूफ़िया की ज़ेरे सरपरस्ती चल रही है और जब आख़िरी दिनों में आख़िरी मअ़रके का एक अहम राउंड एशिया यूरप के इस संगम यअ़नी अर्ज़े इस्लाम और अर्ज़े ईसाइयत के इस मिलापी नुक्ते में लड़ा जाएगा तो तुर्की के मुसलमान इंशा अल्लाह काले झंडे वालों के साथ होंगे। वह इस ख़ित्ते में ईसाई इत्तिहादियों को क़िल्लते तादाद के बावजूद हैरत अंगेज़ और ज़बरदस्त शिकस्त देंगे और जब ईसाई अधमूए हो चुके होंगे तो इबलीस के बाद बदी का सबसे बड़ा अलमबरदार "दज्जाले अक्बर" ईसाइयों को शिकस्त ख़ुर्दा और मुसलमानों को थका मानिंद देखकर ख़ुरूज करेगा। यह वह लम्हा होगा जब दज्जाली कारिंदों और रहमानी मुजाहिदीन के दर्मियान फ़ैसलाकुन मअ़रके का आग़ाज़ हो जाएगा। अह्ले हक़ क़लील तादाद, क़लील वसाइल और बेशुमार आज़माइशों के बावजूद इस्तिक़ामत से डटे रहेंगे। उनके मुजाहिदे व जिहाद की बरकत और अल्लाह के फ़ज़्ल से तागूती क़ुव्वतों के मंसूबों में पलता दज्जाली रियासत का ख़्वाब ऐसा चकना चूर होगा कि इबलीस के

मानने वालों और उसकी मदद से दुनिया में शैतानी निज़ाम क़ाइम करने वालों के दिमाग़ से दुनिया पर हुकूमत का ख़्याल निकल जाएगा और मुत्तकी मुजाहिदीन की कुर्बानियों के जुलू से रहमानी रियासत का वह चमकता दमकता सूरज बरआमद होगा जिससे फूटने वाली अमन और खुशहाली की किरनें पूरी दुनिया को रौशन कर देंगी। इंशा अल्लाहुल अज़ीज़!

आलमी दज्जाली रियासत का ख़ाका

(पहली क़िस्त)

डाक्टर "जोन कोलिमैन" (पैदाइश 1935 ई0) बरतानिया की मशहूर इंटली जेंस एजेंसी "एम सिक्स" के साबिक़ आफ़िसर हैं। दो तवील अर्से तक दुनिया के नुमायां तरीन खुफ़िया इदारों में शुमार होने वाली इस सिक्रेट सर्विस के आला उहदेदार रहे। ख़ुद को तफ़वीज़ किये जाने वाली ख़िदमात की अदाइगी के दौरान उन्होंने महसूस किया कि अक्सर आलमी मुआमलात का पसमंज़र वह नहीं जो कि अर्ज़ के अक्सर बाशिंदे समझते हैं। ख़ुद बरतानिया जो आलमी बिरादरी का अहम रुक्न समझा जाता है, के अहम मुआमलात कोई नादीदा कुव्वत कंट्रोल करती है जो बरतानवी अवाम या ईसाई दुनिया के मफ़ादात के बजाए कुछ और न ज़िक्र किये जाने वाले मक़ासिद में दिलचस्पी रखती है। उन्हें यह चीज़ चौकांती और मुतअज्जब करती रही। इस नादीदा कुव्वत से मुतआरिफ़ होने और इसका सुराग़ लगाने की ख़्वाहिश ने उन्हें इतना बेचैन कर दिया कि उन्होंने मुआमलात को खोजी नज़रों से देखने और तन्क़ीदी निगाह से कुरेदने की आदत बना ली। उन्हें महसूस हुआ कि दुनिया में कुछ साज़िशी अनासिर ऐसे हैं जो किसी क़वी, इलाक़ाई या बैनुल अक़्वामी हुदूद को ख़ातिर में नहीं लाते। जो इतने ताक़तवर हैं कि तमाम मुल्कों के क़वानीन से बाला तर हैं और सियासत के अलावा तिजारत, सनअत, बैंकारी, इंशोरंस, मअ़दनियात हत्ता कि मंशियात के कारोबार तक पर कंट्रोल रखते हैं। यह लोग अपनी "बिरादरी के बड़ों" के अलावा किसी के सामने जवाबदेह नहीं हैं। इस बिरादरी के "दाना बुज़ुर्ग" (बिग बिरादर्ज़ या

ग्रेट मास्टर्ज़) खुद तो आलमी वाकिआत पर गिरफ़्त रखते हैं लेकिन सिवाए चंद लोगों के उनके वजूद से कोई बाख़बर नहीं। यह खुफ़िया निगरान, आलमी इदारों, गवर्नमेंट एजेन्सियों और बहुत सारी तहरीकों और तंज़ीमों के ज़रीए......जो उन्होंने परवान चढ़ाई हैं......दुनिया पर खास किस्म के दस्तूर की हुक्मरानी के ख़्वाहां हैं। इसके लिये वह फ़रेब देने या जबर करने से भी दरेग़ नहीं करते। उनके लिये कोई मज़हबी या अख़्लाकी क़दर, कोई कानूनी रिवायत या कोई इंसानी उसूल......ग़र्ज़ कि कोई चीज़ रुकावट नहीं। तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक हों या पसमांदा दुनिया, सब उनके लिये मुसख़्ख़र हैं। सब में उनके एजंट ज़िंदगी के अहम शोअ़बों में मौजूद हैं या मौजूद कर लिये जाते हैं। डाक्टर कोलिमैन ने इन सहूलतों के सबब जो उन्हें एक आलमी सतह की इंटली जेंस एजेंसी का आला उहदेदार होने की हैसियत से हासिल थीं, नीज़ अपने फ़ित्री तजस्सुस से मजबूर होकर वह मुआमलात को किसी और रुख़ से देखने लगे। वह रुख़ जो आम लोगों से पोशीदा है। रफ़्ता रफ़्ता वह जिस नतीजे तक पहुंचे उसको दुनिया तक......बिलखुसूस मग़रिबी दुनिया तक......पहुंचाने को उन्होंने अपना फ़र्ज़ समझा। इस एहसासे ज़िम्मादारी ने उनसे कई किताबें तसनीफ़ करवाईं जो पूरी दुनिया के लिये चश्मकुशा भी हैं और मालूमात अफ़्ज़ा भी। डाक्टर कोलिमैन का मक़्सद इन किताबों से जो भी रहा हो लेकिन उनकी तहरीरों से हकीकत की गिरह कुशाई और मुश्किलात के हल तक रसाई में बहरहाल मदद ली जा सकती है। यह तसनीफ़ात तहक़ीक़ व जुस्तजू का शाहकार और मुहतात अंदाज़ों की बुन्याद पर मुरत्तब की गई मालूमात का ज़ख़ीरा हैं। उनमें से चंद एक यह हैं:

(1) The Committee of 300 (दी कमेटी आफ 300)

(2) Beyond The Conspiracy (बियोन्ड दी कान्सपीरेसी) (3) The Club of Rome (दी क्लब आफ़ रोम) (4) What you should know about the United States Constitution and the Bill of Rights (आपको अमरीकी क़रारदाद के बारे में क्यों जानना चाहिये?) (5) Illumunation in America (इल्यूमीनिशत इन्न अमरीका) (6) Diplomacy by Deception (डिपलोमेसी बाइ डीसेप्शन) (7) One World order (वन वर्ल्ड आर्डर) (8) Nuclear Power: anathema to the New World order (न्यूकलियर पावरः अनाथिमा टू दा न्यू वर्ल्ड आर्डर) (9) Tavistock Institute of Human Relations (ट्वीस्टोक इंस्टीट्यूट आफ़ ह्यूमन रिलेशंस) (10) The Rothschild Dynasty (दी रोट्स चाइल्ड डाइनस्टी) (11) We Fight For Oil (वी फ़ाइट फ़ार आइल)

इन किताबों के ज़रीए उन्होंने मग़रिब को......बिलख़ुसूस अमरीका व बरतानिया के बाशिंदों को......बताया कि एक ख़ुफ़िया गुरूप हमारी ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ शोबों पर हावी है और अपनी मर्ज़ी से हमारे मुआमलात की डोर हिला रहा है। वह कहते हैं: "अगर्चे किसी नज़र न आने वाली कुव्वत का हमारी ज़िंदगी के हर शुअ़बा पर क़ाबू पाना हमारी समझ से बाहर है और हम में से अक्सरियत के लिये ऐसे किसी गुरूप का वजूद नामुम्किन लगता है......लेकिन यह एक हक़ीक़त है और अगर आप का भी यही ख़्याल है तो आप भी इस अक्सरियत में दाख़िल हैं।" अक्सर अमरीकी यह कहते हैं और ऐसा कहने में वह ख़ुद को हक़ बजानिब समझते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता। हमारे उसूल और क़वानीन, हमारी तहज़ीब और दस्तूर

उसकी इजाज़त नहीं देते। हमारी तरक़्क़ी याफ़्ता तहज़ीब को कोई हाई जेक नहीं कर सकता। डाक्टर कोलिमैन कहते हैं: "लेकिन......ऐसा हो रहा है। आप के उसूलों को पामाल करके ऐसा हो रहा है।"

डाक्टर कोलिमैन की किताब "Conspirators Hibrarchy" 1992 ई० में शाए हुई। यह कई बरसों की तहक़ीक़ का नतीजा थी। इसमें मुस्तक़बिल की दुनिया का जो नक़्शा खींचा गया था, इसमें से बहुत मनाज़िर सामने आ चुके हैं और "मुंतख़ब जम्हूरी हुकूमतों" की तरफ़ से क़ानूनी तौर पर "तालीम याफ़्ता जदीद दुनिया" के बासियों पर मुसल्लत किये जा चुके हैं। बहुत से अभी ज़ेरे तशकील हैं और अख़्लाक़ी इक़्तिदार, इंसानी हमदर्दी और सिहते आम्मा के नक़ाब में नमूदार होने वाले हैं। डाक्टर जान कोलिमैन ने कुर्रहये अर्ज़ पर आने वाले दिनों में जिस मुक़द्दर आलमी हुकूमत का नक़्शा खींचा है, इसके मुतअल्लिक़ उन्होंने यह नहीं बताया कि उसका "सरबराहे आज़म" कौन होगा? नीज़ इसके दस्तूर की बुन्याद क्या होगी? इस हुकूमत को किस नज़रिये के हामिल लोग चलाएंगे? इस पहलू पर उन्होंने कोई तब्सिरा नहीं किया। उन्होंने गिर्द व पेश का मुशाहदा करके दूर अंदेशी पर मुशतमिल अपनी मालूमात और अंदाज़ बयान किये हैं......लेकिन उन्होंने वहि की रहनुमाई से मदद नहीं ली, लिहाज़ा वह हक़ाइक़ व वाक़िआत की तह तक नहीं पहुंच सके।

(1) क़ौमे यहूद और उसकी "ख़ुफ़िया बिरादरी" का असल हदफ़।

(2) इस हदफ़ के हुसूल के लिये मौजूदा हिक्मते अमली।

(3) इस हिक्मते अमली के नतीजे में हासिल होने वाली दज्जाली रियासत का ख़ाका।

इस दर्दे सरी और मग़ज़ख़ोरी का एक ही मक़सद है कि अल्लाह के बंदों को अल्लाह की गुलामी की तरफ़ मुतवज्जो किया जाए और शैतान के इन चेलों की गुलामी से आज़ादी हासिल करने की हिम्मत पैदा की जाए। शैतान के इन नुमाइंदों को दुनिया भर में फैला हुआ नेटवर्क अपना काम तेज़ कर चुका है और बेतहाशा वसाइल इस्तेमाल करके सिर्फ़ आलमे इस्लाम नहीं पूरी बनी नौअ़ इंसान को गुमराह करके, शैतानी कामों में मुब्तला करके, शैतानी हुकूमत का गुलाम बनाना चाहता है। इन हालात में "रहमान" के शैदाइयों के लिये मुनासिब नहीं कि हाथ पर हाथ धरे बैठे रह जाएं। अल्लाह तआला से दुआ है कि तमाम इंसानियत को इन गुमराहियों और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ दे जिनका मंसूबा शैतान और उसकी नुमाइंदए इंसानी तागूती कुव्वतों ने बना लिया है और पूरी दुनिया को इसमें मुलव्विस करने के लिये आलमगीर मुहिम चला रहे हैं।

(1) आलमी ख़ुफ़िया बिरादरी का असल हद्फ़:

हतमी हद्फ़ जो "बिरादरी" हासिल करना चाहती है वह कुर्रहये अर्ज़ पर मुकम्मल और बिला शिर्कत ग़ैरे कुल्ली ग़ल्बा है। चाहे यह मआशी, तालीमी, ज़हनी, मज़हबी हो या फिर कुदरती या ज़ाती वसाइल हों। इस हद्फ़े हुसूल के लिये वह सदियों से काम कर रहे है। अपने हद्फ़ से यह लोग कितने दूर हैं? बदक़िस्मती से ज़्यादा दूर नहीं। हर दिन, हर घंटा, हर मिनट और हर लम्हा जो हम ज़ाए कर रहे हैं, इज्तिमाई मक़ासिद से हट कर अपने मामूली ज़ाती मफ़ादात के हुसूल में मसरूफ़ हैं, दरगुज़र के बजाए बाहमी इख़्तिलाफ़ात को हवा दे रहे हैं, यह लोग उल्टी गिनती में तेज़ी से "आलमी रियासत" के क़रीबतर होते जा रहे हैं।

यह किसी दीवाने की बड़ नहीं है न यह कोई ख़ब्तियों का

गिरोह है जो महज़ ख़्याली पुलाओ पका कर पूरी दुनिया पर ग़ल्बा हासिल करने की कोशिश कर रहा है। नहीं! यह इंतिहाई ज़ेरक, तालीम याफ़्ता, मंसूबा साज़ तरक़्क़ी याफ़्ता लोगों का एक नेटवर्क है। इनके पास ज़्यादा से ज़्यादा वह वसाइल हैं जिनके ज़रीए वह हमारी कमज़ोरियों को इस्तेमाल करते हैं। जब भी हम सिराते मुस्तक़ीम से बहक जाते हैं, उनके जाल में फंस जाते हैं। उन्होंने क़ौमों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ात तख़्लीक़ किये हैं और उन्हें बरक़रार रखा है ताकि जंगें बरपा कर सकें। इनके नतीजे में मुतअस्सिरा मुमालिक उन लोगों का अस्लहा, क़र्ज़ और मिलने वाली मदद इस्तेमाल कर रहे हैं। इस तरह यह क़ौमें और मुल्क ख़ुद को "बिरादरी" के हाथों मफ़लूज कर रहे हैं। दूसरी जंगे अज़ीम ने न सिर्फ़ "बिरादरी" को आधी से ज़्यादा दुनिया मक़रूज़ करने में मदद दी बल्कि यह बनी नोअ़ इंसान को दो तरह के इक़्तिसादी निज़ामों में तक़सीम भी कर गई। यह निज़ाम थे इश्तिराकियत और सरमायादारी। दोनों तरफ़ यहूद थे और ऊंट जिस करवट बैठता, फ़ाएदा यहूद को ही होना था। इन निज़ामों के बरपा करने से नज़रियाती तख़्रीब के अलावा इक़्तिसादी ग़ल्बा भी यहूद को मक़्सूद था।

कितनी दिलचस्प बात है? बिरादरी इस अंदाज़ में दोनों फ़रीक़ों का शिकार करती है। दोनों को अपनी गिरफ़्त में रखती है। दोनों तरफ़ के लोगों को महसूस होता है वह इंक़लाब ला रहे हैं। वह आज़ादी की तरफ़ बढ़ रहे हैं। जबकि वह यहूद की ग़ुलामी के मराहिल तै कर रहे होते हैं। नज़रियाती ग़ुलामी, इक़्तिसादी ग़ुलामी और बिलआख़िर कुल्लियती ग़ुलामी। यह है इंतिख़ाब और यह है इंतिख़ाब की आज़ादी और यह है जम्हूरियत। इन मुतहारिब निज़ामों

का बरपा करना एक आलमी हुकूमत की तशकील की तरफ़ अहम क़दम था। इसे तीन मरहलों में मुकम्मल किया जाना था:

(1) क़ौमी मरहला: क़ौमी मअ़शियतों पे आलमगीर सतह पर सैंट्रल बैंकों का ग़ल्बा।

(2) इलाक़ाई मरहला: इलाक़ाई मईशतों की मरकज़ियत, यूरपी मानीट्री यूनिबंज़ और रेजनल ट्रेड यूनियंज़ मसलन: "NAFTA" के ज़रीए।

(3) आलमी मरहला: आलमी मईशत की मरकज़ियत, एक वर्ल्ड सैंट्रल बैंक और आलमी करंसी के ज़रीए और "GATT" जैसे मुआहिदों के ज़रीए खुद मुख़्तार क़ौमी महासिल का ख़ातमा।

पहले दो अह्दाफ़ पूरी तरह हासिल कर लिये गए हैं। अपने मुल्क के करंसी नोटों पर एक नज़र डालिये। उन्हें कौन जारी करता है? हुकूमत या स्टेट बैंक? यह स्टेट बैंक किसके मातहत होता है? सब जानते हैं। तीसरा अह्दाफ़ आलमी बैंक किस हद तक मुकम्मल है। "एक आलमी दौलत" या "एक आलमी करंसी" का हद्फ़ डालर और आलमी मईशत के डालर स्टैन्डर्ड (मेअ़यारे ज़र से आज़ाद) की मुस्तहकम पोज़ीशन के ज़रीए तक़रीबन हासिल हो चुका है। बक़िया हद्फ़ यूरप में यूरोड अलराविर और आलमी सतह पर अमरीकन टरपोलर्ज़ चेक्स के ज़रीए हासिल किया जा रहा है।

तीसरा हद्फ़......यअ़नी खुद मुख़्तार कवी महासिल का ख़ातमा अक़्वामे मुत्तहिदा की अफ़वाज के ज़रीए हासिल किया जा रहा है। जब एक मुल्क मक़रूज़ होकर नादहिंदगी की हालत तक पहुंच जाए तो आई एम एफ़ और वर्ल्ड बैंक की ज़िम्मेदारियों के तिहत अक़्वामे मुत्तहिदा की फ़ौजों को मुकम्मल इख़्तियारात हासिल हैं कि वह उस मुल्क में दाख़िल हो जाएं और इक़्तिसादी और बदउन्वानी के मसाइल

का "हल" यक़ीनी बनाएं।

कुछ अर्से पहले बी बी सी के एक प्रोग्राम "The Future War" में अमरीकी फ़ौज की मशक़ें दिखाई गई थीं। यह मशक़ें अमरीकी रियासत साउथ कैरूलीना में की गईं। इन मशक़ों में अमरीकी फ़ौज इस बात की मश्क़ कर रहे थे कि दो मुतहारिब गुरूपों में मुंक़सिम शहर का कंट्रोल किस तरह हासिल करना है? इसका मतलब है अमरीकी या अक़्वामे मुत्तहिदा के फ़ौजी उस वक़्त जंग में शरीक होंगे जब इसका फ़ैसला हो जाएग या होने के क़रीब होगा कि मुल्क का दीवालिया निकल गया है या ख़ाना जंगी के नतीजे में तवाइफ़ुल मलूकी फैल गई है और वह ख़ाना जंगी में मुब्तला शहरों का कंट्रोल संभालने के लिये आगे आएंगे।

(2) इन अहदाफ़ के हुसूल के लिये हिक्मते अमलीः

इन अहदाफ़ का हुसूल बहुत वसीअ़ पैमाने पर वसाइल के अलावा बहुत आला सतह की ज़िहानत, नज़्म व नस्क़, मेअ़यारी मंसूबा बंदी और उस पर महारत व दिल जमई से अमल चाहता है। क़ौमे यहूद ने जो सदियों से इस इबलीसी मिशन के लिये सरगरम अमल है। इस ग़र्ज़ के लिये मरबूत हिक्मते अमली तशकील दी है। एक मरबूत तहक़ीक़ "बिरादरी" की इस हिक्मते अमली की तफ़सील कुछ यूं बताती हैः

"(1) एक आलमी हाकिमियत क़ाइम की जाए......(जिसे अक़्वामे मुत्तहिदा कहते हैं) इसकी ज़ेली तन्ज़ीमें भी हों (मसलनः वर्ल्ड हेल्थ आरग्नाईज़ेशन वग़ैरा......) यह आलमी हाकिमियत बाक़ाएदा आलमी हुकूमत में तबदील की जाए जो कुर्रहये अर्ज़ पर हर एक की ज़िंदगी पर कंट्रोल के इख़्तियारा रखती हो। -

(2) दुनिया भर में तनाज़ुआत के अस्बाब को जारी रखा जाए

और सोवियत यूनियन के बाद अलक़ाएदा जैसे ख़तरात को इस्तेमाल किया जाए ताकि ऐटमी और रिवायती हथियारों की तैयारी के लिये अख़राजात में ज़बरदस्त इज़ाफ़ा होता रहे। इस तरह ऐटमी जंग के खौफ़ में इज़ाफ़ा होता रहे और आलमी सतह पर तहफ़्फ़ुज़ के मुतालबात में शिद्दत आए। अमरीकी यूरपी दिफ़ाई इत्तिहाद (नेटो) तशकील दिया जाए और अक़्वामे मुत्तहिदा के तहत आलमी अमन फ़ौज का क़याम अमल में लाया जाए और फिर इन दोनों को बैनुल अक़्वामी तनाज़ुआत खड़े करके, आपस में मिलाकर आलमी फ़ौज बना दिया जाए।

(3) यूरप, अमरीका और एशिया के बर्रे आज़मों में तीन आज़ाद तिजारती ख़ित्ते तख़्लीक़ किये जाएं। उन्हें इब्तिदा में महज़ तिजारती गुरूपों को फ़रोग़ किया जाए लेकिन फिर बतदरीज उनको मरकज़ी सियासी यूनियंज़ में तबदील किया जाए जिनका एक सेंट्रल बैंक और एक करंसी हो। (यह इक़्दामात वह संग बुनियाद हों जिन पे आलमी सतह के इदारे तामीर किये जाएं। यूरोपियन इक्नामिक कम्यूनिटी (EEC) और यूरपी यूनियन (EU) इस तरह के अव्वलीन इदारे थे। बक़िया ख़ित्तों में ऐसे इदारे ज़ेरे तक्मील हैं।)

(4) राए आम्मा पर क़ाबू पाने के लिये पेश रफ़्त, इस ज़िम्न में तहक़ीक़ी काम और इंसानी नफ़्सानियत को इस्तेमाल करने की समझ बूझ में इज़ाफ़ा करने के इक़्दामात किये जाएं ताकि अफ़राद और गिरोहों को अपनी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ इस्तेमाल किया जा सके। (आजकल इस एजेन्डे में लोगों की माइक्रो चैंग और एक ग्लोबल कम्पयूटर के साथ मुस्तक़िल तअल्लुक़ का हद्फ़ शामिल है।)

(5) एक फ़लाही रियासत तख़्लीक़ की जाए और मआशी निज़ाम के मुतबादिलात को तबाह कर दिया जाए और जब मतलूबा

हद तक लोग दस्ते निगर हो जाएं तो रियासत की फ़लाही सरपरस्ती ख़त्म कर दी जाए ताकि एक वसीअ़ ज़ेरे दस्त तबक़ा वजूद में आ जाए जो नाउम्मीद और बेबस हो। (आजकल यूरपी मुमालिक के फ़लाही निज़ाम की बहुत से लोग मिसाल देते हैं और इन "वेल्फ़ेयर स्टेट्स) और को "दौरे फ़ारूक़ी" की इस्लामी रियासत का नमूना बताते हैं। मगर उन्हें इस "फ़लाह व बहबूद" पर मुशतमिल निज़ाम के क़याम को इस रुख़ से भी देखना चाहिये जिसका तज़किरा इस शिक़ में हुआ।

(6) इन सब अज़ाइम की तकमील के दौरान बेतहाशा दौलत "तबक़ए अशराफ़िया" के कंट्रोल में दिये गए बैंकों और कम्पनियों के ज़रीए कमाई जाए।

(7) अवाम, कारोबारी इदारों और रियासतों पे क़र्ज़ों के बोझ में मुसलसल इज़ाफ़ा करके उन पर कंट्रोल बढ़ाया जाए।"

एक और रीसर्च इंकिशाफ़ करती है:

"तीसरी जंगे अज़ीम नाम निहाद तनाज़ा पैदा करके छेड़ी जाएगी। "बिरादरी" के एजेंट सियासी सहीवनियों और इस्लामी दुनिया के लीडरों के दर्मियान फ़साद खड़ा कर देंगे। यह जंग इस अंदाज़ में आगे बढ़ाई जाएगी कि तमाम अरब और सहीवनी इस्राईल एक दूसरे को तबाह कर देंगे। इसी दौरान बक़िया मुमालिक एक दफ़ा फिर इस मस्ला पर मुंक़सिम हो जाएंगे। उन्हें मजबूर किया जाएगा कि इस तरह आपस में बरसरे पैकार हों कि जिस्मानी, ज़हनी, रूहानी और इक़्तिसादी तौर पर एक दूसरे को मफ़लूज कर दें। एक आलमी हुकूमत को बरसरे इक़्तिदार लाने के लिये यह स्टेज तैयार किया जाएगा।"

(3) आलमी दज्जाली हुकूमत का ख़ाका:

दर्जे बाला हिक्मते अमली के नतीजे में जो मुत्लक़ुल इनान ग़ल्बा

हासिल होगा और उसके ज़रीए जो मुस्तहकम आलमी हुकूमत काइम होगी, क्या उसमें इंसानियत की भलाई का कोई अन्सर मौजूद होगा? क्या उससे बनी नोअ़ इंसान के लिये किसी हमदर्दी या ख़ैरख़्वाही की कोई उम्मीद रखी जा सकती है? बदकिस्मती से एक फ़ीसद भी ऐसी उम्मीद नहीं है। ज़ेल में मुस्तकबिल की इस आलमी हुकूमत का ख़ाका मुलाहिज़ा कीजिये जिसके मुतअल्लिक डाक्टर कोलीमन जैसे तहकीककार भी ता हाल बे ख़बर हैं कि इसकी बाग डोर दरहकीकत किसके हाथ में होगी? यह इस आलमी दज्जाली हुकूमत का ब्ल्यू प्रिंट है जिसकी तरफ़ हम लम्हा बा लम्हा बढ़ते जा रहे हैं और इससे बचने की कोई शक्ल इंसानियत के पास सिवाए रुजूअ़ इलल्लाह और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के मौजूद नहीं है।" "आलमी दज्जाली हुकूमत" के बुन्यादी खुतूतकार कुछ यूं होंगे। (जारी है)

☆☆☆

मुस्तक़बिल की आलमी दज्जाली रियासत

(दूसरी क़िस्त)

"एक आलमी हुकूमत और वन यूनिट मानीट्री सिस्टम, मुस्तक़िल ग़ैर मुंतख़ब मौरूसी चंद अफ़राद की हुकूमत (यअ़नी बनी इस्राईल के सत्तर मुंतख़ब अफ़राद और फिर उन सत्तर अफ़राद के ऊपर बारह मुंतख़ब तरीन अफ़राद। दूसरे लफ़्ज़ों में बनी इस्राईल के सत्तर अफ़राद पर मुशतमिल ग्रेंड ज्यूरी और फिर उनके ऊपर आले दाऊद में से बारह ग्रेंड मास्टरर्ज़। बनी इस्राईल के सत्तर मुख़्तार अफ़राद का ज़िक्र सूरए आराफ़ की आयत नम्बर 155 में और बारह नक़ीबों का ज़िक्र सूरए माइदा की बारहवीं आयत में है।) के तहत होगा जिसके अरकान कुरूने वुस्ता के सरदारी निज़ाम की शक्ल में अपनी महदूद तादाद में से (यअ़नी दुनिया भर के फ़्री मैसज़ी थिंक टेंक्स में से) खुद को मुंतख़ब करेंगे। इस एक आलमी वजूद में आबादी महदूद होगी और फ़ी ख़ानदान बच्चों की तादाद पर पाबंदी होगी। वबाओं, जंगों और क़हत के ज़रीए आबादी पर कंट्रोल किया जाएगा। (जैसा कि अमरीका की दरयाफ़्त के वक़्त रेड इंडिनन्ज़ को महदूद करने के लिये किया गया था) यहां तक कि सिर्फ़ एक अरब नुफ़ूस रह जाएं जो हुक्मरान तबक़ा के लिये कारआमद हों और यह बेइख़्तियार मख़्लूक़ उन इलाक़ों में होगी जिसका सख़्ती और वज़ाहत से तअय्युन किया जाएगा और यहां वह दुनिया की मज्मूई आबादी की हैसियत से रहेंगे।

सिर्फ़ एक मज़हब की इजाज़त दी जाएगी और वह एक "आलमी सरकारी कलीसा" की शक्ल में होगा (यह 1920 ई० से

वजूद में आ चुका है।) शयतनत, इबलीसियत और जादूगरी को एक आलमी हुकूमत का निसाब समझा जाएगा। कोई निजी या चर्च स्कूल नहीं होगा। तमाम मसीही गिर्जे पहले ही से ज़ेरो ज़बर किये जा चुके हैं। चुनांचे मसीहियत इस आलमी हुकूमत में क़िस्सए पारीना होगी। एक ऐसी सूरते हाल तशकील देने के लिये जिसमें फ़र्द की आज़ादी का क़ोई तसव्वुर न हो, किसी क़िस्म की जम्हूरियत, इक़्तिदारे आला और इंसानी हुकूक की इजाज़त नहीं होगी। क़ौमी तफ़ाख़ुर और नस्ली शनाख़्त ख़त्म कर दिये जाएंगे और उबूरी दौर में उनका ज़िक्र भी क़ाबिले तअ़्ज़ीर होगा।

शादी करना ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया जाएगा। इस तरह की ख़ानदानी ज़िंदगी नहीं होगी जिस तरह आजकल है। बच्चों को उनके मां बाप से छोटी उम्र में अलाहिदा कर दिया जाएगा और रियासती इम्लाक की तरह वार्ड्ज़ में उनही परवरिश होगी। इस तरह का एक तजुर्बा मशरिक़ी जर्मनी में "एरिक हूनीकर" के तहत किया गया था। इस मंसूबे के तिहत बच्चों को उन वालिदैन से अलग कर दिया जाता था जिन्हें रियासत वफ़ादार नहीं समझती थी। ख़्वातीन को आज़ादिये निस्वां की तहरीकों के ज़रीए ज़लील किया जाएगा। जिन्सी आज़ादी लाज़िम होगी। ख़्वातीन का बीस साल की उम्र तक एक मर्तबा भी जिन्सी अमल से न गुज़रना, सख़्त तरीन सज़ा का मूजिब होगा। ख़ुद इस्क़ाते हमल से गुज़रना सिखाया जाएगा और दो बच्चों के बाद ख़्वातीन उसको अपना मअ़्मूल बना लेंगी। हर औरत के बारे में यह मालूमात आलमी हुकूमत के इलाक़ाई कम्प्यूटर में दर्ज होंगी। अगर कोई औरत दो बच्चों को जनम देने के बाद भी हमल से गुज़रे तो उसे ज़बरदस्ती इस्क़ाते हमल के क्लीनिक में ले जाया जाएगा और आइंदा के लिये बांझ कर दिया जाएगा।

तमाम ज़रूरी और ग़ैर ज़रूरी अदवियाती मस्नूआत, डाक्टरों, डेंटिस्टों और हेल्थ केयर वर्करों को सेंट्रल कम्प्यूटर डेटा बैंक में रजिस्टर किया जाएगा और कोई दवा या इलाज उस वक़्त तक तजवीज़ नहीं किया जा सकेगा जब तक हर शहर, क़स्बा या गांव का ज़िम्मादार "रीजनल कंट्रोलर" इसकी तहरीरी इजाज़त नहीं देगा।

सेंट्रल बैंक, बैंक आफ़ इंटरनेशनल और वर्ल्ड बैंक काम करने के मजाज़ नहीं होंगे। प्राईवेट बैंक ग़ैरक़ानूनी होंगे। बैंक आफ़ इंटरनेशनल सेटलमैंट (BIS) मंज़र में ग़ालिब हैं। प्राईवेट बैंक, "बड़े दस बैंकों" की तैयारी में तहलील हो रहे हैं। यह बड़े बैंक दुनिया भर में बैंकारी पर BIS और IMF की रहनुमाई में कंट्रोल करेंगे। (अमरीकी बैंकों के हालिया दीवालियापन (नवम्बर 2008 ई0) की बहुत सी वजूहात ढूंढी जा रही हैं......लेकिन इस पहलू पर अक्सर तजज़िया निगारों की नज़र नहीं गई) उजरतों के तनाज़ुआत की इजाज़त नहीं दी जाएगी, न ही इंहिराफ़ की इजाज़त दी जाएगी। जो भी क़ानून तोड़ेगा उसे सज़ाए मौत दे दी जाएगी।

तबक़ए अशराफ़िया (एलियट क्लास जो यक़ीनन आले दाऊद में से होगी) के अलावा किसी के हाथों में नक़्दी या सिक्के नहीं दिये जाएंगे। तमाम लेन देन सिर्फ़ और सिर्फ़ क्रेडिट कार्ड के ज़रीए होगा (और आख़िरकार उसे माइक्रो चिप प्लान्टेशन के ज़रीए किया जाएगा) "क़ानून तोड़ने वालों" के क्रेडिट कार्ड मुअत्तल कर दिये जाएंगे। (क़ारईन समझ सकते हैं कि क़ानून तोड़ने वालों से यहां कौन मुराद हो सकता है। ज़ाहिर है इससे मुराद दज्जाल और उसके शैतानी क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी के मुर्तकिब लोग हैं) जब ऐसे लोग ख़रीदारी के लिये जाएंगे तो उन्हें पता चलेगा कि उनका कार्ड ब्लैक लिस्ट कर दिया गया है। वह ख़रीदारी या ख़िदमात हासिल नहीं कर

सकेंगे। (फिर बैंकों में पैसे रखवाने वालों का अंजाम भूक, बीमारी और अज़ियतनाक मौत होगा) पुराने सिक्कों से तिजारत को ग़ैर मामूली जुर्म क़रार दिया जाएगा और इसकी सज़ा मौत होगी। ऐसे क़ानून शिकन अनासिर जो खुद मख़्सूस मुद्दत के दौरान पुलिस के हवाले करने में नाकाम रहें उनकी जगह सज़ाए क़ैद भुगतने के लिये उनके किसी घर वाले को पकड़ लिया जाएगा।

मुतहारिब गुरूपों और फ़िर्क़ों के इख़्तिलाफ़ात बढ़ा दिये जाएंगे। उन्हें एक दूसरे को ख़त्म करने के लिये जंग छेड़ने की इजाज़त होगी। उन्हें यह जंगें नेटो और अक़्वामे मुत्तहिदा के मुबस्सिरीन की नज़रों के सामने लड़ना होगी। यही हथकंडे वुसती और जुनूबी एशिया में सिखों, पाकिस्तानी मुसलमानों और भारती हिंदुओं के लिये इस्तेमाल किये जाएंगे। यह तसादुम एक आलमी हुकूमत के क़्याम से पहले जनम लेंगे।''

☆......☆......☆

तो जनाबे मन! यह हैं हमारी बर्बादी के वह मशवरे जो ज़मीन पर खुदा बनने के शौक़ीन, शैतान के पुजारियों ने सोच रखे हैं। एक मर्तबा एक किताबचा हाथ लगा जिसका नाम था: ''दी न्यू मीलीनम'' इसे बाइबल छापने वाले एक इदारे ने हमदर्दी की नियत से बड़ी तादाद में मुख़्तलिफ़ ज़राए से दुनिया भर में तक़सीम किया था। शायद आप में भी किसी के हाथ आया हो। इसमें मुस्तक़बिल की मंज़र कशी कुछ इस अंदाज़ में की गई थी:

''आलूदगी, बीमारी और ग़ुर्बत नाक़ाबिले तसव्वुर तादाद में अम्वात का सबब बनेंगी। मुस्तक़बिल में होने वाली जंग के मुम्किना अअ़्दाद व शुमार ज़्यादा तबाहकुन हैं। मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में तशद्दुद ग़ैर मामूली हुदूद को पहुंच जाएगा। नस्ली, क़बाइली और मज़हबी

मुनाफ़रतों से पैदा होने वाला यह तशद्दुद अगली रुब्अ़ सदी में तसादुम की इंतिहाई आम शक्ल इख़्तियार कर लेगा। हर साल हज़ारों लोग मारे जाएंगे।"

यह दरहक़ीक़त हमदर्दी नहीं, मुस्तक़बिल के दज्जाली मंसूबों के लिये ज़हन को तैयार करने की साहिराना काविश है कि जब ग़ैर मुतवक़्क़ो चीज़ें होने लगें तो उन्हें मुतवक़्क़ो समझ कर खुद को "आलमी हालात" के रेले में बहने दिया जाए और हाथ पैर हिलाए बग़ैर क़ौमे यहूद की मुसल्लत कर्दा ज़िल्लत या मौत को क़बूल कर लिया जाए। यह सब ख़तरात बनी नोअ़ इंसान को बिल उमूम और आलमे इस्लाम के लिये बिल खुसूस बेदारी पर आमादा करने के लिये काफ़ी है......मगर......मुश्किल यह है कि मुस्लिम दुनिया हो या ग़ैर मुस्लिम......सारी दुनिया के अवाम बेहिस हैं। दुनिया हालते जंग में है मगर उसे किसी की परवा नहीं। वह यह जंग हार रही है मगर इस मरहले पर पहुंच चुकी है कि सुब्ह के सेंडविच, दोपहर के बरगर और शाम की शराब के अलावा किसी और मस्ले पर सोचने की ज़हमत ही नहीं करती। क्या हम सब "आज़ाद मेअ़मारों" की बरपा कर्दा इस सूरते हाल को मिन व अन क़बूल कर लें? नहीं! हरगिज़ नहीं......!!! हम में से जो अल्लाह और उसकी रहमानी ताक़तों से जितना क़रीब हो सकता है उसे होना चाहिये। जो शैतान और उसके यहूदी चेलों से जितना दूर हो सकता है, दूसरों को दूर कर सकता है......उसे पूरी इंसानियत को शर के मह्वरों से बचाने की कोशिश करनी चाहिये। दज्जाल के शैतानी मंसूबों के ख़िलाफ़ मक़्दूर भर जिद्दो जिहद करनी चाहिये। उसे रहमानी ताक़तों का साथ देने के लिये......चाहे वह ज़ईफ़, कमज़ोर और बेहैसियत मालूम हो रही हों......अपना जान माल लगाने से दरेग़ नहीं करना चाहिये। शायद

हमारा शुमार उन लोगों में से हो जाए जो अगर्चे कम हैं लेकिन हैं ज़रूर!!! वह अगर्चे मशक़्क़त बर्दाश्त करेंगे……लेकिन उन्हें मिलने वाली नजात उनकी हर मशक़्क़त की तकलीफ़ भुला डालेगी।

☆☆☆

दज्जाली रियासत के क़्याम के लिये ज़ह्नी तसख़ीर की कोशिशें

जादू, एम के अल्ट्रा, माइक्रो चपंग, शार्ट वीज़न, बेक ट्रेकिंग

अफ़ग़ानिस्तान के निहत्ते मुसलमान मुसलसल आठ साल से दुनिया की जाबिर तरीन और तरक़्क़ी याफ़्ता कुव्वतों की इज्तिमाई यलग़ार की ज़द में हैं। इराक़ में खून की होली खेली जा रही है। कशमीर और चेचनिया का मस्ला उम्मते मुस्लिमा के जिस्म कारिस्ताज़ ख़म है। अभी यह ज़ख़्म हरे थे कि फ़लस्तीन का दर्दनाक अलमिया पेश आ गया। इस मर्तबा संग दिल, बेरहम और इंसानियत से आरी यहूद की यलग़ार इंतिहाई जारिहाना और सफ़्फ़ाकाना है। फ़लस्तीन में नौजवानों की खून आलूद लाशें, मल्बे तले दबे नन्हे मुन्हे ज़ख़्मी फूल, बेयार व मददगार ज़ख़्मी, बेगोर व कफ़न शुह्दा......शहीद मसाजिद, तबाह शुदा स्कूल और हस्पताल, मल्बे का ढेर बनी शहरी इमारतें और इन सब के बीच में खड़े हैरान व सरगर्दां फ़लस्तीनी मुसलमान जिन्हें समझ नहीं आता कि वह कहां जाएं? किससे मांगें? किसे अपना दुखड़ा सुनाएं? कोई उनके ज़ख़्मों पर मरहम रखने के लिये तैयार नहीं। कोई उनके लिये हमदर्दी के दो बोल कहने पर आमादा नहीं। कोई उनके लिये ख़तरा मौल लेने की जुर्अत नहीं कर रहा। मिस्र ने ज़ख़्मियों और मुहाजिरों के लिये अपनी सरहद बंद कर रखी है। वह ख़ूराक जाने देने पर तैयार है न दवाएं। उसने इस्राईल से तो गैस और पेट्रोल की फ़राहमी का पच्चीस साला

मुआहिदा किया है लेकिन वह मज़लूम फ़लस्तीनियों को मुंह मांगी क़ीमत पर भी बिजली, गैस और पेट्रोल पच्चीच दिन के लिये भी फ़रोख़्त करने पर तैयार नहीं। उसने अलजज़ाइर के भेजे हुए दवाओं से भरे दो जहाज़ रोक लिये हैं। मिस्री हुक्मरानों का कहना है कि वह उन्हें उस वक़्त जाने देंगे जब दवाओं की मुद्दत ख़त्म हो जाएगी। इतनी संगदिली, इतनी बेहिसी, इतनी बेदर्दी! या इलाही! यह माजरा क्या है? नार्वे में 40 दुकाने इस्राईल के ख़िलाफ़ जंगी मुक़द्दद दर्ज करने की तहरीक चलाने के इत्तिफ़ाक़िया पुर दस्तख़त किये हैं लेकिन पाकिस्तान में फ़लस्तीनियों के हक़ में तीन हज़ार से ज़ाइद अफ़राद जमा नहीं हो सके। इससे ज़्यादा अफ़राद तो रोज़ "जिनाह पार्क" की सैर को जाते हैं। इस बेहिसी पर जो अज़ाब आने वाला था वह लगता है अब आकर रहेगा......लेकिन इसकी वजूहात क्या हैं? इसका सबबे आख़िर क्या है? हम से ऐसा कौनसा गुनाह हुआ है कि हम से ईमान की आख़िरी अलामतें भी छिनती जा रही हैं। बंदा अर्सए दराज़ तक इसकी टोह में लगा रहा। सूदख़ोरी, फ़ह्हाशी, हरामख़ोरी व हरामकारी या कुछ और......प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया के ज़रीए समाअत व बसारत, और समाअत व बसारत के रास्ते दिल व दिमाग़ पर गिरफ़्त ने यह दिन दिखाया है या कोई और मअशूक़ भी इस पर्दए ज़ंगारी के पीछे है......? आख़िर मुसलमान जितना भी गुनाहगार हो, अपने मुसलमान भाई को तकलीफ़ में देख कर तड़पना ज़रूर था......इस मर्तबा आलमे इस्लाम को हुआ क्या है? वह कौनसी चीज़ है जिसने सुकूते मिर्ग तारी कर रखा है। रोने वाली आंख है न तड़पने वाला दिल। नफ़्सा नफ़्सी और आपा धापी है जिसकी कोई हद नहीं। वह कहीं रुकने में नहीं आ रही। किसी को इसकी समझ नहीं आ रही। बंदा एक अर्से तक दिल के ज़ख़्मों को जिगर के आंसूओं से

पोंछता रहा। जो समझ में आया पेशे ख़िदमत है।

अब हम सिलसिलए कलाम वहीं से जोड़ते हैं जहां से पिछली किस्त पर टूटा था।

यह कहना बजा ना होगा कि इस वक़्त मग़रिब की तर्जुबागाहों में जिन बड़े मंसूबों पर काम हो रहा है उनमें ज़्यादा ख़तीर रक़म का हामिल मंसूबा इंसानी ज़हन को कंट्रोल में लेने और उससे हस्बे मंशा काम करवाने का है। इस मंसूबे पर हमा जिहत और मुख़्तलिफ़ुल नोअ़ काम हो रहा है। यहूद की रूहानी शख़्सियात जो जादू की बदतरीन अक़साम की माहिर होती हैं (इसलिये उन्हें सुफ़ली शख़्सियात कहना चाहिये) अपना ज़ोर लगा रही हैं। इंसानी दिमाग़ और नफ़्सियात पर काम करने वाले यहूदी व ग़ैर यहूदी साइंसदान अपना ज़ोर लगा रहे हैं। नहीं मालूम कि क़वानीने फ़ितरत की ख़िलाफ़ वर्ज़ियां और इंसानी ज़हनों की तसख़ीर की यह जुनूनी कोशिशें मुस्तक़बिल क़रीब में इंसानियत के लिये कैसे कैसे अलमिये जनम देंगी? ज़ेल में हम इस तरह की चंद ग़ैर इंसानी बल्कि शैतानी कोशिशों का तज़किरा करेंगे क्योंकि इनसे इंसानियत की भलाई के लिये ज़रा भी काम नहीं लिया गया, न लिया जाएगा। यह तमाम तर कोशिशें शैतान के सबसे बड़े हरकारे "दज्जाले अक्बर" के इबलीसी निज़ाम के पूरी दुनिया पर ग़ल्बे के लिये की जा रही हैं।

1-जादू और सुफ़लियात

शरीअ़ते इस्लामिया में बल्कि तमाम आसमानी मज़ाहिब और मुहज़्ज़ब दसातीर में जादू हराम और नाजाइज़ है। यह दरअसल काइनात में मौजूद कुछ मख़्फ़ी कुव्वतों का ग़लत इस्तेमाल है। यह ख़ैर व शर मअ़रका में फ़ाउल खेलने और बेईमानी कै बलबूते पर जीतने की कोशिश का नाम है। यह अल्लाह की नुसरत व हिमायत के मुक़ाबले में शैतान और शैतानी कुव्वतों को जाइज़ तरीक़ों से खुश करके उनकी फ़ानी और पुर फ़रेब झूटी ताक़त को साथ लेने का नाम है। काइनात में मौजूद मख़्फ़ी राज़ों को दरयाफ़्त करने का एक तरीक़ा साइंस है और दूसरा जादू। आप इन्हें "सख़्र" और "सहर" भी कह सकते हैं। पहले की इजाज़त है दूसरा मुकम्मल मम्नूअ़। "सख़्र" के तहत वह उमूर आते हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने इंसान के लिये मुसख़्ख़र कर दिया है यअ़नी उसके इख़्तियार में दिया है, जबकि सहर के तहत वह उमूर आते हैं जिनको इंसान ने अज़ खुद अल्लाह तआला की मर्ज़ी के बग़ैर "मुसख़्ख़र" किया है बल्कि उसके मना करने के बावजूद उन पर इख़्तियार हासिल कर लिया है। इन दोनों के माबैन वही फ़र्क़ है जो "Merchandise" (क़ाबिले फ़रोख़्त व ख़रीद अशया) और "Contraband" (वह अशया जिनका हुसूल, दरआमद, बरआमद, ख़रीद व फ़रोख़्त मम्नूअ़ है) के माबैन होता है। यहूद दोनों में मुसाबक़त ले जाने की सर तोड़ कोशिश कर रहे हैं। साइंस में नोबल इन्आम जीतने की तरह यहूद के माहिरीन सिफ़लियात जादू में भी यदेतूला रखते हैं। दुनिया भर में इस फ़न में उनकी मुम्ताज़ हैसियत की वजह उनकी एतिक़ादी नजासत और बद बातिनी है। जो शख़्स अपने ज़ाहिर में जितना

पलीद और बातिन में जितना ख़बीस होगा, उसको शैतान से उतना ही कुर्ब हासिल होगा और शैतानी कुव्वतें उसके जादू में झूटी तासीर के लिये उतना ही उसका साथ देंगी। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की गुस्ताख़ी से बढ़ कर बातिनी नजासत क्या होगी? यहूद तो खुदा के भी गुस्ताख़ हैं। हज़रत जिब्रील व दीगर मुक़र्रब फ़रिश्तों के भी और अंबियाए किराम के साथियों के तो यह क़ातिल हैं। इसलिये उनका जादू शैतान की शयतनत का सबसे बड़ा मुज़ाहिरा होता है। उनकी कोशिश होती है कि जिन शख़्सियात पर दूर से बैठ कर जादू के हथकंडे कामियाब न हों, यहूदी हसीनाओं को जादू सिखा कर उनके क़रीब भेज देते हैं। इसकी सबसे बड़ी मिसाल शाह फ़ैसल शहीद के क़ातिल की है। आज तक तमाम तजज़िया निगारों का इत्तिफ़ाक़ है कि यह क़त्ल दरपेच उलझनों तले छिपा हुआ है। अक्सरियत का कहना है कि क़ातिल का दिमाग़ी तवाज़ुन दुरुस्त न था लेकिन क्या दिमाग़ी तवाज़ुन से महरूम लोग इतनी दुरुस्ती से अपना हद्फ़ हासिल कर लेते हैं? अगर ऐसा होने लग जाए तो दीवानों की इस दुनिया में फ़रज़ानों को गुज़र ही मम्नूअ़ हो जाए।

शाह फ़ैसल का यह भतीजा 25/मार्च 1975 ई0 को ट्रांस की सी कैफ़ियत में था। यह उस जादूगर यहूदी हसीना का किया धरा था जो उससे अमरीका में तालीम के दौरान टकराई थी और अपनी एक झलक दिखा कर उसको ऐसा दीवाना बना गई कि वह उसके विसाल के लिये हर मुश्किल से मुश्किल शर्त पूरी करने पर आमादा था……हत्ता कि अपने उस चचा को भी क़त्ल करने पर तैयार था जो न सिर्फ़ उसके ख़ानदान का मुम्ताज़ तरीन फ़र्द था बल्कि पूरे आलमे इस्लाम के लिये वफ़ादार दोस्त, मुशफ़िक़ बाप और सरापा हमदर्द था। उस यहूदी हसीना की शर्त थी कि वह अगर बहादुर और उसके

इश्क़ में सच्चा है तो अपने चचा को क़त्ल करके दिखाए जिसने तेल की दौलत को जंग का हथियार बना कर मग़रिब के ख़िलाफ़ कामियाबी से इस्तेमाल किया था। अलावा अज़ीं उसने 1967 ई० में पाकिस्तान से सऊदी अफ़वाज को तरबियत देने का मुआहिदा करके अप्रैल 1968 ई० में तमाम बरतानवी फ़ौजी माहिरीन को अर्ज़े हरम से रुख़्सत कर दिया था। इश्क़ का जुनून ऐसा चढ़ कर नहीं बोल सकता था......उसमें सामरी के तिलस्म की आमेज़िश ज़रूर थी। तमाम ऐनी शाहिदीन का कहना है और तमाम मुबस्सिरीन का इत्तिफ़ाक़ है क़ातिल उस दिन नीम मदहोशी की कैफ़ियत में था जब वह अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा शैतानी काम करने जा रहा था। न सिर्फ़ उसने आलमे इस्लाम को एक जरी हुक्मरान से महरूम किया बल्कि उसे वह हसीना भी फिर कभी नज़र न आई जिसने सहरी सिफ़लियात और ज़ह्नी तसख़ीर के दीगर हथकंडों के बल बूते पर यह रज़ील तरीन हरकत करने पर उसे एक बेबस मअ़मूल (रोबोट) की तरह आमादा कर लिया था। जादू और एम के अल्ट्रा के मिज़ाज की यह एक और बदतरीन और अफ़सोसनाक तरीन मिसाल है।

2-एम के अल्ट्रा

"मांट्रियाल" केनैडा का मशहूर शहर है। इसके वस्त में एक पार्क है। बाहर से यह बे आबाद और वीरान नज़र आता है। यह अगर्चे अवामी पार्क है लेकिन इसके दरवाज़े अवाम पर बंद हैं। हैरत अंगेज़ तौर पर इसके गिर्द बाड़ लगा कर इसे ग़ैर ज़रूरी अफ़राद का दाख़िला रोकने के लिये बिल्कुल बंद कर दिया गया है। इस पार्क के अंदर क़दीम तर्ज़ की एक इमारत है। बाड़ और दरख़्तों में घिरी होने की बिना पर यह दूर से अच्छी तरह नज़र भी नहींआती। कोई झांक कर देख भी ले तो इस बोसीदा दराज़ इमारत पर तवज्जो नहीं देता। केनैडियन अवाम खुद को तालीम याफ़्ता और मालूमात के लिहाज़ से अपडेट समझते हैं......लेकिन उन्हें इल्म नहीं कि उनके एक अहम शहर के वस्त में मौजूद इस मतरूका इमारत में क्या खेल खेला जा रहा है? अमरीका और केनैडा की हुकूमतें, खुफ़िया इदारे और इन इरादों के तनख़्वाह याफ़्ता शैतानी दिमाग़ रखने वाले साइंसदान यहां कैसा घिनावना और ख़तरनाक खेल, खेल रहे हैं? यहां खेले जाने वाले खेल का नाम "एम के अल्ट्रा" (MK Ultra) है। आम तौर पर कोई खेल खिलाड़ी आपस में खेलते हैं लेकिन यह खेल सादा लोह अजनबियों के साथ खेला जाता है। आम तौर पर किसी खेल को कोच, मनेजर और रेफ़री खिलवाते हैं, लेकिन यह खेल ऐसा है जिसकी निगरानी थिंक टैंक्स, साइंसदान और यहूदी सरमायादार करते हैं। "रेन्ड कारपोरेशन" जैसा बदनाम ज़माना थिंक टैंक इस खेल का निगरान, ईवन कैमरून जैसे ज़हीन यहूदी साइंसदान उसके कोच और राक फ़ीलर जैसा यहूदी सरमायादार इसका स्पान्सर है।

एम के से मुराद "माइंड कंट्रोल" है। M, Mind के लिये और K, Kontrol के लिये है। मुअख़्ख़िरुज़ ज़िक्र लफ़्ज़ के लहजे जर्मन तर्ज़ पर किये गए हैं। खेल के नाम और काम में मुनासिबत आपके लिये नामानूस नहीं होनी चाहिये। जैसा कि नाम से ज़ाहिर है, इस खेल में लोगों के ज़ह्नों से खेला जाता है। उनकी मर्ज़ी बग़ैर उनके दिमाग़ों को मख़्सूस पैग़ामात भेजे जाते हैं। लहरों और शुआओं के ज़रीए तसलसुल के साथ भेजे जाने वाले यह पैग़ामात लोगों के ज़हन को रफ़्ता रफ़्ता अपना मअ़मूल बना लेते हैं और वह बेख़ुदी और ख़ुद फ़रामोशी के आलम में सोचे समझे बग़ैर वह सब कुछ करते चले जाते हैं जो "बिरादरी" उनसे करवाना चाहती है। मांट्रियाल में मौजूद इस पार्क में मस्रूफ़े अमल यहूदी रूहानी माहिरीन, तब्इय्यात और मावराउत्तब्इय्यात यअ़नी जादू और साइंस के इम्तिज़ाज से इस प्रोजेक्ट को "रेन्ड कारपोरेशन" नामी आली दिमाग़ यहूदियों का इदारा चला रहा है और इसके लिये एवन कैमरून जैसा नाबिग़ा रोज़गार साइंसदान जो यहूदियों के ख़ुफ़िया जादूई इल्म "कबाला" का माहिर और उनकी ख़तरनाक रूहानी शख़्सियात......जिन्हें शैतानी शख़्सियात कहा जाए तो ज़्यादा बजा है......में से एक है। एवन कैमरून का कोड नाम "डाक्टर व्हाइट" रखा गया है। कोड नाम की ज़रूरत वाज़ेह कर रही है कि इस प्रोजेक्ट के पीछे सी आई ए के माहिरीन भी अपना तजुर्बा और महारत लिये कामियाबी के इंतेज़ार में खड़े हैं। सी आई ए के साबिक़ा डाइरेक्टर "एन्डियोल्ज़" इस पार्क के चक्कर तसलसुल से लगाते रहे हैं। यह वही शख़्सियत हैं जिन्होंने राक फ़ीलर जैसी मालदार यहूदी फ़ैमली के सरमाए से इस प्रोजेक्ट के अख़राजात पूरा करने के लिये बीच के आदमी का काम तुंदही से अंजाम दिया है।

यहूद को आख़िर इस प्रोजेक्ट में क्या दिलचस्पी है? वह इस पर ख़तीर रक़म क्यों ख़र्च कर रहे हैं? इस तरफ़ जाने से पहले बेहतर होगा हम समझ लें कि इस प्रोजेक्ट में किस क़िस्म की टेक्नालोजी इस्तेमाल हो रही है? आजकल के तालीम याफ्ता लोगों की अक्सरियत दुनिया की ताज़ा तरीन ईजादात से आगाह है। इसे अपनी मालूमात का ज़अ़म है लेकिन एम के अल्ट्रा में इंसानी ज़हन को मुसख़्ख़र करके अपना ताबेदार बल्कि ग़ुलाम बनाने के लिये किस तरह काम किया जा रहा है? इससे दुनिया के तालीम याफ़्ता हज़रात की अक्सरियत आगाह नहीं। जबकि यह आगाही आज के दौर के इंसानों के लिये निहायत ज़रूरी है। खुसूसन उन इंसानों के लिये जो मुसलमान की मौजूदा बेहिसी का राज़ जानना चाहते हैं। मांट्रियाल के इस पार्क के बीच वाक़ेअ़ "शैतान घर" से "हाई फ़ीक्वेन्सी माइक्रो बीम्ज़" ख़ारिज होती रहती हैं। यह अपने हद्दफ़ को ट्रांस में लाकर उसके लाशऊर को गिरफ़्त में ले लती है और उसका लाशऊर उसके शऊर को वह पैग़ामात ट्रांसफ़र करता है जो यहां बैठे शैतान नुमा इंसान, फ़र्द या अफ़राद के ज़हनों में मुंतक़िल कर रहे होते हैं। यह शुआएं किसी भी इंसान को (इल्ला माशा अल्लाह जिसकी अपनी रूहानियत मज़बूत और तअल्लुक़ मअल्लाह मुस्तहकम हो) किसी भी मक़्सद के लिये कुछ भी करने पर आमादा कर सकती हैं। यह उस पर ऐसी मख़्सूस कैफ़ियत तारी कर देती हैं कि वह रोबोट की तरह अहकाम पर अमल करता चला जाता है और उसका अपना इरादा व इख़्तियार दूर खड़ा तहज़ीब याफ़्ता इंसानों की बेबसी और यहूद की अय्यारी व मक्कारी पर अफ़सोस करता और तंज़िया मुस्कुराहट बिखेरता रहता है। जो शख़्स एक मर्तबा मअ़मूल बन जाए वह "ख़ुफ़िया बिरादरी" के "बिग मास्टर्ज़" के कहने पर क़त्ल, ज़िना

बिल जब्र, और खुले मज्मा पर बिला ख़ौफ़ व ख़तर फ़ाइर तक खोल सकता है।

दुनिया में बहुत से हादसात हैं जिन्हें इत्तिफ़ाक़िया समझ कर नज़र अंदाज़ कर दिया गया है या नज़र अंदाज़ कर दिया जाता है......लेकिन बग़ौर देखा जाए तो वह अचानक रूनुमा नहीं होते बल्कि उनके पीछे इंतिहाई मुहतात और साइंटिफ़िक क़िस्म की मंसूबा बंदी पोशीदा होती है जो वाक़िए के इब्तिदा से उसके वक़ूअ़ पज़ीर होने तक और वक़ूअ़ पज़ीर हो जाने के बाद उसके अवाक़िब व नताइज का मलहूज़ रख कर इंतिहाई बारीक बीनी और अमल वर्दे अमल के मुतबादिल उसूल पर की जाती है। बेजा न होगा अगर हम यहां इसकी एक दो मिसालें ज़िक्र कर दें।

(1) जान एफ़ केनैडी वह केथोलिक अमरीकी सदर था जो फ़िरीमैसन न था। इस सबब "बिरादरी" उसे नापसंद करती थी। जान एफ़ केनैडी का क़त्ल एम के अल्ट्रा की एक उम्दा मिसाल है। उसके क़ातिल को बअ़द अज़ां क़त्ल कर दिया गया ताकि इंक्वाइरी रुक जाए और फ़ाइल बंद कर दी जाए। बहुत से चश्मदीद गवाहों का कहना है कि वह मुसलसल एक "ट्रांस" की सी कैफ़ियत में था। अगर केनैडी को गोली मारने वाला सिर्फ़ वही शख़्स था तो फिर केनैडी को पंहलू के बल गिर जाना चाहिये था लेकिन वीडियोज़ में साफ़ नज़र आता है कि वह पीछे की तरफ़ गिरा था। इसका मतलब है कि उसे सामने से गोली मारी गई और उसके आगे कौन बैठा था? उसका अपना बाडी गार्ड! अलावा अज़ीं केनैडी की कार के आगे वाली कार को चार गार्ड्ज़ घेरे हुए थे लेकिन उसकी कार के साथ कोई गार्ड नहीं था। क्यों? सी आई ए के साबिक़ उहदेदार हेलमिथ शेरर (1957 ई० ता 1975 ई०) का कहना है:

"क़ातिल और क़त्ल का मुक़द्दमा महज़ एक ड्रामा था और अस्ल कहानी कभी बताई या बेनक़ाब नहीं की गई।"

(2) दूसरी मिसाल जान केनैडी के भाई राबर्ट केनैडी की है। केनैडी के क़त्ल के बाद तमाम तर शौर व गोग़ा के बावजूद केस ख़त्म कर दिया गया। यह इक़्दाम अवाम और केनैडी ख़ानदान के लिये निहायत परेशानकुन था। उसके भाई राबर्ट केनैडी और उसकी बीवी जेकूलियन केनैडी ने ज़िम्मादारी संभाली। राबर्ट केनैडी ने अज़्म किया कि वह इस साज़िश के ख़िलाफ़ खड़ा होगा। अपने भाई के क़त्ल के मुक़द्दमा को अंजाम तक पहुंचाएगा और मुक़द्दमा खुली अदालत में लाएगा। उसने वादा किया कि वह भाई के क़त्ल की तहक़ीक़ात को अज़सरे नौ शुरू कराएगा। इस नअ़रे ने उसे ज़बरदस्त मक़्बूलियत दी और अगले सदारती इंतिख़ाब में उसके जीतने के इम्कानात क़वी हो गए लेकिन "बिरादरी" के एजेन्डे में यह चीज़ शामिल ही नहीं थी। उनके पास एक ही रास्ता रह गया कि वह राबर्ट से जान छुड़ा लें। चुनांचे राबर्ट भी क़त्ल हो गया। उसके क़त्ल का शुब्हा "सरहान" (तन्हा पागलः Lone Nutter) पर किया गया। पांच जून 1968 ई० को सरहान ने राबर्ट केनैडी पर फ़ाइर खोल दिया जिससे राबर्ट केनैडी की मौत वाक़ेअ़ हो गई। तफ़्शीश के मुताबिक़ दीवार पर गोलियों के निशानात से साबित होता है कि वहां सरहान के अलावा भी किसी ने फ़ाइरिंग की थी क्योंकि सरहान की गन में पाई जाने वाली गोलियों की तादाद से ज़्यादा गोलियों के निशानात मौजूद थे। बाक़ी गोलियां किसने चलाईं? तमाम सबूत और शवाहिद पुलिस ने ज़ब्त कर लिये। एक फ़ोटो ग्राफ़र ने वक़ूए के बाद तसवीर खींची थीं वह भी पुलिस ने क़ब्ज़े में ले लीं। जब पुलिस पर अवामी दबाव बढ़ा कि यह तसावीर शाए करे तो वह मजबूरन

तैयार हो गई लेकिन हुआ क्या? प्रेस जाते हुए रास्ते में पुलिस कार से तसावीर चोरी कर ली गईं। वाह! वाह! है न मज़े की बात। "बिरादरी" की कार्रवाईयां इसी तरह की होती हैं।

(३) एम के अल्ट्रा की तीसरी बड़ी मिसाल जान लीनन के मशहूर क़त्ल की है। उसके क़ातिल ने उसे इतना आसान लिया कि लीनन को क़त्ल करने के बाद वह सड़क की दूसरी तरफ़ खड़ा होकर "Catcher in the Rye" नामी किताब पढ़ने में मसरूफ़ हो गया ताकि बिल्डिंग के गार्ड को इतना वक़्त मिल जाए कि वह इमारत से बाहर फ़ोन बाक्स पर आकर पुलिस को मुतलअ़ कर सके। तअज्जुब है कि क़ातिल ने जाए वकूआ से कोई हरकत न की और इतमीनान से अपनी गिरफ़्तारी का इंतेज़ार करता रहा। क्या वह एक और तन्हा पागल "Lone Nutter" था?! लीनन के बेटे को सौ फ़ीसद यक़ीन था कि यह सी आई ए का काम है अलबत्ता उसे यह इल्म नहीं था कि सी आई ए के पीछे कौन था? इस हक़ीक़त को अफ़साने में बदलने के लिये हालीवूड ने एक फ़िल्म इसी वाक़िआ के हवाले से बनाई। इसके किर्दारों में बुरूस विलस और जूलिया राबर्ट जैसे महंगे और मशहूर अदाकार थे। फ़िल्म का नाम "कांसपीरेसी थ्योरी" रखा गया। हालीवूड दरअसल "ब्रैन वाशिंग" (ज़ह्नी तख़्रीब) करने वाला जदीद तरीन आला और ज़रीआ है। जो लोग समझते हैं कि यह लोगों की आवाज़ और हक़ीक़त की अक्कास है, वह ग़लती पर हैं। हालीवूड, फ़िरी मैसनरी की आवाज़ और उसके मक़ासिद की अक्कास है। और ठीक उस वक़्त से है जब अमरीकी फ़िल्मी सनअत के बानी डेविड डबल्यू ग्रिफ़िथ ने "दी बर्थ आफ ए नेशन" (1915 ई0) बताई थी। इसके बाद से मेडोना और माइकल जैक्सन तक ही सूरते हाल है। कोई माई का लाल नहीं जो यहूदी प्रोडियूसरों और

सरमायाकारों को ख़ुश किये बग़ैर इस आज़ाद ख़्याल इदारे में तरक़्क़ी का सोच भी सके। यहां इन सब की फ़ेहरिस्त देने का मौक़ा नहीं लेकिन क़ारईन को यह बताना ज़रूरी था कि हालीवूड पर ग़ल्बा रखने वाले लोग कौन हैं? हालीवूड ज़्यादा "होली" (पाक) नहीं है, बल्कि बिल्कुल नहीं है। दरहक़ीक़त "बिरादरी" तफ़रीह को तवील अर्से से इस्तेमाल कर रही है। यह हर दौर के बड़े बड़े नामवर फ़नकारों की सरपरस्त थी और उसने उनको जी भर के इस्तेमाल किया है। आगे चल कर इंशा अल्लाह हम बताएंगे कि स्क्रीन और मौसीक़ी को किस तरह से बिरादरी अपने मक़्सद के लिये इस्तेमाल कर रही है।

यह तो चंद मिसालें थीं। हक़ीक़त यह है कि अमरीका और केनैडा की हुकूमतों की सरकारी सरपरस्ती में रवां रवां इस प्रोजेक्ट ने जो गुल खिलाए हैं, उन्हें मंज़रे आम पर लाया जाए तो भूंचाल आ जाएगा। इस तरह की मालूमात को यहूदी मंसूबा साज़ और अमरीकी फ़ौज व ख़ुफ़िया इदारे सख़्ती के साथ छिपा रहे हैं। वही फ़ौज जो दुनिया में अमन की दावेदार है, वह इस्राईल में दुनिया की सबसे बड़ी बदअम्नी पर लोगों के जज़्बात मुशतअ़ल न होने देने के लिये इसी प्रोजेक्ट पर जादूगर साइंसदानों के ज़रीए दुनिया वालों के अज़हान को तिलस्म में जकड़ने की सर तोड़ कोशिश कर रही है। आप को यक़ीन न आएगा लेकिन बिल क्लिंटन......जी हां! साबिक़ कामियाब तरीन अमरीकी सदर......ने 1995 ई० में एक खुली कान्फ़्रेंस में तसलीम किया था कि अमरीकी हुकूमत लोगों के इल्म में लाए बग़ैर ज़हनों पर कंट्रोल करने और दीगर ग़ैर अख़्लाक़ी तजुर्बात में गुज़िश्ता पचास बरस से मसरूफ़ है। (ज़रा दुहरा लीजिये। गुज़िश्ता 50 साल से) बिल क्लिंटन का कहना था कि वह उस पर शर्मिंदा हैं। हमें

उनकी इस मअ़जरत की सच्चाई पर यक़ीन कर लेना चाहिये......लेकिन हमें इस यक़ीन के बाद यह सोचना होगा कि इस शर्म शर्म में गुज़िश्ता 15 साल (1995 ई0 ता 2009 ई0) के दौरान इन शर्मनाक ग़ैर अख़्लाक़ी तजुर्बात का दाइरा कहां तक फैल चुका होगा? अपने इर्दगिर्द देखिये! बेहिसी और मुर्दनी का शिकार खोए खोए मुसलमानों का शर्मनाक जमूद हमें क्या कहानी सुनाता है?

अमरीकी सदर के इस एतिराफ़ के बाद केनैडा के मतरूका पार्क में जारी शैतानी खेल के निगरां हुक्काम मुश्किल में पड़ गए थे। ख़बर आई थी कि इस एतिराफ़ के बाद "एम के अल्ट्रा प्रोजेक्ट" के ज़िम्मादारान उसे मंज़रे आम पर लाने के लिये काग़ज़ात की "छांटनी" कर रहे हैं। यह बड़ी ख़ूबसूरत इस्तिलाह थी। यूं कह लीजिये कि यह तै किया जा रहा था कि सादा लोह अमरीकी अवाम को कौनसी बात बताई जाए और कौनसी लपेट ली जाए? फिर यह बयान भी आया कि इस प्रोजेक्ट को ख़त्म किया जा रहा है......ज़रा देर के लिये हम तसलीम कर लेते हैं कि तक़रीबन गुज़िश्ता 65 बरस से जारी यह प्रोजेक्ट जिस पर बिला मुबालग़ा करोड़ों अरबों डालर ख़र्च हो चुके हैं, मुरैल से एहतिजाज पर ख़त्म कर दिया गया है......हम इसे तसलीम कर लेते हैं......लेकिन क्या लोगों के ज़हनों को बदलने और उन्हें दज्जाली पैग़ामात का ताबेअ़ और मअ़मूल बनाने के लिये यही एक तरीक़े कार था जिसे ख़त्म करने से यहूदी सामिरी साइंसदानों के हाथों सताई हुई सादा लोह दुनिया दज्जाल के तिलस्मी चक्कर से निकल जाएगी......??? नहीं! बात इतनी सी नहीं! इससे कहीं आगे की है और यक़ीनी तौर से चंद और जाल ऐसे भी हैं जो हमारे गिर्द चंद हराम चीज़ों के इस्तेमाल की आदत डलवाने के दौरान ताने जा चुके हैं......उलमाए किराम मना करते रहे लेकिन

हमारे मनचले, जियाले और रौशन ख़्याल रहनुमाओं ने कौम को उनके गुर्दाब अब में फंसा कर छोड़ा और आज नई नस्ल के मस्ख़ शुदा ज़हन अपनी शिनाख़्त तक भूलते जा रहे हैं। आइये! देखते हैं सामरी जादूगरी के और कौन कौन से सिफ़ली तिलस्मी फंदे ऐसे हैं जिनमें हम अपने हाथों अपने आप को, अपनी अगली नस्ल को झोंक रहे हैं और उलमा व मशाइख़ के मना करने के बावजूद चंद मख़्सूस गुनाहों का नशा हमें यहूद के शिकंजे में ऐसा फंसाता जा रहा है कि अगर अब भी तौबा न की तो अन्क़रीब वह वक़्त आ जाएगा जब इस जाल से निकलने के लिये हम जितना फड़केंगे, वह खाल के उतना ही अंदर उतरता चला जाएगा।

☆☆☆

3-माइक्रो चिप्स

मावराउल तबईयात के बाद अब तबइयात की तरफ़ आते हैं। यहूद की कोशिशें दोनों मैदानों में भरपूर तरीके से जारी व सारी हैं। ऐसी चिप (Chip) ईजाद हो गई है जिससे हाई फ्रीक्वेन्सी माइक्रो बीम्ज़ ख़ारिज होती रहती हैं। यह चिप किसी के बदन में चिपका दी जाए तो उसके दिमाग़ में आवाज़ें गूंजने लगती हैं। वह इंसानी रोबोट की तरह हर हुक्म की तामील करने पर मजबूर हो जाता है। ख़ुसूसन अगर उसे शराब या मंशियात का आदी बना दिया जाए या जादू टोने से उसको "कुव्वते इरादी" तोड़ कर उसे नफ़सियाती मरीज़ जैसा कर दिया जाए तो उसके ज़हन को कंट्रोल करना इंतिहाई आसान हो जाता है और उसे ट्रांस में लाने और मर्ज़ी का काम करवाने में कोई मुश्किल पेश नहीं आती। फिर उसे कैम्प डियोड (अमरीकी यहूदी जादूगरों के तिलस्म का सबसे बड़ा मर्कज़) बुला कर किसी मुआहिदे पर दस्तख़त करवा लिये जाएं, वर्ल्ड ज्यूश कांग्रेस जैसे बदनाम फ़ोर्म पर बुला कर दोस्ती की पेंगें बढ़ाई जाएं या कोई ऐसी शर्त मंज़ूर करवाई जाए या ऐसा हुक्म मनवाया जाए जो उसकी पूरी कौम के मफ़ादात के ख़िलाफ़ हो......वह सब कुछ करता चला जाता है और रिटायरमेंट के बाद भी उसे ख़बर नहीं होती कि मैं क्या कर गुज़रा???

एम के अल्ट्रा का राज़ फ़ाश होने के बाद अगला प्रोजेक्ट "EDOM" के तिहत चलाया जा रहा है। इससे मुराद "Electronic Dissolution of Memory" है। EDOM का एक हिस्सा यह है कि इंसानों को अग़वा करके उनमें

माइक्रो चिप्स की पेवंदकारी की जाए। इन चिप्स को इंजीनियरों के एक "कंसूर शीम" ने तरक्की देकर इस टेक्नोलोजी की चोटी तक पहुंचने की कोशिश की है। इन चिप इंजीनियरों का तअल्लुक़ मोटरोला, जिज़ल इलेक्ट्रोनिक, आई बी एम और बोस्टन मेडीकल सेंटर जैसे शुहरए आफ़ाक़ अमरीकी इदारों से है। माइक्रो चिपिंग के तिहत चलने वाले बड़े प्रोग्रामों में से एक मंसूबा "विन वर्ल्ड इलेक्ट्रोनिक करंसी" का है जो दज्जाल की आलमी रियासत में चलने वाला वाहिद सिक्का राइजुल वक़्त होगा। यह करंसी एक आलमी मालियाती बुहरान के बाद......शायद अन्क़रीब ही......मुतआरिफ़ करवाई जाएगी। आप को यह सब कुछ दीवाने की बड़ न महसूस हो रही हो......लेकिन......ठहरिये......! कोई फ़ैसला करने से पहले उन शवाहिद पर एक नज़र डाल लीजिये जो इस तरह के अंदाज़ों की तसदीक़ करते नज़र आते हैं।

☆......☆......☆

यह अफ़्रीक़ा या एशिया के किसी पसमांदा मुल्क का नहीं, बरतानिया और स्वीडन जैसे मुल्कों का क़िस्सा है। पहले का तअल्लुक़ फ़र्द वाहिद से और दूसरे का बच्चों के एक पूरे गुरूप से है। इब्तिदा हम गोरों के देस में पेश आने वाले उन काले करतूतों से करते हैं जिनका तअल्लुक़ स्वीडन के एक शहर से था। स्वीडन को दुनिया के हसीन तरीन मुल्कों में शुमार किया जाता है। खुशहाल, तरक़्क़ी याफ़्ता और मुहज़्ज़ब दुनिया के लिये रोल माडल समझे जाने वाला यह मुल्क यहूदी जादूगरों का सबसे बड़ा मसकन है। इसके बाद जुनूबी अफ़्रीक़ा का नम्बर आता है। इसके बाद......ख़ैर छोड़िये! बात लम्बी हो जाएगी। स्वीडन के मुर्ग़ज़ारों को जिस तरह सामरी तिलस्म गरों ने जहन्नम ज़ार बनाया है और इस ठंडे मुल्क को जिस तरह

शैतानी आग की तपिश से झुलसा रखा है, उसको जानने वाले यूरप के बासियों पर तरस खाने लगते हैं। आज इस मुल्क के दारुल हुकूमत के एक बासी का वाक़िआ आपको सुनाते हैं जो बेख़बर इंसानों के साथ ख़ुफ़िया शैतानी खेल की बदतरीन मिसाल है।

रावर्ट नीज़लैंड स्टाक होम का रहने वाला था। वह मार्किटिंग के शोबे से वाबस्ता एक तालीम याफ़्ता इंसान था। एक मर्तबा वह बीमार हुआ। बीमारी इतनी संगीन न थी फिर भी उसे आप्रेशन का "मशवरा" दिया गया। वह एक मक़ामी हस्पताल में छोटे से आप्रेशन के लिये गया। आप्रेशन के बाद उसने महसूस किया कि उसकी शख़्सियत तबदील हो रही है। अजीब व ग़रीब ख़्यालात उसके ज़हन में उतर रहे हैं। उसके दिमाग़ में आवाज़ें गूंजती रहती हैं। गोया वह कहीं से भेजे गए सिगनल केच कर रहा है। उसने यह भी भांप लिया कि उसका पीछा किया जाता है। कुछ लोग ख़ुफ़िया तौर पर उसकी हरकात व सक्नात का जाइज़ा ले रहे हैं। जब सूरते हाल ज़्यादा ख़राब हो गई तो उसने ऐक्सरे कराने का फ़ैसला किया। एक्सरे में दिखाई दिया कि उसके दाएं नथ्ने में एक ट्रांसमीटर नस्ब है। वह भौंचक्का रह गया। उसकी समझ में न आता था कि यह सब क्या है और उसके साथ क्यों हो रहा है? उसे यूं लगा जैसे उसकी नाक में नकेल डाल दी गई है। वह किसी नादीदा कुव्वत का गुलाम हो गया है। उसने ख़ामोशी से यह ट्रांसमीटर निकलवाया और तजज़िया कराने के लिये एक लिबारेट्री में ले गया। वहां उसे कहा गया कि दस दिन के बाद वापस आए और फिर दस दिनों के बाद क्या हुआ? आप अंदाज़ा लगा सकते हैं? ट्रांसमीटर गुम हो चुका था। लिबारेट्री से हस्पताल से लिबारेट्री तक फैला हुआ "बिरादरी" का जाल मुनज़्ज़म होकर काम कर रहा था।

अब दूसरे वाक़िए की तरफ़ आइये! बरतानिया के साहिली शहर लीवर पूल में एक अज़ीम तिब्बी ख़्यानत का इंकिशाफ़ हुआ। "फ़र्स्ट लीवर पूल चिल्डरन" नामी हस्पताल के मुतअल्लिक़ पता चला कि यहां बच्चों का "दिमाग़" चुरा लिया जाता है। दुनिया के सामने......जी हां! मुहज़्ज़ब दुनिया के सामने......यह हक़ीक़त पहली मर्तबा सामने आई कि दिमाग़ के अफ़आल समझने के लिये फ़्रीमैसन बिरादरी के डाक्टरों ने वालिदैन की इजाज़त लिये बग़ैर मासूम बच्चों को गिनिआ पिग्स (Guinea Pigs) की तरह इस्तेमाल किया है। यह मामूल बीस बरस तक बरतानिया जैसे तरक़्क़ी मुल्क के एक बड़े शहर के हस्पताल में जारी रहा। यह सिर्फ़ एक हस्पताल की कहानी है। बिलआख़िर जब यह ख़बर बाहर निकली तो मुतअल्लिक़ा हस्पताल......"फ़र्स्ट लीवर पूल एल्डर है चिल्डरन हास्पिटल" ने ऐसे इम्कान की भी सख़्ती से तरदीद कर दी। मीडिया को क़ाबू करने का फ़न "बिरादरी" से ज़्यादा किसको आता है? बच्चों के वालिदैन ने हिम्मत न हारी। वह अपने जिगर गोशों के साथ यह दिलख़राश सुलूक कैसे भूल सकते थे? बिलआख़िर 146 ख़ानदानों की जिद्द व जिहद से हस्पताल मुजरिम साबित हो गया और हस्पताल इंतेज़ामिया को एतिराफ़ करना पड़ा कि उनके पास बच्चों के कई अअ्ज़ा हैं। जब कुछ सहाफ़ी पीछे पड़े और घेरा तंग हुआ तो हस्पताल ने बिलआख़िर तसलीम कर लियाः "इसकी तहवील में 146/हराम मग़ज़ (दिमाग़ का दस फ़ीसद) हैं।" लेकिन साथ ही बनी इस्राईल की रिवायती दरोग़कोई का सहारा लेते हुए यह उज़्र तराश लिया गयाः "यह एक तालिबे इल्म ने अपने इस्तेमाल के लिये हासिल किये थे जो पी एच डी के लिये बच्चों के दिमाग़ के ओज़ान जांच रहा था।" यह पी एच डी मक़ाला कभी शाए न हुआ। यह बात आप

को क्या बताई है? क्या पी एच डी 146/ बच्चों से ज़्यादा वह अहम थी? वह कौन खुसूसी तालिबे इल्म था जिसे क़वानीन और इंसानी इक़्तिदार से बालातार क़रार दे दिया गया और जिसने अपनी पी एच डी के लिये बीस साल लगा दिये। यह बात इत्तिलाआत के हुसूल के हक़ पर ज़ोर देने वाले उस मुल्क में कभी न बताई गई। दिमाग़ के तमाम ख़लिये बच्चों के वालिदैन को वापस किय गए। वालिदैन को अपने इन बच्चों (के दिमाग़ों) की दोबारा तदफ़ीन की अज़ियत से गुज़रना पड़ा जिन्हें वह एक मर्तबा पहले ही दफ़न कर चुके थे। लेकिन बात इतनी ही न थी। दिल दोज़ इंकिशाफ़ात का सिलसिला भी जारी था। कुछ अर्सा बाद इंसानी दिमाग़ों के कुछ और ख़लिये बरआमद हुए जो जान बूझ कर छिपा लिये गए थे और कभी वापस न किये गए। उसने मज़ीद अज़ियतनाक सूरते हाल पैदा की। वालिदैन अपने मासूम बच्चों की तीसरी तदफ़ीन की तैयारी करने लगे। उन्हें मुतमइन करने की ज़रूरत थी। यह वुसती अफ़्रीका या जुनूबी एशिया का कोई पसमांदा मुल्क न था कि वालिदैन रो पीट कर ख़ामोश हो जाते। इस दफ़ा एल्डर है एन ऐच ऐस ट्रस्ट और यूनिवर्सिटी ने एक मुशतर्का बयान जारी किया जो "बिरादरी" के बेरहम दिल और झूट की आदी ज़बान का अक्कास है: "यह ख़लिये अलग से ज़ख़ीरा किये गये थे और तहक़ीक़ी मुतालआ की ग़र्ज़ से रखे गए थे।" हैरत की बात यह है कि इस दफ़ा हास्पिटल और ऐन ऐच ट्रस्ट मिलकर तीसरी बार भी झूट बोल रहे थे। बिलआख़िर 26 जनवरी 2001 ई० को उन्होंने एतिराफ़ कर लिया: "बच्चों के अअ्ज़ा प्राईवेट इदारों को फ़रोख़्त किये जा रहे थे।"

यह कौन से प्राईवेट इदारे थे जो बरतानिया जैसे इंसानी हुक़ूक़ की "मुहाफ़िज़" रियासत के सख़्त गीर क़ानून और इंसानी इक़्तिदार

से बालातर थे? क्या सिर्फ़ उनके पास यही ख़लिये रह गए थे या मज़ीद बाक़ी थे? इस एतिराफ़ के बाद उनके ख़िलाफ़ सख़्त तरीन कार्रवाई क्यों न हुई? अभी बात ख़त्म नहीं होती। ड्रामे का आख़िरी पर्दा 31/जनवरी 2001 ई0 को उठा। जब एक डच पैथालोजिस्ट "डकवान वीलज़न" को कुर्बानी का बकरा बनाया गया। "बिरादरी" ने अपने सारे "तिब्बी जराइम" उस डाक्टर के सर डाल दिये। बरतानवी मीडिया में उसको "बेबी बूचर" (बच्चों का क़साब) का नाम दिया गया। एधी साहब ने बच्चों, बूढ़ों, मर्दों, औरतों, यतीमों और लावारिसों......सबकी ख़िदमत की है और इसमें वह इतना आगे गए हैं कि अपना क़ब्रिस्तान तामीर कर चुके हैं। डाक्टर वान में और उनमें बस इतना फ़र्क़ है कि वह बच्चों पर तवज्जो देता था, एधी साहब हर मुर्दे को नवाज़ते हैं। डाक्टर "वान" ने बच्चों के दिल, दिमाग़, फेफड़े, गुर्दे, जिगर, आंखें......सब कुछ चुराया। सिर्फ़ उनकी रूहें न चुरा सका। एक लाख से ज़्यादा अअ़ज़ा, जिनमें दिमाग़, दिल, फेफड़े और मुर्दा पैदा होने वाले बच्चों के पूरे पूरे जिस्म ले लिये। कुछ बच्चों को महज़ ख़ोल की हालत में दफ़न किया गया। यह सारा मुआमला ख़ालिसतन "मैसूंक" है। क्या सिर्फ़ एक आदमी इतनी बड़ी सफ़्फ़ाकी का ज़िम्मादार था? इस सारे क़िस्से का ज़िम्मादार सिर्फ़ एक शख़्स को ठहराना कम फ़हमी और नावाक़फ़ियत है। इसके पीछे इंसान के भेस में वह तमाम शैतान मौजूद हैं जो दुनिया पर शैताने अक्बर की झूटी ख़ुदाई मुसल्लत करने के लिये सरगर्म हैं। इसके पीछे क़ौमे यहूद के वह माहिर डाक्टर हैं जिन्होंने मेडीकल में नोबल इन्आम हासिल किया। वह सरमायादार हैं जिन्होंने शैतान को ख़ुश करने के लिये बेदरेग़ पैसा लुटाया। वह साइंसदान हैं जो दज्जाल को ग़ैर मामूली तसख़ीरी ताक़तें फ़राहम करने के लिये दिन रात

तजुर्बागाहों में सरगर्म हैं। बरसरे इक़्तिदार में रहने वाली हुकूमतें भी मुजरिम हैं जिन्होंने यह सब कुछ होने दिया। और वह सब लोग इसके ज़िम्मादार थे और आज तक हैं जो बरतानिया जैसे मुल्क में इंसानी दिमाग़ों को तसख़ीर करने वाले यहूदी डाक्टरों और फ़्रीमैसन साइंसदानों के इन करतूतों के सामने आने के बाद भी ख़ामोश हैं।

4-शार्ट वीज़न

आपके घर में टेलीवीज़न मौजूद है? आपने उसे अपने बच्चों को तफ्रीह फराहम करने और उन्हें अपडेट रखने के लिये घर में लाया होगा......शाम को बच्चों को टेलीवीज़न के सामने देख कर आप को खुशी महसूस होती होगी कि आप के बच्चे घर में आप की आंखों के सामने बख़ैरियत मौजूद हैं और अपनी मालूमात में इज़ाफ़ा और ज़हन को वसीअ़ कर रहे हैं......लेकिन आपके वहम व गुमान में न होगा कि यह बेज़रर दिखाई देने वाला आला ज़हनी तख़रीब के लिये एक ख़ास तकनीक के तिहत इस्तेमाल किया जाता है। "शार्ट वीज़न" (Short Vision) एक और कामियाब प्रोजेक्ट है जो लोगों के ज़हनों तक पैग़ाम पहुंचाने के लिये चलाया जाता है। इसके ज़रीए टेलीवीज़न सैट को मख़्सूस सिगनल नश्र करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। मुतहर्रिक तसवीर, जो टेलीवीज़न स्क्रीन या सिनेमा स्क्रीन पर नाज़िरीन देखते हैं, वह एक सेकंड में 45 फ़्रेम्ज़ या फ़ोटो पर मुशतमिल होती है। दूसरे लफ़्ज़ों में 45 साकिन तसवीरें एक सेकंड का पैंतालिसवां हिस्सा लेती है। जो इंसानी आंख से क़ाबिले दीद नहीं। अगर्चे यह आंख से क़ाबिले दीद नहीं होती लेकिन हमारा ला शऊर उसे देख लेता है क्योंकि यह हमारे शऊर से ज़्यादा तेज़ होता है और पैग़ाम वसूल कर लेता है। चुनांचे न जानते हुए या न समझते हुए भी हम ला शऊरी तौर पर इस पैग़ाम से तहरीक ले लेते हैं। इसको एक मिसाल से समझें: इस प्रोजेक्ट के तहत एक तजुर्बा किया गया। जिसमें कोका कोला की एक बोतल शार्ट वीज़न सिनेमा के तमाशाइयों को वक़्फ़ा से कुछ देर पहले दिखाई गई। यह शार्ट

वीज़न पैग़ाम मुअस्सिर साबित हुआ और वक़्फ़ा के दौरान फ़िल्म बीनों की अक्सरियत ने कोका कोला ख़रीदा। यही तकनीक तरक़्क़ी पज़ीर मुमालिक में इंतिख़ाबी मुहिम के दौरान इस्तेमाल की जाती है। इंतिख़ाबात के दौरान क़ौमी टेलीवीज़न स्टेशन अपने "बेहतरीन प्रोग्राम" नश्र करते हैं। लोग टेलीवीज़न सैटों के सामने जमे बैठे होते हैं। नशरियात के दौरान इंतिख़ाबात को भरपूर अहमियत दी जाती है। जम्हूरियत में लोगों की दिलचस्पी बढ़ाई जाती है और इस दौरान "शार्ट वीज़न" किसी मख़्सूस उम्मीदवार को मुंतख़ब करवाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। पहले नेशनल टी वी चैनल्ज़ पर यह सब कुछ होता था। अब यह एजन्डा सेटेलाइट चैनल्ज़ ने संभाल लिया है। आजकल के वालिदैन टी वी की तबाहकारियों से सर्फ़े नज़र करते हुए अपने बच्चों को घरेलू तफ़रीह मुहय्या करने और उन्हें अपडेट रखने के लिये टेलीवीज़न स्क्रीन में झोंके रखते हैं और इस बात से क़तअन बेख़बर होते हैं कि शार्ट सिग्नल्ज़ के ज़रीए उनके बच्चों के दिमाग़ में झमाके किये जा रहे हैं।

5-बेक ट्रेकिंग

ज़हनों को गिरफ़्त में लेने की एक और तकनीक "बेक ट्रेकिंग" है। उलमाए किराम कहते हैं कि हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ मौसीक़ी "शैतान की आवाज़" है। अवाम नहीं मानते। वह कहते हैं इसके बग़ैर गाड़ी नहीं चलती। वक़्त नहीं गुज़रता। आइये देखते हैं मौसीक़ी से चलने वाली गाड़ी और उसकी धौंस में महव होकर गुज़ारा हुआ वक़्त क्या भयानक नतीजा लाता है? मौसीक़ी के शाइक़ीन जो कुछ सुनते जैं वह ट्रेक का "फ़ारवर्ड प्ले" होता है। इसके साथ ही रीवर्स में "ट्रेक मेसज" छिपा होता है। इसका मुआमला अजीब मुतज़ाद होता है। यह हमारे शऊर की गिरफ़्त में नहीं आता लेकिन लाशऊर उसे क़बूल किये बग़ैर नहीं रह सकता। यह हमारे शऊर पर मुन्कशिफ़ नहीं होता लेकिन हमारा शऊर उसे डी कोड करके क़बूल कर लेता है। जब ट्रेक को बेकवर्ड चलाया जाए तो उस मेसिज या पैग़ाम को सुना जा सकता है। यह उस वक़्त होता है जब एक रीकार्ड या कैसिट को उल्टा चलाया जाता है। असल पैग़ाम इसी में छिपा होता है। इस ज़हनी गिरफ़्त वाले तरीक़ए कार का तज़ुर्बा ख़ुद कीजिये या फिर वह आडियों कैसिट सुनिये जिन्हें "शेडोज़" कहा जाता है। अमली मिसाल भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजियेः आस्ट्रिया वसती यूरप का वह मुल्क है जो यहूद का गढ़ रहा है। इसका दारुलहुकूमत वयाना मौसीक़ी के हवाले से दुनिया भर में शोहरत रखता है। यहां के ओपैरा और उसमें मसरूफ़कार प्यानो बजाने के माहिर दुनिया भर में अपनी अलाहिदा शनाख़्त रखते हैं। आस्ट्रिया के

बाशिंदों को इन पर फ़ख्र है......लेकिन क्या ऐसी चीज़ पर फ़ख्र करना मअ़कूल हो सकता है जिसके मुतअल्लिक़ यूरपी क़ौम को मालूम ही नहीं कि नादीदा हाथ नादीदा ज़राए की मदद से उनके साथ भयानक खेल खेल रहे हैं। वोल्फ़ गांग ऐमिड्स मूज़ार्ट आस्ट्रिया का नामवर तरीन मौसीक़ार है। उसने एक धुन बनाई जिसे रीलीज़ होते ही अफ़सानवी शौहरत मिल गई। बिरादरी अपने मंसूबों को यूंही आगे बढ़ाती है। इस धुन का नाम "दी मैजिक फ़्लूट" रखा गया। अनोखा और पुरकशिश नाम। बिरादरी स्टाइल कुछ ऐसा ही है। उसमें चर्च का मुतबादिल पेश किया गया था। इसके बाद उसने "एकवीम मीस" भी लिखी थी। यह भी हिट हुई। दुनिया में इस तरह की बहुत सी चीज़ें हिट होती हैं और देखते ही देखते हर छोटे बड़े के ज़हन में गूंजती और दिमाग़ों पर छा जाती हैं। इसके पीछे कौन होता है? इनके पसमंज़र में क्या पैग़ाम होता है? हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ मौसीक़ी दिल में निफ़ाक़ के जज़्बात उगाती है। इस तरह की मौसीक़ी सुनने वाले के दिल की तारें जब झुरझुरी लेती हैं तो उसे क्या महसूस होता है? उसका दिल क्या कुछ करने को चाहता है? यह इस पैग़ाम को मअ़कूस नक़्श है जो उसके कानों के ज़रीए उसके दिमाग़ के निहां ख़ानों तक पहुंचा था, अल्लाह अपनी पनाह में रखे। हर चंद महीनों के बाद हमें "तन्हा पागलों" (Lone Nutters) की कहानियां सुनने को मिलती हैं। अमरीका में ऐसे वाक़िआत होते रहते हैं कि अचानक कोई शख़्स उठ कर लोगों पर फ़ाइरिंग शुरू कर देता है। अब यह वाक़िआत यूरप में भी रूनुमा हो रहे हैं। यह दरहक़ीक़त ज़हनी तौर पर गिरफ़्त में लिये गए लोगों की एक शैतानी मिसाल है। होता यूं है कि पाप म्यूज़िक के बेक वर्ड में

मुख़्तलिफ़ किस्म के शैतानी पैग़ामात मसलनः "Kill your mum, Kill your Felose" फ़ीड कर दिये जाते हैं। जब बच्चा या नौजवान यह म्यूज़िक सुनता है तो उनके पीछे मौजूद इस तरह के बेहूदा पैग़ामात......जिनकी मज़ीद मिसाल लिखने से क़लम क़ासिर है......आहिस्ता आहिस्ता इसके लाशऊर में जागुज़ीं हो जाते हैं। वह कुछ अर्सा बाद अंदरूनी ज़हनी तहरीक के हाथों मजबूर होकर वह सब शैतानी काम कर गुज़रता है जिनका खुद उसे भी पता नहीं होता कि यह सब कुछ उसने क्यों किया?

इंसानी ज़हनों से यह शैतानी खेल खेलना क़ौमे यहूद के उन कारनामों की झलक है जिनकी बिना पर वह बंदर और ख़िंज़ीर बनाए गए......इस मरदूद क़ौम के हथकंडों को समझने से पहले उनका शिकार होने पर मलामत नहीं, अफ़सोस तो इस पर है जो इन शैतानी हरबों से वाक़िफ़ होकर भी डिश और मौसीक़ी न छोड़े। अपनी निगाहों और कानों की हिफ़ाज़त न करे।

बहरहाल! शैतान के कारिंदों की यह कारसतानियां अपनी जगह......लेकिन रहमान के रज़ाकारों की जिद्द व जिहद भी राएगां नहीं जाती। दुनिया भर में मसाजिद, मदारिस, ख़ानक़ाहों और तबलीग़ी मराकिज़ में रूहानियत को फैलाने और रहमानियत को ग़ल्बा दिलाने की जो कोशिशें हो रही हैं, वह इन दज्जाली करतूतों का शाफ़ी इलाज है। इन हज़रात के मुजाहिदे और शुहदा के खून की बरकत से अल्लाह तआला हक़ को ग़ालिब करके रहेंगे। उनकी मामूली मेहनत जब सुन्नत के मुताबिक़ होती है तो चाहे वह एक असा हो, जादूगरों की सारी रस्सियों और सांपों को निगल जाता है। यहूद के तमाम तर शैतानी मंसूबों और हैवानी कोशिशों के बावजूद

आख़िरकार इस्लामाबाद के नौजवानों जैसी चिंगारियां अभी हमारे ख़ाकिस्तर में बाक़ी हैं। अल्लाह तआला उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए और हम सबको सुन्नत से मुहब्बत और मस्नून आमाल की पाबंदी नसीब फ़रमाए।

☆☆☆

शैतान की सरगोशियां

हज़रत अबू लुबाबा शाह मंसूर साहब दामत बरकातुहुम

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबरकातुहु!

आपका मज़मून "शार्ट वीज़न और बेक ट्रेकिंग" पढ़ा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आपको जज़ाए ख़ैर दे। आपकी कल्मी काविशें गिरां क्द्र हैं। और इस पुरफ़ितन दौर में आम्मतुन्नास के लिये रहनुमाई का बेश बहा ज़रीआ है। बिलखुसूस आपके इस मज़मून से जिस तरह आपने तस्वीरी और बस्री साज़िशों को बेनक़ाब किया है वह आप ही का ख़ास्सा है। दिल से दुआ निकलती हैः "ऐ अल्लाह! तू इस क़लम की हिफ़ाज़त फ़रमा। आमीन

मौसीक़ी और नशरी तसावीर के जो हक़ाइक़, तहक़ीक़ के साथ आपने पेश फ़रमाए हैं, वह आज के बाख़बर और बा शऊर अफ़राद की समझ में फ़ौरन आते हैं। बैनस्सुतूर हक़ाइक़ साइंसी जिद्दत और दलील के ज़रीए ही सामने लाए जा सकते हैं। क्या ही अच्छा हो कि इस अहम और नफ़ीस तहक़ीक़ और अटल हक़ीक़त को विडियो सी डी के ज़रीए (जिसमें जानदार की तस्वीर न हो) अवाम तक पहुंचाएं। इन मिसालों को अम्ली तौर पर दिखाया जाए ताकि हक़ का पैग़ाम ज़्यादा ज़ोर और ताक़त के साथ पहुंचे। इंशा अल्लाह इसके दूर रस असरात मुरत्तिब होंगे और गुनाहों से बचने की बड़ी ख़ैर सामने आएगी। इस ज़िम्न में हमारी टीम इस ख़त के ज़रीए आपकी इजाज़त भी मतलूब है। मज़ीद अमली मिसालों का मवाद भी। हम इस मौज़ू पर विडियो सी डी बनाना चाहते हैं। हमें क़वी उम्मीद है कि इंशा अल्लाह हम आप का पैग़ाम आपकी तहक़ीक़ और इल्मी

काविश को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने में ज़रूर कामियाब होंगे।

वस्सलाम……टीम, दी ट्रुथ इंटरनेशनल

वअलैकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाहि वबरकातुहु!

अल्लाह तआला आपके दीनी जज़्बात में तरक़्क़ी दे और इस नेक मक़्सद में आपको कामियाबी अता फ़रमाए। बेक ट्रेकिंग की शैतानी तकनीक पर मवाद और मिसालें पेश करने से पहले हम तीन चीज़ों पर ग़ौर कर लें तो बात समझनी आसान हो जाएगीः

(1) इंसानी ज़हन कैसे काम करता है?

(2) बेक ट्रेकिंग कैसे की जाती है?

(3) क्या इसका इंसानी ज़हन पर असर होता है?

इन तीन निकात को मुख़्तसरन समझ कर हम इंशा अल्लाह इसकी चंद मशहूर मिसालें पेश करेंगे। एक मुसलमान के लिये असल खुशनसीबी की बात तो यह थी कि जब उसके रब और रसूल (सल्ल0) ने फ़रमा दिया था कि गाना और मौसीक़ी शैतान की आवाज़ है। यह उसका ख़तरनाक जाल है जिसमें वह आदम के बेटों को फंसाता और उनके अम्मां अब्बा से दुशमनी का इंतेक़ाम लेता है, तो एक मुसलमान के लिये इतना ही काफ़ी होना चाहिये था……उसे यह गंदा शैतानी काम छोड़ देना चाहिये था……लेकिन नास हो "शैतानी बिरादरी" के उन हीलों का जिन्होंने इस "हराम क़तई" को भी "मुबाहे अस्ली" बावर कराने में कसर नहीं छोड़ी हत्ता कि यह गुनाहे कबीरा अब सिरे से गुनाह ही नहीं समझा जाता। बहरहाल! अब हम इंशा अल्लाह तहक़ीक़ शवाहिद की रौशनी में साबित करेंगे कि शैतान की आवाज़ मौसीक़ी की धुनों में मुदग़म होकर किस तरह हमारे बच्चों को ख़ुदा की इबादत से छुड़ा कर अपनी गुलामी में

जकड़ रही है? अल्लाह करे इससे क़ारईन को हक़ीक़ते हाल समझने और सादा लोह मुसलमान भाईयों को समझाने में मदद मिले।

(1) इंसानी ज़ह्न कैसे काम करता है?

ज़ह्न पूरे जिस्म में मास्टर कंट्रोल का काम करता है। यह न सिर्फ़ मुख़्तलिफ़ Senses (हसयात) के ज़रीए मुसलसल इत्तिलाआत वसूल करता है, बल्कि साथ साथ पिछली मालूमात जो गुज़िश्ता तजुर्बात से हासिल की गई हों, उनको भी महफ़ूज़ कर लेता है। यह काम वह मुसलसल करता रहता है और ज़ह्न के इन दो मुसलसल कामों से सीखने और याद रखने का अमल मुम्किन होता है। ज़ह्न दो हिस्सों में मुन्क़सिम है। दायां हिस्सा और बायां हिस्सा। दायां हिस्सा पेचीदा बस्री ख़ाके और जज़्बात के इज़्हार के लिये मख़्सूस है जबकि बायां हिस्सा ज़बान के इस्तेमाल, हिसाब किताब और दलाइल के सिस्टम को कंट्रोल करता है। इन दोनों हिस्सों के दर्मियान एक स्क्रीन "Membrane" है। कोई भी इत्तिला जो दिमाग़ को भेजी जाती है वह बाएं हिस्से से दाख़िल होती है। दिमाग़ का यह हिस्सा उसको जांचता है। अब यह जांच पड़ताल उस शख़्स के अपने अक़ाइद, तालीम, यक़ीन और पहले से महफ़ूज़कर्दा मालूमात की कसौटी पर होती है। अगर कोई इत्तिला उसकी इक़्तिदार, इल्म, तजुर्बे, यक़ीन या मुशाहिदे के ख़िलाफ़ न हो तो फिर यह इत्तिला स्क्रीन से पार होकर दिमाग़ के दाएं हिस्से में दाख़िल होती है जहां ज़ह्न तमाम इत्तिलाआत को जमा कर के क़बूल कर लेता है। "बेक ट्रेकिंग और बेक मासिकिंग" (Backmasking and Back Tracking) के तरीक़ा कार की ज़ह्न के अमल में असर अंगेज़ी और उसमें ख़लल अंदाज़ी देखें कि इस तरीक़ाकार में छिपे हुए पैग़ामात को कान ज़ह्न तक पहुंचा देता है। ज़ह्न इसको

कबूल और वसूल तो करता है लेकिन समझ नहीं पाता। क्योंकि यह पैग़ामात तहरीफ़ शुदा और समझ में न आने वाली हालत में ज़ह्न को मिलते हैं। ज़ह्न का बायां हिस्सा (जिसने पैग़ाम वसूल किया) एक कशमकश की हालत में होता है कि इस पैग़ाम, जुम्ले या अल्फ़ाज़ के साथ क्या किया जाए? इसी कशमकश के दौरान बायां हिस्सा पैग़ाम को स्क्रीन से गुज़रने देता है और यह पैग़ाम दाएं हिस्से में पहुंच जाता है। वहां यह इत्तिलाआत क़बूल कर ली जाती हैं और दिमाग़ उसको एक हक़ीक़त के तौर पर मान लेता है। यह पैग़ाम वहां पर अपनी जगह बना लेता है और मुस्तकबिल में कभी खुल कर ज़ाहिर होकर अपना रंग दिखाता है। ज़ह्न व अक़्ल को मस्राइज़ के पैग़ामात को वसूल करने का सबूत बहुत जगहों से मिल रहा है। यहां पर सिर्फ़ एक मिसाल पर इक्तिफ़ा किया जाता है। पैरिस में तक़रीबन हर माह नौजवानों की शब बेदारी महफ़िलें मुन्अक़िद होती हैं। जिनमें जॉन होलीडे (John Holiday) गाता है। उस नौजवान की उम्र 18 साल से ज़्यादा नहीं जिसे प्राइमरी स्कूल से निकाल दिया गया था और जो आज लाखों डालर का मालिक है। टिकटों की क़ीमत इंतिहाई ज़्यादा होनें के बावजूद तक़रीबन 10,000 लड़के और लड़कियां इस गुलूकार को सुनने आते हैं। यह महफ़िल रात के नौ बजे शुरू होती है और उस वक़्त ख़त्म होती है जब लोग बेख़ुद होकर आपे से बाहर हो जाते हैं। सर फुटव्वल से ज़ख़्मी हो जाते हैं। हत्ता कि पुलिस, फ़ाइर ब्रिगेड, इम्दादी पार्टियां और वालिदैन पहुंच जाते हें।

(2) बेक ट्रेकिंग कैसे की जाती है?

इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर्ज़ के मुताबिक़ म्यूज़िक आरकस्ट्रा पर 9 ट्रेक्स होते हैं। यह टेक्नालोजी कम्पयूटर में भी इस्तेमाल होती है।

उमूमन म्यूज़िक रीकार्डिंग के लिये 8 ट्रेक्स इस्तेमाल होते हैं। इनमें से किसी एक ट्रेक पर मौसीक़ार "Backtracking" करते हैं। इस मक़सद के लिये उमूमन चौथे या पांचवें ट्रेक को इस्तेमाल किया जाता है। इस मक़सद के लिये उनके पास ज़रूरी सामान और मशीनरी सब कुछ होता है। एक इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर रीकार्डिंग Equipment की मदद से उसको बाआसानी Monitor कर सकता है। "Backmasking" एक और ऐसी तकनीक का नाम है। इसमें एक लफ़्ज़ को उल्टा बोलते हैं लफ़्ज़ SATAN (शैतान) को उल्टा करके NATAS बोलेंगे। एक लफ़्ज़ Kill है, यह इसको Llik कर देंगे। आजकल बहुत से गुरूप्स यह तकनीक "बेकवर्ड ट्रेकिंग" के बजाए फ़ारवर्ड ट्रेकिंग "Forword Tracking" में इस्तेमाल कर रहे हैं। Forword Tracking दरअसल हिप्नाटिज़्म या ब्रेन वाशिंग की एक क़िस्म है जो बहुत तबाहकुन असरात की हामिल है।

मलैशिया के एक मशहूर मौसीक़ार का हैरत अंगेज़ क़िस्सा है। वह गिटार बजाने का बेइंतिहा शौक़ीन था। उसके पास 300 सी डीज़ का एक बड़ा ज़ख़ीरा भी था। एक रोज़ जब यह मौसीक़ार गिटार बजा रहा था तो उसको एक बूढ़ा शख़्स मिला। उस बूढ़े ने उससे पूछाः "क्या वह ख़ूबसूरत गिटार बजाना चाहता है?" उसके शौक़िया इस्बात के जवाब में उसने उस जवान को चौराहे पर गिटार बजाने का मशवरा दिया और बताया कि वहां एक शख़्स तुम्हें आकर मिलेगा जो तुम्हें दुनिया के ख़ूबसूरत तरीन म्यूज़िक से मुतआरिफ़ गिरवाएगा, उसको अपना लेना। पूरी दुनिया में तुम्हारे म्यूज़िक की धूम मचेगी। यहां तक पहुंच कर मलाइशन मौसीक़ार ख़ामोश हो गया। आप को मालूम है कि वह ख़ामोश क्यों हुआ? उसको जो अल्बम दिया गया उस पर जुड़वां लोगों के एक गुरूप की तस्वीर है।

जिसके दर्मियान में एक शख़्स की तस्वीर है। उस शख़्स की तस्वीर माइकल जैक्सन के मशहूर ज़माना अल्बम "Dangerous" के कोर पर भी देखी जा सकती है। हम ऊपर शैतान के इस पुजारी के मुतअल्लिक़ कुछ तफ़सील दे चुके हैं। इस शख़्स की हक़ीक़त कुछ यूं है कि यह फ़ितरतन ऐसा शक़ीयुल क़ल्ब और ख़बीसुन्नफ़्स था कि उसके अपने वालिदैन ने उसे "ख़ूंख़्वार जंगली" का लक़ब दिया था। उसने "Satanic Bible" के नाम से किताब मुरत्तिब की और इस किताब का इस्तेमाल "Satianic" नामी चर्च में हुआ। "Alistair Crowley" जिसने उस चर्च की बुन्याद रखी। उसने अपनी किताब "Magic" में यह शैतानी नसीहत की है: "Backward" लिखना सीखो। "Backward" रीकार्ड और "Play" करना सीखो। इससे अंदाज़ा लगाएं कि शैतानी बिरादी (फ़्री मैसन) इस तकनीक पर कितना ज़ोर दे रही है? और एक हम हैं और हमारे रौशन ख़्याल हुक्मरान और नौजवान नस्ल है कि इन शैतानी लहरों में बहे चले जा रहे हैं।

एक और प्रोफ़ेशनल म्यूज़ीशन ने तौबा के बाद इस शैतानी तकनीक से आगाह किया। उसका म्यूज़िक पूरे रेडियो Lotus और दूसरे बहुत से स्टेशन से सुना जाता था। यह म्यूज़ीशन कभी नमाज़ पढ़ने मस्जिद न आया था लेकिन यकायक वह नमाज़ के लिये जाने लगा। मज़ीद उसने यह किया कि अपने घर से रेडियो, टी वी उठा कर फ़ैंक दिये। इस्तिफ़सार पर उसने बताया कि उसने खुद एक तकनीक के ज़रीए मालूम किया कि यह चौथे या पांचवें Note पर जिसको म्यूज़ीशन "Keynote" कहते हैं। फ़्री मैसन मौसीक़ार उस Note पर ख़ास तरीक़े से एक लफ़्ज़ "Add" कर देते हैं जिसका ज़िक्र "Backmasing" में हमने किया कि लफ़्ज़ को

उल्टा बोल देते हैं।

इस तरह अंग्रेज़ी गाने हों या उर्दू......हालीवूड के तैयार कर्दा हों या बाली वूड के......हर चौथे या पांचवें Keynote पर यही सिलसिला जारी है और जो लफ़्ज़ Add होते हैं, वह उल्टे बोले जाते हैं। अगर उनको मुरत्तब करके जोड़ा जाए तो एक मुकम्मल जुम्ला बन जाता है। जो दरअस्ल एक खुफ़िया पैग़ाम "Hidden Message" होता है। जब इन गानों के Keynotes के अल्फ़ाज़ को तरतीब दिया गया तो कुछ इस तरह के पैग़ामात मिले: "Kill your Sister! Kill your Mother" और मज़ीद ऐसे जुम्ले थे जो इंतिहाई बेहूदा और फ़ह्श थे। म्यूज़ीशन ने मज़ीद बताया कि जब यह अल्फ़ाज़ इन मख़्सूस "Keynotes" पर ज़ाहिर होते हैं तो आप यह महसूस करेंगे कि अगर यह कोई जिन्सी पैग़ाम "Sexual Message" है तो सुनने वाले जिन्सी अमल "Sexual Action" करेंगे। अगर कोई तशद्दुद भरा पैग़ाम "Violent Message" है तो आप गाना सुनने वालों को वैसे ही एक्शन करता देख सकेंगे। दुनिया भर के मशहूर तरीन म्यूज़ीशन यह सब कुछ कर रहे हैं। आम लोग इस हक़ीक़त से आशना नहीं। अल्बत्ता एक चीज़ ऐसी है जिससे हर शख़्स इस शैतानी तिलस्म को पहचान सकता है। इन गुलूकारों के प्रोग्रामों "किंस्टस" में हाज़िरीन पर दीवानगी छा जाती है। फिर दुनिया व माफ़ीहा से बेख़बर होकर खुल्लम खुल्ला नाशाइस्ता हरकात होती हैं। शैतान के चेले इस नाचने और नचवाने को, इस बेखुदी और खुद फ़रामोशी को, इस शह्वानी मस्ती और नफ़सानी मौज मैले को "विज्द" का नाम देते हैं। रूह की ग़िज़ा बताते हैं। सवाल यह है कि अगर यह विज्द है, अगर यह रूह की ग़िज़ा है तो फिर इसमें सारे काम शैतान की पूजा वाले क्यों होते

हैं?

वह नौजवान जो मग़रिबी मौसीक़ी सुन रहे हैं या इंडियन या पाकिस्तानी गाने फिर किसी भी मुल्क की मौसीक़ी सुनने के शौक़ीन हैं, इन सबको म्यूज़िक हस्पन्टाइज़्ड, मिस्मराइज़्ड कर रहा है। अवामुन्नास पर यह हक़ीक़त उस वक़्त ज़ाहिर होगी जब दज्जाल अपने फ़ित्ने के साथ ज़ाहिर होगा। फ़ित्नए दज्जाल की अहादीस के सिलसिले में यह ज़िक्र मिलता है कि लोग दज्जाल की आवाज़ के पीछे चलेंगे वह एक नीम बेहोशी (Hyponosiso) के आलम में होंगे और दज्जाल इस कैफ़ियत को मुतहर्रिक (Activate) करेगा।

(३) क्या इस तकनीक का इंसानी ज़ेहन पर असर होता है?

क्या Back Tracking का ज़ेहन पर असर होता है? बहुत से लोग इसके जवाब में कह सकते हैं कि मैं तो बचपन से म्यूज़िक सुन रहा हूं। मुझ पर कुछ असर नहीं हुआ। इस सवाल का जवाब यह है कि Back Tracking का असर लाशऊरी तौर पर ज़ेहन से होता हुआ रूह तक पहुंचता है। अब यह उस शख़्स की रूहानी, ज़ेहनी और जिस्मानी कैफ़ियत पर मुन्हसिर है कि जो ज़ेहन इस पोशीदा पैग़ाम को "Decode" कर रहा है, इसकी क्या कैफ़ियत है? जैसे दवा की मिसाल है। एक शख़्स को पहली ख़ूराक से फ़ाइदा हो जाता है। दूसरे के लिये यही ख़ूराक ज़्यादा दफ़ा होगी तो असर करेगी। इसी तरह मौसीक़ी है। कोई शख़्स सिर्फ़ एक दफ़ा सुनकर मुतअस्सिर हो जाता है। किसी दूसरे पर यह असर 10 दफ़ा सुनने के बाद होगा। किसी पर 20 दफ़ा सुनने के बाद। जो लोग आसाब के मज़बूत होते हैं, इबादात तवज्जो से करते हैं, कम जज़्बाती और कम वह्मी होते हैं, नशा इस्तेमाल नहीं करते, डिप्रेशन का शिकार नहीं होते, उन पर यह पोशीदा शैतानी पैग़ामात देर से असर अंदाज़ होंगे।

इसके बरअक्स नशे के आदी, शहवात से मग़लूब और गुनाहों की शामत से अटी हुई बदहाली का शिकार लोग जल्द इस जाल में फंस जाते हैं। फ़हाशी और शराब नोशी से उनकी कुव्वते मुदाफ़िअत इतनी कमज़ोर हो जाती है कि वह ज़्यादा देर तक इस शैतानी नफ़सियाती यलग़ार के सामने नहीं ठहर सकते। और वह जल्द ही......कुछ ही कैसिटें ख़रीदने का शौक़ पूरा करने के बाद ही......अपने अंदर की ईमानी ताक़त को शैतान के चेलों के यहां गिरवी रखवा देते हैं।

हमारे मुशाहिदे में यह बात आती है कि जो बच्चे (या बड़े) मौसीक़ी रखते हैं, उनकी अक्सरियत मस्जिदों का रुख़ करने से घबराती है। उनका दिल क़ुर्आन पढ़ने में नहीं लगता और अगर उनको इस शौक़े मौसीक़ी से बाज़ रखने की कोशिश की जाए तो या तो वह "Violent" हो गए या फिर "Abusive" बुरा भला कहने वाले बन गए। मौसीक़ी सुनते वक़्त ऐसा शख़्स अपने आप को मस्त और बेख़ुद महसूस करता है। जिसे आज के दौर में Alter State of Conciousness (शऊर की बदली हुई कैफ़ियत) का नाम दिया जाता है। इस कैफ़ियत में उसे कुछ मालूम नहीं होता और वह अपनी उंगलियों से मौसीक़ी की तान का साथ देते हुए अपने आप को एक दूसरी ही दुनिया में महसूस करता है। लेकिन जब मौसीक़ी बजना बंद हो जाती है तो ऐसा शख़्स मुकम्मल तौर पर Demoralised (अख़्लाक़ी तौर पर बदहाल) हो चुका होता है। अगर इस मौक़ा पर वालिदैन अपने बच्चों को कुछ बताना चाहते हैं जिसको वह पसंद न करें तो उन बच्चों को मुकम्मल तौर पर बदतमीज़ और बदअख़्लाक़ महसूस किया जा सकता है। आस्ट्रेलियन एडीलेड यूनीवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर ने अपनी हुकूमत से कुछ मख़्सूस

म्यूज़िकल गुरूप्स के मुतअल्लिक़ दरख़्वास्त की कि इन गुरूप्स को Ban किया जाए क्योंकि जो अवाम उनका म्यूज़िक सुन रहे हैं उनमें से कुछ ख़ुदकशी कर लेते हैं। इस अलमिये के हवाले से दो मिसालें पेश की जाती हैं:

(1) रोज़नामा "जंग" लाहौर में मुअर्रिख़ा 12 सितम्बर 1998 ई0 को एक ख़बर छपी जो बग़ैर किसी तब्सिरे के हाज़िर है। बेटी के क़ातिल मां बाप का भेद खुल गया। टेप उल्टी चलाने से सच सामने आ जाएगा। तफ़सील "लाहौर जंग फ़ार्न डीस्क" टेप रीकार्ड की आवाज़ों की टेक्नालोजी के माहिर डेविड जॉन इविट्स ने नन्ही जिन हैंट के मां बाप के बयानात पर मुशतमिल टेप को नार्मल रफ़्तार से उल्टा चला दिया तो उनके तमाम अलफ़ाज़ उल्टे सुनाई दिये। इन लफ़्ज़ों में Vovels कहलाने वाली आवाज़ों को उसने जोड़ कर सुना तो उनके मअ़नी भी उल्टे हो गए। पता चला कि उस बच्ची को मां बाप ने क़त्ल किया है। हफ़्त रोज़ा जरीदे "वर्ल्ड न्यूज़" ने लिखा है कि डेविड जॉन इवंस ने इसके बाद यह एलान कर दिया कि टेप पर रीकार्ड होने वाले तमाम बयानात को उल्टे चला कर हर झूट की उलट कहानी सुनी जा सकती है और झूट पकड़ा जा सकता है। उसका कहना है कि शऊरी तौर पर झूट बोलने वाले की आवाज़ को उल्टा कर दिया जाए तो उसके लाशऊर की आवाज़ें सुनाई देती हैं। जो झूट के बजाए सच को सामने ले आती हैं। अमरीकी माहिर ने अपनी इस ईजाद को इंटरनेट पर दे दिया है और एलान किया है कि जिसने मेरी इस ईजाद को समझना है वह इंटरनेट पर मंदरजा ज़ेल अल्फ़ाज से वह वेबसाइट का विज़िट करे www.reversespeech.com

(2) इंटरनेट से हासिल की गई एक ख़बर के मुताबिक़ "नवेडा"

शहर में रहने वाले दो भाईयों जिनकी उम्र बिल तरतीब 18 और 20 साल है। गानों का एक मख़्सूस अल्बम "Judas Priest" बहुत शौक़ और बाक़ाएदगी से सुनते थे। 23 दिसम्बर 1985 में इन दोनों भाईयों ने उस वक़्त ख़ुदकुशी की कोशिश की जब वह यह अल्बम सुन रहे थे। एक भाई "रै" तो इस कोशिश में कामियाब हो गया। जबकि "जेम्ज़" ने अपने आप को ज़ख़्मी कर लिया। फिर यह भी 3 साल के बाद इसी ज़ख़्म के बाइस मर गया। उनके वालिदैन ने इस मख़्सूस म्यूज़िक गुरूप के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर कर दिया। उनका पक्का यक़ीन था कि उनके बच्चों की ख़ुदकशी का ज़िम्मादार इस म्यूज़िक गुरूप के गाने के पैग़ामात थे। बाद में माहिरीन ने भी इसकी तसदीक़ की कि इन मख़्सूस गानों के बोलों में यह पैग़ामात थे। "Let's be, Do it dead" (आओ! चल कर मर जाएं। चलो ऐसा करते हैं)

☆☆☆

शैतान के फंदे

मौसीकी। गाने। फ़िल्म। कार्टून। फ़र्ज़ी कहानियां। नाविल।

बेक ट्रेकिंग की चंद मिसालें:

(1) माईकल जैक्सन पाप म्यूज़िक की दुनिया का बेताज बादशाह समझा जाता था। उसके अल्बम्ज़ ने दुनिया में रीकार्ड बिज़नेस किया। यह फ़्री मैसंज़ से मुंसलिक था। इसके कई शवाहिद हैं। बाद में ऐसी इत्तिलाआत भी आती रहीं कि वह मुसलमान हो गए हैं। अगर ऐसा ही है तो हमारी दिली दुआ है कि अल्लाह तआला इस्लाम की बरकत से उनकी पिछली सारी लग़ज़िशें मुआफ़ फ़रमा दे। फ़िलहाल हम एक ऐसी चीज़ का ज़िक्र कर रहे हैं जो उनके "ज़मानए जाहिलियत" से मंसूब होकर सामने आई थी। हमारी ग़र्ज़ इससे क़त्अन यह नहीं कि उनकी पिछली ग़लतियां दुनिया को याद दिलाते फिरें। अगर वह सच्चे दिल से इस्लाम ले आया था तो इस्लाम पिछले गुनाह ख़त्म कर देता है। हम कौन होते हैं कि उनका तज़किरा करते फिरें। हमारी ग़र्ज़ फ़क़त यह है कि "बिरादरी" दुनिया की मक़्बूल तरीन शख़्सियात को भी उनकी बेख़बरी में अपने मक़्सद के लिये इस्तेमाल करती है। माइकल जैक्सन के एक अल्बम "Dangerous" यअ़नी "ख़तरनाक" के कोर पर बदनाम ज़माना फ़्री मैंसंक अलामत एक आंख बनी हुई है। उसके साथ एक झील की तस्वीर है जिसमें जलते हुए शोले हैं। यूं महसूस होता है जैसे जो भी उस पानी में दाख़िल होगा दरअसल आग में कूदेगा। शैतान आग से बना है और यह झील ख़तरनाक शैतानी मर्कज़

"बरमूदा" की तरफ़ इशारा है। कोर पर एक आदमी "एरिस्टल करव्वे" की तस्वीर है जो एक बदनाम ज़माना फ़्री मैसन था। यह वह बदबख़्त शख़्स है जिसने शैतान का पुजारी बन कर एक किताब लिखी: "The New Law of Man" यअ़्नी "इंसान का नया क़ानून" इसके मुताबिक़ नऊज़ो बिल्लाह कुर्आन को एक दिन इंसान के क़ानून से बदल लिया जाएगा। शैतान और उसके चेलों के सामने सबसे बड़ी रुकावट कुर्आनी आवाज़ें और कुर्आन का दस्तूर है। इसके मुक़ाबले में वह हर क़ीमत पर शैतानी आवाज़ों और शैतानी निज़ाम को ग़ालिब करना चाहते हैं। उन्हें मदारिस और मकातिब में चटाई पर बैठे मासूम बच्चों की रूह परवर आवाज़ें तो बुरी लगती हैं लेकिन जहन्नम की वादियों की तरफ़ हंकाने वाली शैतानी सदाओं को वह रूह की ग़िज़ा ठहराते हैं।

(२) बेक ट्रेकिंग के ज़रीए शैतान की इबादत दुनिया में फैलाने की एक और मिसाल गुलूकारा मैडोना की है। उसके एक अल्बम का मशहूर गाना "Like a prayer" सुना जाए तो उसके बोल हैं:

When you call my name,
It's like a little prayer
I'm down on my knees,
I wanna take you there in the midnight hour!!

"जब तुम मेरा नाम पुकारते हो तो यह मुझे एक दुआ की तरह लगता है। मैं अपने घुटनों के बल झुक जाती हूं और तुम्हें आधी रात में अपने साथ ले जाना चाहती हूं।"

यह अल्फ़ाज़ दरअसल ख़ुदा से मुख़ातिब होकर नहीं, शैतान से मुख़ातिब करके कहे जा रहे हैं। जब इन अल्फ़ाज को

Backward चलाया जाए तो बआसानी यह अल्फ़ाज़ सुने जा सकते हैं: "O, hear us satan"। (ऐ शैतान! हमें सुनो!)

(3) बेक ट्रेकिंग की एक और मिसाल ईगल गुरूप "The Eagles" से सामने आती है। उनके एक गाने का नाम है होटल केलीफ़ोर्निया The meal is on the ceiling। इस गाने में Yeah satan बआसानी Backward करके सुना जा सकता है। इस गाने के पीछे भी एक इंतिहाई पुर अस्रार शैतानी कहानी छिपी हुई है। गाना आगे की तरफ़ चलाया जाए तो यह मिस्रे यूं हैं:

I fell on the Felling she put Shamane on ice and said we are all just prioners here of our own device in the masters champer gathered for bigfeast gathered with the feeling but they just can't feel.

गाने को उल्टा चलाया जाए तो यह अल्फ़ाज़ वाज़ेह सुनाई देते हैं: YEH SATAN: जे शैतान।

इस पैग़ाम के साथ गाना बज़ाते खुद एक दासतान है। गाने का नाम कैलीफ़ार्निया कोई होटल नहीं, दरअसल अमरीका में मौजूद एक सड़क है। इस सड़क पर एक चर्च का हेडक्वार्टर है लेकिन यह वह चर्च नहीं जिसमें ईसाई हज़रात जमा होकर खुदा की इबादत करते हैं, बल्कि यह तो शैतान का चर्च है जिस में शैतान की पूजा होती है। इसके बानी का नाम एटीयिटी सैन्ज़ डीलीनी है जो "शैतानी बाइबल" का लिखने वाला है। अमरीका के चोटी के मशहूर अदाकार टी वी और क़लम के ज़रीए इसी चर्च की तालीमात को फ़रोग़ दे रहे हैं। यह लो फ़िल्म और मौसीक़ी के ज़रीए शैतान के मुबल्लिग़ का किर्दार अदा कर रहे हैं। जैसा कि "रोलिंग स्टोन" नामी गुरूप के

लीड सिंगर "मीक्जा" ने एक गाना लिखाः "Sympathy for the devil" (शैतान से हमदर्दी) जब "बिरादरी" के ज़ेरे इंतेज़ाम पर चर्च शुरू हुआ तो दिखावे के लिये ईसाइयत की तालीमात को फ़रोग़ दे रहा था। फिर रफ़्ता रफ़्ता उसने असल रूप दिखाया और मज़हब से मुकम्मल बग़ावत की जानिब रवां दवां हो गया। आज उसमें शैतानी अनासिर जमा हैं। यह अमरीका में शैतान की पूजा का मरकज़ और उसका सबसे बड़ा दाई है। जो वालिदैन अपने बच्चों को मग़रिबी मौसीक़ी सुनने की सहूलतें फ़राहम करते हैं, वह सोच लें कि अपने मासूम जिगर गोशों को किन लोगों का मामूल बता रहे हैं।

(4) इस हवाले से एक म्यूज़िक गुरूप "Cheap Trick" की मिसाल भी पेश की जा सकती है। इस म्यूज़िक गुरूप के एक अल्बम के तआरुफ़ में उसका "Lead Singer" अनाउंसमेंट करता हैः This song is the first from our album यह गाना हमारे अल्बम का पहला गाना है। इस अनाउंसमिंट को Anti Clockwise चलाया जाए और मुख़्तलिफ़ तकनीक से Backtrack किया जाए तो यह अल्फ़ाज़ सुने जा सकते हैंः "My servant is a Musician" (म्यूज़ीशन मेरा ग़ुलाम है)। सच है मौसीक़ी का काम करने वाले शैतान के ग़ुलाम हैं।

(5) एक और मिसाल एक दूसरे गुरूप "Styx" की है। ग्रीक मिथ Greek Myth के मुताबिक़ यह नाम "जहन्नम के एक दरया" का है। उनके एक अल्बम का नाम "Paradise Theatre" है। इस अल्बम का एक गाना है जिसके बोल Snowblind हैं। इस गाने को सुनें। इसके बोल कुछ यूं हैंः I try so hard to make it so (यअ़नी मैं इस काम के लिये किस क़दर मेहनत करता हूं?) इन्ही बोलों को इसी तरतीब और इसी

पोज़ीशन में Backword चलाया गया तो यह बोल कुछ यूं थे: O Satan move in our Voices (ओ शैतान! हमारी आवाज़ों में गर्दिश करो)

इसी गुरूप "Styx" के एक दूसरे अल्बम के एक गाने के बोल हैं: "I am ok" (मैं ठीक हूं) जब गाना आगे सुनतें तो अगले बोल हैं: I had finally found person, I have been searching for......"मैंने बिलआख़िर उस शख़्स को पा लिया जिसकी मुझे तलाश थी......"आप इन मअ़नी ख़ेज़ बोलों को मुलाहिज़ा कीजिये। गुलूकार किसी की तलाश में है कि जिसको उसने पा लिया और अब वह उसकी ख़ुशी मनान चाहता है? जब इन अल्फ़ाज़ की Back Tracking की गई तो इस बाल का जवाब भी मिल गया: I am your servant we shall stick by the, serpent of Alpha। "मैं तुम्हारा ग़ुलाम हूं। हम शैतान की ग़ुलामी पर जमे रहेंगे।" लफ़्ज़ "Serpent" (सांप) दरअसल ईसाइयत के उस तसव्वुर की निशानदही करता है कि जब शैतान ने हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम के दिल में वसवसा डाला तो इस मौक़ा पर वह सांप के बहरूप में था। उसने सांप का भेस बदला हुआ था। आज वह आदम की औलाद का बरग़लाने के लिये फिर सांप की शक्ल में आ रहा है। आप अपने इर्दगिर्द ग़ौर करें। बहुत सी चीज़ों पर बिला वजह सांप की शबिया, रस्सियां या लहरें बनी हुई दिखाई देंगी। यह शऊरी या ला शऊरी तौर पर शैतान की मौजूदगी, उससे मदद मांगने और उसकी तवज्जो खींचने के लिये बनाई गई होती है।

(6) ऊपर गानों में जिन "Hidden Messages" (पोशीदा पैग़ामात) का ज़िक्र किया गया है, इन शैतानी पैग़ामात की

तरसील का यह काम दुनिया की हर ज़बान की मौसीक़ी में हो रहा है। क्या पाकिस्तान में भी किसी ने वैसी स्टाइल में ऐसा कुछ करने की कोशिश की? तहक़ीक़ की जाए तो जवाब इस्बात में मिलता है और क्यों न मिले कि पाकिस्तान तो "बिरादरी" की ख़ुसूसी हद्फ़ है। 21 मार्च 1999 ई० का एक अंग्रेज़ी अख़बार के आर्टिकल से मालूम होता है कि 1995 ई० के आग़ाज़ में लाहौर के एक सहाफ़ी ने गानों की कुछ कैसिटों की 500 कापियां ख़ुद तैयार करवा के लोगों में तक़सीम कीं। लोगों ने इन कैसिटों की आवाज़ें सुनकर महसूस किया कि इन Tapes में कुछ पुर अस्रार आवाज़ें भी सुनाई देती हैं। इन लोगों की तसदीक़ कुछ तो बअ़ज़ के आर्टिकल्ज़ से हुई। इन गानों को ग़ौर से सुनने पर ऐसा महसूस होता है कि कोई पुकार रहा हो: "इबलीस! इबलीस!" किसी कैसिट में "Jewcola" के अल्फ़ाज़ सुनाई देते, इन गानों के कैसिट "आतिशी राज" के फ़र्ज़ी नाम से तैयार किये गए और बैंड का नाम "अज़ाब" था। (इबलीस का माद्दा आग से बना है और आग जहन्नम का असल अज़ाब है) जब कैसिट तैयार करने वाले की मुलाक़ात एक सहाफ़ी से हुई और उसने इन कैसिटों की पुरअस्रार आवाज़ों की हक़ीक़त पूछी तो उसने यह कहकर कि मज़ाक़ में टाल दिया कि दरअसल उसने यह पैग़ामात मुआशरे के ऊपर एक तन्ज़ और एक इंतिक़ामी रद्दे अमल के तौर पर रीकार्ड करवाए। यह शख़्स जल्द मज़ीद Tapes मार्किट में लाने का इरादा रखता है।"

ख़बर के आख़िरी जुम्ले का मतलब है ऐसी और भी कैसिटें मार्किट में आईं और उन्होंने "इबलीस इबलीस" पुकार कर जहन्नम की आग और अज़ाब को दुनिया में ही हमारे इर्दगिर्द भड़का दिया। हाल ही में हमारे यहां के मशहूर तरीन टी वी चैनल ने अपना

म्यूज़िक चैनल "आग" के नाम से शुरू किया है। उसकी भड़काई हुई आग की लपटें नई नस्ल के ईमान, हुब्बुल वतनी और मुस्बत सलाहियतों को चाट रही हैं। उनमें मटकने और ठुमकने के मन्फ़ी जज़्बात पैदा कर रही हैं। सोचा जाना चाहिये कि मौसीक़ी जैसी "लतीफ़" चीज़ का आग जैसी भड़कती भड़काती चीज़ से तअल्लुक़ हो सकता है? यक़ीनी बात है कुछ लोग हम से खेल रहे हैं और उस वक़्त तक खेलते रहेंगे जब तक हम दीन की तरफ़ लौट कर अल्लाह की पनाह में नहीं आ जाते। और ऐसा उस वक़्त तक नहीं होगा जब तक हम शैतान के चुंगल से निकलने का अज़्म करके शैतानी काम छोड़ने का तहिय्या नहीं कर लेते।

मौसीक़ी पर क्या मौक़ूफ़ है? सारी इंटरटेनमेंट की दुनिया फ़्री मैसन की निशानियों और कारसतानियों से भरी पड़ी है। अमरीकी फ़िल्म इंडस्ट्री में यह बात मुकम्मल तौर पर नुमायां है मगर टी वी भी इससे पीछे नहीं। आम प्रोग्रामों को तो रहने दीजिये। फ़्री मैसंज़ ने बच्चों के कार्टूनों तक को इस मक़्सद के लिये इस्तेमाल किया है। बच्चों की कहानियां और नाविल तक इससे महफ़ूज़ नहीं। बतौर नमूना सबकी एक एक मिसाल दी जा रही है।

टी वी और फ़िलिम्ज़:

टी वी के ज़रीए एक बहुत बड़ी तादाद में नाज़िरीन को एक नए ख़्याल से मुतआरिफ़ कराया जा रहा है और वह वक़्त शायद बहुत ज़्यादा दूर नहीं जब वह ख़्याल हक़ीक़त बन कर दुनिया के सामने आ जाएगा। बस दुनिया के ज़ह्नों में इस ख़्याल के जागुज़ीं होने का इंतेज़ार है। वह ख़्याल है: "एक ग्लोबल लीडर जो दुनिया को मसाइल से नजात दिला सके। आप आजकल ग्लोबल का लफ़्ज़ बहुत सुनते होंगे। ग्लोबल विलेज, ग्लोबल यूनियन, ग्लोबल......यह

सब क्या है? आलमी दज्जाली रियासत के आलमी लीडर "दज्जाल" के लिये ज़हन साज़ी है। "रेड यार्ड किपलिंग" एक फ़्री मैसन मुसन्निफ़ है। उसकी किताब "The Jungle Book" पर हालीवूड की फ़िल्म बनाई गई जिसमें शान कोंवरे, मावीकल कैन और सईद जअ़फ़री जैसे मैसूनक अदाकारों ने नुमायां किर्दार अदा किया। यह किताब दो सिपाहियों की कहानी है जो इंडिया के "क़रीब" एक मुल्क में जाते हैं। मुल्क का नाम "काफ़िरिस्तान" है। पंहुचते ही वहां के लोग जिन्हें "काफ़िर" कहा जाता है उन्हें गिरफ़्तार कर लेते हैं। जब उन्हें कत्ल किया जाने लगता है तो उनमें से एक सिपाही की गर्दन के गिर्द हार डालता है जिस पर मैसूनक आंख का सम्बल खुदा होता है। काफ़िर उसको खुदा समझने लगते हैं और बाद में सिपाही भी अपने आप को खुदा समझने लगता है। कैदी सिपाही को खुदा के दर्जे तक पहुंचाने का क्या मतलब है? यह दज्जाल के खुरूज की रीहर्सल है। ग्लोबल लीडर कौन है? मुसलमानों के नज़रिये के मुताबिक़ दज्जाल है। हदीस में आता है: "काफ़िरों में से एक शख़्स उठेगा जो अपनी एक आंख से पहचाना जाएगा। वह दुनिया का लीडर होने का एलान करेगा और बाद में खुदाई का दावा।"

कार्टून:

मेट ग्राऊनिंग एक मुसद्दिक़ा फ़्री मैसन है। यह "मिस्टर सिम्पसन" Mr. Simpsons नामी कार्टून सीरीज़ का ख़ालिक़ है। वह खुले आम इक़रार करता है कि: "वह ऐसे तरीक़े से अपने ख़्यालात को लोगों तक पहुंचा रहे हैं कि वह बआसानी उन्हें हज़म कर सकें।" यह कार्टून हमारे बच्चों को दरअसल क्या सिखा रहे हैं? उन तक बआसानी हज़म होने वाले कौन से पैग़ामात पहुंचा रहे हैं? कार्टूनों के ज़रीए बहुत से शैतानी सबक़ हमारे बच्चों के मासूम ज़हनों

में उंडेले जा रहे हैं। जैसा कि मां बाप से बग़ावत, हुकूमत की जानिब से लगाई गई जाइज़ पाबंदियों को तोड़ना, बुरे अख़्लाक़ और नाफ़रमानी वग़ैरा। अख़्लाक़ियात की यह पामाली मामूली चीज़ है। "बिरादरी" तो इंसानियत को उससे कहीं आगे इस मक़ाम पर ले जाना चाहती है। जहां शैतान हुक्मे इलाही का इंकार करके पहुंच गया था। फ़िरऔन और शद्दाद ने तो बादशाही के बाद ख़ुदाई का दावा किया था। फ़्री मैसनरी बीमारी से शिफ़ायाब होने वाले मरीज़ को ख़ुदाई का दावेदार बना रही है। आइये! देखते हैं कैसे? अमरीका जैसे मुल्क में खुले आम यह सब कुछ कैसे हो रहा है?

इस कार्टून सीरीज़ की एक क़िस्त में इंतिहाई परेशानकुन सूरते हाल पैदा हो जाती है। इस क़िस्त में सिम्पसन फ़ैमली का सरबराह "हूमर सिम्पसन" एक गिरोह के साथ शामिल हो जाता है। यह गिरोह दरहक़ीक़त दज्जाल की राह हमवार करने वाली आलमी यहूदी तन्ज़ीम "फ़्री मैसनरी" का है। गिरोह के मिम्बरान हूमर सिम्पसन के जिस्म पर पैदाइशी निशान देखते हैं और यह एलान करते हैं कि तुम अल्लाह के जने हुए हो जिस पर नुबुवत उतरती है। यह नया रुत्बा हूमर सिम्पसन को अपने आप को ख़ुदा समझने पर मजबूर कर देता है जिसका इक़रार वह इन अल्फ़ाज़ में करता हैः "मैं हमेशा सोचता था कि क्या कोई ख़ुदा है? अब मुझे पता चला कि वह कौन है? वह तो मैं ख़ुद हूं।" कुछ लोग कहेंगे कि यह सिर्फ़ एक मज़ाक़ है मगर अल्लाह की क़सम! यह मज़ाक़ नहीं। यह बेहूदा मुहिम है। यह एक बहुत बड़ा प्रोपेगन्डा है जिसके ज़रीए ग़ैर महसूस तरीक़ों से लोगों की सोच बदली जा रही है।

कहानियांः

बीसमिलैन की "Pipe Piper" अंग्रज़ी अदब की मशहूर

ज़माना लोक कहानी है। रीडर्ज़ डाइजेस्ट की एक रिपोर्ट के मुताबिक़ यह लोक कहानी फ़र्ज़ी नहीं बल्कि हक़ीक़ी कहानी थी जो काले जादू और शैतानियत के पोशीदा अस्रार पर मब्नी थी। शैतान की बेचारी "बिरादरी" ने जादू की तासीर और शैतान की ताक़त लोगों के दिलों में बिठाने के लिये यह कहानी तहरीर करवाई और उसे अंग्रेज़ी ख़्वां तबक़े के घर घर तक, बच्चे बच्चे तक पहुंचा दिया। यह कहानी कुछ यूं है कि एक बस्ती में चूहों ने फ़स्लें तबाह कर दीं। लोगों के घरों में चूहों ने चीज़ें कतर डालीं। बस्ती के लोग इस आफ़त से तंग आ गए और उनकी कोई तदबीर चूहों को मारने की कारगर साबित न हुई। ऐसे वक़्त मे एक अजनबी उस बस्ती में दाख़िल हुआ। उसको इस मस्ले का इल्म हुआ तो उसने बस्ती वालों को अपनी ख़िदमात पेश कीं कि वह इस फ़ित्ने से उसको नजात दिला सकता है। अगर बस्ती वाले उसको मुक़र्ररा मिक़्दार में सोना (सिक्के) पेश करें। बस्ती वाले उसकी इस शर्त पर राज़ी हो गए। उस शख़्स ने शर्त तै करने के बाद एक पाइप (बांसुरी) मुंह को लगाया और एक धुन निकाली। उस धुन का सुनना था कि बस्ती के हर कोने से चूहों ने निकलना शुरू कर दिया। वह शख़्स वह धुन बजाता हुआ बस्ती से बाहर निकला और तमाम चूहे भी उस धुन के पीछे चलते गए। हत्ता कि वह अजनबी तमाम चूहों को दरिया के किनारे ले गया और तमाम चूहे दरिया में गिर कर हलाक हो गए। यूं बस्ती वालों को चूहों से नजात मिली, लेकिन उस शख़्स को वादे के मुताबिक़ सोना (रक़म) की अदाई नहीं की। बस्ती वालों की इस वादा ख़िलाफ़ी का उस शख़्स ने इस तरह बदला लिया कि उसने फिर अपना पाइप मुंह को लगाया और एक दूसरी धुन निकाली। उसका सुनना था कि तमाम बस्ती के बच्चे उस

धुन के पीछे चल पड़े और वह शख़्स धुन बजाता हुआ बच्चों को अपने साथ लेकर ऐसा ग़ाइब हुआ कि फिर वह शख़्स मिला न बच्चे। मौसीकी, काला जादू और शैतानी करतूत तीनों चीज़ों को इस कहानी में ऐसी चाबुक दस्ती से सिमो कर पेश किया गया है कि पढ़ने वाला ग़ैर शऊरी तौर पर उन काली शैतानी चीज़ों के रोअ़ब में गिरफ़्तार हो जाता है। यूं अंग्रेज़ी अदब के मुतालए का फ़ैशन उसे जो रोग लगाता है, मरते दम तक उसकी तलाफ़ी नहीं हो पाती।

नाविलः

हैरी पोटर के नाविलों ने मिसाली शोहरत हासिल की और रीकार्ड बिज़नेस किया। हमारे यहां कुछ वालिदैन ऐसे थे जो यूरप के वालिदैन की तक़लीद करते हुए अपने बच्चों को यह नाविल पढ़ते देखकर ख़ुश होते थे कि उनके बच्चे दुनिया के साथ चलना सीख रहे हैं। ऐसे हज़रात मदरसे के बच्चों पर तरस खाते थे......जिनका ज़ह्न इन शैतानी हज़रात से आलूदा न हुआ था......कि वह क्या जानें दुनिया का स्टाइल, आर्ट और उन्हें क्या मालूम अदबे लतीफ़ क्या होता है? इन नाविलों में क्या था? जादू, शैतानी ताक़तों, बद रूहों और मावराई जादूई ताक़तों की महीरुल उक़ूल कारसतानियां......इन नावलों को पढ़ कर हमारे बच्चों ने क्या हासिल किया? जादू की हैबत, उसके कमालात, उसके ज़रीए मुश्किल कुशाई......यह सब कुछ ग़ैर महसूस तरीक़े से उनके मासूम ज़ह्नों में फ़ीड करके उन्हें उन नापाक चीज़ों से मानूस कर दिया गया ताकि कल वह आसानी से "आलमी दज्जाली रियासत" के वफ़ादार शहरी बन सकें। गोया हम ने अपने हाथों अपने बच्चों को शैतान के पुजारियों का वह फ़रसूदा मवाद ख़रीद कर दिया जो उन्हें रहमान से बग़ावत सिखा सके। जो

उन्हें शैतान की इबादत के करीब ले जाए।

अलग़र्ज़ शैतान की मेहनत जारी है। वह और उसके चेले हर रुख़ से हमला आवर हो रहे हैं। वह इंसानियत को गुनाह में मुब्तला करके जहन्नम का ईंधन बनाना चाहते हैं। इसके मुक़ाबले में वह खुश नसीब लोग हैं जो बे सरो सामान हैं। बे वसाइल और बे आसरा हैं लेकिन खुदा की मुहब्बत की आस में, उसकी नफ़रत के आसरे पर इंसानियत को जहन्नम से बचाने की कोशिश में मसरूफ़ हैं। वह दीन की तरफ़ रुजूअ़ की दावत हर हालत में दे रहे हैं। वह शरीअ़त के निफ़ाज़ की जिद्दो जिहद में हर लम्हे लगे हुए हैं। सआदतमंद है वह शख़्स जो इन मुबारक कोशिशों में अपना हिस्सा डाले और खुद को, अपने बच्चों को और तमाम मुसलमानों को शैतान के चुंगल से छिपा कर रहमान की आग़ोश में लाने की जिद्दो जिहद में शामिल हो, इन तमाम गुनाहों को छोड़ने और छुड़ाने की जिद्दो जिहद करे जो मग़रिबी तह्ज़ीब के जुलू में हमारे मुआशरे में फैलते चले जा रहे हैं। मौसीक़ी, फ़िल्म, नावल, कार्टून जैसे शैतानी फंदों से इंसानियत को छुड़ा कर दीने ख़ालिस की अब्दी नेअ़मतों का शौक़ दिलाने वाला हुजूर सल्ल0 का सच्चा उम्मती और इस फ़ित्ना ज़दा दौर का नजात याफ़्ता खुश क़िस्मत है।

(क़ारईने किराम की इत्तिला के लिये अर्ज़ है कि इन मज़ामीन की इशाअत के कुछ अर्से बाद ऐसी डाकुमिंट्रीज़ तैयार होकर आना शुरू हो गई जिनसे मज़ामीन में बयान शुदा एक एक अमरीकी तसदीक़ होती है। इस मौक़ा पर अक्सर अहबाब राबता करके पूछते हैं कि आप की मालूमात का "ज़रीआ" किया है। यह अजिज़ान से अर्ज़ करता है कि इन मालूमात को आप तक पहुंचाने का मक़सद

क्या है? इसको आप समझ लें और आगे समझाना शुरू कर दें तो एक "देसी मौलवी" की मेहनत ठिकाने लग जाएगी जो आपके लिये मग़रिब के वाकिफ़ कारों से पहले शैतानी हथकंडों की हक़ीक़त बमअ़ शरई लाइहा अमल के पहुंचाने के लिये कोशां है। इंसान को "मक़सदियत पसंद" होना चाहिये न कि शख़्सियत परस्त।)

दज्जाली रियासत के क़्याम के लिये जिस्मानी तसख़ीर की कोशिशें

(पहली क़िस्त)

"चूंकि एक ताक़त की हत्मी सलामती का मतलब बाक़ी सारी ताक़तों की हत्मी ग़ैर सलामती है इसलिये उसका हुसूल सिर्फ़ फ़तह से मुम्किन है। जाइज़ फ़ैसले से ऐसा कभी नहीं होता।" (हुन्री किसंजरः दी माइट आफ़ नेशन, वर्ल्ड पोलिटिक्स इन ओवर टाइमः न्यूयार्क, 1965 ई0)

☆☆☆

उन्वान पढ़कर पहले आपको कुछ सनसनी महसूस हुई होगी फिर आपने इसे मामूल की चीज़ या सनसनी फैला कर तवज्जोह हासिल करने का ज़रीआ समझकर नज़र अंदाज़ कर दिया होगा। हम आप के किसी रद्दे अमल की नफ़ी नहीं करते न उसे यक्सर नावाक़िफ़ियत क़रार दे कर रद्द करते हैं। हमारी आप से दरख़्वास्त है कि पहले ज़ेल का एक इक़्तिबास पढ़ लीजिये, फिर कुछ ऐसे हक़ाइक़ जो मग़रिब के मुंसिफ़ मिज़ाज और इंसानियत पसंद मुहक़्क़िक़ीन ने नादीदा आंखों की निगरानी और ख़ुफ़िया हाथों की कारसतानियों की परवा न करते हुए दुनिया के सामने पेश किये और आख़िर में एक नौजवान का वह ख़त जो उसने जान की परवा न करते हुए तहरीर किया। उस ख़त से जहां दुनिया भर में सरगर्म इंसानियत दुशमन दज्जाली कुव्वतें बेनक़ाब होती हैं, वहीं यह बात भी सामने आ जाती है कि पाकिस्तान पर दज्जाल के कारिंदों की ख़ुसूसी नज़र है और तारीकी

के फ़ित्ने "दज्जाले आज़म" के ख़िलाफ़ जो हिदायत याफ़्ता लशकर उठेगा, इसमें अहले पाकिस्तान का भी बहुत बड़ा किर्दार होगा। तो आइये! पहले मुस्तक़बिल की दुनिया का एक ख़ाका जो दज्जाली कुव्वतों ने तरतीब दिया, देख लेते हैं ताकि यह समझने में आसानी हो कि रहमान के बंदे इस शैतानी मुहिम से आगाही के बाद क्या कुछ कर सकते हैं?

बारह सरदारों के एक अरब गुलामः

एक आलमी हुकूमत और वन यूनिट मानिट्री सिस्टम, मुस्तकिल ग़ैर मुंतख़ब मौरूसी चंद अफ़राद की हुकूमत के तहत होगा। जिसके अरकान कुरूने वुस्ता के सरदारी निज़ाम की शक्ल में (यअ़नी बनी इस्राईल के बारह क़बीलों के बारह सरदारों वाले निज़ाम की शक्ल में) अपनी महदूद तादाद में से खुद को मुंतख़ब करेंगे। उस एक आलमी वजूद में आबादी महदूद होगी और फ़ी ख़ानदान बच्चों की तादाद पर पाबंदी होगी। वबाओं, जंगों और क़हत के ज़रीए आबादी पर कंट्रोल किया जाएगा। यहां तक कि सिर्फ़ एक अरब नुफ़ूस रह जाएं जो हुक्मरान तबक़े के लिये कारआमद हों और उन अलामतों और उन इलाक़ों में होंगे जिनका सख़्ती और वज़ाहत से तअ़य्युन किया जाएगा और यहां वह दुनिया की मज्मूई आबादी की हैसियत से रहेंगे।"

इस इक़्तिबास में मुस्तक़बिल की उन मंसूबों की नक़्शा कशी की गई है जो दुनिया की एक मख़्सूस क़ौम के फ़ुतूरज़दा दिमाग़ में पलते है। दुनिया में दर पर्दा मसरूफ़ कार एक मख़्सूस गिरोह दरअसल कुर्रे अर्ज़ पर बिला शिर्कत ग़ैरे हुक्मरानी चाहता है। इसकी अपनी तादाद चूंकि बहुत कम, महदूद और क़लील है इसलिये वह हर सूरत में रंगदार नस्लों और साहिबे ईमान अफ़राद को ख़त्म या कम

करना चाहता है। यह तअस्सुब मज़हबी भी है और नस्ली भी। इसकी ज़द में रंगदार पसमांदा अक़्वाम भी आती हैं और झूटी खुदाई और झूटी नुबुवत के सामने डट कर खड़े हो जाने वाले साहिबे अज़ीमत अह्ले ईमान भी। इस गिरोह को अपनी नस्ली बरतरी का झूटा ज़ुअ्म है। उसके ख़्याल में वह अल्लाह तआला के बेटे और चहीते हैं। उनके मंसूबे का ख़ुलासा यह है कि तमाम रंगदार अक़्वाम कमतर अहलियत और अहमियत की हामिल हैं। इसके बावजूद ख़दशा यह है कि वह महज़ अपनी बढ़ती हुई आबादी के ज़ोर पर दुनिया में तसल्लुत और ग़ल्बा हासिल करने में कामियाब हो जाएंगे। रंगदार अक़्वाम की इस बढ़ती हुई आबादी का मुक़ाबला करने के लिये अमरीका और यूरप का अपनी आबादी को बढ़ाना मुश्किल बल्कि नामुम्किन होता जा रहा है। क्योंकि अमरीका और यूरपी अक़्वाम ख़ुद अपने ही दाम में फंस कर अपनी आबादी की शर्ह ख़तरनाक हद तक कम कर चुकी हैं और नुबुवत अब यहां तक पहुंच चुकी है कि आम यूरपी और अमरीकी फ़र्द ख़ानदान और बच्चों के किसी झंझट में पड़ना ही नहीं चाहता और "Enjoy thyself" के मअ़रूफ़ मग़रिबी उसूल के तहत अपनी ज़िंदगी ज़िम्मादारी से पाक और ऐश व इशरत से भरपूर गुज़ारना चाहता है। चुनांचे मग़रिबी पालीसी साज़ों को अब यही हल नज़र आता है कि दूसरे ख़ित्ते के लोगों की आबादियां भी इस हद तक कम कर दी जाएं कि कभी उनके मुक़ाबिल आने का ख़तरा पैदा न हो सके। इसके लिये गुज़िश्ता कई दहाइयों से एक हमा जिहत मुहिम चलाई जा रही है। इल्मी व नज़रियाती सतह पर लिट्रेचर की तैयारी और इशाअत, अब्लाग़ी महाज़ पर सरगर्मी, सियासी, समाजी और इक़्तिसादी मैदानों में आबादी के हवाले से मतलूब पालीसी इक़्दामात और इन इक़्दामात

के लिये बा असर हल्क़ों की हिमायत का हुसूल इस हमागीर मुहिम के अहम उन्वानात हैं। हिक्मते अमली यह है कि बराहे रास्त भी और बिलवास्ता तौर पर आलमी इदारों के ज़रीए भी गुर्बत के ख़ातमे, इक्तिसादी तरक़्क़ी और मां बच्चे की सिहत जैसे प्रोग्रामात के पर्दे में तहदीद आबादी की मुहिम को कामियाब बनाया जाए। इस ज़िम्न में अगर तरग़ीब व तहरीस से काम न निकल सके तो जंग, जबर, ज़ोर ज़बरदस्ती हत्ता कि ऐटमी और कीमियाई जंग के बारे में भी सोचने और अमल करने के लिये तैयार रहा जाए। इंसानी आबादी कम करने की मुहिम को "फ़लाह व बहबूद" का नाम दिया जाता है। मुख़्तलिफ़ बीमारियों के इलाज के लिये मुफ़्त गोलियों, टीकों और क़तरों की फ़राहमी को इंसान दोस्ती कहा जाता है। यह न फ़लाह व बहबूद है और न इंसान दोस्ती। यह इंसान कशी की वह संगदिलाना मुहिम है जो इंसानियत को अपनी मर्ज़ी के तहत महकूम व महदूद बनाने के ख़बत में मुब्तला एक गिरोह ने बरपा की है। आप शायद इसको मुबालग़ा या हस्सासियत क़रार देंगे लेकिन इस मज़मून के इख़्तिमाम तक हमारे साथ चलते रहिये तो आप यक़ीनन उस नतीजे तक पहुंच जाएंगे जो तहक़ीक़ और हक़ाइक़ की तह से बरआमद हुआ है।

इंसानियत के ख़िलाफ़ जरासीमी जंगः

इस वक़्त हम दुनिया में ख़ानदानी मंसूबा बंदी, तौलीदी सलाहियत कम करने वाली वेक्सीन वग़ैरा की शक्ल में जो आलमगीर मुहिम चलती देख रहे हैं, यह दरहक़ीक़त एक मख़्सूस इंसानी गिरोह (जो ख़ौफ़नाक हद तक संगदिल और ख़ुदग़र्ज़ है) के मफ़ाद के लिये खेला जाने वाला ताक़त, सियासत और मफ़ादात का आलमी खेल है जो कहीं तरग़ीब व तहरीस और कहीं जबर व दबाव

के ज़रीए खेला जा रहा है। कभी इसके लिये इंसानियत का लबादा ओढ़ लिया जाता है और कहीं बवक़्ते ज़रूरत रियासती ताक़त और रियासती इदारे जबर व तशद्दुद का हथकंडा इस्तेमाल करते हैं। मानेअ़ हमल गोलियों से लेकर मुतअद्दी जरासीमी बीमारियां फैलाने तक एक लर्ज़ा खेज़ शैतानी सिलसिला है जो इबलीस के नुमाइंदये अअ़ज़म "अद्दज्जालुल अक्बर" की आलमी हुकूमत का ख़्वाब पूरा करने के लिये चलाया जा रहा है। आइये! एक नज़र इस शैतानी मुहिम पर और फिर यह दिलेराना अज़्म कि हम इंशा अल्लाह शरीअ़त से चिम्टे रहकर सारी उम्र गुज़ारेंगे कि इसी में हमारा बचाव है, उस आलमगीरी तबाही से जिससे इबलीस के कारिंदे इंसानियत को दो चार करना चाहते हैं।

1970 ई० की दहाई तक यह बात ज़्यादा से ज़्यादा वाज़ेह होती जा रही थी कि यूरप और सफ़ेद फ़ाम अमरीका की आबादी तेज़ी से कम हो रही है। अगर कुछ न किया गया तो तीसरी दुनिया की अक़्वाम की आबादी का बढ़ता हुआ हज्म "फ़्री मैसन्ज़" के ज़ेरे कंट्रोल मुमालिक की क़ौमी सलामती को शदीद ख़तरे से दो चार कर देगा। मग़रिब जिस जिंसी आज़ादी और बेराहवी का शिकार हो गया है, इसके बाद वह बच्चों की ज़िम्मादरी संभालने पर किसी सूरत तैयार नहीं। मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तरग़ीबात और मुराआत के बावजूद मग़रिब की मादर पिदर आज़ादी नई नस्ल ख़ानदान की किफ़ालत करने या बच्चों की तरबियत का बोझ उठाने के लिये आमादा नहीं। ख़ानदानी निज़ाम की इस तबाही का नतीजा यह है कि बच्चों की तादाद ख़ौफ़नाक हद तक कम होती जा रही है और सूरते हाल यही रही तो मग़रिब की क़ुव्वते सारिफ़ीन (Consumer Power) और पैदावारी सलाहियत कम हो जाएगी और नतीजे के तौर पर वह

मुकम्मल तौर पर तीसरी दुनिया की आबादी पर इंहिसार करने वाले बन जाएंगे। इस तनाज़ुर में किसी न किसी तरह मग़रिबी आबादी और तीसरी दुनिया की आबादी के दर्मियान हाइल इस ख़लीज को पाटने की ज़रूरत थी कि आलमी सतह पर मग़रिबी बरतरी या ज़्यादा वाज़ेह अंदाज़ में "मैसन बिरादरी" के तसल्लुत को बहाल किया जा सके। 1970 ई0 की दहाई में सदर जिमी कार्टर ने "आलमी रिपोर्ट बराए 2000 ई0" तैयार कराने को कहा। रिपोर्ट के नताइज में दुनिया भर के तक़रीबन तमाम मसाइल का ज़िम्मादार "ग़ैर सफ़ेद फ़ाम" लोगों की आबादी में इज़ाफ़े को ठहराया गया। रिपोर्ट मे यहां तक सिफ़ारिश की गई कि मग़रिब की बरतरी को बहाल करने के लिये 2000 ई0 तक तीसरी दुनिया के मुमालिक की कम अज़ कम 2 बिलियन आबादी को सत्हे ज़मीन से मिटा दिया जाए। इसकी सूरत क्या हो? इंसानी आबादी के ख़ातमे का एक तरीक़ा तो जंग है, लेकिन इनको शुरू करना तो इंसान के बस में होता है, ख़त्म करना इंसान के बस में नहीं होता, इसलिये एक दूसरा तरीक़ा इख़्तियार किया गया जो इस मंसूबे को चलाने वाली क़ुव्वतों की इंतिहाई संगदिली और इंसानियत दुशमनी पर दलालत करता है। वह तरीक़ा अब तक सामने आने वाली बीमारियों में से सबसे ज़्यादा ख़तरनाक बीमारी फैलाने की शक्ल में था। मुझे यक़ीन है आप समझ गए होंगे कि मैं "एड्ज़" का ज़िक्र कर रहा हूं। जी हां! एड्ज़ क़ुदरती बीमारी नहीं, मसनूई जरसूमों के ज़रीए फैलाया गया मौत का जाल था।

रहम दिल ईसाई मुहक़्क़िक़ीनः

यह बात इंतिहाई क़ाबिले ग़ौर है कि 70 ई0 ही की दहाई में......यअ़नी जब यह मुंदरजा बाला रिपोर्ट पेश की गई......एड्ज़ की वबा फूट पड़ी जिसने तीसरी दुनिया की अक़्वाम की बहुत बड़ी

आबादी के साथ साथ अमरीका हस्पानवी नज़ाद, लातीनी अमरीका में आबादी को मौत के मुंह में धकेल दिया। कहा यह गया कि इस बीमारी के वाइरस की इब्तिदा अफ़्रीका के सब्ज़ बंदरों से हुई। 2 जून 1988 ई0 को लास एंजिलिस टाइम्ज़ ने एक आर्टिकल छापा जिसमें इस आईडिया की तरदीद की है कि इंसानी वाइरस सब्ज़ बंदरों से फैले हैं। इससे यह बात अयां हो गई कि DNA......अपनी मिस्ल पैदा करने वाला माद्दा जो जीनी या ख़ल्क़ी ख़ुसूसियात के ख़ाके का हामिल होता है......एड्ज़ के माद्दा की साख़्त सब्ज़ बंदरों के माद्दे की साख़्त से कतअन जुदागाना न थी। बल्कि हक़ीक़त में यह साबित किया जा सकता है कि एड्ज़ वाइरस क़ुदरती लिहाज़ से कहीं भी नहीं पाए जा सकते हैं और न ही यह इंसानी ज़िंदगी के सिस्टम के अंदर ज़िंदा रह सकते हैं। अगर वाइरस क़ुदरती लिहाज़ से नहीं पाया जाता तो फिर सवाल यह पैदा होता है कि यह वाइरस अचानक कहां से आ गया है? इस सवाल के जवाब के लिये दुनिया को एक ग़ैर सहीवनी अमरीकी माहिर डाक्टर राबर्ट स्ट्रीकर का शुक्रगुज़ार होना चाहिये कि सबसे पहले उन्होंने इस राज़ से पर्दा उठाया। राक़िम दज्जाल (1) में अर्ज़ कर चुका है कि वह ईसाई हज़रात जो सहीवनियत का शिकार होकर शिद्दत पसंद यहूदियों के हमनवा नहीं हुए और उनके दिल में इंसानियत के लिये रहम और तरस है। यह हज़रत मसीह अलै0 के नुज़ूल के बाद इंशा अल्लाह मुसलमान होकर मुजाहिदीने इस्लाम के साथ क़ाफ़िलए हक़ में शरीक हो जाएंगे। हम सबको उनकी हिदायत और ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये दुआ करनी चाहिये।

डाक्टर राबर्ट बी स्ट्रीकर एम डी, पी एच डी 1983 ई0 में लास एंजिलिस में मैडीसन में प्रेक्टिस करते थे। वह मशहूर पैथालोजिस्ट

और वह फ़ार्मालोजी में पी एच डी भी रखते थे। उनके भाई "टैड स्ट्रीकर" इटारनी थे। वह 1983 ई0 में केलीफ़ोर्निया में सिक्यूरिटी पेसीफ़िक बैंक के लिये सिहते आम्मा से मुतअल्लिक़ तजावीज़ मुरत्तब कर रहे थे। उस वक़्त दोनों भाईयों ने नए मर्ज़ "एड्ज़" से मुतअल्लिक़ तफ़सीलात मालूम करने के लिये तहक़ीक़ का आग़ाज़ किया और उन्हें ऐसे नताइज हासिल हुए जो न सिर्फ़ हैरत अंगेज़ बल्कि नाक़ाबिले यक़ीन थे। उन्होंने अपनी तहक़ीक़ात पर मुशतमिल मक़ाला को "स्ट्रीकर मैमोरन्डम" का नाम दिया।

उन्होंने अपने मैमोरन्डम में साबित किया है कि एड्ज़ के वाइरस इंसान के तख़्लीक़ कर्दा हैं। इस हवाले से उन्होंने मुतअद्दद दस्तावेज़ी सबूत पेश किये हैं। दूसरी तरफ़ अमरीकी हुकूमत ने यह मौक़िफ़ इख़्तियार किया था कि एक अफ़्रीकी बाशिंदे को एक सब्ज़ बंदर ने काट लिया जिसके सबब एड्ज़ का मर्ज़ पैदा हुआ, लेकिन जैसे जैसे डाक्टर स्ट्रीकर की तहक़ीक़ात में पेश रफ़्त होती गई, यह बात पाए सबूत को पहुंच गई कि एक मख़्सूस मज़हबी तब्क़े से तअल्लुक़ रखने वाले साइंसदानों ने न सिर्फ़ एड्ज़ के वाइरस तख़्लीक़ किये बल्कि उन्हें फैलाया भी गया। इस तरह अब इंसानों के वजूद को ख़तरा लाहिक़ हो गया है क्योंकि एड्ज़ के वाइरस वही काम कर रहे हैं जिनके लिये उन्हें तख़्लीक़ किया गया था। एड्ज़ के वाइरस मुतअद्दी अमराज़ के वाइरस के सहारे इंसानों में कैंसर का मर्ज़ भी पैदा करते हैं। तहक़ीक़ के इस मरहला पर डाक्टर स्ट्रीकर को यह बात खटकने लगी कि अमरीकी हुकूमत, एड्ज़ के नाम निहाद माहिरीन और ज़राए अब्लाग़ अवाम को ग़लत मालूमात फ़राहम करके गुमराह कर रहे हैं। चुनांचे डाक्टर स्ट्रीकर ने अपने मैमोरन्डम में हक़ाइक़ का ज़िक्र करते हुए लिखाः

1- एड्ज़ का मर्ज़ इंसान का तक्लीफ़ कर्दा है।

2- एड्ज़ हमजिन्सियत के सबब लाहिक़ नहीं होता।

3- एड्ज़ का मर्ज़ मच्छरों के ज़रीए भी फैलता है।

4- कंडोम इस्तेमाल करके एड्ज़ से महफ़ूज़ नहीं रहा जा सकता।

5- किसी भी वैक्सीन से एड्ज़ का इलाज मुम्किन नहीं।

डाक्टर स्ट्रीकर ने ख़तरनाक दस्तावेज़ पर मुशतमिल अपनी एक रिपोर्ट "बाइयो अलर्ट अटैक" (Bio Alert Attack) के नाम से मुरत्तब की और अमरीका की हर रियासत के गवर्नर, सदर, नाइब सदर, एफ़ आइ, सी आइ ए, नासा और कांग्रेस के मुंतख़ब अरकान को भेजी, लेकिन डाक्टर स्ट्रीकर को उस वक़्त हैरत हुई जब हक़ाइक़ पर मब्नी रिपोर्ट मौसूल होने पर सिर्फ़ तीन गवर्नरों ने जवाब दिये, और हुकूमत की तरफ़ से तो कोई जवाब ही नहीं मिला। चुनांचे 1985 ई० में डाक्टर स्ट्रीकर ने हुकूमत से कहा कि हर वह शख़्स जिस में एड्ज़ के वाइरस मौजूद हों, क़ब्ल अज़ वक़्त इंतिहाई अज़ियत के साथ मर जाएगा, लेकिन हुकूमत ने इसके जवाब में कहा: "यह बेहूदगी है।"

डाक्टर स्ट्रीकर ने एक अच्छे साइंसदान की तरह मुतअद्दद मक़ाले लिख कर अमरीका में तमाम मुम्ताज़ मैडीकल जर्नल को भेजे, लेकिन उन्होंने उसे शाए करने से इंकार कर दिया। चुनांचे डाक्टर स्ट्रीकर ने अपनी तहक़ीक़ी रिपोर्ट यूरप में शाए कराने की कोशिश की, लेकिन यहां भी उन्हें यह दरवाज़ा बंद मिला। फिर उन्होंने अमरीकी टी वी पर अपनी रिपोर्ट पेश करने की कोशिश की, लेकिन यहां भी उन्हें नाकामी हुई, ताहम एक नेशनल रेड यूनिट वर्क ने एक मुम्ताज़ कम्पियर की मौजूदगी में डाक्टर स्ट्रीकर का इंटरव्यू किया, लेकिन बाद अज़ां उसने भी इसे नश्र करने से इंकार कर दिया और

वजूहात भी ज़ाहिर नहीं कीं। चुनांचे इस सूरते हाल में यह अम्र काबिले गौर है कि डाक्टर स्ट्रीकर की तहकीकाती रिपोर्ट में ऐसी कौनसी धमाका खेज़ बात है जिसे अमरीकी रेडियो, टी वी और अख़्बारात ने शाए करने से इंकार कर दिया।

हुकूमत या ज़राए अब्लाग़ अवाम को हकाइक़ से आगाह करने में क्यों पस व पेश कर रहे हैं? हम सब यह जानते हैं कि एक बादशाह के लिये झूट को सच कर दिखाना आसान होता है, लेकिन एक गदागिर के लिये हक़ बात को आम करना इंतिहाई मुश्किल होता है। बहर हाल डाक्टर स्ट्रीकर ने कहा कि बह्रे सूरत हम एड्ज़ के मुतअल्लिक़ हकाइक़ बयान कर रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त यह है कि हज़ारों मरीज़ों के मुतअल्लिक़ हकाइक़ से आप को आगाह नहीं किया जा रहा।

डाक्टर स्ट्रीकर ने यह सवाल उठाया है कि माहिरीन सब्ज़ बंदरों और हम जिंसी को इस मूज़ी अमराज़ एड्ज़ की बुन्याद क्यों बताते हैं? जब यह मालूम हो चुका है कि इंसान ने एड्ज़ के वाइरस तख़्लीक़ किये तो वह क्यों हमजिंसी और मंशियात को इसकी बुन्याद क़रार देते और इस का प्रोपेगन्डा करते हैं? अगर अफ़्रीका में यह मर्ज़ मुख़्तलिफ़ जिंसी अमराज़ के ज़रीए फैला और अगर हक़ीक़त में सब्ज़ बंदर ही इस मूज़ी मर्ज़ का मन्बअ है तो फिर अफ़्रीका, हैटी, ब्राज़ील, अमरीका और जुनूबी जापान में यह मर्ज़ एक ही वक़्त में क्यों फैला? इसलिये कि एड्ज़ के वाइरस यहूदी साइंस दानों ने तजुर्बागाहों में तैयार किये और यह खुद बखुद वजूद में नहीं आए। चुनांचे डाक्टर स्ट्रीकर ने इस मौक़िफ़ को इन अलफ़ाज़ में बयान किया है:

"अगर ऐसा आदमी जिसके न हाथ हों और न पैर, और वह

एक तक़रीब में अच्छा लिबास पहन कर आए तो इसका यह मतलब होगा उसको किसी ने कपड़े पहनाए हैं।"

डाक्टर थियोडोर स्ट्रीकर की तहक़ीक़ से ज़ाहिर होता है कि "नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट" और "आलमी इदारए सिहत" ने मुशतर्का तौर पर फ़ोर्ट डीड्रक (अब NCI) की तजुर्बागाहों में एड्ज़ के वाइरस तख़्लीक़ किये, उन्होंने दो मुहलिक वाइरसिज़ "बोवाइन लियकूमिया वाइरस" (Bovine Leukemia Virus) और "शीप व सना वाइरस" (Sheep Visna Virus) को मिलाया और उन्हें इंसानों की बाफ़तों में इंजक्शन के ज़रीआ दाख़िल किया, जिसके नतीजा में एड्ज़ के वाइरस पैदा हुए और जिन इंसानों में यह वाइरस तख़्लीक़ किये गए, वह सद फ़ीसद मुहलिक साबित हुई। रफ़्ता रफ़्ता दूसरों को तबाह करने की कोशिश खुद अमरीकियों के गले का फंदा बन गई और लाखों अमरीकी उसकी हलाकत का बाइस साबित हुई।

डाक्टर स्ट्रीकर की यह तहक़ीक़ सामने आने के बाद 4 जूलाई 1984 ई0 को इंडिया में देहली के न्यूज़ पेपर The Patriot में एक आर्टिकल छपा जिसमें एड्ज़ के मुतअल्लिक़ पहली बार यह तफ़सील बयान की गई कि एड्ज़ हयातियाती जंग का एक मुतवाज़ी ज़रीआ बनता जा रहा है। अख़बार ने डाक्टर स्ट्रीकर को एक गुमनाम अमरीकन माहिर ज़ाहिर करके नक़्ल किया कि एड्ज़ का वाइरस अमरीकी आरमी के तहत चलने वाली एक हयातियाती लिबारेट्री में जो फ़्रेडर्क के क़रीब फ़ोर्ट डिट्रिक में है, में तैयार किया गया। फिर 30 अक्तूबर 1985 ई0 को सोवियत यूनियन के रोज़नामा "Glitterg" में एक कालम निगार "Liternia Gazetta" ने वही इल्ज़ाम दोहराया जो इंडियन न्यूज़ पेपर की जानिब से लगाया

गया था जिसकी वजह से यह एक बैनुल अक़्वामी बहस की शक्ल इख़्तियार कर गया। ताहम "बिरादरी" के तहत चलने वाले मीडिया ने यह सब कुछ कम्यूनिस्टों की बलीग़ाना भड़क क़रार देकर रद्द कर दिया।

26 अक्तूबर 1986 ई0 को संडे एक्सप्रेस वह पहला मग़रिबी अख़बार था जिसने इस मौज़ू पर "फ़रंट पेज स्टोरी" का आग़ाज़ किया जिसका उन्वान "AIDS made in lab shocks" था जिसने इंडिया और सोवियत यूनियन के इंकिशाफ़ात की तसदीक़ की। इस आर्टिकल में दो नामवर माहिरीन डाक्टर जान सेल और प्रोफ़ेसर जेकब सैगाल जो बर्लिन यूनिवर्सिटी के शोबा हयातियात के रीटायर्ड डायरेक्टर हैं, इन दोनों के हवाले से यह हतमी राए नक़्ल की गई कि एड्ज़ वाइरस इंसानी बनाए हुए हैं। इन दोनों के इस बयान ने गोया मौज़ू पर बहस को ख़त्म कर दिया और यह बात हतमी तौर पर सामने आ गई कि एड्ज़ की शक्ल में पसमांदा इंसानियत को मौत का तोहफ़ा देने वाले संग दिल यहूदी साइंस दान आम इंसानों के लिये रत्ती भर तरस के जज़्बात दिल में नहीं रखते।

यहां तक इतनी बात तो तै हो गई कि तिब्बी तारीख़ में ख़तरनाक तरीन समझा जाने वाला "एड्ज़ वाइरस" इंसानों ने ख़ुद बनाया है। ख़तरनाक चीज़ क्यों बनाई गई है और फैलाई कैसे जाती है? इसकी तरफ़ आते हैं। एड्ज़ का हंगामा वैक्सीन प्रोग्राम के साथ दुनिया भर में जोड़ा जाता रहा है। मअ़रूफ़ इंटरनेशनल न्यूज़ पेपर "London Times" ने एक फ़रंट स्टोरी आर्टिकल शाए किया जिसका उन्वान था: "Small packs vaccine Triggered AIDS" यह आर्टिकल चेचक वैक्सीन प्रोग्राम और एड्ज़ के हंगामे और फूट पड़ने वाली वबाओं के दर्मियान तअल्लुक़

साबित करता है। इन इलाकों में जिनमें वर्ल्ड हेल्थ आरग्नाइज़ेशन इस वैक्सीन प्रोग्राम को मुनज़्ज़म अंदाज़ में चला रही थी एड्ज़ का फैलाव वाज़ेह तौर पर सामने आ रहा था। एक अंदाज़े के मुताबिक़ "आलमी तन्ज़ीम सिहत" यह प्रोग्राम 50 से 70 मिलियन लोगों के दर्मियान वसती अफ़्रीका के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में चला रही थी। याद रहे कि "वर्ल्ड हेल्थ आरग्नाइज़ेशन" अक़्वामे मुत्तहिदा का ज़ेली इदारा है जो कुर्रहये अर्ज़ के बाशिंदों की सिहत के "तहफ़्फ़ुज़" और "बेहतरी" के लिये बनाया गया है। यअ़नी वही दजल व फ़रैब जो दज्जाली कुव्वतों का ख़ास्सा है यहां भी अपना आप दिखाता और मनवाता नज़र आ रहा है।

वैक्सीन प्रोग्राम की आड़ में:

माहिरीन के मुताबिक़ मुतअद्दद शहादतें साबित करती हैं कि एड्ज़ एक जीनियाती वाइरस है जो वैक्सीन प्रोग्राम के ज़रीए तीसरी दुनिया के मुमालिक में फैलाया जा रहा है। यह जरासीमी जंग कमज़ोर और मासूम लोगों के ख़िलाफ़ है जिसका मक़्सद ज़मीनी वुसती ख़िल्क़त को मुकम्मल तौर पर तबाह करना है। एड्ज़ इसके अलावा कुछ नहीं कि यह दज्जाली "बिरादरी" के ग्रेन्ड मास्टर्ज़ का अपनी आबादी की कमी और "ग़ैर बिरादरी" की कसरत के बावजूद जो दुनिया पर तसल्लुत हासिल करने का आख़िरी हल है। इसका मक़्सद यह है कि "ज्यूश इकानोक पालीसी" को दुनिया पर मुसल्लत किया जाए जिसकी वजह से कुर्रहये अर्ज़ की मुकम्मल सलतनत फ़्री मैसन की हाथ में होगी।

दज्जालियात के नामवर माहिर इस्रार आलम की शहादत मुलाहिज़ा फ़रमाइये। वह इस राज़ से पर्दा उठाते हुए कहते हैं:

"इसी ज़ेल में इबलीस और यहूदियत का एक और ज़हन कार

फ़रमा है और वह है अह्ले ईमान के तअल्लुक़ से। चुनांचे ऐसा महसूस होता है कि वह यह चाहते हैं अगर उन्हें भी मलाइका की तरह Genome और जैनेटिक कोड मालूम हो जाए तो वह भी अपने दुश्मनों और बिलखुसूस अह्ले ईमान और अह्लुल्लाह को इसी तरह "बंदर", "कुत्ता" और "ख़िन्ज़ीर" में बदल डालें जिस तरह अल्लाह तआला ने यहूदियों को बदल डाला है। "जीन थैरापी" (Gene Theraphy) के तहत बुन्यादी तौर पर इसी मिशन को पूरा किया जा रहा है। बहुत कम लोगों को इसका इल्म है कि हेपाटाइटिस बी (Hepatitis B) नामी खुद साख़्ता इक़्दामी बीमारी के इलाज के लिये जो टीका दिया जाता है उसे कैरून कारी कम्बी वैक्स एच बी (Chiron's Recombivax HB) कहा जाता है जो दरअसल एक जेनेटिक इंजीनिअर्ड वैक्सीन है। हेपाटाइटिस बी की हक़ीक़त सिर्फ़ इस बात से मालूम हो जाएगी कि WHO के मुताबिक़ यह बीमारी इस्राईल को छोड़ कर हर जगह पाई जाती है। दुनिया में अब तक 50 करोड़ लोगों को इसका टीका दिया गया। इस्राईल में न यह बीमारी पाई जाती है और न टीका दिया गया। इसकी मुहिमें सारी दुनिया में चलाई जा रही हैं। आने वाला वक़्त बताएगा कि यह इलाज है न इलाज का तजुर्बा। यह तो इस मिशन के हज़ारों तजुर्बों में से एक तजुर्बा है जिसके तहत अपने दुश्मनों की नस्ल को नस्लन बअ़द नस्ल बंदर, कुत्ता और ख़िंज़ीर बनाने की बात सोची जा रही है।" (मअ़रकए दज्जाले अक्बर, स: 81)

कहानी आगे बढ़ती है:

एड्ज़ के अलावा भी कुछ वाइरस बनाए जा चुके हैं, लैब में महफ़ूज़ हैं और बवक़्ते ज़रूरत बेधड़क इस्तेमाल किये जाते हैं। यह सुनकर आप को इंतिहाई सदमा होगा कि हमारा मुल्क पाकिस्तान इन

जरासीमी बीमारियों के फैलाव का मर्कज़ी हदफ़ है। मुझे भी शदीद सदमा हुआ था और यह सदमा उस वक़्त शदीद तरीन हो गया जब मुझे अफ़वाहों की तसदीक़ एक मज़मून की शक्ल में मौसूल हुई। इस मज़मून में एक साहिबे क़लम ने जो अपना नाम पर्दए इख़्फ़ा में रखना चाहते थे, शहज़ाद नामी नौजवान की सच्ची कहानी के ज़रीए इस तरफ़ तवज्जो दिलाई थी कि हमारे मुल्क में एक ज़ालिमाना शैतानी मुहिम मुनज़्ज़म तरीक़े से चल रही है। मैं आप को इस सदमे में अपने साथ शरीक करता हूं जो मुझे यह कहानी सुनकर हुआ, ताकि हम सब मिल कर इस शैतानी मुहिम का कोई तोड़ सोच सकें। मुलाहिज़ा फ़रमाएं पहले एक कालम फिर इस कालम से फूट पड़ने वाले तजस्सुस और सुराग़ रसानी की रूदाद जो धीरे धीरे आगे बढ़ती है। (जारी हैं)

☆☆☆

दज्जाल के साए

एक बिगड़े नौजवान की आप बीती

दज्जाल के हरकारों और दुशमनाने इंसानियत के काले करतूत, इस्राईल से क़ादियान तक फैली हुई इबलीसी तहरीक .

(दूसरी क़िस्त)

पकिस्तान के ख़िलाफ़ हयातियाती जंगः

"यह जूलाई 2007 ई0 की बात है। लाहौर का एक ख़ूबरू नौजवान शहज़ाद मलिक के एक मशहूर व मअ़रूफ़ क़ौमी अख़्बार का मुतालआ कर रहा था। अख़्बार के वरक़ उलटते हुए अचानक उसकी नज़र क्लासीफ़ाइड इश्तिहारात पर पड़ी। फिर उनमें से एक इश्तिहार पर उसकी निगाहें गड़ कर रह गईः "दोस्तियां कीजिये......कामियाब बनिये" इश्तिहार में बताया गया था कि हर नौजवान दिये गए राबता नम्बरों पर काल करके नए दोस्त तलाश कर सकता है। जो लड़के भी हो सकते हैं और लड़कियां भी......यह नए तअल्लुक़ात उसकी ज़िंदगी में नई जान डाल देंगे।

शहज़ाद उन दिनों वैसे भी फ़ारिग़ था। उसकी ज़िंदगी बेमज़ा गुज़र रही थी। ऐसे इश्तिहारात उसने पहले भी देखे थे मगर अब उसने पहली बार उन्हें आज़माने का इरादा किया। उसने इश्तिहार में दिये गए नम्बरों पर राबता किया। इस राबते के नतीजे में उसे क़ई लड़कों और लड़कियों का तआरुफ़ कराया गया। उनके फ़ोन नम्बर्ज़ दिये गए। शहज़ाद ने उनमें से एक लड़की "रूही" को दोस्ती के लिये मुंतख़ब किया और उसके नम्बर पर काल की। दोनों में हैला

हाए हुई। फिर बाक़ाएदा मुलाक़ात के लिये जगह का तअय्युन हुआ। लड़की ने खुद बताया कि वह लाहौर के फ़लां जूस सैंटर में मिल सकती है।

शहज़ाद वहां पहुंच गया। इस तरह रूही से उसकी पहली मुलाक़ात हुई। इस मुलाक़ात ने उसे एक नई दुनिया की सैर कराई। ऐश व अय्याशी की दुनिया, रंग रलियों की दुनिया, जहां शर्म व हया नामी कोई शय नहीं होती। रूही इस दुनिया में दाख़िले का दरवाज़ा थी। आगे लड़कियों की एक लम्बी क़तार थी। शहज़ाद की दोस्तियां बढ़ती चली गईं। उसे होश तब आया जब उसे जिस्म में शदीद तोड़ फोड़ का एहसास हुआ। उसने डाक्टरों से मुआईना करवाया तो पता चला कि वह एड्ज़ का मरीज़ बन चुका है। शहज़ाद के पास इतनी रक़म नहीं थी कि वह अपना इलाज कराता। तब उन्हीं गिरोह के सरकर्दा अफ़राद ने इलाज की पेशकश की मगर शर्त यह थी कि वह उनके गिरोह के लिये काम करे। शहज़ाद को मौत सामने नज़र आ रही थी। वह हर ख़तरनाक से ख़तरनाक और नाजाइज़ से नाजाइज़ काम के लिये तैयार हो गया। वैसे भी हलाल व हराम का फ़र्क़ तो वह कब का भूल चुका था।

गिरोह के मुंतज़िमीन खुद सात पर्दों में थे। वह शहज़ाद को अपनी लड़कियों के ज़रीए मुख़्तलिफ़ काम बताते थे। यह काम अजीब व ग़रीब थे। शहज़ाद एक पढ़ा लिखा और ज़हीन नौजवान था। जल्द ही वह गिरोह के कामों को ख़ासी हद तक समझ गया। गिरोह के मंसूबे आहिस्ता आहिस्ता उस पर अयां होने लगे। यह मंसूबे बेहद ख़ौफ़नाक थे। यह गिरोह मुल्क में एड्ज़ का वाइरस फैला रही था। हेपाटाइटिस सी की बीमारी को फ़रोग़ दे रहा था। हज़ारों अफ़राद उसका निशाना बन चुके थे। आज़ाद ख़्याल नौजवान,

हस्पतालों के मरीज़ और जेलों के क़ैदी उसका ख़ास हद्फ़ थे। आज़ाद ख़्याल नौजवानों को दोस्ती के इश्तिहारात के ज़रीए फंसाया जाता था। यह इश्तिहारात मीडिया में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से आ रहे थे। इनके ज़रीए नौजवानों का तअल्लुक़ जिन लड़कियों से होता था वह एड्ज़ और दूसरी मुहलिक बीमारियों में मुब्तला थीं। इन सरापा बीमार औरतों को मुख़्तलिफ़ एन जी ओज़ से इकट्ठा किया गया था। इन औरतों की बीमारी इस दर्जे की थी कि उनके साथ इख़्तिलात से भी इंसान एड्ज़ में मुब्तला हो सकता था, मगर गिरोह के लोग इस पर इक्तिफ़ा नहीं करते थे। उनका इंतेज़ाम इतना पुख़्ता था कि लड़की से पहली मुलाक़ात के वक़्त नौजवान जो मशरूब (जूस, कोल्ड ड्रिंक या शराब) पीता था, उसमें पहले से ख़तरनाक जरासीम मिला दिये जाते थे। एड्ज़ की कई मरीज़ाएं मअक़ूल इलाज, बेहतर मअ़वज़े और ऐश व इशरत की चंद घड़ियों के इवज़ इस गिरोह के लिये यह काम करती थीं, जबकि बहुत सी औरतें जो ज़माने से इंतिक़ाम लेना चाहती थीं, रज़ाकाराना तौर पर सरगर्म थीं। उनमें से कई एक का तअल्लुक़ भारत से था। बहुत सी औरतें मजबूर होकर यह काम कर रही थीं क्योंकि उनके बच्चे उस गिरोह के क़ब्ज़े में थे। उनसे वादा किया गया था कि अगर वह अहकाम की तामील करती रहें। एड्ज़ फैलाती रहें तो उनके बच्चों को आला तालीम दिलवाकर उनका मुस्तक़बिल शानदार बना दिया जाएगा।

इन बेफ़िक्र नौजवानों के अलावा हस्पतालों, पागल ख़ानों और जेल ख़ानों के मरीज़ उनका दूसरा हद्फ़ है। यह गिरोह पाकिस्तान के तूल व अर्ज़ में ऐसी लाखों सरनजें फैला रहा था जो एड्ज़ या हेपाटाइटिस के मरीज़ों के ख़ून से आलूदा होती थीं। कई बड़े हस्पतालों में इस गिरोह के एजेंट मौजूद थे। वहां आने वाली सरंजों

में यह एड्ज़ और हेपाटाइटिस ज़दा सरंजों एक मख़्सूस तनासुब से मिली होती थीं। इतनी सरंजों को आलूदा करने के लिये गिरोह ने पागलख़ानों में सरगर्म अपने एजेंटों के ज़रीए पागल अफ़राद को अपना निशाना बनाया हुआ था। उनको एड्ज़ या हेपाटाइटिस सी में मुब्तला करने के बाद उनका ख़ून बड़ी मिक्दार में निकालते रहने का सिलसिला रहता था।

गिरोह का तीसरा हद्फ़ जेल के कैदी थे। उनमें से कम मुद्दत की सज़ा पाने वाले हद दर्जे मन्फ़ी और लादीनी ज़ह्नियत रखने वाले कैदियों को ख़ास तजज़िये के बाद मुंतख़ब करके इलाज के बहाने एड्ज़दा कर दिया जाता था। जब यह कैदी रिहा हुए तो बीमारी के बाइस उनका कोई मुस्तक़बिल न होता था। यह गिरोह उनसे राबता करके उन्हें अपना रज़ाकार बना लेता था। यह कैदी वैसे ही तख़्रीबी ज़हन के होते थे। अपनी महरूमियों का दुनिया से बदला लेने के लिये वह एड्ज़ फैलाने पर आमादा हो जाते थे। उन्हें कानों कान यह मालूम न होता था कि उन्हें एड्ज़ में मुब्तला करने वाले "मेहरबान" यही हैं।

गिरोह का एक ख़ास काम दूसरे लोगों की अस्नाद को अपने कारकुनों के लिये इस्तेमाल करना था। इस मक्सद के लिये अख़्बारात में तबदीली नाम और वलदियत के इश्तिहारात शाए कर दिये जाते। गिरोह के किसी कारकुन को किसी मुलाज़मत के लिये जो मतलूबा सनद दरकार होती, उसका इंतेज़ाम इस तरह होता था कि पहले कम्पयूटर पर अपने कारकुन की वलदियत से मिलते जुलते नाम वाली वलदियत सर्च की जाती। मसलनः ज़फ़र वल्द जमील को कहीं भरती कराना होता तो नेट से जमील नाम की वलदियत रखने वाले अफ़राद की फ़ेहरिस्त हासिल कर ली जाती। फिर ज़फ़र का तबदीली

नाम का इश्तिहार शाए करा के तबदील कर दिया जाता। इस तरीके से गिरोह के अनगिनत अफ़राद को डुपलीकेट अस्नाद दिलवा कर पुलिस, खुफ़िया एजेन्सियों और फ़ौज में भरती किया जा रहा था। जेल खानों, हस्पतालों और पागल ख़ानों में भी उनकी ख़ासी तादाद पहुंचा दी गई थी।

गिरोह की आमदनी के कई ज़राए थे। शहज़ाद को इतना मालूम हो सका कि बड़ी ग्रांट उसे बाहर से मिलती है। दीगर ज़राए खुफ़िया थे। अलबत्ता एक ज़रीअए आमदनी वाज़ेह था। वह एड्ज़ और दूसरे मुहलिक अमराज़ की अदविया की तिजारत का। एक तरफ़ तो खुद यह गिरोह इन अमराज़ को फैला रहा था और दूसरी तरफ़ उनकी अदवियात मुंह मांगे दामों फ़रोख़्त कर के बेतहाशा दौलत कमा रहा था।

एक मुद्दत तक शहज़ाद अपनी दीन व ईमान भूल कर इस गिरोह के लिये काम करता रहा। यहां तक कि वह उनके क़ाबिल एतिमाद रुक्नों में शामिल हो गया। तब एक दिन गिरोह के सरकर्दा अफ़राद ने उसे तलब किया और हैरत अंगेज़ हद तक पुरकशिश मुराआत की पेशकश की मगर साथ ही एक ग़ैर मुतवक़्क़ो मुतालबा भी किया।

"तुम क़ादियानी बन जाओ। मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी को आख़िरी नबी मान लो।" शहज़ाद हक्का बक्का रह गया। आज उसे मालूम हुआ कि यह गिरोह क़ादियानी है। उसने सोचने की मुहलत तलब की और इसके बाद मज़ीद खोज में लग गया। इस जुस्तजू में गिरोह की एक पुरानी कारकुन "रूबीना" ने उसकी मदद की। रूबीना ने जो इन्किशाफ़ात किये वह शहज़ाद के लिये किसी एटमी धमाके से कम नहीं थे। उसने बताया: "बिला शुब्हा यह क़ादियानी

गिरोह है मगर अकेला नहीं। यह एक बैरूनी खुफ़िया एजेंसी की सरपरस्ती में काम कर रहा है। यह काम एक वसीअ़ जंग के तनाज़ुर में हो रहा है। इसे हम हयातियाती जंग (Biological war) कह सकते हैं।"

क़ारिईन! शहज़ाद की यह सच्ची कहानी चंद रोज़ क़ब्ल ही सामने आई है। इसे पढ़कर मैं लर्ज़ा गया हूं। मैं इस पर यक़ीन न करता शायद आप भी इसे सच मानने में मुतज़बज़ब हों। क्योंकि यह बात हलक़ से उतरना वाक़ई मुश्किल है कि आया कोई गिरोह बिला तफ़रीक़ लाखों करोड़ों पाकिस्तानियों को इस तरह खुफ़िया अंदाज़ में क़त्ल करना क्यों चाहेगा? अमरीका की जंग तो मुजाहिदीन से है। क़ादियानियों की लड़ाई तो उलमा और ख़त्मे नुबुवत वालों से है। उन्हें अवाम के इस क़त्ले आम से क्या हासिल होगा? शहज़ाद की कहानी में इसका जवाब नहीं मिलता, मगर इसका जवाब खुद यूरपी मीडिया पर आने वाली रिर्पोटों से मिल सकता है। इन रिर्पोटों के मुताबिक़ इस वक़्त यूरप और अमरीका में इंसानी आबादी तेज़ी से निमटने का ख़तरा वाज़ेह तौर पर महसूस हो रहा है। वहां के "फ्री सैक्स" मुआशरे में अब कोई औरत मां बनना चाहती है न कोई मर्द बाप। तक़रीबन हर फ़र्द का यह ज़ेहन बन चुका है जब जिंसी तसकीन के लिये आज़ाद रास्ते मौजूद हैं तो शादी का बंधन और बच्चों का झंझट सर क्यों लिया जाए? इस बज़ाहिर पुर फ़रैब ख़्याल के पीछे इज्तिमाई खुदकशी का तूफ़ान चला आ रहा है। जिस क़ौम के अक्सर लोग बच्चे पैदा न करना चाहते हों वहां शर्ह पैदाइश क्यों कम न होगी? चुनांचे वहां अब आबादी तेज़ी से सिमटने लगी है। साबिक़ अमरीकी सदराती उम्मीदवार पैटरिक जे बुचाचिन ने वाज़ेह तौर पर लिखा है: "2500 ई0 तक यूरप से दस करोड़ अफ़राद सिर्फ़

इसलिये कम हो जाएंगे कि मुतबादिल नई नस्ल पैदा नहीं होगी।" उसने लिखा है: "2050 ई0 तक जर्मनी की आबादी 8 करोड़ से घट कर 5 करोड़ 90 लाख रह जाएगी। इटली की आबादी 5 करोड़ से कम होकर सिर्फ 4 करोड़ रह जाएगी। स्पैन की आबादी में 25 फ़ीसद कमी हो जाएगी।"

यह वह सूरते हाल है जिससे घबरा कर मग़रिबी दुनिया की हुकूमतें अवाम को अफ़ज़ाइश नस्ल की तरग़ीबात देने पर मजबूर हो गई हैं मगर कुत्ते बिल्लियों की तरह आज़ादाना जिंसी मिलाप के आदी गोरे अब किसी भी क़ीमत पर यह आज़ादी खोना नहीं चाहते। कोई बड़े से बड़ा इन्आम उन्हें बच्चे पालने की ज़िम्मादारी क़बूल करने के लिये संजीदा नहीं बना सकता। यह बात हददर्जा यक़ीन को पहुंच गई है कि इस सूरते हाल का तदारुक न होने के बाइस 50, 60 साल बाद दुनिया में ईसाई अक़ल्लियत में रह जाएंगे और कुर्रहये अर्ज़ पर 60 से 65 फ़ीसद आबादी मुसलमानों की होगी जो अपनी मुसलसल बढ़ा रहे हैं। ख़ुद यूरपी मुमालिक में कई बड़े बड़े शहरों में मुस्लिम आबादी 50 फ़ीसद के लगभग आ जाएगी। इस सूरते हाल में मग़रिबी ताक़तों ने अपने यहां अफ़ज़ाइशे नस्ल से ज़्यादा तवज्जो मुस्लिम दुनिया की नस्ल कशी पर देना शुरू कर दी है। पाकिस्तान को इस मक़्सद के लिये पहला हदुफ़ इसलिये बनाया गया है कि यह मुस्लिम दुनिया में आबादी के लिहाज़ से तीन बड़े मुल्कों में से एक है। फिर यहां की आबादी अपनी इस्लाम पसंदी, उलमा व मदारिस की कसरत और जिहादी पसमंज़र की वजह से पहले ही मग़रिब का ख़ास हिदुफ़ है। इसके अलावा यहां मग़रिब के मददगार क़ादियानियों का मज़बूत नेटवर्क है। चुनांचे यहूदी लाबी इस मक़्सद के लिये मुतहर्रिक हो गई है। इसके लिये पाकिस्तान के क़ादियानी इसके

शरीक कार बन गए हैं। शहज़ाद जैसे हज़ारों लड़के और रूही जैसी हज़ारों लड़कियां उनके चुंगल में हैं। अपने एड्ज़ ज़दा जिस्मों के साथ वह तौअ़न व करहन उनके लिये काम कर रहे हैं।

शहज़ाद के बयान के मुताबिक़ कादियानी गिरोह एक बैरूनी खुफ़िया एजेंसी के इस तआवुन को पाकिस्तान के सिक्यूरिटी अहदाफ़ के ख़िलाफ़ भी इस्तेमाल कर रहा है। जरासीम ज़दा लड़कियों का नेटवर्क मिलिट्री फ़ोर्सिज़ और दूसरे खुफ़िया इदारों के मुहिब्बे वतन अफ़राद तक फैलाने की कोशिशें पूरी सरगर्मी से जारी हैं जिनका नोटिस लेना ज़रूरी है।

मुझे यह हस्सास तरीन मालूमात देते हुए शहज़ाद ने वाज़ेह तौर पर आगाह किया कि उसे अपनी जान का ख़तरा लाहिक़ हो चुका है। क़ादियानियों ने उसे मिर्ज़ा पर ईमान लाने की पेशकश करके उसकी सोई हुई ईमानी ग़ैरत को झिंझोड़ दिया था। शहज़ाद ने उनकी पेशकश उनके मुंह पर दे मारी और इस गिरोह की जड़ों को खोद कर उनका कच्चा चिट्ठा सहाफ़ी बिरादरी तक पहुंचा दिया। शहज़ाद अपना काम कर चुका, अब उसका जो भी अंजाम हो वह भुगतने के लिये तैयार है। मैं अपना फ़र्ज़ समझते हुए यह हकाइक़ आप तक पहुंचा रहा हूं।

हम चीफ़ जस्टिस, चीफ़ आफ आर्मी स्टाफ़ और आई एस आई की सरबराह से बतौर ख़ास गुज़ारिश करते हैं कि इस बारे में तहक़ीक़ात करके पाकिस्तानियों की नस्ल कशी के इस ख़ौफ़नाक मंसूबे को नाकाम बनाएं। वर्ना मुस्तक़बिल में जहां आबादी से महरूम यूरप व अमरीका खुदकशी करेंगे वहां पाकिस्तान भी लक़ व दक़ सेहरा बन कर अपनी पहचान से महरूम हो जाएगा। अल्लाह तआला इस बुरे वक़्त से पहले हमें संभलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

कारिईन से गुज़ारिश है कि अख़्बारात और चैनलों पर आने वाले दोस्ती के इश्तिहारात पर नज़र रखें और उनके ख़तरात से अपने मुतअल्लिक़ा अहबाब को ख़बरदार करें।"

☆......☆......☆

शहज़ाद की यह कहानी मुझे मुल्क के एक मअ़रूफ़ लखारी और मुसन्निफ़ ने लिख कर भेजी कि आप के मौज़ूअ़ से तअल्लुक़ रखती है, इसे शाए कर दीजिये। मैंने उनसे इसरार किया कि मैं कहानी के अस्ल किर्दार और रावी से मिलना चाहता हूं। उन्होंने तलाश के बाद बताया कि वह राबते में नहीं है। भेस बदल कर मफ़रूरों जैसी ज़िंदगी गुज़ार रहा है। इस पर मैंने मुतालबा किया कि उसका अस्ल ख़त भेजा जाए। उन्होंने अस्ल ख़त रवाना कर दिया। मैंने बनज़रे ग़ाइर कई मर्तबा उसका मुतालआ किया और क़्याफ़ा शनासी के जो गुर आते थे उन्हें बरूये कार लाते हुए नक़्ले वासिल में फ़र्क़ और दासतान व ज़ेब दासतान में इम्तियाज़ की भरपूर कोशिश की। सच का पलड़ा भारी महसूस होता था......लेकिन मुबय्यना हक़ाइक़ व वाक़िआत इतने तहलका ख़ेज़ थे और बहुत से ऐसे चेहरों से पर्दा उठता कि ज़लज़ला आ जाता। ज़लज़ले लेके यह झटके इतने लुत्फ़ आवर और हौसला आज़मा होते कि उनका दिया हुआ झोला झूलने की पहले से तैयारी ज़रूरी क़रार पाती थी। लिहाज़ा बंदा ने यह ख़त लाहौर भेज दिया। वहां के कुछ अल्लाह वालों ने जब ख़त में निशानज़दा जगहों का गश्त किया तो उन्हें भी हक़ीक़त का शुब्हा, गुमान के अंदेशे पर ग़ालिब महसूस हुआ। इस पर मैंने यह फ़ैसला किया कि ख़ुद मौक़ए वारदात पर जाना चाहिये और जाए वक़ूआ पर पहुंच कर शवाहिद व क़राइन इकट्ठे करने चाहियें ताकि सनद रहें और बवक़्ते ज़रूरते काम आएं। कहानी की सच्चाई को ज़मीनी

हक़ाइक़ की कसौटी पर परखने का अमल भिड़ों के छत्ते में हाथ डालने के मुतरादिफ़ था......लेकिन इस्लाम और पाकिस्तान के ख़िलाफ़ मसरूफ़कार इन भिड़ों का डंक इसके बग़ैर निकालना भी मुम्किन न था लिहाज़ा बंदा ने अल्लाह का नाम लिया, रख़्ते सफ़र बांधा और लाहौर जा पहुंचा। शहर ज़िंदा दिलाने लाहौर में क्या कुछ बदतमीज़ियां हो रही थीं और कैसी कुछ बदतहज़ीबी का तूफ़ान बरपा किया गया था, यह दासतान अलमनाक भी है और तवज्जो तलब भी। अगर ईमान की रमक़ इंसान में बाक़ी हो और ग़ैरत की चिंगारी बिल्कुल बुझ न गई हो तो यह पढ़ने सुनने वाले को इस दासतान के मक्रूह किर्दारों के ख़िलाफ़ अपने हिस्से का काम करना चाहिये। यह हमारे ईमान व ग़ैरत का तक़ाज़ा भी है और हमारे तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा का मस्ला भी। मौक़ए वारदात पर क्या कुछ देखा? यह आको पूरी तरह समझ न आएगा जब तक आप इस गुमनाम नौजवान का ख़त न पढ़ लें। लिहाज़ा पहले यह ख़त मुलाहिज़ा फ़रमाइये फिर चंद मुसद्दिक़ा मुशाहिदाती इत्तिलाआत, जिनसे मालूम होता है कि वतने अज़ीज़ पर "दज्जाल के साए" फैलते चले जा रहे हैं। तारीकी के यह साए अहले वतन का इम्तिहान हैं और उनके ख़ातमे के लिये ख़ैर की दावत व इशाअत के ज़रीए नूरे हक़ की किरनें फैलाना हमारे लिये एक ज़बरदस्त चैलंज की हैसियत रखता है।

(जारी है)

दज्जाल के बेदाम गुलाम

फ़्री मैसनरी और क़ादियानियों की मिली भगत की रूदाद

एक भटके हुए नौजवान की इबरत आमूज़ आप बीती

(तीसरी क़िस्त)

"मेरी दोस्ती एक क़ादियानी से रही है। यह बग़ैर इल्म के दोस्ती थी यअ़नी इससे क़ब्ल मुझे इल्म नहीं था कि वह क़ादियानी है। यह दोस्ती एक रोज़नामा में शाए होने वाले दोस्ती के एक इश्तिहार के ज़रीए शुरू हुई। गुज़िश्ता दो साल की दोस्ती में उसकी जमाअत और खुद उसके ज़रीए से जो हक़ाइक़ मेरे सामने आए हैं वह होश गुम कर देने वाले हैं। इस रोज़नामे का पूरा क्लासिफ़ाइड सैक्शन क़ादियानी जमाअत इस्तेमाल कर रही है। इस सैक्शन में लड़कियों से दोस्ती के इश्तिहारात मुख़्तलिफ़ उन्वानात के तहत शाए होते हैं। (रोज़नामा "ख़बरें" 2005 ई० से लेकर अब तक के शुमारे देखें)

लड़कों से दोस्ती के यह तमाम इश्तिहारात क़ादियानी जमाअत और "आलमी फ़्री मैसनरी" के मक़ासिद की तकमील के लिये काम करने वाली मुशतर्का लाबी की जानिब से होते हैं जो अपनी ताक़त बढ़ाने के लिये शब व रोज़ कोशां है। इन इश्तिहारात के जवाब में जो ख़्वातीन मिलती हैं वह मुख़्तलिफ़ बीमारियों का शिकार होती हैं। यह बहुत ही आज़ाद ख़्याल ख़्वातीन बड़ी आसानी से आप की ख़्वाहिशात पूरी करने पर तैयार हो जाती हैं, क्योंकि इनकी बहुत बड़ी अक्सरियत एड्ज़ के आरिज़े में मुब्तला होती है। कुछ टी बी का आरिज़े में मुब्तला होती हैं। इनके साथ बोस व किनार करने वाला

भी बहुत से अवारिज़ में मुब्तला हो जाता है। क़ादियानिों की यह दानिस्ता कोशिश है कि लाहौर और उसके गिर्द व नवाह में लोगों की बहुत बड़ी तादाद को मुख़्तलिफ़ बीमारियों में मुब्तला करके हलाक कर दिया जाए और साथ ही साथ इर्तिदादी मुहिम के ज़रीए अपने लोगों की तादाद में इज़ाफ़ा किया जाए। मैं ऐसी चंद ख़्वातीन से टकरा चुका हूं। मैं जो इन्किशाफ़ात करने जा रहा हूं उनमें से बहुत सी मालूमात का ज़रीआ ख़्वातीन भी हैं। दोस्ती इश्तिहार के ज़रीए मिलने वाली एक ख़ातून से मुझे काफ़ी मालूमात मिली हैं। जो सब से अहम इंकिशाफ़ हुआ वह यह था कि क़ादियानियों का गिरोह एड्ज़ की मरीज़ाओं के ज़रीए पाकिस्तान ख़ुसूसन लाहौर के शहरियों में एड्ज़ का वाइरस फैला रहा है। एड्ज़ की इन मरीज़ाओं को मुख़्तलिफ़ एन जी ओज़ और ख़ुसूसी ज़राए से इकट्ठा किया गया है। इस कार्रवाई का मक़्सद इंतिहा पसंदों की आने वाली नस्लों तक बर्बाद कर देना है। इन लोगों के पास एड्ज़ और दीगर अमराज़ में मुब्तला मर्द और ख़्वातीन रज़ाकारों की बड़ी तादाद मौजूद है। मुम्किना तौर पर इन ख़्वातीन में से कुछ भारत से भी तअल्लुक़ रखती हैं। इन ख़्वातीन को माल व दौलत के लालच और उनके बच्चों को आला तालीम के बहाने क़ब्ज़े में लेकर ब्लैक मैल किया जाता है। इस मंसूबे में कुछ बैरूनी कुव्वतें भी इस गुरूप की भरपूर मुआविन हैं यअ़नी इस मंसूबे में "रा", "सी आई ए", "मूसाद" और यहूदी व क़ादियानी लाबी पार्टनर हैं और यह लोग लाहौर में "ग्रास रूट लैवल" पर काम कर रहे हैं। इनकी भरपूर कोशिश है कि हमारे मुल्क ख़ुसूसन पंजाब के क़हबा ख़ानों में मौजूद ख़्वातीन को एड्ज़ के आरिज़े में मुब्तला रज़ाकारों के ज़रीए इसी आरिज़े में मुब्तला कर दिया जाए, ताकि यह ख़्वातीन एक कैरियर बन बर आगे

यह आरिज़ा फैलाएं। इन ख़्वातीन के पास जाने वाले लोग भी इस मर्ज़ में मुब्तला हो जाएं और अपनी ज़ाइज़ व हलाल बीवियों और आने वाली मासूम नस्लों को भी ज़हर आलूद करें। इस तरह आने वाले बरसों में बेशुमार लोग मुतअस्सिर होंगे और इन बीमारियों की दस्तियाबी अदविया को बेच कर क़ादियानी जमाअत बेहिसाब मुनाफ़ा कमाएगी। इसका मक़्सद आने वाले बरसों में सरमाए और बायोलोजिकल लड़ाई के ज़रीए लाहौर और उसके गर्द व नवाह में इस्राईल की तर्ज़ पर एक क़ादियानी रियासत की दाग़ बैल डालना है।

आप देखेंगे कि आने वाले वक़्त में एड्ज़ के मरीज़ों की तादाद में बहुत तेज़ी से इज़ाफ़ा होगा। अव्वल तो एड्ज़ के तशख़ीसी मराकिज़ की तादाद ख़ासी कम है और जो हैं उन पर इस लाबी का कंट्रोल है। यह लोग लीबारेट्री अलअईज़ा टेस्ट करवाने वाले लोगों को नेगेटिव रिपोर्ट देते हैं, ताकि तवील अर्से तक लाहौर में किसी को भी एड्ज़ की तबाहकारियों का अंदाज़ा न हो सके।

एड्ज़ के अलावा हेपाटाइटिस को भी पूरी ताक़त से फैलाया जा रहा है। सिर्फ़ मुशर्रफ़ दौर में जबकि इन वतन दुशमनों को फलने फूलने के ख़ूब ज़राए मयस्सर थे, लाखों लोग हेपाटाइटिस सी में मुब्तला हुए जबकि इससे क़ब्ल यह आरिज़ा बहुत ही कम पाया जाता था। याद रहे कि "हेपाटाइटिस सी" सिर्फ़ ख़ून के इंतिक़ाल से फैलता है और इसके बारे में यह तास्सुर कि गंदे पानी से फैलता है, दुरुस्त नहीं। जिगर के किसी भी माहिर डाक्टर से मिलें या इंटरनेट पर हेपाटाइटिस सी की वजूहात को जाना जाए तो यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि हेपाटाइटिस सी लाहिक़ होने का गंदे पानी के साथ कोई तअल्लुक़ नहीं है। गंदे पानी का तअल्लुक़ सिर्फ़

हेपाटाइटिस ए यअ़नी पहले यरक़ान से है। आज पाकिस्तान में करोड़ों लोग (कम व बेश एक तिहाई आबादी) हेपाटाइटिस में मुब्तला हैं और इनमें से 99.99 फ़ीसद लोग इंतिक़ाले ख़ून के मरहले से कभी नहीं गुज़रे। इनमें से बेशुमार लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी नाक, कान नहीं छिदवाए और न ही कभी दांतों का इलाज करवाया है, लेकिन इसके बावजूद यह हेपाटाइटिस सी में मुब्तला हो चुके हैं। अम्राज़े जिगर के हर माहिर के लिये यह अम्र बाइसे हैरत होगा कि लोगों की इतनी बड़ी तादाद मुसलसल हेपाटाइटिस सी में किस तरह मुब्तला हो रही है? तो इसकी हक़ीक़त यह है कि मुशर्रफ़ दौर में क़ादियानियों के तआवुन से पाकिस्तान के तूल व अर्ज़ में हेपाटाइटिस के ख़ून से आलूदा करोड़ों सुरनजें फैलाई गईं। ख़ुसूसन सरकारी हस्पतालों में दी जाने वाली सरन्जूं में से मख़्सूस तनासुब की सरन्जीं जरासीम आलूद होती थीं और यह सिलसिला शायद अब तक जारी हो। साथ ही साथ मुनज़्ज़म तरीक़े से प्रोपेगन्डा भी किया गया कि हेपाटाइटिस सी गंदे पानी की वजह से लाहिक़ होता है। उनका टारगेट यह है कि आइंदा दस पंद्रह बरस के दौरान पाकिस्तान के कम व बेश तमाम शहरों को हेपाटाइटिस की किसी न किसी क़िस्म या एड्ज़ में ज़रूर मुब्तला कर दिया जाए और साथ ही दवाएं और मिनरल वाटर बेच कर बेहिसाब मुनाफ़ा कमाया जाए।

एक सवाल यह है कि इतनी सुरंजों को आलूदा बनाने के लिये ख़ून कहां से आता है? क़ादियानी जमाअत इसके लिये दो तरीक़े इस्तेमाल कर रही है। पहला तरीक़ा तो यह है कि लाहौर के पागल ख़ाने में मौजूद ज़्यादा पागलों को मुख़्तलिफ़ बीमारियों में मुब्तला करने के बाद उनके जिस्म से ख़ून से हासिल किया जाता है। दूसरा तरीक़ा यह है कि जेल में मौजूद मुंतख़ब क़ैदियों को एड्ज़ में मुब्तला

किया जाता है। ऐसा करने से क़ब्ल इन कैदियों का बेक ग्राउंड और नफ़सियाती कैफ़ियत अच्छी तरह जांच ली जाती है। इस मक़सद के लिये बहुत ही मन्फ़ी और लादीन ज़हनियत रखने वाले अफ़राद का इंतिख़ाब किया जाता है। कोशिश की जाती है कि उनकी बेराहवरी का सबूत भी हासिल कर लिया जाए। हाल ही में लाहौर के क़ैदियों का चीफ़ जस्टिस के हुक्म पर तिब्बी मुआयिना किया गया तो उनमें से 146 एड्ज़ के मरीज़ निकले हैं लेकिन यह कहानी का सिर्फ़ एक हिस्सा है। हुआ यह कि चीफ़ जस्टिस एक मंसूबे के तहत, यह इत्तिला दी गई कि लाहौर में कैदियों पर ज़ुल्म हो रहा है और उनका तिब्बी मुआयिना नहीं किया जा रहा है। जब चीफ़ जस्टिस के हुक्म पर यह तिब्बी मुआयिना किया गया तो मरीज़ों का इंकिशाफ़ हुआ। अब एड्ज़ के यह मरीज़ आहिस्ता आहिस्ता रिहा होंगे और साल छः महीने के बाद उनको हर कोई भूल जाएगा। इसके बाद उनसे राबता करने के बाद क़ादियानियों और इस्राईलियों के लिये काम करने की आफ़र की जाएगी। इन लोगों की मन्फ़ी ज़हनियत की पहले ही तसदीक़ कर ली गई है। लिहाज़ा इन एड्ज़ के मरीज़ों के राज़ी होने में कोई शुब्हा नहीं। ऐसे रज़ाकरों से पंजाब के मुख़्तलिफ़ क़हबा ख़ानों में मौजूद ख़्वातीन को एड्ज़ ज़दा करने का काम लिये जाने का मंसूबा है, ताकि यह ख़्वातीन एक chain की सूरत इख़्तियार करके अपने गाहकों और उनके गाहक आगे अपने बीवी बच्चों को एड्ज़ ज़दा कर देंगे। इस तरीक़े से लाखों लोगों को बीमारियों में मुब्तला करने की साज़िश की जा रही है और यह सिलसिला कई बरसों से जारी है। ऐसे क़िस्म के एड्ज़ ज़दा रज़ाकारों को एड्ज़ फैलाने के लिये बाक़ाएदा टारगेट दिये जाते हैं जिनकी तकमील पर बहुत ख़तीर इन्आमात दिये जाते हैं। इस सूरते हाल में चीफ़ को एक

मंसूबे के तहत इस्तेमाल किया गया है ताकि एड्ज़ के मरीज़ों को उनके मर्ज़ से आगाह करने का जवाज़ पैदा हो सके और मरीज़ों को शुब्हा भी न हो।

यह वह Biological War है जो यहूदियत के लिये काम करने वाले क़ादियानियों ने पाकिस्तान पर मुसल्लत की है। इस तरीक़े से करोड़ों लोगों को हेपाटाइटिस और एड्ज़ में मुब्तला करके मौत की जानिब गामज़न कर दिया गया है। इंसानी तारीख़ का यह सबसे बड़ा अलमिया है शायद कश्मीर और फ़लस्तीन से भी बड़ा लेकिन इसका किसी को एहसास तक नहीं है। उल्टा इसके बावजूद मुसलमानों को दहशतगर्द समझा जाता है।

बायोलोजिकल लड़ाई का यह सिलसिला सिर्फ़ पाकिस्तान तक महदूद नहीं है, बल्कि यहूदियों और क़ादियानियों की बाहमी मिली भगत से चीन और इंडोनेशिया तक फैला हुआ है। बदनाम ज़माना यहूदी तन्ज़ीमें पाकिस्तान पर पांव फैलाने के लिये क़ादियानियों की मदद कर रही हैं तो क़ादियानी चीन में बीमारियां फैलाने के लिये अफ़रादी कुव्वत मुहय्या कर रहे हैं। इसका बड़ा मक़्सद मुस्तक़बिल में चीन की इक़्तिसादी तरक़्क़ी को मुतअस्सिर करना है। इंडोनेशिया में भी इस क़िस्म का सिलसिला शुरू किया गया है। इस मक़्सद के लिये इंडोनेशिया की क़ादियानी कम्यूनिटी को इस्तेमाल किया जा रहा है।

इस बायोलोजिकल जंग लड़ाई के दूसरे तरीक़े में अपने टारगेट को जूस में मिला कर हल्का ज़हर नुमा महलूल दिया जाता है। जूस में मिलाए जाने वाले इस बायोलोजिकल मैटरियल की खुसूसियत यह है कि यह जिगर को शदीद तौर पर मुतअस्सिर करता है, लेकिन फ़ौरी तौर पर इंसान का खुद कार दिफ़ाई निज़ाम हरकत में आता है

और मुतअस्सिरा जिगर के गिर्द चर्बी की तह जम जाती है जो जिगर को बिखरने नहीं देती यअ़नी जिगर चर्बी ज़दा हो जाता है। अगर्चे इस तरीक़े से इंसान फ़ौरी तौर पर नहीं मरता लेकिन उसकी ज़िंदगी का दौरानिया कम हो जाता है। हमारे मुल्क के एक मअ़रूफ़ क़ानून दान इसकी वाज़ेह मिसाल हैं। जिन्हें दौराने क़ैद इसका निशाना बनाकर मअ़ज़ूर बना दिया गया है। यह लोग न सिर्फ़ यह अवारिज़ फैलाते हैं बल्कि उनकी अदविया बेच कर बेहिसाब मुनाफ़ा कमा चुके हैं। इस लाबी के ऐजंटों में इस वक़्त ब्रैन हेम्रेज का सबब बनने वाली अदविया बहुत मक़्बूल हैं। उन्हें उमूमन हाई प्रोफ़ाइल टारगेट्स के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जाता है। यह दवा इंसान की शिर्यानों को हलाक कर देती है जिससे ब्रैन हेम्रेज या हार्ट अटैक का सामना करना पड़ता है।

मुआशरे से आज़ाद ख़्याल लोगों को छांटने के लिये पूरे शहर में जगह जगह ऐसे जूस कार्नर क़ाइम किये जा रहे हैं जहां जोड़ों को मिल बैठने का मौक़ा दिया जाता है। यहां पर ऐसे लोगों पर ख़ास तौर पर नज़र रखी जाती है और निस्बतन ज़्यादा आज़ाद ख़्याल लोगों को ट्रेप किया जाता है। इन लोगों को जूस में मुख़्तलिफ़ मुज़िर्रे सिहत अशया डाल कर ज़ह्नी मअ़ज़ूर और बीमार बनाया जाता है। इसका मुहर्रिक यह है कि मुतवस्सित तब्क़े से तअ़ल्लुक़ रखने वाला आज़ाद ख़्याल शख़्स जब शदीद बीमार हो जाता है तो फिर उसकी ज़िंदगी का मक़्सद सिर्फ़ यह होता है कि मरने से क़ब्ल ज़्यादा से ज़्यादा दौलत हासिल करके अपने प्यारों की ज़िंदगी को तहफ़्फ़ुज़ दिया जाए। ऐसा शख़्स दुरुस्त या ग़लत की पहचान को भुला कर दौलत की ख़ातिर बड़े से बड़ा रिस्क लेने के लिये तैयार हो जाता है और जब कोई शख़्स इस स्टेज पर पहुंच जाता है तो फिर वह फ़्री मैसन्री

और उनके बेदाम गुलाम क़ादियानियों के लिये काम का आदमी क़रार पाता है। ऐसे तैयार लोगों से हीरोइन स्मगलिंग, क़बाइली इलाक़ों में जासूसी और बीमारियां फैलाने के पुर ख़तर काम लिये जाते हैं। हीले बहानों से ऐसे लोगों के बच्चे भी क़ब्ज़े में ले लिये जाते हैं जिसके बाद ऐसा शख़्स मुज़ाहमत के बिल्कुल भी क़ाबिल नहीं रहता और साथ ही साथ क़ादियानियों की वफ़ादार और बज़ाहिर मुसलमान एक नई नस्ल तैयार की जा रही है। यह हक़ीक़त है कि यह लाबी अपनी ज़्यादातर ऐजंटों को बीमार करने के बाद इस्तेमाल करती है और यह मुआहिदा तमाम ज़िंदगी पर मुहीत होता है। अपने एजंडों को बीमार करने के पसमंज़र में यह सोच कारफ़रमा है कि बहुत ज़्यादा बूढ़ा आदमी मज़हब की जानिब राग़िब होकर सुधर सकता है, वैसे भी बूढ़ा आदमी ज़्यादा काम का नहीं रहता। इसलिये यह संगदिल लोग अपने लोगों का लाइफ़ परेड कम कर देते हैं।

इन लोगों को दुनिया का जदीद तरीन टेली कम्यूनीकेशन निज़ाम मुहय्या किया गया है। आप को यह जान कर बिल्कुल हैरत नहीं होनी चाहिये कि पाकिस्तान में किसी भी शख़्स का फ़ोन इन लोगों की पहुंच से बाहर नहीं है और रौशन ख़्यालों और इंतिहा पसंदों को छांटने का यह भी एक तरीक़ा है। GPS के ज़रीए मज़कूरा फ़र्द की लोकेशन भी मालूम की जा सकती है। इन आलात का ग़लत इस्तेमाल भी ज़ोरों पर है। यह लोग इन्सिदादे मंशियात के आला अहलिकारों के फ़ोन टेप करते हैं। जिससे उन्हें मंशियात की असम्बलिंग में आसानी रहती है।

अब आते हैं लड़कियों से दोस्ती के इश्तिहारात की जानिब। होता यह है कि लड़कियों से दोस्ती के इश्तिहारात से राबता करने के बाद मिलने वाली लड़की अपनी मर्ज़ी के जूस कार्नर या रेस्टोरेंट

लेकर जाती है। कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता कि यह जूस कार्नर रेस्टोरेंट खुद उन लोगों की ही मिलकियत होता है। मुझे मिलने वाली ख़्वातीन मुझे नहर के किनारे "हसन जूस कार्नर" नज़्दलाल पुल लाहौर लेकर गईं। होता यह है कि जो जूस लड़की के सामने रखा जाता है वह बिल्कुल ठीक होता है लेकिन जो जूस आपके सामने रखा जाता है उसमें हल्का ज़हर मिला होता है। यह आहिस्ता आहिस्ता इंसानी ज़ह्न को मअ्ज़ूर और इंसानी जिस्म को मफ्लूज करता है। उनका ख़ास अड्डा है। "हसन जूस कार्नर" के अलावा मुझे जी टी रोड नज़्द शालामार पर वाक़ेअ् सिद्दीक़ी क्लीनिक पर भी मुतअद्दद मर्तबा ले जाया गया। क़ादियानियों की एक एन जी ओ का दफ़्तर 40 डी माडल टाऊन में भी क़ाइम है। अगर क़ानून नाफ़िज़ करने वाले इदारे सिर्फ़ सिद्दीक़ी क्लीनिक, हसन जूस कार्नर और 40-D पर अपनी तवज्जो मब्ज़ूल कर लें तो उन्हें सबूत मिल जाएंगे। जिन क़हबा ख़ानों का मैंने ज़िक्र किया, इनमें से एक के बारे में जानता हूं। यह लाहौर के लियाक़त आबाद के इलाक़े में गंदे नाले के क़रीब वाक़ेअ् है। यहां घरों के नम्बर वाज़ेह नहीं हैं। यह सालार स्ट्रीट के दर्मियान एक गली नम्बर 21 है। इसे क़ाएदे आज़म स्ट्रीट भी कहा जाता है। यह पहले आने वाला घर नुक्कड़ का है। इसका गेट छोटा सा सब्ज़ रंग का है। यहां रहने वाले किराए या गिरवी पर आबाद हैं। इन्हें उस इलाक़े में कोई नहीं जानता और यह क़ादियानियों के एड्ज़ मिशन पर हैं।

कभी रोज़नामा "ख़बरें" का क्लासीफ़ाइड देखें। उसमें तबदीली नाम और वलदियत के बहुत से इश्तिहारात मौजूद होते हैं। यह दरअसल दूसरे लोगों की अस्नाद को इस्तेमाल काने का मंसूबा है। (2005 ई० से अब तक के अख़्बारात ज़रूर देखें)। क्या किसी और

अख़्बार में तबदीली नाम और वलदियत के इस क़दर इश्तिहारात देखे गए हैं? मुशर्रफ़ दौर में बोर्ड के सेक्रेट्री उनके गुलाम थे। जिस शख़्स को सनद दिलवाना होती है, कम्पयूटर पर उसकी वलदियत से मिलती जुलती वलदियत को सर्च किया जाता है। बअ़द अज़ां नाम को इश्तिहार शाए करके तबदील करवा लिया जाता है। इस तरीक़े से लोगों के नामालूम गिरोह (मुम्किना तौर पर क़ादियानी) कोड प्लीकेट अस्नाद की बहुत बड़ी तादाद जारी की और मुलाज़मतें दिलवाई जाती रही हैं। ऐसे लोगों की बहुत बड़ी तादाद को पुलिस में कांस्टेबल भरती करवाया गया है, ताकि हर इलाक़े में मौजूद अपने क़हबा ख़ानों, जूस कार्नर्ज़ की मदद और इंतिहा पसंदों की निशानदही की जा सके। ऐसे लोग अपने नाम और वलदियत से बज़ाहिर मुसलमान ही लगते हैं, कोई उन पर शक का तसव्वुर भी नहीं कर सकता।

इसी क्लासीफ़ाइ सेक्शन में आप को क़र्ज़ा मुहय्या करने वाले बहुत से इदारों से इश्तिहारात मिलेंगे। यह भी मआशी तौर पर मजबूर लोगों को इस्तेमाल करने की कोशिश है, हालांकि क़ानूनन इस किस्म के इश्तिहारात मम्नूअ़ हैं। इन लोगों के पास बेशुमार शनाख़्ती दस्तावेज़ात मौजूद होती हैं जिन्हें बवक़्ते ज़रूरत इस्तेमाल किया जाता है।

इसी रोज़नामा में ज़रूरते रिशता के मख़्सूस इश्तिहारात भी ज़रा ग़ौर से देखें। ख़ास तौर पर "फ़ारन नेशनलिटी" के हामिल इश्तिहारात। 2005 ई0 से 2008 ई0 तक ज़रूरते रिशता का एक ही इश्तिहार शाए होता रहा। इस इश्तिहार की आड़ में बहुत सी मज़मूम सरगर्मियां जारी हैं। अब भी कभी कभार यह इश्तिहार शाए होता रहता है। मुझे भी मुतअद्दद मर्तबा यूरोपियन मुमालिक की सैर और उम्रे पर ले जाने की पेशकश की गई थी जिसे मैंने मुस्तरद कर दिया

था।

मुसलमानों को तबाह करने की लड़ाई के तीसरे मरहले में यह लोग सरकारी हस्पतालों पर मुकम्मल कंट्रोल हासिल करना चाहते हैं। बहुत से सरकारी हस्पताल काफ़ी हद तक उनके कंट्रोल में हैं भी। ख़ास तौर पर शालामार हस्पताल, जनरल हस्पताल, शैख़ ज़ाइद हस्पताल वग़ैरा। अलमिया यह यह है कि यह कंट्रोल निचले लेवल पर है। हुकूमत ज़्यादा से ज़्यादा एम एस या प्रिंसिपल को तबदील करती है जिससे कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता। बअ़ज़ हस्पतालों में इलाज के नाम पर भी लोगों को निशाना बनाया जाता है। टारगेट को पहले बीमार या ज़ख़्मी किया जाता है और बअ़द में इलाज के नाम पर पार कर दिया जाता है। मैं इस क़िस्म के एक क़िस्से से आगाह हूं जो शालामार हस्पताल में हुआ। मुख़्तलिफ़ जरासीम को हासिल करने का सबसे बड़ा ज़रीआ शालामार हस्पताल है। जहां लाहौर के तमाम हस्पताल से वेस्ट (Waste) को इंसीनी रेड में जलाने के लिये लाया जाता है। जलाने से क़ब्ल इस वेस्ट में से मुख़्तलिफ़ बीमारियों के जरासीम जदीद टेक्नोलोजी के ज़रीए हासिल कर लिये जाते हैं। इस वक़्त शालामार हस्पताल का चीफ़ ऐक्ज़ीक्यूटिव भी क़ादियानी है। यह बात भी मद्दे नज़र रखें कि मुख़्तलिफ़ हीले बहानों से अमरीकी डाक्टरों की सबसे ज़्यादा आमद शालामार हस्पताल में ही है। किसी भी दूसरे सरकारी या ग़ैर सरकारी हस्पताल में अमरीकियों या ग़ैर मुल्कियों की इस क़दर ज़्यादा आमद को कोई सुराग़ दूर दूर तक नहीं मिलता। यह डाक्टर्ज़ पाकिस्तानियों के ख़िलाफ़ बायोलोजिकल लड़ाई में मदद देने के लिये आते हैं। पंजाब मेडीकल कालिज से क़ादियानी डाक्टरों के इख़्राज के बाद शालामार हस्पताल में मेडीकल कालिज क़ाइम किया जा रहा है,

ताकि कसाब नुमा क़ादियानी या बज़ाहिर मुसलमान नुमा क़ादियानी डाक्टर वाफ़िर मिक़्दार में तैयार किये जा सकें। इस मेडीकल कालिज का प्रोजेक्ट डायरेक्टर भी क़ादियानी है।

यह लोग पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ तालीमी इदारों पर भी क़ब्ज़ा करने की कोशिश करते रहे हैं। इनमें से एक कोशिश एक तलबा तंज़ीम के ज़रीए पंजाब यूनीवर्सिटी पर क़ब्ज़ करने की थी जिसे जमइयत ने नाकाम बना दिया था। इसी तरह सी आई ए और क़ादियानियों की कोशिश है कि पुलिस ट्रेनिंग स्कूलों में भी अपने अफ़राद दाख़िल किये जाएं। उनका ख़्याल है कि मुल्क पर कंट्रोल हासिल करने के लिये बड़े तालीमी और तरबियती मराकिज़ पर कंट्रोल होना ज़रूरी है।

चूंकि मैं अपनी ही क़ौम और वतन के ख़िलाफ़ इस ख़ौफ़नाक लड़ाई का हिस्सा नहीं बनना चाहता, इसलिये उन लोगों के ख़्याल में, मैं इंतिहा पसंद हूं। मैंने मुतअद्दद नुक़्सानात बर्दाश्त किये हैं लेकिन मुतअद्दद मर्तबा आफ़र के बावजूद क़ादियानियत क़बूल करने से इंकार कर दिया और ऐसा कभी नहीं करूंगा। इसकी पादाश में मुझे मुतअद्दद मर्तबा ख़त्म करने की कोशिश की गई। इस मक़्सद के लिये बहुत बेज़रर तरीक़े इख़्तियार करने की कोशिश की जाती है। कभी साबिक़ा दुशमनी की आड़ में किसी शख़्स को ख़त्म कर दिया जाता है और कभी किसी को हादसे में पार कर दिया जाता है। मैं खुद इन हर्बों का सामना कर चुका हूं और मेरा ज़िंदा रहना इस बात की निशानी है कि अल्लाह तआला अभी आसामान पर मौजूद है। यह लोग मीठे ज़हर की तरह पाकिस्तान के रग व पै में उतर रहे हैं। यह पाकिस्तान को अपने क़ब्ज़ा में लेना चाहते हैं और यह सोचने का तकल्लुफ़ हरगिज़ मत कीजियेगा कि यह सब कुछ नहीं हो रहा।

जो कौम जंग जीतने के लिये हंसते बस्ते शहरों पर ऐटम बम गिरा सकती है, वह पाकिस्तान में जंग जीतने के लिये किसी हद तक भी जा सकती है। बराक ओबामा को तबदीली की अलामत कहा जाता है। मैंने एक पाकिस्तानी नहीं, बल्कि बैनुल अक़्वामी मुआशरे के दर्दमंद फ़र्द की हैसियत से उन्हें ख़त लिखा है जिस में उनसे अपील की गई है कि बेगुनाह पाकिस्तानियों की बदतरीन नस्लकशी को रोकें।

सरदस्ते मंज़र पर आना मक़्सूदक नहीं इसलिये नाम का दूसरा हरफ़ मुकम्मल नहीं लिख रहा हूं, लेकिन अगर मुझे मारा गया तो उसके ज़िम्मेदार पाकिस्तान के क़ादियानी होंगे, और मेरी शनाख़्त और मज़ीद अहम तफ़सीलात मंज़रे आम पर ज़रूर आएंगी।"

यासरअ़, लाहौर

☆......☆......☆

दुआ और दवाः

तो यह है जनाब! एक बेराह और नौजवान की आप बीती। वह जब नफ़्स परस्ती की बेआब व गयाह वादियों में भटकते भटकते तंग आ गया तो उसके अंदर मौजूद नेक फ़ित्रत ने उसे मजबूर किया कि वह इन लोगों को बेनक़ाब करके अपनी लग़ज़िशों का किसी हद तक कफ़्फ़ारा दे जो वतने अज़ीज़ को मुहलिक बीमारियों और मूज़ी जरासीम का तोहफ़ा देकर उसकी बुन्यादों को खोखला कर रहे हैं।

राक़िमुल हुरूफ़ ने जब यह ख़त लाहौर के बअ़ज़ अहबाब को भेजा तो उन्होंने तसदीक़ की कि मुतज़क्करा जगहें वाक़ई मशकूक और तोहमत ज़दा मालूम होती हैं। इतना क़रीना मिलने के बाद मौक़ए वारदात का मुशाहिदा ज़रूरी ठहरा। ख़त में जो इन्किशाफ़ात

किये गए थे, उनमें से अक्सर तहक़ीक़ के बाद दुरुस्त निकले, इससे अंदाज़ा होता है कि बक़िया बातें भी जिन तक हमारी रसाई न हो सकी, किसी ख़बती दीवाने की बढ़िया शोहरत के ख़्वाहिशमंद तवज्जो से महरूम बेरोज़गार नौजवान के मन घड़त ख़्यालात नहीं, यह भी दुरुस्त ही होंगी। तहक़ीक़ की इब्तिदा जब हुई तो रमज़ान का महीना था। मुतज़क्करा क्लीनिक में ऐन रमज़ान के दिन एक जाहिल क़स्साब नुमा डाक्टर साहब नशे की हालत में बैठे हुए थे। यह जगह दुखी इंसानों की इलाज गाह न थी, मअ़सूम बच्चों की क़त्लगाह थी। जब किसी नौजवान लड़के या लड़की से ग़लती सरज़द हो जाती थी तो उसका निशान मिटाने और मासूम जान को अज़ क़त्ल पैदाइश ज़िंदा दरगो करने के लिये यहां मौजूद जाहिल क़स्साबों की ख़िदमात हासिल करता था। यह क्लीनिक मैटरनिटी होम के नाम से क़ाइम किया गया था। क्लीनिक क्या था, एक दुकान थी जिसे इस शैतानी काम के लिये दरकार मख़्सूस सहूलतों से आरास्ता कर दिया गया था। मालूम हुआ कि लाहौर के टिम्पल रोड पर "सफ़िया क्लीनिक" में शादी से क़ब्ल साहिबे औलाद हो जाने वाले जोड़ों के लिये पेश किये जाने वाली मख़्सूस ख़िदमात यह क्लीनिक भी पेश करता है। वह बेराहरू जो गुनाह से तौबा के बजाए एक नया गुनाह करने के लिये पुरअज़्म हों उनके लिये यहां हर तरह की सहूलतें सस्ते दामों में दस्तियाब हैं। हमारे अहबाब क्लीनिक के सामने गाड़ी में यूं बैठे रहे कि क्लीनिक के अंदर का माहौल नज़र आता रहे और एक साथी फ़र्ज़ी गुनहगार बन कर मिसकीन सूरत और आजिज़ाना गुफ़्तगू के साथ अपनी ग़ुर्बत का रोना रोते हुए अंदर बैठे जाहिल कसाई के साथ पैसे कम करवाने के लिये हुज्जत करता रहा। आख़िरी इत्तिला के मुताबिक़ उस कसाबख़ाने का शटर अक्सर आधा गिरा हुआ रहता

है। मसरूफ़कार अफ़राद या गिरोह मुहतात हो गया है और आने वाले को पहलवान पूरा में रज़्ज़ाक़ स्टोर के साथ वाक़ेअ़ लेडीज़ क्लीनिक जाने की तरग़ीब दी जाती है। अब नहीं मालूम कि मुतज़क्करा दो क्लीनिक भी इस खुफ़िया मिशन से वाबस्ता हैं या अपने तौर से बदआमालियों के इस गोरख धंधे में मुलव्विस हो गए हैं?

सिद्दीक़ी क्लीनिक के बाद गश्त की अगली मंज़िल "हसन जूस कार्नर" था। इसका नाम पहले "रहमान जूस कार्नर" था। फिर बदल कर "हसन जूस कार्नर" रख दिया गया। नाम जितने खूबसूरत हैं, फंदा इतना ही ख़तरनाक है। इसमें आप दाख़िल हों तो बज़ाहिर जूस और उसके लवाज़िमात चाट, बरगर वग़ैरा दिखाई देंगे......लेकिन दरहक़ीक़त यह नौजवान नस्ल को नाजाइज़ तन्हाइयां मुहय्या करने का अड्डा रहा है। इसकी दूसरी मंज़िल पर तक़रीबन दस कैबिन बने हुए हैं। इन कैबिनों के नीम तारीक माहौल में शैतानी अठखेलियां इफ़्फ़त व हया के दामन को तार तार करती हैं। यहां के बैरे मख़्सूस अंदाज़ से तरबियत याफ़्ता होते हैं और किसी कि तन्हाई में मुख़िल नहीं होते। यहां पेश किया जाने वाला जूस और दीगर लवाज़िमत घटिया होने के बावजूद महंगे होते हैं क्योंकि असल क़ीमत तो हराम ख़लवतों का इवज़ होती है। आख़िरी इत्तिला के मुताबिक़ "हसन जूस कार्नर" वाले भी मुहतात हो गए हैं और अब यह धंधा "शालामार हस्पताल" के सामने चाहत जूस कार्नर, गढ़ी शाहों में "क्वीन मैरी कालिज" से पहले शोरदम के साथ वाक़ेअ़ जूस कार्नर और धरमपूरा के एक बेसमैंट में चल रहा है जहां हमारी क़ौम के नौ निहाल घरों से तालीम के लिये निकलते हैं लेकिन फ़िल्मों और मोबाइलों की फ़ित्नए परवर शैतानी तरग़ीबात से मुतअस्सिर होकर

इन शैतानी घरों में तारीखें लगवाने पहुंच जाते हैं। इस मैदान में नीरंग कैफ़े, ग्लूरिय जीन और एस्परेसू जैसे मग़रिबी अंदाज़ के जदीद मराकिज़ भी कूद पड़े हैं और हुक्मरानों के नाक तले शह्वत गर्दी के यह अड्डे दज्जाली मिशन के फ़रोग़ में मसरूफ़ हैं। अब यह तो नहीं कहा जा सकता कि इस तरह के सब के सब जूस कार्नर और रेस्टोरेंट किसी खुफ़िया हाथ के इशारे पर चल रहे हैं। ऐन मुम्किन है कि बअ़ज़ नादान ज़्यादा आमदनी के लालच में मशरूबात के हलाल कारोबार में हराम तन्हाइयों की आमेज़िश करते हों, लेकिन इतनी बात ज़रूर है कि नौजवान नस्ल की इफ़्फ़त व इस्मत का गला यहीं घुटता है और उनका रौशन मुस्तक़बिल यहां की नीम तारीक फ़ज़ा में मुकम्मल तारीक अंधेरियों में दफ़्न होता है। इंटरनेट कैफ़े से शुरू होने वाली नाजाइज़ दोस्तियां यहां परवान चढ़ती हैं और हया व पाकदामनी को लेरा लेरा करके अपने पीछे ईमानी जज़्बात से महरूम खोखले जिस्म, जो सिला से आरी मफ़लूज दिमाग़ और उक़ाबों के नशेमन में उजड़ी वीरान ज़िंदगियां छोड़ जाती हैं। दुहाई है कि मेरी क़ौम के मुहाफ़िज़ सो रहे हैं और डाकू खुले फिर रहे हैं।

गुमनाम नौज़वान के इस ख़त में एक मुअस्सिर अख़्बार के हवाले से जिन इश्तिहारी क़ल्मी दोस्तियों का ज़िक्र किया गया था उनकी तो तहक़ीक़ की भी ज़रूरत नहीं। आप आज ही का ख़बरें उठाएं। उसमें खुल्लम खुला बेहयाई का फ़रोग़ इस ढिटाई के साथ है कि इश्तिहारात के अल्फ़ाज़ में भी किसी शर्म मुरव्वत, किसी तरह की ढकाई छुपाई का लिहाज़ नहीं। खोज पर मामूर अहबाब ने बताया कि ऐसा मालूम होता है दिये गए फ़ोन के दूसरी तरफ़ मादर पिदर आज़ाद लोगों का पूरा गुरूप बैठा है जो इंसानी नफ़्स की ग़लीज़ चाहतों को हस्बे मंशा पूरी करने के लिये हर तरह की हराम ज़िंदगियों

को फ़रोग़ दे रहा है और उसे कोई पूछने वाला नहीं। ऐसा मालूम होता है कि फ़ोन पर दोस्ती, फिर जूस कार्नरों में मुलाक़ातों से जो शैतानी सिलसिला शुरू होता है, पोश इलाक़ों में वाक़ेअ़ ख़ुफ़िया क़हवा ख़ानों से होता हुआ उसका इख़्तिमाम क़साब नुमा डाक्टरों के हाथों में खेलने तक आ पहुंचता है। इस सारे इबलीसी निज़ाम की कड़ियां एक दूसरे से मिलती हैं जिसे दुशमनाने इंसानियत अपने मक़ामी हरकारों की मदद से मरबूत अंदाज़ में चला रहे हैं और दिन दहाड़े हमारे मासूम बच्चों को तबाही व बरबादी के इस जहन्नम में झोंक रहे हैं।

मैं हैरान हूं मेरी क़ौम के रखवाले कहां हैं? दुशमन के छोड़े हुए ज़मीर फ़रोश एजंट नई नस्ल को इशारे और सुराग़ दिये गए हैं इन पर काम करके कोई भी मुहिब्बे वतन आफ़ीसर इस साज़िश के ज़िम्मादारों तक पहुंच सकता है। इंसान पर लाज़िम है कि ग़ैरत का दामन हाथ से न छोड़े। हम आख़िर यह क्यों बर्दाश्त कर रहे हैं कि हमारे मासूम बच्चों को शैतानी हरकतों के ज़रीए अपाहिज और नाकारा बनाया जाए और हम आंखें बंद करके ला तअल्लुक़ रहें। इस तरह तो दज्जाली क़ुव्वतें एक दिन हमारी दहलीज़ पर आ पहुंचेंगी। हमारी नज़रों के सामने हमारे गुलशन के फूल और चमन की कलियों को शैतान के नुमाइंदे ग़ैर इंसानी हरकतों में मुब्तला करेंगे और हम इस फ़ित्ने में बहते जाने के अलावा कुछ न कर सकेंगे।

दज्जाल का शयतनत और दजल को ग़ालिब देखने वालों का बरपा कर्दा फ़ित्ना जितना भी शर अंगेज़ हो, इसके मुक़ाबले में कोशिश करने वालों के लिये अल्लाह तआला की मदद और इन्आम के वादे भी उतने ही अज़ीम हैं। हमें शरपसंद और फ़ित्ना परवर दज्जाली क़ुव्वतों के सामने हरगिज़ हथियार नहीं डालने चाहियें।

आख़िरी दम तक मअ़रकए ख़ैर व शर में अपना हिस्सा डालते रहना चाहिये। दुआ भी करनी चाहिये और दवा भी। न जाने किसकी कुर्बानी रब्बुल इज़्ज़त को पसंद आ जाए और वह उसे भी दुनिया और आख़िरत में सुरख़ुरूई और सरफ़राज़ी से नवाज़ दे और इसकी वजह से दूसरों का भी भला हो जाए।

दज्जाली रियासत के क़याम के लिये फ़ज़ाई तसख़ीर की कोशिशें

(पहली किस्त)

ऐरिया नम्बर 51

न्वाडा पचास अमरीकी रियासतों में से निस्बतन ग़ैर मअ़रूफ़ रियासत है। इसके मग़रिब में केलीफ़ोर्निया, शुमाल में ओरीगान ऐडा और एडाहू, मश्रिक़ में ओटावा और जुनूबे मश्रिक़ में एरीज़ोना है। इसका रक़्बा 1,10,567 मुरब्बा मील है। रक़्बे के एतिबार से यह अमरीका की सातवीं बड़ी रियासत है। यह वह ख़ुसूसियत है जिसने इसे मुस्तकबिल......शायद मुस्तकबिले क़रीब......के एक बहुत बड़े दज्जाली मंसूबे की तर्जुबागाह बना दिया है। रियासते न्वाडा को इंतिज़ामी तौर पर 51 मुरब्बा कतआत में तकसीम किया गया है। इन कतआत को 1 से लेकर 51 तक नम्बर दिये गए हैं। कत्आ नम्बर 51 खुसूसी अहमियत का हामिल है। इसमें दज्जाल का अहम तरीन मंसूबा परवान चढ़ाया जाता रहा है। इब्तिदा में अमरीकी हुकूमत इस तरह के किसी मंसूबे या ग़ैर मामूली सरगर्मी से कतई इंकार करती थी और इस हवाले से पेश किये गए शवाहिद को सख़्ती से मुस्तरद कर देती थी......लेकिन उसके पास उसका कोई जवाब न था कि उसने एरिया 51 को जाने वाली शाहराह का नाम "ग़ैर अर्ज़ी शाहराह" (Extraterestrial Highway) क्यों रखा है? इस शाहराह का सरकारी तौर पर रूट नम्बर 375 था। इसका यह ग़ैर

मामूली नाम रखा जाना अपने अंदर चौंका देने वाली हैरानी लिये हुए था। यहां इड़्न तश्तरियां और ख़लाई मख़्लूक़ जैसी "ग़ैर अर्ज़ी अशया" मुसलसल देखने में आती रही थीं। मक़ामी बाशिंदों और उनके ग़ैर मक़ामी मेहमानों की ज़बानों पर इनका तज़किरा आम था। अमरीकी हुकूमत इन तजस्सुस आमेज़ इत्तिलाआत को दबाए रखती थी। जब बात बहुत आगे बढ़ गई तो रियासते न्वाडा के बारे में यह मशहूर कर दिया गया कि यहां ऐसी बड़ी साइंसी सरगर्मियां ज़ेरे अमल लाई जाती हैं जिनका तअल्लुक़ फ़ेडरल गवर्नमेंट की एटमी रीसर्च से है। अमरीकी अवाम इससे मुतमइन हो जाते......बहुत जल्द मुतमइन हो जाते......इसलिये कि इन्हें फ़्री मैसन बिरादरी ने ऐसी बहुत सी "टाइम पास" और "मुफ़ीद" सरगर्मियों में मुब्तला कर रखा है जिनसे उनके पास वक़्त नहीं बचता। रही सही कसर यहूदी बैंकों की तरफ़ से अमरीकी अवाम को दिये गए क़र्ज़ों और यह क़र्ज़े उतारने के लिये की जाने वाली दुगनी तुगनी नौकरियों ने पूरी कर दी है। लिहाज़ा दुनिया की सबसे ज़्यादा तालीम याफ़्ता समझी जाने वाली अमरीकी क़ौम जल्द ही इन तिफ़्ल तसल्लियों से मुतमइन हो ज़ाती और एरिया 51 को कहीं और मुंतक़िल न करना पड़ता अगर केली जान्सन जैसे माया नाज़ हवाबाज़ का वाक़िआ पेश न आता।

केली जान्सन ग़ैर मामूली सलाहियतें रखने वाला एक इयर क्राफ़्ट डीज़ाइनर था। यह वही शख़्स है जिसने पहला सुपर सानिक तय्यारा "यू टू" (U-2) डीज़ाइन किया था। उसे किसी ऐसे वसीअ़ इलाक़े की ज़रूरत थी जहां इस तय्यारे की आज़माइशी परवाज़ अमल में लाई जाए। क़ुदरती तौर पर उसकी नज़र क़त्आ नम्बर 51 पर पड़ी। उसने "टोनी लीवाइर" से रुजूअ़ किया। वह शहरी हवाबाज़ी में उसका दोस्त था। इसके बारे में कहा जाता था वह ख़ित्ता नम्बर

51 का बानी था। वहां के मंसूबे उसके इल्म में थे। टोनी ने पुरानी दोस्ती की लाज रखते हुए अमरीकी हुकूमत से इस आज़माइशी परवाज़ की इजाज़त तलब की। उसने अपने दोस्त को बताया कि इस रियासत में 30, 40 मील तक परवाज़ सहूलतें मौजूद हैं। मैं इसका इंतेज़ाम करूंगा अगर मर्कज़ से उसकी इजाज़त मिल जाए। केली को मालूम न था कि इस जगह "मर्कज़" उसके बनाए गए जदीद तरीन तय्यारे से भी ज़्यादा तेज़ रफ़्तार सवारी का तजुर्बा करता रहा है। बहरहाल उन्हें मर्कज़ से इजाज़त मिल गई। यू टू की आज़माइशी परवाज़ कामियाब रही। बाद अज़ां इस तय्यारे ने सोवियत यूनियन के इलाके में 26 हज़ार फ़िट की बुलंदी पर रहते हुए और सोवियत राडारों से बचते हुए कामियाब जासूसी परवाज़ें कीं। एटमी तन्सीबात की तसावीर पर हासिल कीं और अमरीकी हुक्काम के लिये यह इजाज़त काफ़ी सूदमंद साबित हुई।

U-2 के बाद एरिया 51 में दूसरा प्रोजेक्ट B-2 बम्बा स्नीथ तय्यारे का था। उसका मुन्फ़रिद ढांचा और रफ़तार मौजूदा ज़माने से कई अशरे आगे था। लोगों को ऐसी एडवांस टेक्नालोजी की अभी तवक़्क़ो और कोई अंदाज़ा नहीं था। उन्होंने बी-2 और इस तरह के दूसरे तरक्क़ी याफ़्ता तय्यारे देखे तो उन्हें UFO (Unidentified Flying Objects) यअ़नी उड़न तशतरियां समझ लिया। 1988 ई0 में अमरीकी हुक्काम ने सरकारी तौर पर बी2 स्नीथ बम्बार और एफ़ 117 स्नीथ फाइटर के बारे में अवाम को मुत्तलअ़ किया। लोगों ने उनकी बेपनाह तबाहकारी का मुशाहिदा फ़रवरी 1988 ई0 में किया जबकि खलीज की जंग ने उनकी मौजूदगी और हक़ीक़त साबित कर दी। B-2 के बाद ऐरिया 51 में जारी मौजूदा प्रोजेक्ट का नाम AURORA है। यह एक ऐसा

तय्यारा होगा जो आवाज़ की रफ़्तार से छः गुना तेज़ परवाज़ करते हुए इंतिहाई ठीक निशाने पर हमलाआवर हो सकता है। अमरीकी हुकूमत फिल वक़्त इसकी मौजूदगी से इंकार कर रही है। बिल्कुल इसी तरह जैसे किसी ज़माने में B-2 और F-117 के लिये किया गया था......लेकिन क्या उस खुफ़िया इलाक़े में सिर्फ़ यही तेज़ रफ़तार सवारियां तैयार हो रही हैं? क्या U-2 और B-2 की आज़माइशी परवाज़ों के तज़किरे से वह बात समझ में आ सकती है जिसका तअल्लुक़ दुनिया के सबसे वह्मी और बुज़दिल शख़्स "दज्जाले आज़म" के ज़ुहूर और इस्तिक़बाल के लिये की जाने वाली खुफ़िया तरीन और......बज़ाहिर......अज़ीम तरीन तैयारी से है? अगर आप के ज़हन में इसका जवाब नफ़ी में है तो आप बंदा को अपना हमख़्याल पाएंगे? असल कहानी इससे आगे की है और यह कहानी हमें मशहूर ग़ैर सहीवनी अमरीकी साइंसदान "डाक्टर मूरलीं जैसूब" के अफ़सोस नाक क़त्ल से आगे बढ़ती हुई मिलती है। उसको जिस बहीमाना अंदाज़ में एक इल्मी तहक़ीक़ पर तबादलए ख़्याल से रोकने के लिये क़त्ल किया गया वह हमें अमरीकी पर मुसल्लत नादीदा हाथों के जबरी तसल्लुत की कहानी सुनाता है। अमरीकी क़ौम ने जो मुजस्समा आज़ादी नस्ब कर रखा है उसमें जलने वाली शमा जिस तरह ठंडी है, उसी तरह अमरीकी क़ौम की आज़ादी भी अधूरी है। इस बाख़बर और दुनिया की मुहज़्ज़ब और तालीम याफ़्ता तरीन समझी जाने वाली क़ौम को जिसका हर बच्चा अपडेट रहने का दावा करता है, कौन बताए कि दज्जाल के नुमाइंदों के नादीदा दिमाग़ उनको अपनी मर्ज़ी से मख़्सूस सिम्त चला रहे हैं? डाक्टर मूरलीस जैसूब का अंदोहनाक क़त्ल जिस कहानी से पर्दा उठाता है उसका पसमंज़र समझने के लिये "प्रोजेक्ट पेपर क्लब" के मंसूबे को

समझना ज़रूरी है।

दूसरी जंगे अज़ीम के बाद अमरीका और बरतानवी इंटीली जिंस एजेंसियां एक ख़ास मिशन पर काम कर रही थीं। उनको यह टास्क दिया गया था कि वह आला पाए के नाज़ी साइंस दानों, इंजिनियरों, जीनियाती इंजीनियरों और "ज़हनों पर क़ाबू पाने वाले माहिरीन" (हीप्नाटिज़्म, मिस्मरीज़्म, टेली पैथी वग़ैरा से शग़फ़ रखने वाले) को जर्मनी से बहिफ़ाज़त वसूल करके अमरीका खींच ले जाएं। इस मंसूबे के लिये 2,000,000,000 अमरीकी डालर्ज़ की लागत से अमरीकी हुकूमत (या इसके पीछे कारफ़रमा खुफ़िया सहीवनी दिमाग़) ने एक प्रोजेक्ट शुरू किया जिसका कोड नाम "प्रोजेक्ट पेपर क्लब" था। इस प्रोजेक्ट की मुद्दत चार साल रखी गई थी। इसके ज़रीए क़लली मुद्दत में वह ज़हीन और तजुर्बा कार तरीन अफ़रादरी क़ुव्वत हासिल कर ली गई जिसके लिये आम हालात में निस्फ़ सदी का अर्सा दरकार होता। इस मुहिम जोई के लिये अमरीका ने अपनी खुफ़िया एजेंसियां और वसाइल बेदरेग़ झोंक मारे। इसके नतीजे जो साइंसदान अमरीका पहुंचे उनको अमरीकी और बरतानवी साइंस दानों ने अपनी "मेहमान निगरानी" में ले लिया। इन नक़्ल मकानी करने वाले सांइस दानों ने अमरीका को पूरी दुनिया में क़ाइदाना किर्दार मुहय्या किया, लेकिन अफ़सोस कि यह इल्म व तहक़ीक़ और ईजाद व इक्तिशाफ़ न उन साइंसदानों के काम आई और न इंसानियत के। उन साइंसदानों में से मुंतख़ब और ग़ैर मामूली ज़हन रखने वाले अबक़रिय्युस सिफ़त (जीन्स) अफ़राद अमरीका से अग़वा होकर किसी और "मक़ाम" में पहुंचा दिये गए और उनकी ईजादात ने इंसानियत के सबसे बड़े दुशमन "दज्जाले आज़म" के लिये मैदान हमवार किया। दज्जाल तवह्हुम परस्ती की आख़िरी हद तक मुहतात,

बुज़दिल और वसवासी किस्म के मख़्लूक़ है। वह अपने ज़ुहूर से पहले दो चीज़ों की यक़ीन दिहानी हासिल करना चाहता है:

(1) सफ़ाई: यअ़नी मुख़ालिफ़ीन और रुकावटों का ख़ातमा, मुख़ालिफ़ीन में सर फ़ेहरिस्त उलमा और मुजाहिदीन हैं और रुकावटों में अस्ल रुकावट नेकी और तक़्वा है। दज्जाल को साज़गार माहौल के लिये बदी और फ़ह्हाशी दरकार है और दज्जाली कुव्वतों को वह लोग एक आंख नहीं भाते जो किसी भी शक्ल में ख़ैर (यअ़नी इत्तिबाए सुन्नत) की दावत और शर के ख़िलाफ़ मुज़ाहमत यअ़नी फ़ी सबी लिल्लाह की बात करें।

(2) बरतरी: यअ़नी इन तमाम वसाइल का हुसूल जो इसे "मुख़ालिफ़ दज्जाल" कुव्वतों पर मुकम्मल बरतरी दिला सकें। इन वसाइल में से एक अहम चीज़ "उड़न तशतरी" है। जी हां! वही उड़न तशतरी जो अमरीका के इर्दगिर्द अक्सर व बेशतर आती रहती है और इसकी हक़ीक़त छिपाने के लिये अमरीका में मौजूदा ख़ुफ़िया कुव्वतों की जानिब से यह प्रोपेगन्डा किया जाता है कि इन तशतरियों को अपनी आंखों से देखने की गवाही देने वाले वह्मी (Fantasy Prone) हैं। अगर यह सब वह्मी होते और इन खटोलों में सवार मख़्सूस हुलिये वाले लोग किसी और सय्यारे की मख़्लूक़ होते तो डाक्टर माइकल जैसूब को मौत की नींद न सुलाया जाता जो उन उड़ान भरती सवारियों की हक़ीक़त जानने के लिये तहक़ीक़ कर रहे थे और सुराग़ के क़रीब पहुंच चुके थे। (जारी है)

ग्लोबल वीलेज का प्रेज़ीडेंट

(ऐरिया 51 की दूसरी किस्त)

"20th सैंचरी फ़ाक्स" एक अमरीकी फ़िल्म साज़ इदारा है। फ़ाक्स टेलीवीज़न भी इस इदारे की मिलकियत है। फ़ाक्स टेलीवीज़न, एक्स फ़ाइल्ज़ का प्रोड्यूसर भी है। इस इदारे ने 1996 ई0 में "इंडीपेन्डेन्स डे" (Independence Day) नामी फ़िल्म बनाई। इस फ़िल्म ने फ़ाक्स आफ़िस पर कामियाब के बड़े बड़े रीकार्ड तोड़ डाले। इसे दुनिया की सातवीं कामियाबी तरीन फ़िल्म क़रार दिया गया। क्यों? फ़ाक्स का मालिक राबर्ट मर्दूग एक फ़्री मैसन है। इस फ़िल्म में उसने ख़लाई मख़्लूक़ की ज़मीन पर हमला आवरी की फ़िक्शन (दासतान) का फ़िल्माया है। फ़िल्म में एक फ़ौजी अड्डा "ऐरिया51" के नाम से दिखाया गया है। यह वह मक़ाम है जो इंसान के मुस्तक़बिल के तहफ़्फ़ुज़ में मरकज़ी किर्दार अदा करेगा। इस तरह की फ़र्ज़ी दासतान अमरीका जैसी हक़ीक़त पसंद क़ौम को इतनी पसंद क्यों आ गई? इस फ़िल्म के ज़रीए दरहक़ीक़त हमारी दुनिया के बासियों के ज़हन हमवार करने की कोशिश की गई थी। इस फ़िल्म में कुछ तहतुल शुऊरी पैग़ामात दिये गए थे। इन पैग़ामात ने नाज़िरीन को लाशुऊरी तौर पर इतना मुतअस्सिर किया कि वह बार बार इस फ़िल्म को देखने पर मजबूर हो गए। वह पैग़ाम क्या था? हमारी दुनिया का मुस्तक़बिल सिर्फ़ इस सूरत में महफ़ूज़ है जब उसका एक ऐसा लीडर हो जो पूरी दुनिया का मुत्तफ़िक़ा लीडर हो। यह वह क़ाइद होगा जो दुनिया को दरपेश ख़तरात से तहफ़्फ़ुज़

दे सकेगा। यह हमारी दुनिया का निगेहबान और नजात दहिंदा होगा। इसके हाथ मज़बूत करने के लिये ज़रूरी है कि दुनिया में एक ही करंसी और एक ही फ़ौज हो। और यह (माली व अस्करी) ताक़त एक ग्लोबल लीडर के हाथ में हो। यह ग्लोबल लीडर वही है जिसके इंतिज़ार में एक अमरीकी रियासत का अस्ल नाम "उस खुदा का शहर जिसका इंतेज़ार किया जा रहा है" रखा गया है। इस रियासत का नाम हम आगे चल कर बताएंगे। "बिरादरी" को दरअसल ग्लोबल यूनियन, ग्लोबल अद्लिया, ग्लोबल करंसी और ग्लोबल फ़ौज की ज़रूरत है। अक़्वामे मुत्तहिदा, आलमी अदालते इंसाफ़, क्रेडिट कार्डज़ (और थोड़ा आगे चल कर कार्ड करंसी या इलेक्ट्रोनिक मनी) और अमन फ़ौज "बिरादरी" की इस ज़रूरत की तकमील की इब्तिदाई शक्लें हैं। 25 मार्च 1957 ई० को इस ख़ाके मे ज़रा वज़ाहत से रंग भरा गया जब "यूरोपियन इक्नामिक कम्यूनिटी" वजूद में आई और "न्यू वर्ल्ड आर्डर के लिये एक तजुर्बा गाह" क़रार पाई। "यूरो करंसी" "यूरो कप" और इसी तरह के दूसरे तजुर्बे फ़्री मैसनरी को "ग्लोबल कंट्रोल" हासिल करने में मदद दे रहे हैं। दुनिया पर तसल्लुत की बेताब ख़्वाहिश ने उन्हें शैतानी समंदर की शैतानी तिकोन में मुक़य्यद चश्म लीडर के लिये सरापा इंतेज़ार बनाया हुआ है। वह इसका इंतेज़ार भी कर रहे हैं और ग्लोबल हुकूमत के इस ग्लोबल प्रेज़ीडेंट के लिये रास्ता भी हमवार कर रहे हैं और उसका एक बड़ा ज़रीआ हालीवूड की फ़िल्में हैं। मज़कूर बाला फ़िल्म में ख़लाई मख़्लूक़ और इसकी मख़्सूस सवारी दिखाई गई है। यह सवारी और इसके सवार आज के कालम का मौज़ू भी हैं और पिछले कालम में कही गई बात आगे बढ़ाने का राबता और ज़रीआ भी। आगे बढ़ने से पहले हम फ़र्ज़ी ख़लाई मख़्लूक़ की इस हक़ीक़ी सवारी का

तआरुफ़ लेते चलते हैं:

उड़न तशतरियां क्या हैं?

उड़न तशतरियों को यू एफ़ ओ (U.F.O) या Unidentified Flying Objects यअ़नी "क़ाबिले शनाख़्त उड़ने वाली चीज़ें" कहा जाता है। यह गोल शक्ल की किसी तशतरी की मानिंद होती है। इसकी रफ़्तार इंतिहाई तेज़ होती है। इतनी तेज़ कि यह देखते ही देखते ग़ाइब हो जाती हैं। उड़न तशतरी अल्मूनियम और प्लास्टिक या इस जैसी किसी जदीद क़िस्म की धात से बनी हुई होती है। अग़वा किये गए लोगों के मुताबिक़ इसकी रफ़्तार इतनी तेज़ होती है कि इसमें बैठने के बाद यूं लगता है जैसे ज़मीन लिपटती जा रही हो। यह हजम में छोटी और बड़ी होने की अजीब व ग़रीब और समझ में न आने वाली सलाहियत रखती है। यअ़नी एक ही उड़न तशतरी बयक वक़्त अपना हजम बिल्कुल छोटा और इतना बड़ा कर सकती है कि अपनी आंखों पर शक होने लगे और देखने वाले बेहोश हो जाएं। यह खुद भी जब चाहे इंसानी नज़रों से ग़ाइब हो जाती है नीज़ दूसरी किसी भी चीज़ को लोगों की नज़रों से ग़ाइब करने की सलाहियत रखती है। फ़ज़ा में एक ही जगह देर तक खड़ी रह सकती है।

उड़न तशतरियों में कौनसी टेक्नालोजी इस्तेमाल होती है?

उड़न तशतरी में बुन्यादी तौर पर दो क़िस्म की टेक्नालोजी इस्तेमाल होती है: एक कुव्वते कशिश, दूसरी लेज़र शुआएं। कुव्वते कशिश की बिना पर यह चीज़ों और अफ़राद को अपनी तरफ़ दूर से ही खींच सकती है। लेज़र शुआओं के ज़रीए दुनिया के जदीद तरीन तय्यारों को बआसानी तबाह कर सकती है। समंदर में उतर कर

किसी आबदोज़ से भी ज़्यादा रफ़्तार के साथ पानी के अंदर सफ़र कर लेती है। दुनिया के बिजली के निज़ाम और मुवासिलाती निज़ाम को जाम करने की सलाहियत रखती है......बरमूदा के बासियों ने ग़ैर मअ़मूली तवानाई की हामिल इन मक़्नातीसी शुआओं पर क़ाबू पा लिया है जो दुनिया में मौजूद तवानाई के हुसूल के तमाम ज़राए से कई गुना ज़्यादा क़ुव्वत रखती हैं। इसकी बिना पर वह उड़न तशत्तरियों में बैठ कर हमारी दुनिया से इस तरह ठेठ मख़्लूल करके लुत्फ़ लेते हैं जैसे कोई शहरी बाबू किसी दीहात में जांके और अपने पास मौजूद मोबाइल और कम्पयूटर्ज़ के करतब दिखा कर दीहातियों से मज़ा ले।

उड़न तशतरियां कहां से आती हैं?

अगर्चे आम तौर पर यह मशहूर किया जाता है कि यह नामालूम मक़ाम से आती हैं। इन पर अजनबी मख़्लूक़ सवार होती है। इनका राज़ किसी को मालूम नहीं। इनके बारे में तरह तरह की अफ़सानवी दासतानें ख़ौफ़नाक क़िस्से, नाक़ाबिले यक़ीन वाक़िआत......सब कुछ इस तरह गुडमुड करके बयान किया जाता है कि इंसान उलझ कर रह जाता है। ग़ैर जानिबदार अमरीकी मुहक़्क़िक़ीन का कहना है कि यह बरमूदा तिकोन से आती हैं। मुतअद्दद मुशाहिदात और क़राइन से मालूम होता है कि उड़न तशतरियां इसी तिकोन से निकलती और शोअ़बदे दिखा कर इसी में वापस घुसी जाती हैं। एक उड़न तशतरियों पर क्या मौक़ूफ़, बरमूदा तिकोन में और भी बहुत से ग़ैर मामूली वाक़िआत व हादसात होते रहते हैं लेकिन उनसे मुतअल्लिक़ रिपोर्टों पर बड़ी सख़्त पाबंदी आइद कर दी गई है। न उन्हें मुशतहर किया जाना है और न किसी को उन पर तहक़ीक़ की इजाज़त दी जाती है। इन वाक़िआत में फ़ज़ाई और बह्री जहाज़ों के ग़ायब होने

के अलावा उड़न तशतरियों का आसमान में देखा जाना, बरमूदा के समंदर में दाख़िल होना और समंदर में पानी के अंदर हज़ारों फ़िट नीचे उनका देखा जाना शामिल है। 1963 ई0 में प्यूटो रेकव के मशरिक़ी साहिल पर अमरीकी बह्‌रिया ने अपनी मशक़ों के दौरान एक उड़न तशतरी देखी थी जिसकी रफ़्तार दो सौ नाट थी और वह समंदर के नीचे सत्ताईस हज़ार फ़िट गहराई में सफ़र कर रही थी लेकिन इस रिपोर्ट को भी सख़्ती से दबा दिया गया था और डिसिपिलिन के पाबंद फ़ौजों को हुक्म दिया गया था कि वह इस मौज़ूअ़ पर बात भी न करें।

उड़न तशतरियों के बारे में कट्टर ईसाई हज़रात का नज़रियाः

अमरीका और यूरप को रौशन ख़्याल तहज़ीब का गहवारा समझा जाता है। रौशन ख़्याली के मअ़नी की तशरीह से क़त्अ़ नज़र यहां के अवाम अक़्ल और साइंस नीज़ हर चीज़ की माद्दी तशरीह और तबईयाती तौजीह पर इतना ज़्यादा यक़ीन रखते हैं कि वह किसी मावराई चीज़ का सिरे से इंकार करने को अक़्ल परस्ती की मेअ़राज और ऐसी चीज़ों के क़ाइल लोगों को रजअ़त पसंद और बुन्याद परस्त क़रार देते हैं लेकिन इस सब कुछ के बावजूद "उड़न तशतरियों" के नुमूदार होने और अक़्ल व टेक्नालोजी की गिरफ़्त में न आने पर इन हज़रात का तब्सिरा क्या था? आइये मुलाहिज़ा कीजिये।

एक रोमन कैथोलिक पादरी फ़ादर फ़्रीकैड जो उड़न तशतरियों के बारे में सनद समझे जाते हैं, कहते हैं: "यह सब शैतानी चर्ख़ा है। चर्च और हमारे अज्दाद जिन को शैतान कहते हैं वह अब उड़न तशतरियों के हवाबाज़ कहलाते हैं। उड़न तशतरियों के शाहिदीन उनकी परवाज़ के वक़्त अक्सर सल्फ़र की बू महसूस करते हैं। यह

शैतान को मारे जाने वाले गंधक के पत्थरों की बू है।"

फ़ादर फ़्रीकैडी के कुछ और भी नज़रियात हैं। उनका कहना है: "जब से यह उड़न तशतरियां कैरीयिन समंदर पर ज़ाहिर हुईं तब से मक़ामी तौर पर मोजिज़ात का ज़ुहूर होता रहा है। मसलन: गिर्जा घर के मुजस्समें रोने लगते, या उनके मुंह से ख़ून बहने लगता, तस्वीरें रौशन हो जातीं, चर्च के टावर से रौशनी की किरनें निकलने लगतीं, इंफ़िरादी तौर पर दाइमी मरीज़ सिहतमंद हो जाते।" यह है ईसाई हज़रात के मज़हबी रहनुमाओं की रहनुमाई जिससे मुआमला सुलझने के बजाए और उलझ जाता है।

उड़न तशतरियों के बारे में अमरीकी हुक्काम का तब्सिरा:

अमरीकी हुक्काम का तब्सिर तो इंतिहाई मअ़नी ख़ेज़ और दिलचस्प था। उन्होंने हमा वक़्त भुतजस्सस और बाख़बर रहने की शाइक़ अमरीकी क़ौम के सामने जवाबदेह होने के बावजूद वक़्तन फ़वक़्तन मुतज़ाद मौक़िफ़ इख़्तियार किये। मुआलमे को उलझाने की इन कोशिशों ने ही ग़ैर सहीवनी अमरीकियों को चौकन्ना कर दिया और उन्होंने जान की परवा न करते हुए इस हक़ीक़त तक पहुंचने की कोशिश की जिसके इर्दगिर्द इसरार व तजस्सुस का हिसार और मौत का पहरा लगाया गया था।

पहले पहल तो उनके वजूद का ही इंकार कर दिया गया और "माहिरीन" से यह कहलवाया गया कि ऐसी कोई चीज़ दुनिया में पाई ही नहीं जाती। इसे देखने वालों का वह्म और फ़र्ज़ी तख़य्युल क़रार देकर रद्द कर दिया गया। यह प्रोपेगंडा किया गया कि उड़न तशतरियां देखने वाले वह्मी (Fantasty Prone) हैं......लेकिन इस नामअ़क़ूल और ग़ैर क़ाबिले क़बूल चीज़ देखने वालों की तादाद

रफ़्ता रफ़्ता इतनी ज़्यादा हो गई थी कि इन सब के मुशाहिदे को वह्म, झूट या तख़य्युल की कारसतानी क़रार देकर रद्द करना मुम्किन न रहा था। न ही उसको महज़ नज़रों का धोका क़रार देकर देखने वाले का मज़ाक़ उड़ा कर बात को दबाया जा सकता था, क्योंकि 1947 ई० से 1969 ई० तक उड़न तशतरियां देखे जाने की जो शहादतें और वाक़िआत सामने आए थे वह 12,618 थे।

इसके बाद यह मशहूर करने की कोशिश की गई कि यह ख़लाई मख़्लूक़ की सवारी है। किसी और सय्यारे की रहने वाली मख़्लूक़ इनमें सवार होकर घूमती घामती हमारी दुनिया में आ निकलती है। इस नज़रिये को तक़वियत देने के लिये ज़ह्नी रुख़ तबदील करने की मख़्सूस तकनीक इस्तेमाल करते हुए इन तशतरियों में सवार मख़्लूक़ को परदेसी या अजनबी (Aleins) का नाम दिया गया। इनका हुलिया भी ऐसा मशहूर किया गया जिससे वह किसी और दुनिया के बाशिंदे लगें जो भटक कर ग़मों और दुखों से भरी हमारी इस दुनिया में तफ़रीह और मुहिम जूई के लिये आ निकले हैं। क्या वह परदेसी थे? अगर ऐसा था तो अमरीकी हुक्काम और साइंसदानों के लिये इससे ज़्यादा दिलचस्प और इंकिशाफ़ाती मौज़ूअ और क्या हो सकता था? उन्हें तो अपने पूरे वसाइल उस मख़्लूक़ की हक़ीक़त जानने के लिये झोंक देने चाहिये थे......लेकिन......उन्होंने न सिर्फ़ यह कि ख़ुद इस पर संजीदा या ग़ैर संजीदा तहक़ीक़ की कोशिश नहीं की, बल्कि किसी को इस पर तहक़ीक़ की इजाज़त भी नहीं दी और मुख़्तलिफ़ हथकंडों से ऐसी किसी भी कोशिश को नाकाम बनाने की भरपूर कोशिश की गई।

सवाल यह पैदा होता है कि आख़िर वह कौन सी नादीदा ताक़त

थी जिसने उनके बारे में तहक़ीक़ करने वालों को डराया धमकाया। वह कौनसी खुफ़िया ताक़त थी जिसने हक़ीक़त तक पहुंच जाने वाले साइंसदानों को महज़ इसलिये मौत की नींद सुला दिया कि "उनके नज़रियात बहुत एडवांस्ड थे और कुछ "लोगों" को उन नज़रियात का अवाम के सामने आना पसंद नहीं था।" अमरीकी निज़ाम पर असरअंदाज़ वह कौनसी कुव्वतें थीं जिन्होंने बहरी जहाज़ों पर पाबंदी लगाई कि लाग बुक (जहाज़ पर मौजूद याददाश्त) में से साहिल पर पहुंचते ही वह तमाम वाक़िआत निकाल दिये जाएंगे जिन का तअल्लुक़ बरमूदा तिकोन या उड़न तशतरियों से होगा।

इससे ज़्यादा वह संगीन बात यह हुई कि उड़न तशतरी के सवारों के हाथों इंसानों के अग़वा के वाक़िआत भी हुए। अब तो पूरी हुकूमतें मशीनरी को हरकत में आ जाना चाहिये था। एक अमरीकी बाशिंदा......आम बाशिंदा नहीं बल्कि एक अमरीकी शहरी जो किसी न किसी शोबे में मिसाली महारत का भी हामिल था......और वह अमरीका की सरज़मीन से अग़वा हो गया, अमरीकी नफ़सियात के मुताबिक़ उसको हरगिज़ बर्दाश्त न किया जाना चाहिये था......मगर हैरत अंगेज़ तौर पर इस हवाले से भी कोई पेश रफ़्त न हुई। अग़वा का ग़ैर इंसानी फ़ेअ़ल दिन दहाड़े वक़ूअ़ पज़ीर हुआ और उसको ग़ैर इंसानी मख़्लूक़ कारनामा क़रार देकर जाने दिया गया, जबकि इस गंदे काम के लिये किसी ग़ैर इंसानी मख़्लूक़ की ज़रूरत न थी। हमारी इंसानी बिरादरी में यह ग़ैर इंसानी काम करने वाले बहुत से "बिरादर्ज़" मौजूद हैं। पेशावराना महारत रखने वाले यह लोग अग़वा होकर कहां गए? इसको हम आख़िर में ज़िक्र करेंगे। पहले उन बा हिम्मत लोगों का तज़क़िरा हो जाए जो अमरीकी क़ौम को धोखा देने

की इस सरकारी साज़िश का हाल जानने की कोशिश में जान से गुज़र गए। (जारी है)

☆☆☆

शैतानी खटोलों का राज़ जानने वालों की सरगुज़श्त

(एरिया 51 की तीसरी किस्त)

डाक्टर मोरिस जैसूब अमरीकी रियासत के इलाक़े "रोकविले" (Rockville) के करीब पैदा हुआ। वह इब्तिदा से फ़ल्कियात में दिलचस्पी रखता था। उसने 1925 ई0 में मिशीगन यूनीवर्सिटी से फ़ल्कियात में "बी एस" की डिग्री हासिल की। 1926 ई0 में एक रसदगाह में काम के दौरान "एम एस" की डिग्री हासिल की। 1931 ई0 में उसने अपनी "पी एच डी" का मक़ाला मुकम्मल कर लिया था लेकिन वह डाक्ट्रेट की डिग्री हासिल न कर सका ताहम उसे फिर भी बसा औक़ात "डाक्टर जैसूब" कह दिया जाता है। जैसूब को 1950 ई0 की दहाई में UFOs (फ़ज़ा में पाए जाने वाले ग़ैर शनाख़्त शुदा मुब्हम अज्साम) के मुतअल्लिक़ सबसे उम्दा मफ़रूज़े पेश करने वाला शख़्स क़रार दिया। इसकी वजह यह थी कि उसने फ़ल्कियात और ज़मीनी आसारे क़दीमा दोनों के मुतअल्लिक़ तालीम हासिल की और उसे दोनों मैदानों में अमली काम का तजुर्बा भी हासिल था। जैसूब ने 1955 ई0 में अपनी एक किताब के ज़रीए शोहरत हासिल की, जिसमें उसने UFO के मुतअल्लिक़ बहस की और इस बात पर ज़ोर दिया कि यह मुआमला इस लाइक़ है कि इस पर मज़ीद तहक़ीक़ की जाए। उसका ख़्याल है कि UFOs किसी ठोस और मुब्हम किस्म की धात से बने हुए अज्साम थे जो तहक़ीक़ी

मिशन पर भेजे गए थे।

मज़ीद बरआं "जैसूब" ने इनका तअल्लुक़ कब्ल अज़ तारीख़ की साइंस से भी जोड़ा है। "जैसूब" ने 1956 ई० में मज़ीद दो किताबें (The UFO और UFOs and Bible Anual) और 1957 ई० में (Expandiry ase for UFO) लिखीं। UFO के बारे में जैसूब ने इन वसाइल के बारे में भी थियोरी पेश की जो UFO की उड़न तशतरियों को उड़ाने में मुम्किना तौर पर ज़ेरे इस्तेमाल हो सकते हैं। उसने यह ख़्याल ज़ाहिर किया कि यह ईंधन या तो कोई मुख़ालिफ़ कशिश सिक़्ल माद्दा है या फिर बर्क़ी मक़्नातीस क़िस्म की कोई चीज़ है। उसने अपनी किताब और असफ़ार में बारहा इस पर अफ़सोस का इज़्हार किया लेकिन उन्हें तवज्जो न दी गई वर्ना अगर उन्हें इतनी तवज्जो दे दी जाती जितनी राकिट दाग़ने के अमल को दी जाती है तो भी काफ़ी फ़ाएदा होता। जनवरी 1955 ई० को जैसूब के ख़िलाफ़ "बिरादरी" की साज़िशों का आग़ाज़ हो गया। "कार्ल्स मैगवियल एलनीड" नामी शख़्स की जानिब से ख़त मौसूल हुआ जिसमें लिखने वाले ने बताया कि उसने ज़ाती तौर पर भी ऐसे जहाज़ों का मुशाहिदा किया है जो ज़ाहिर हुए फिर अचानक ग़ायब हो गए। उसने अपने अलावा कुछ और लोगों के नाम भी बताए थे। इनमें ऐसे अफ़राद भी शामिल थे जो इस वाक़िआ के बाद नागहानी मौत मर गए। जैसूब ने एलनीड को जवाबी ख़त लिखा और इस वाक़िए से मुतअल्लिक़ मज़ीद मालूमात और तसदीक़ात तलब कीं जिसका जवाब महीनों बाद आया जिसमें इस शख़्स (एलीनड) ने मज़ीद मालूमात फ़राहम करने से मअज़रत कर ली थी। इस दूसरे ख़त में उसने अपने आप को "कार्ल ईलन" लिखा था, जैसूब ने इससे मज़ीद राबता न रखने का फ़ैसला कर

लिया।

1957 ई0 की बहार के मौसम में जैसूब से ONR की जानिब से राबता किया गया और उससे उस पार्सल के मुंदरजात का मुतालआ करने का मुतालबा किया गया कि जो उन्हें मौसूल हुआ था। जैसूब ने जब उसे देखा तो वह हैरान रह गया कि यह उसकी किताब का एक ग़ैर मुजल्लद नुस्ख़ा था, जिस पर तवील व अरीज़ हाशिया लिखा था। हाशिया निगारी में तीन मुख़्तलिफ़ रौशनियां इस्तेमाल की गई थीं। किताब जिस लिफ़ाफ़े में बंद थी, उस पर Happy Easter लिखा था। इन तवील व अरीज़ हाशियों में तीन अफ़राद के दर्मियान राबतों का ज़िक्र था जिसमें से सिर्फ़ एक का नाम "जीमी" मज़्कूर था। बाक़ी दो को उन लोगों ने Mr. A और Mr. B का नाम दिया। यह तीनों अफ़राद एक दूसरे से ख़ाना बदोशों के हवाले से गुफ़्तगू कर रहे हैं और ख़ला में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों के बारे में बातें कर रहे हैं। हाशिया की तहरीर में अंग्रेज़ी की लिखाई के क़वाइद और अलामात तरक़ीम का ग़लत इस्तेमाल किया गया था। उनमें जैसूब के बयान कर्दा एहतिमालात पर बड़ी मुफ़स्सल बहस की गई थी। मसलनः एक हवाले पर तब्सिरा करते हुए लिखा थाः "उसके पास कोई मालूमात नहीं, महज़ क़्यास आराई करता है।" लिखाई और मवाद की बुन्याद पर कहा गया कि दरअसल यह एक ही शख़्स का लिखा हुआ हाशिया है और यह वही शख़्स है जिसने जैसूब को ख़त लिखा था। उसने तीन रौशनियां इस्तेमाल की थीं। कुछ अर्सा बाद ONR ने जैसूब को बताया कि जैसूब को मिलने वाले ख़त का वापसी पता दरअसल एक मतरूका फ़ार्म हाउस है। जैसूब ने कहा कि वह UFO के मुतअल्लिक़ अब एक जानदार तहरीर लिखेगा......लेकिन यह तहरीर लिखने की नौबत

न आई। यह राज़ डाक्टर जैसूब के साथ ही उसकी कार में दफ़न हो गया।

बात यह थी कि डाक्टर मूरी जैसूब इख़्तिराई ज़हन रखने वाले ज़हीन साइंसदान थे। वह रिवायती नज़रियात को इतनी जल्दी क़बूल करने के आदी न थे जितना जल्द अमरीकी सहीवनी साइंसदान अमरीकी क़ौम से तसलीम करवा लेते हैं। उन्होंने जब उड़न तशतरियों के बारे में अफ़वाहें सुनीं तो उनके लिये चौंका देने वाली चीज़ महज़ यह न थी कि उनके पेटी बंद साइंसदान भाई उस जदीद तरीन दौर में इस अजीब तरीन चीज़ को किसी और सय्यारे की तख़्लीक़ समझ कर आसानी से नज़रअंदाज़ कर रहे हैं......

उनके लिये इससे ज़्यादा तअज्जुब की बात यह थी कि बाल की खाल उतारने वाला अमरीकी मीडिया भी इस तरह की ख़बरों से क़त्अ़ नज़र करने या कोई और रुख़ देने में ज़रूरत से ज़्यादा चाबुकदस्ती दिखा रहा है। उनसे यह चीज़ हज़्म न हुई और उन्होंने उन "उड़न खटोलों" का राज़ मालूम करने की ठानी। एक तरफ़ तो साइंसी इंकिशाफ़ात की वह भरमार कि इंसानी तारीख़ में इसकी मिसाल नहीं और दूसरी तरफ़ अफ़्रीक़ा के जंगलों या कूहे काफ़ के पहाड़ों पर नहीं, अमरीका के इर्दगिर्द के "समंद्रों" और "साहिलों" पर उड़न तशतरियों का बार बार नमूदार होना और उनमें सवार मख़्लूक़ को ख़लाई मख़्लूक़ और उनकी सवारी को अफ़सानवी कहानी समझ कर नज़र अंदाज़ करना उनसे हज़्म न होता था। डाक्टर जैसूब ने अपने तौर पर तहक़ीक़ शुरू कर दी।

यह अप्रेल 1959 ई0 का एक ख़ुशगवार दिन था। डाक्टर जैसूब कई महीनों की मुसलसल तहक़ीक़ व जुस्तजू के बाद "उड़न खटालों" के बारे में एक हद तक ज़हन बना चुके थे। एक तरफ़ तो

इन इंकिशाफ़ात ने तअज्जुब में डाल रखा था जो उस दौरान उनके सामने हुए, दूसरी तरफ़ वह उन नादीदा कुव्वतों से परेशान थे जिन्होंने आज तक इस पर पर्दा डाले रखा और अब वह उनकी निगरानी कर रही थीं। उनको महसूस हो रहा था कि कुछ लोग उन पर मुसलसल नज़र रखे हुए हैं। उनका दिल चाहा कि वह यह तमाम बातें अपने किसी हमख़्याल के सामने बयान करके दिल का बोझ हल्का कर लें और तहक़ीक़ को भी आगे बढ़ाएं। उनकी नज़रे इंतिख़ाब "डाक्टर मैन्सन वैलन्टाइन" पर पड़ी। वह बह्‌री जुग़राफ़िया के साइंसदान थे और डाक्टर साहब के हम निवाला व हम प्याला थे। अप्रेल की एक शाम को डाक्टर साहब अपने दोस्त से मिलने के लिये निकले। डाक्टर मैन्सन ने उन्हें शाम के खाने पर अपने यहां मदऊ किया। डाक्टर जैसूब अपनी गाड़ी में सफ़र पर रवाना हुए......लेकिन उनका यह सफ़र अधूरा रहा......कभी मुकम्मल न हो सका। नादीदा कुव्वतें......जो उनकी मुसलसल निगरानी कर रही थीं......फ़ैसला कर चुकी थीं कि डाक्टर साहब बहुत ज़्यादा जान चुके हैं। इतनी ज़्यादा जानकारी "बरमूदा" तिकोन के अंदर तिकोनी महल में बैठे बदी की कुव्वतों के यकचश्म सरबराह के लिये अच्छी न थी। लिहाज़ा "ओके! किल हिम!" (Ok! Kill him) का पैग़ाम आ गया। डाक्टर साहब की गाड़ी में ज़हरीली गैस भर दी गई। वह अपनी मंज़िल पर पहुंचने के लिये रवाना हो गए। उनकी कार के ऐगज़ास्ट से फ़्यूज़ मुंसलिक करके कार के अंदर ले जाया गया था जिसके नतीजे में कार के अंदर कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस भर गई थी। डाक्टर मैसन का बयान है कि जब उनके दोस्त उनके पास न पहुंचे तो उन्हें तशवीश हुई। वह उनकी तलाश में निकले। पुलिस उनसे पहले कार के पास पहुंच चुकी थी। जिस वक़्त पुलिस पहुंची डाक्टर साहब ज़िंदा थे......लेकिन

उनकी मौत को खुदकशी करार दे कर केस दाख़िल दफ़्तर कर दिया गया। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है डाक्टर साहब को मर जाने दिया गया। पुलिस उनको बचाने के लिये नहीं, दम घुट कर मरते देखने के लिये जाए वक़ूअ़ पर पहुंची थी। डाक्टर साहब को बरमूदा तिकोन और उड़न तशतरियों की हक़ीक़त और उनका बाहमी तअल्लुक़ जानने के जुर्म में मौत के घाट उतार दिया गया था।

शैतानी मुसल्लस और शैतानी खटोलों का राज़ जानने के लिये जान से गुज़रने वालों में डाक्टर जैसूब के बाद अगला नाम "डाक्टर जेम्ज़ ई डोनल्ड" का मिलता है। वह भी एक बड़े साइंस दान थे। डाक्टर मैन्सन तो अपने दोस्त की पुरइस्रार मौत से ख़ौफ़ज़दा हो गए, लेकिन डाक्टर जैम्ज़ ने हिम्मत न हारी। उन्होंने अपने आंजहानी हम पेशा डाक्टर की तहक़ीक़ को आगे बढ़ाना चाहा। उनका काम जारी था। अभी वह किसी नतीजे पर पहुंचना ही चाहते थे कि "बिरादरी" की नज़रों में आ गए और 13 जून 1971 ई0 की एक गर्म सुब्ह को मुर्दा पाए गए। उनके सर में गोली मारी गई थी, लेकिन सरकारी एलान वही था कि उन्होंने खुदकशी की है।

पै दर पै "खुदकशी" करने वाले अमरीकी साइंसदान जान से गुज़र गए, लेकिन दुनिया को हक़ीक़त के किसी क़दर क़रीब पहुंचाने में अपना किर्दार अदा कर गए। "किसी क़दर क़रीब" का लफ़्ज़ इसलिये इस्तेमाल किया गया है कि यह तमाम तहक़ीक़ कार मुसलमान न थे। यह महज़ साइंसी इंकिशाफ़ात की रौशनी में इस मौज़ू पर काम कर रहे थे। उन्हें वह्य की रहनुमाई हासिल न थी। वह बरमूदा तिकोन और उसमें निकलती घुसती उड़न तशतरियों की हक़ीक़त महज़ साइंसी अंदाज़ में समझने की कोशिश कर रहे थे या फिर उस जगह के इसरार ने उन्हें तजस्सुस में मुब्तला कर दिया था

और वह इसकी कोई साइंसी तौजीह दुनिया के सामने बयान करने के लिये दिलचस्पी ले रहे थे।

जबकि वाक़िआ यह है कि इंसानी अक़्ल की परवाज़ और उसके इल्म की दरयाफ़्त महदूद है। वह्य की रहनुमाई के बग़ैर वह अगली ज़िंदगी तो रही एक तरफ़, खुद इस काइनात के बअ़ज़ "अस्रार व रुमूज़" नहीं समझ सका। लिहाज़ा इस बात में हमें मुसलमान मुहक़्क़िक़ीन से भी मदद लेना पड़ेगी। मुहम्मद ईसा दाऊद मिस्र से तअल्लुक़ रखने वाले एक स्कालर हैं। उन्हें बरमूदा तिकोन से ख़ासी दिलचस्पी रही है। इस मौज़ू पर उनकी मअ़रकतुल आरा किताब "मुसल्लसे बरमूदा" छप कर मंज़रे आम पर आ चुकी है। ईसा दाऊद की राए जानने से पहले हमें दो चीज़ों के बारे में चंद बुन्यादी बातें जानना मुफ़ीद रहेगाः एक तो बरमूदा तिकोन के मुतअल्लिक़ जुग़राफ़ियाई मालूमात और दूसरे दज्जाल की सवारी के बारे में हदीस शरीफ में बताई गई तफ़सीलात। इन दो चीज़ों के बारे में कुछ मअ़रूज़ात पेश करने के बाद हम इंशा अल्लाह आगे चलेंगे।

(जारी है)

शैतानी जज़ीरे से शैतानी तिकोन तक

(ऐरिया 51 की चौथी और आख़िरी क़िस्त)

बरमूदा तिकोन बह्‌रा ऊक़्यानूस (Atlantic Ocean) में है। यह बर्रे आज़म शिमाली अमरीका के जुनूब मश्रिक़ तक़रीबन 30 डिग्री समंद में वाक़ेअ़ है। बह्‌रे एटलांटिक में कुछ जज़ीरे एक ट्राएंगल की शक्ल में बने हुए हैं और ग़ैर आबाद हैं। इन जज़ीरों के दर्मियानी समंदर के ऐन नीचे कशिश सिक़्ल (Gravitational Force) के मक़्नातीसी बार का कोई पोल है जो ज़मीन के मर्कज़ी उमूदी ख़त को छूता हुआ ज़मीन की गोलाई के दूसरी तरफ़ समंदर में 40 डिग्री से U ट्रन लेता है। इस मक़ाम के एक जानिब जापान और दूसरी जानिब फ़िलिपाइन है। यह ख़त क़द्रे झुकता हुआ 40 डिग्री से 20 डिग्री पर ऐन ख़ाना कअ़बा के नीचे निकलता है और यह इस कशिश के बार का दूसरा सिरा है।

यह फ़र्ज़ी तिकोन पानी के ऊपर कुछ इस तरह से बनती है कि फ़्लोरीडा से पोर्टोरिको, फिर पोर्टोरिको से जज़ीरए बरमूदा और फिर बरमूदा से फ़्लोरीडा। दूसरे लफ़्ज़ों में यूं कह लें इसका शिमाली सिरा जज़ाइरे बरमूदा, जुनूब मशरिक़ी सिरा पोर्टोरिको और जुनूब मग़रिब सिरा फ़्लोरिडा में बनता है। यह मशहूर अमरीकी रियासत फ़्लोरीडा के क़रीब वाक़ेअ़ है। अगर आप अमरीका का नक़्शा देखें तो आप को रियासते फ़्लोरीडा एक अज़ीमुल जुस्सा लम्बी चौड़ी दुम की शक्ल में नज़र आएगी। गोया इस पर रहने बसने वाले अमरीका की दुम पर रहते बसते हैं। फ़्लोरीडा का सद्रे मक़ाम "म्यामी" है। रियासते

फ़्लोरीडा मख़्सूस क़िस्म के ग़ैर इंसानी कामों के लिये शोहरत रखती है। यह ग़ैर इंसानी काम कुछ तो वह हैं जो अख़्लाक़ियात की रू से बुरे ठहरते हैं......लेकिन कुछ वह हैं जिनकी ख़बर ही नहीं। मसलनः यहूदी रूहानियन के नज़दीक "फ़्लोरीडा" का मअ़नी है "इस ख़ुदा का शहर जिसका इंतेज़ार किया जा रहा है "या" वह ख़ुदा जिसका इंतेज़ार किया जा रहा है" दुनिया की अक्सर क़ौमों के नज़दीक एक ही ख़ुदा है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। यह कौनसी क़ौम है जो किसी ऐसे ख़ुदा के इंतेज़ार में है जो बेचारा अपने मानने वालों के पैदा होने के बाद ज़ाहिर होगा? और इसमें क्या राज़ है कि मुअज़्ज़ज़ ख़ुदा के ज़ुहूर के लिये अमरीका की दुम, जाए इंतिख़ाब ठहरी है? बरमूदा तिकोन से क़ुर्ब इसकी वजह है या शैतानी समंदर से शैतानी जज़ाइर तक का फ़ासला सिमटने वाला है? यह सब वह बातें हैं जिनके जवाब पर ग़ौर करना बनी नोअ़ इंसानी के लिये ज़रूरी है और इसलिये ज़रूरी है कि शायद वह वक़्त दूर नहीं जब उसे उन जवाबों की शदीद ज़रूरत पड़ेगी।

बरमूदा तिकोन 300 जज़ीरों पर मुशतमिल है। वह जहाज़ रां जिनकी ज़िंदगी बह्र ओक़यानूस के दो किनारों के दर्मियान गुज़री, वह भी इस इलाक़े से दूर रहने में ही आफ़ियत समझते हैं। कुहना मशक़ और तजुर्बाकार बह्री कप्तान एक दूसरे से इस तरह का तब्सिरा करते पाए जाते हैं: "वहां पानी की गहराइयों में ख़ौफ़ और शैतानी राज़ छिपे हैं।" यह ख़ौफ़ और पुर असरार राज़ आज की बात नहीं, आज से पांच सौ नौ बरस पहले जब "क्रिस्टोफ़र कोलम्बस" यहां से गुज़रा तो उसे भी कुछ अजीब व ग़रीब चीज़ें नज़र आईं। आग के बगूलों का समंदर में दाख़िल होना। समंदर के गहरे ग़ारों से आग के बड़े बड़े लोगों का निकलना और किसी

अनदेखी चीज़ का तआकुब करना वग़ैरा। अवाम में इन जज़ाइर को "शैतानी जज़ीरे" का नाम दिया जाता रहा है और दो बातों पर आम तौर पर इत्तिफ़ाक़ पाया जाता है:

(1) उस इलाक़े में पानी की सतह पर और पानी की गहराइयों में कोई मावराई पुर अस्रार ताक़त है जो अक़्ल के इदराक से बालातर है।

(2) यह ताक़त ख़ैर नहीं, शर की अलमबरदार है। यह फ़लाह नहीं, तबाही की अलामत है।

कहते हैं कि ज़बाने ख़ल्क़ को नक़्क़ारए ख़ुदा समझना चाहिये। ख़ल्क़ की ज़बान पर यह बातें कैसे चढ़ गईं? रोज़े अव्वल से यहां पुर अस्रार वाक़िआत हो रहे हैं और अमरीका जैसे तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्क का तरक़्क़ी याफ़्ता तरीन मीडिया उन पर पर्दा डालने और इंसानी पुर अस्रारियत में मज़ीद इज़ाफ़ा की कोशिश में लगा हुआ है। बाल की खाल उतारने वाला मीडिया इन वाक़िआत की नक़ाब कुशाई के बजाए इस हवाले से इब्हाम और शुकूक की चादर ताने रखता है। ख़ौफ़नाक वाक़िआत, अफ़सानवी दासतानें, नाक़ाबिले यक़ीन मुशाहिदात......सब चीज़ों को इस तरह ख़लत मलत करके बयान किया जाता है कि अमरीकी अवाम किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकते। उनके ज़ह्न में ख़ौफ़ और अस्रार का तअस्सुर तो रह जाता है, मगर इससे आगे वह कुछ सोच नहीं पाते। बिलआख़िर उनकी तवज्जो इस तरफ़ से हट जाती है और वह इस मुहमल या नार्मल चीज़ समझ कर गुज़र जाते हैं।

आप ने "नक़्श बर आब" की तरकीब तो सुनी होगी। पानी पर नक़्श कहां ठहर सकता है? तो फिर पानी पर मुसल्लस कैसे बन सकती है? अमरीकी मीडिया ने उस शैतानी इलाक़े को "शैतान के

जज़ीरे" का नाम बदल कर तिकोन का नाक क्यों दिया है? तिकोन की शक्ल किसी शख़्सियत या तन्ज़ीम की ख़ास अलामत है? उसे दज्जाल या फ़्री मैसन तन्ज़ीम की मख़्सूस अलामत समझा जाता है तो क्या बरमूदा तिकोन का दज्जाल और उसके पैरूकार यहूदियों से कोई तअल्लुक़ है। क्या दज्जाल वही झूटा ख़ुदा है जिसका इंतेज़ार किया जा रहा है? क्या बरमूदा की पुर अस्रार ताक़त "शैताने अक्बर" यअ़नी इबलीस की उन शैतानी कुव्वतों की झलक है जो वह अपने सबसे बड़े हरकारे "दज्जाले आज़म" की हिमायत में इस्तेमाल करेगा? दिलचस्प बात यह है कि अमरीका में UFO रीसर्च के लिये फन्ड्ज़ "राक फ़ीलर" मुहय्या करती है जो फ़्री मैसनरी की एक सरपरस्त फ़ैमली है। क्या फ़्री मैसनरी उड़न तशतरियों पर तहक़ीक़ में दिलचस्पी रखती है? आख़िर क्यों?

इन सब सवालों का जवाब जानने के लिये हमें उड़न तशतरियों के मौज़ूअ़ की तरफ़ पलटना पड़ेगा। जी हां! वही उड़न तशतरियां जो बरमूदा तिकोन में बार बार दाख़िल होते और निकलते देखती गई हैं। जिनमें सवार "ख़लाई मख़्लूक़" ने अमरीका जैसे मुहज़्ज़ब मुल्क से ऐसे लोगों को अग़वा किया जो अपने शोअ़बे में बेहतरीन महारत के हामिल थे। फिर उन लोगों का कुछ पता नहीं चला कि ज़मीन निगल गई या आसमान खा गया। उन लोगों को मारा नहीं गया, उनकी सलाहियतों को मख़्सूस शैतानी मक़ासिद की तकमील के लिये इस्तेमाल करने की ग़रज़ से अनदेखे इलाक़े में पहुंचा दिया गया है। दज्जाल चूंकि इंतिहाई वह्मी और बुज़दिल है इसलिये हद्दर्जा मुहतात रहते हुए ऐसी तमाम जादूई व साइंसी कुव्वतें हासिल करना चाहता है जिनका कोई तोड़ ज़मीन के बासियों के पास न हो। यह साइंस दान बिल जबर उसकी शैतानी चर्ख़ी का पुर्ज़ा बना दिये गए हैं।

उड़न तशतरियों को गैर जानिबदार अमरीकी मुहक़्क़िक़ीन ने सिर्फ़ साइंस की रू से समझने की कोशिश की और यहीं उनसे ग़लती हो गई। हम हदीस शरीफ़ की रौशनी में इन्हें समझने की कोशिश करेंगे। पहली रिवायत मुस्लिम शरीफ़ में है। हज़रत नव्वास इब्ने सम्आन रज़ि0 की एक तवील रिवायत में नबी करीम सल्ल0 ने दज्जाल की सवारी की रफ़्तार को बयान करते हुए फ़रमायाः "(दज्जाल की सवारी) उस बादल की मानिंद (होगी) जिसे तेज़ हवा उड़ा ले जाती है।"

दूसरी रिवायत मुस्तदरक हाकिम की है। हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमायाः "उस (दज्जाल) के लिये ज़मीन ऐसे लपेट दी जाएगी जैसे मेंढे की खाल लपेट दी जाती है। तीसरी रिवायत में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 नबी करीम सल्ल0 से नक़्ल करते हैं: "दज्जाल के गधे के दोनों कानों के दर्मियान चालीस गज़ का फ़ासला होगा और उसके गधे का एक क़दम तीन दिन की मसाफ़त (तक़रीबन 82 किलोमीटर फ़ी सैकंड) के बराबर होगा और वह अपने गधे पर सवार होकर समंदर में ऐसे घुस जाएगा जैसे तुम अपने घोड़े पर सवार होकर छोटी नाली में घुस जाते हो।"

इन अहादीस में दज्जाल की सवारी गधा बताई गई है। जबकि कुछ मुहक़्क़िक़ीन का कहना है कि उसके लिये "دَابَّة" यअ़नी जानवर का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है और वह किसी भी सवारी को कह सकते हैं। दज्जाल जिस पर सवार होगा वह "دَابَّة" (कोई भी सवारी) होगी, लेकिन हदीस में लफ़्ज़े-हिमार यअ़नी गधा ही आया हो तब भी इससे मुराद कोई भी सवारी हो सकती है। अब आप बरमूदा तिकोन और उड़न तशतरियों की ख़ुसूसियात को दोबारा पढ़िये और दज्जाल को जो कुव्वत दी गई होगी ज़ेल में इसका

मुतालआ कीजिये। मसलनः इसकी सवारी की रफ़्तार इंतिहाई तेज़ होगी। फ़ज़ा में उड़ने के साथ साथ पानी में सफ़र करने और समंद पार कर लेने की सलाहियत भी इस सवारी में मौजूद होगी। वह फ़ज़ा में मुअल्लक़ हो जाएगी। हजम में छोटा और बड़ा होने की सलाहियत रखती होगी। कहीं भी उतरने या फ़ज़ा में ठहर जाने की सलाहियत उसमें होगी।

यहां तक पहुंचने के बाद अब वह मरहला आ गया है जब हम खुल कर मुस्लिम मुहक़्क़िक़ीन की राए नक़्ल कर दें जो वह बरमूदा तिकोन के बारे में रखते हैं। मिस्र के मुहक़्क़िक़ मुहम्मद ईसा दाऊद और आदिल फ़हीमी ने अपनी मक़ाला नुमा किताबों (मुसल्लस बरमूदा) में जो कुछ कहा है (दोनों की किताब का नाम एक ही है) इसका खुलासा यह है:

"उड़न तशतरियां दज्जाल की मिल्कियत और उसी की ईजाद हैं। नीज़ बरमूदा तिकोन के अंदर उसने तिकोन (Triangle) की शक्ल का क़िला नुमा महल बनाया हुआ है जहां से बैठ कर वह अपने चेलों को हिदायात दे रहा है और अपने निकलने के वक़्त का इंतेज़ार कर रहा है। इस पूरे मिशन में उसको इबलीस और उसके तमाम शयातीन की मदद हासिल है। जो तमाम दुनिया के अंदर सियासी, इक़्तिसादी, समाजी और अस्करी मैदानों में जारी है। किस मुल्क में किसकी हुकूमत होनी चाहिये? किस मुल्क को कितनी माली इम्दाद देनी चाहिये? किस मुल्क में अपनी फ़ौज उतारनी चाहिये? और किस मुल्क को तबाह करना है? नीज़ मुस्लिम दुनिया में मौजूदा दरयाओं पर कहां कहां डेम बनाने हैं? अपने हामी नज़रियात वाली पार्टी को इक़्तिदार में लाना और हर उस क़ौम और फ़र्द को अभी से रास्ते से हटाना है जो आगे चल कर दज्जाल के सामने खड़ा हो

सके।

जहां तक बरमूदा तिकोन में इबलीस के मर्कज़ का तअल्लुक़ है इस पर कोई इश्काल नहीं, शैतान का तख़्त समंदर पर ही बिछता है......अलबत्ता दज्जाल की वहां मौजूदगी पर यह एतिराज़ हो सकता है कि नबी करीम सल्ल0 ने दज्जाल को मश्रिक़ में बयान फ़रमाया था जबकि बरमूदा तिकोन मग़रिब में है। इसका जवाब यह देते हैं कि नबी करीम सल्ल0 के दुनिया से पर्दा फ़रमा जाने के बाद दज्जाल इस तरह बंधा हुआ नहीं रहा जिस तरह हज़रत तमीम दारी रज़ि0 ने उसको बंधा हुआ देखा था। बल्कि आप सल्ल0 के विसाल के बाद वह जंजीरों से आज़ाद हो गया था और मुस्तक़िल अपने ख़ुरूज के लिये राह हमवार करता रहा है। अलबत्ता इसकी असल हालत उसी वक़्त ज़ाहिर होगी जब वह दुनिया के सामने ज़ाहिर होकर अपनी ख़ुदाई का एलान करेगा।''

दारुल उलूम देवबंद के फ़ाज़िल आलिमे दीन मौलाना आसिम उमर जिन्होंने आख़िरी ज़माना के मुतअल्लिक़ अहादीस की अस्री तत्बीक़ पर बहुत उम्दा व नज़रिया साज़ किताब ''तीसरी जंगे अज़ीम और दज्जाल'' लिखी है, अपनी नई शुह्रा आफ़ाक़ किताब ''बरमूदा तिकोन और दज्जाल'' में तहरीर करते हैं:

''हक़ीक़त जो भी हो लेकिन इतनी बात यक़ीनी है कि बरमूदा तिकोन और शैतानी समंदर जैसी जगहें इबलीस और उसके हलीफ़ों के ख़ुफ़िया कमीनगाहें हैं जहां से वह इंसानियत के ख़िलाफ़ एक फ़ैसलाकुन जंग की तैयारियां मुकम्मल कर चुके हैं। अब वह फ़िल्मों, ड्रामों, स्टेज शो और इश्तिहारात के ज़रीए अपने मानने वालों को पैग़ाम दे रहे हैं कि ''नजात दबिंदा'' के निकलने का वक़्त क़रीब है। इन साज़िशों में उनके साथ तमाम शयातीन जिन्नात में से हों या

इंसानों में से, सब शरीक हैं। उन्होंने दुनिया पर इबलीस की हुकूमत क़ाइम करने और हर ईमान वाले को इबलीस के तर्कश के आख़िरी तीर, काने दज्जाल के सामने सज्दा रेज़ होने की इंतिहाई ख़तरनाक और ख़ुफ़िया तैयारी की है। लेकिन क्या दुशमनाने इस्लाम की इतनी तैयारियां देख कर मुसलमानों को इसी तरह अपनी ज़िम्मेदारियों से ग़ाफ़िल अपनी ज़िंदगी में ही मदहोश पड़े रहना चाहिये? मुस्तक़बिल के ख़तरात से लापरवाह घटाओं के सिरों पर आने के बावजूद अभी भी हर एक को यही फ़िक्र लगी है कि उसकी अपनी हैसियत बरक़रार है। उसके अपने मर्तबा व मक़ाम और हल्क़ए इज़्ज़त व जाह पर कोई हर्फ़ न आए। दीन भी हाथों से न निकले और बड़ी बड़ी बिल्डिंगें भी क़ुर्बान न हों। क्या ऐसा हो सकता है कि अल्लाह भी राज़ी हो जाए और इबलीस भी नाराज़ न हों। क्या यह मुम्किन है कि इबलीस के बनाए निज़ाम से बग़ावत भी न करनी पड़े और वहदहू ला शरीक का दीन भी ग़ालिब आ जाए। हमारे नफ़्स ने हमें कैसे धोके में डाल दिया कि अल्लाह के दुशमनों से भी डरते रहें और मुत्तक़ीन में भी हमारा शुमार हो जाए। मौजूद हालात में अगर कोई बिल्कुल ही हालात से अंधा हो रहा है तो उसकी बात अलग है, लेकिन वह मुसलमान जो थोड़ा बहुत भी हालात का इदराक रखता है वह किस तरह सुकून से सो सकता है? इतना नाज़ुक वक़्त जबकि हर मुसलमान के ईमान की ताक में शैतानी भेड़िये घात लगाए बैठे हों। तारीख़े इंसानी के भयानक तरीन फ़ित्ने अपने जबड़े खोले तमाम इंसानियत को निगल जाने के दर पे हों। अगर अब भी बेदार होने का वक़्त नहीं आया तो फिर यक़ीन जानिये इसके बाद फिर सूरे इसराफ़ील ही सोने वालों को जगाएगा।"

क़ारईने किराम! ज़बान का ज़ोर और दिल का दर्द आप ने

मुलाहिज़ा फ़रमाया। एक सच्चे दाई की यही पहचान होती है। बहरहाल! आसार व क़राइन बताते हैं कि तौबा की मुहलत ज़्यादा नहीं। "तलाफ़ी माफ़ात" के लिये मज़ीद इंतेज़ार नुक़्सानदेह होगा। हर मुसलमान को रात को बिस्तर पर जाने से पहले खुदा और उसके बंदों से अपना मुआमला साफ़ कर लेना चाहिये। और हर सुब्ह बिस्तर से उठने से पहले यह अज़्म करके निकलना चाहिये कि: (1) आइंदा अपने इल्म और इरादे से गुनाह न करेगा। (2) और इस्लाम और अह्ले इस्लाम के लिये जो हो सका कर गुज़रेगा।

शैतान और उसकी शैतानी ताक़तें दुनिया पर अपना तसल्लुत क़रीब देख रही हैं......जबकि अल्लाह की तदबीर कुछ और ही चाहती है। वह अपने बंदों को उनके दुशमन के मुक़ाबले में कामियाब देखना चाहती है। खुशनसीब हैं वह लोग जो अल्लाह रब्बुल आलमीन की मंशा पूरी करने के लिये कमर हिम्मत बांध लें और दज्जाली क़ुव्वतों की ग़ैर मामूली ज़ाहिरी ताक़त से मरऊब होने के बजाए तक़्वा के ज़ेवर से आरास्ता होकर हर सतह पर जिहाद का अलम बुलंद करें।

अमरीका में खुफ़िया दज्जाली हुकूमत

अगर्चे उन्वान पढ़ते ही आप चौंक पड़ेंगे, लेकिन अगली चंद सतरें पढ़ने तक सब्र कर लें तो यक़ीन कीजिये आप का तअज्जुब और हैरत हक़ीक़त शनासी में बदल सकता है। वह हक़ीक़त जिसे आप अपने गर्द व पेश में देखते हैं, लेकिन इसके पसमंज़र से नावाक़िफ़ थे, आज मैं आप को इस अधखुली हक़ीक़त से रौशनास करवाने चला हूं। अमरीका का अस्ल हुक्मरान "कौंसिल आफ़ फ़ारन रीलेशन्स" (Council of Foreign Relation's) नामी खुफ़िया इदारा है जिसका मुख़्तलिफ़ CFR है। बज़ाहिर यह एक अमरीकी थिंक टैंक है लेकिन दरहक़ीक़त यह अमरीका में एक छपी हुई हुकूमत है। ऐसी हुकूमत जो दज्जाल की राह हमवार करने के लिये दुनिया के उस सबसे तरक़्क़ी याफ़्ता बर्रे आज़म को इस्तेमाल कर रही है। इसके क़्याम में आलमी यहूदी बैंकरों और अलूमीनाती सहीनियों का हाथ था। जिनमें Jacob Schiff, Paul Warburg, John D. Rockefeller, J.P. Moergan जैसे बैनुल अक़्वामी बैंकर थे। वही लोग जिन्होंने फ़ेडरल रीज़र्व सिस्टम (Federal Reserve System) के तहत अमरीका को अपना गुलाम बना लिया। इस राज़ की हक़ीक़त समझने के लिये हमें "अलूमीनाती" नामी इस्तिलाह से वाक़फ़ियत हासिल करना होगी।

अलूमीनाती क्या है?

अलूमीनाती का क़्याम यकुम मई 1776 ई0 को उन कट्टर

यहूदियों के हाथों अमल में आया था जो दज्जाल को मसीहा और नजात दहिंदा मानते हैं। इसका बानी Dr. Adam werishaupt था जो कि Bavaria (यह जर्मनी का एक सबसे मज़बूत और ताक़तवर सूबा है) की Ingolstadt यूनीवर्सिटी का एक उस्ताद (प्रोफ़ेसर) था। यह शख़्स वैसे तो कट्टर यहूदी था, लेकिन बाद में यहूदे मर्दूद की रिवायती दरोग़ गोई के मुताबिक़ उसने अपना असल मज़हब छिपाने के लिये कैथोलिक मज़हब (Catholic) अपना लिया था। वह एक साबिक़ा "Jesuit Priest" था जो कि इस Order से अलग हो गया था और अपनी डेढ़ ईंट की तन्ज़ीम बना ली थी। "अलूमीनाती" (Illuminati) का लफ़्ज़ "Lucifer" से अख़्ज़ किया गया है जिसका इंजील के मुताबिक़ मतलब है: "रौशनी को उठाने वाला और हद से ज़्यादा ज़हीन।" (isaiah 14.12)। Lucifer दरहक़ीक़त इंजील और तौरात में इबलीस को दिया हुआ नाम है।

Weishaupt और उसके पैरूकार अपने आप को चंद चुने हुए लोगों में से समझते थे। उनके ज़ुअ़म के मुताबिक़ उनके पास यह सलाहियत थी कि सिर्फ़ वही दुनिया पर हुक्मरानी करने के अहल हैं और कुर्रहये अर्ज़ पर अमन क़ाइम कर सकते हैं। उनका सबसे बड़ा मक़्सद "Nerus Order Seclram" का क़याम था।

"Nouls Order Secorum" का मतलब होता है "New Secular Order" यही लफ़्ज़ फ़्री मैसन के लाजिज़ और अमरीकी एक डालर के नोट पर लिखा होता है। वाज़ेह रहे कि अगर्चे इसका मफ़्हूम New World Order ज़रूर है लेकिन इसका मतलब एक आलमी लादीनी (सैकूलर) तर्ज़े हुकूमत का क़याम है।

इस तंज़ीम से वाबस्ता होने वाले लोगों (यअ़नी अलूमीनाती के निचले दर्जे के अफ़राद) को बताया गया था कि अलूमीनाती का मक़्सद इंसानी नस्ल को क़ौम, हैसियत और पेशे से बालातर होकर एक ख़ुशहाल ख़ानदान में तबदील करना था। इस काम के लिये उनसे एक हलफ़ भी लिया गया था जो कि फ़्री मैसन के हलफ़ की तरह होता है। जब तक कारकुनों की वफ़ादारी को जांच नहीं लिया गया था, उस वक़्त तक उनका अलूमीनाती में शामिल नहीं किया गया था और जब तक कोई रुक्न अलूमीनाती के बिल्कुल अंदरूनी हल्के तक नहीं पहुंचा जाता था, उस वक़्त तक उसे उस इदारे का मक़्सद नहीं बताया जाता था।

उस तन्ज़ीम के अस्ल मक़ासिद दर्जे ज़ेल हैं:

☆ तमाम मज़ाहिब का ख़ातमा।

☆ तमाम मुनज़्ज़म हुकूमतों का ख़ातमा।

☆ हुब्बुल वतनी का ख़ातमा।

☆ तमाम ज़ाती जाइदाद का ख़ातमा।

☆ ख़ानदानी ढांचे का ख़ातमा।

☆ New World Order का क़्याम या एक "बैनुल अक़्वामी हुकूमत" का क़्याम जिसे आप "आलमी दज्जाली हुकूमत" कह सकते हैं।

फ़ित्री तौर से इस तन्ज़ीम के अस्ल मक़ासिद को तमाम मिम्बरान के सामने नहीं रखा जाता था और उन्हें सिर्फ़ इसी बात पर सब्र करना पड़ता था कि इस तन्ज़ीम का मक़्सद इंसानी नस्ल की ख़ुशहाली है, लेकिन इन सब में एक चीज़ सबसे ज़्यादा हैरत अंगेज़ है जिस पर ख़ुद अलूमीनाती के राहनुमा ने लिखा:

"सबसे ज़्यादा ख़ुश आइंद बात यह है कि बड़े बड़े

Protestant और Reformed फ़िर्क़े के ईसाई पादरी जिन्होंने हमारी तन्ज़ीम में शमूलियत इख़्तियार की है वह हमें एक सच्चे और ख़ालिस ईसाई की नज़र से देखते हैं।"

इस प्लान को जर्मनी के Protestant हुक्मरानों के यहां बड़ी पज़ीराई मिली जिसके तहत कैथोलिक चर्च की तबाही को यक़ीनी बना दिया गया था और उन्होंने इस तन्ज़ीम में शमूलियत इख़्तियार की और साथ ही साथ वह फ़्री मैसनरी का तजुर्बा भी लाए जिसको उन्होंने खूब इस्तेमाल किया और अपने मक़्सद के हुसूल की कोशिशें शुरू कीं। बिलआख़िर 16 जुलाई 1982 ई० को Wilhelmsbad के एक इज्लास में फ़्री मैसनरी और अलूमीनाती के दर्मियान इत्तिहाद क़ाइम हुआ। इस इत्तिहाद की वजह से मौजूदा दौर की तक़रीबन तमाम ख़ुफ़िया यहूदी तन्ज़ीमों को मिला दिया गय और सारी दुनिया में दज्जाली निज़ाम की बरतरी के लिये मसरूफ़े अमल 30 लाख से ज़्यादा पैरूकार इस ख़ुफ़िया दज्जाली मिशन में शामिल हो गए। इस भयानक इजलास में जो कुछ मंज़ूर किया गया यह तो शायद बाहर की दुनिया कभी नहीं जान सकेगी, क्योंकि जो लोग ग़ैर शऊरी तौर पर इस तहरीक का हिस्सा बन गए थे, उन्होंने भी अपने बड़ों से अहद कर लिया था कि वह कुछ भी ज़ाहिर नहीं करेंगे। एक शरीफ़ फ़्री मैसन जिसका नाम Comt de virea था जब उससे यह पूछा गया वह अपने साथ क्या ख़ुफ़िया मालूमात लाया है? तो उसने महज़ यह जवाब दिया:

"मैं इसे आपके सामने ज़ाहिर नहीं कर सकता हूं, मैं बस इतना कह सकता हूं कि यह इससे बहुत ज़्यादा संगीन है जितना कि तुम समझते हो। इस साज़िश के जाल को इतनी अच्छी तरह से बनाया गया है कि बादशाहों और गिर्जा घरों (कलीसा) का इससे बचना

नामुम्किन नज़र आता है।" (Wehster, world Rurrution)

इस तहरीक के चंद साल बाद यूरप में यहूद को वह तहफ़्फ़ुज़ और सुकून मिलना शुरू हो गया जिसका इससे पहले तसव्वुर नहीं किया जा सकता था। इससे पहले ग़ैर यहूदियों को मैसनरी की तहरीक का मिम्बर बनने पर पाबंदी थी जिस को उठा लिया गया, लेकिन सबसे अहम फ़ैसला यह किया गया था कि अलूमीनाती की गुलाम फ़्री मैसनरी का सदर फ़्रेंकफ़र्ट मुंतक़िल कर दिया गया जो खुद यहूदी सरमाया दारों बिलख़ुसूस बैंकारों का गढ़ था।

दुनिया पर क़ब्ज़े का अलूमीनाती मंसूबाः

यूरप की मईशत को पूरी तरह अपनी गिरफ़्त में लेने के बाद अलवीनाती दज्जालियों ने इस बात का मंसूबा बनाना शुरू कर दिया कि दुनिया को अपना गुलाम बनाने के लिये अपने दाइरा इख़्तियार को पूरी दुनिया में फैला दिया जाए। चंद दहाइयों के बाद यह बात ज़ाहिर होना शुरू हो गई कि इस मक़्सद को हासिल करने के लिये पूरी दुनिया में जंगलों का एक सिलसिला छेड़ना पड़ेगा जिसकी मदद से Old World Order (पुराने वर्ल्ड आर्डर) का ख़ातमा किया जाएगा जबकि New World Order (नया आलमी निज़ाम) के क़्याम को मुम्किन बनाया जाएगा। इस पूरे मंसूबे को वाज़ेह शक्ल में अल्बर्ट पाइक (Albert Pike) ने पेश किया जो कि खुद फ़्री मैसनरी के Ancient and Accepted scottish rite में Soverign Grand COmmander दर्जे पर फ़ाइज़ था जबकि अमरीका में सबसे बड़ा अलूमीनाती था। इस शख़्स ने अपने Guisseppe Mazzini के नाम ख़त में इस तरह से लिखा था (ख़त की तारीख़ 15 अगस्त 1871 ई० थी):

"पहली बैनुल अक़्वामी जंग इसलिये छेड़नी होगी ताकि ज़ारे रूस को तबाह किया जा सके ताकि इस पर अलवीनाती ऐजंटों की हुकूमत क़ाइम की जा सके। रूस को बाद में एक ख़त्तरनाक मुल्क की शक्ल दी जाएगी ताकि अलवीनाती का प्लान आगे बढ़ाया जा सके।

दूसरी जंग के दौरान इस कशमकश से जो कि जर्मन क़ौम परस्तों और सियासी सहीवनियों के दर्मियान पाई जाती है, फ़ाएदा उठाना होगा। इस जंग के नतीजे में रूस के असर व रुसूख़ को बढ़ाया जाएगा और अर्ज़े फ़लस्तीन में इस्राईली रियासत के क़्याम को मुम्किन बनाया जाएगा।

जबकि तीसरी जंग की मंसूबा बंदी इस तरह से की गई है कि अलूमीनाती एजंट सहीवनी रियासत और अरबों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ को हवा दी जाएगी। यह झड़प सारी दुनिया को अपनी लपेट में लेगी और इसके ज़रीए बेदीन दहरियों को सामने रख कर एक इंक़िलाबी तबदीली लाई जाएगी जिससे तमाम मुआशरे मुतअस्सिर होंगे। इस जंग में लादीनियत और वह्शियों के इंक़िलाब को इतनी भयानक तरह से दिखाया जाएगा कि लोग इससे पनाह मांगेंगे और उन तमाम चीज़ों को तबाह करने की कोशिश करेंगे जो इंक़िलाबियों से मुंसलिक होगी......हत्ता कि वह ईसाईयत और दूसरे मज़ाहिब को भी इंतिशार का शिकार पाएंगे और इस वजह से वह तमाम मज़ाहिब पर चढ़ दौड़ेंगे, जिसके बाद वह ख़ुद को सही रास्ता Lucifer के साफ़ और रौशनी भरे रास्ते में पाएंगे। इस तरह से हम एक ही वक़्त में ईसाइयत और लादीनियत दोनों पर क़ाबू पा लेंगे।"

अल्बर्ट पाइक की शख़्सियत और उसके मज़हब व फ़लसफ़ा के

उसूल समझने के लिये हमें उसकी दर्ज ज़ेल तहरीर पर ग़ौर करना चाहिये जिसका नाम है: "Morals and Dogma" (सबक़ और नज़रिया) इसको उसने 1871 ई० में तहरीर किया था। इसके अलावा उसके चंद अहकामात हैं जो उसने अपनी 23 सुप्रीम कौंसिलों को दिये थे। यह अहकामात उसने 1889 ई० में Bastille Day के मौक़ा पर दिये थे। शैतानी दिमाग़ रखने वाले उस शख़्स की यह इंसानियत सोज़ तहरीर मुलाहिज़ा फ़रमाइये:

"ताक़त लगाम के साथ हो या बेलगाम, यह इसी तरह ज़ाए हो जाती है जिस तरह बारूद खुली फ़ज़ा में सिर्फ़ जल सकता है। इसी तरह जिस तरह भाप किसी टेक्नालोजी के बग़ैर हवा ही में उड़ जाती है और अपने आप ही को ख़त्म कर लेती है। यह सिर्फ़ तबाही और ज़ियाअ़ है......न कि तरक़्क़ी और ख़ुशहाली।

लोगों की ताक़त वह चीज़ है जिसको हमें बेहतरीन तरीक़े से इस्तेमाल करना है और उसको क़ाबू में करना है......उसका दानिश व अक़्ल के साथ लगाम देना है। इंसानी नस्ल के चारों तरफ़ तने हुए तवह्हुम परस्ती, तअ़स्सुब और जिहालत के मफ़रूज़ों को अपने हक़ में इस्तेमाल करने के लिये इस ताक़त का एक दिमाग़ और क़ानून होना चाहिये, तब ही जाकर हमें मुस्तक़िल नताइज मिल सकते हैं और तब ही सही मअ़नों में तरक़्क़ी हो सकती है। इसके बाद नर्म फ़ुतूहात (छोटी और आसान फ़ुतूहात) का नम्बर आता है। जब तमाम ताक़तों को मिलाया जाता है और उसका दानिशवरों के ज़रीए (जोकि रौशन दिमाग़ हों यअ़नी "Illuminated" हों) और दाएं बाज़ू के क़वानीन और इंसाफ़ के अलावा एक बाज़ाब्ता तहरीक और मेहनत के ज़रीए लगाम दी जाएगी। फिर वह इंक़लाब जो हमने कई ज़बानों से तैयार करके रखा हुआ था, शुरू हो जाएगा। इसकी वजह

यह है कि ताकृत बेलगाम होती है और यही वजह है कि इंक़िलाब अपने साथ नाकामी लाता है।"

(Morals and Dogma pp 1-2)

यह शख़्स अपने खुदा और अपने मज़हब का तआरुफ़ करवाते हुए कहता है:

"हम अवामुन्नास से यह कहते हैं: "हम एक खुदा की इबादत करते हैं लेकिन यह वह खुदा है जिस पर सब बग़ैर तोहमात के यक़ीन करते हैं। मैं तुम Soverign Grand Instructions General से यह कहता हूं कि तुम ये अपने 30, 31 और 32 डिग्रियों के भाइयों के सामने यह बात दोहराना:

"मैसूनक (फ़्री मैसन) मज़हब के तमाम ऊंची डिग्री के मिम्बरों की यह ज़िम्मादारी है कि इस मज़हब को इसकी ख़ालिस शक्ल में बरकरार रखा जाए Lucifer (यअ़नी शैतान) के नज़रिये को मद्दे नज़र रखते हुए।"

शैतान के बारे में यह सफ़्फ़ाक शख़्स कहता है। वाज़ेह रहे कि शैतान के लिये उसने Lucifer का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है (Lucifer के मअ़नी हैं: इबलीस। इंजील के अंग्रेज़ी तर्जुमे में इबलीस के लिये यही लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है। राक़िम):

"अगर Lucifer खुदा न होता तो क्या Adonay (यअ़नी ख़ैर का ख़ालिक़, मुराद अल्लाह रब्बुल आलमीन हैं) उसका काम ही इंसान से नफ़रत, सफ़्फ़ाकियत और साइंस से दूर रहने की तलक़ीन है। (यहां वह इस (यअ़नी शैतान के बिल मुक़ाबिल ख़ैर के ख़ालिक़) के मज़ालिम को खोल खेल कर बयान करता है।) इसके अलावा Adonay और उसके पादरियों ने उसका ख़ातिमा क्यों नहीं कर दिया? (मआ़ज़ अल्लाह!)

"हां Lucifer ही खुदा है और बदकिस्मती से Adonay भी खुदा है। अब्दी कानून के तहत। क्योंकि रौशनी का तसव्वुर तारीकी के बग़ैर नामुम्किन है, जैसे ख़ूबसूरती का बदसूरती के बग़ैर और सफ़ेद का सियाह के बग़ैर। इसी तरह हमेशा के लिये दो खुदा ही ज़िंदा हो सकते हैं (मआज़ल्लाह!) अंधेरा ही रौशनी को फैलाता है। एक मूरत के लिये बुन्याद की ज़रूरत होती है और किसी गाड़ी में ब्रेक का होना ज़रूरी होता है।" (मआज़ल्लाह)

"शैतानियत का नज़रिया महज़ एक अफ़वाह है और सच्चा और ख़ालिस मज़हब Lucifer (इबलीस) का मज़हब है जो कि Adonay बराबर है (मआज़ल्लाह) लेकिन Lucifer जो कि रौशनी का खुदा और अच्छाई का खुदा है वह इंसानियत के लिये मेहनत कर रहा है Adonay के ख़िलाफ़ जो कि तारीकियों और बुराई का खुदा है।" (मआज़ल्लाह)

ऊपर दी गई तहरीर से यह मालूम किया जा सकता है कि यह फ़िर्क़ा (अलवीनाती) किस तरह से शैतान का पुजारी है और यह बात भी ज़ह्न नशीन कर लेनी चाहिये कि अब फ़्री मैसनरी और अलवीनाती एक ही हैं। एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं। गोया कि यहूदियत की तमाम शाख़ें वाज़ेह तौर पर शैतान का हरकारह बन कर शैतान के सबसे बड़े आलए कार दज्जाल के लिये काम कर रही है।

FBI का एक साबिक़ एजेंट Dan Smoot लिखता है "अमरीका में खुफ़िया तौर पर हुक्मरान इस कौंसिल की कोई ख़ास अहमियत नहीं थी, लेकिन 1927 ई० में जब राक फ़ीलर ख़ानदान ने अपनी दूसरी फ़ाउन्डेशन और ट्रस्ट के ज़रीए उसमें पैसा भरना शुरू कर दिया तो यह अमरीका की सबसे ताक़तवर अथारिटी के तौर पर उभर कर सामने आई।" इसका सबूत कि Council of

Foreign Relation's एक खुफ़िया यहूदी इदारा है, कहीं बाहर से मांगने की भी ज़रूरत नहीं। अंदरूनी गवाही काफ़ी है। इसकी सबसे बड़ी गवाही और क्या हो सकती है कि 1966 ई0 में अपनी सालाना रिपोर्ट में फ्री मैसन के तर्ज़ पर खुफ़िया निज़ामेकार को बयान करते हुए लिखता है: "इस कौंसिल का हर मिम्बर अपनी रुक्न के तवस्सुत से इस बात का इक़रार करता है कि कौंसिल के किसी रुक्न के कहने के अलावा अगर वह कोई बात जो कि Discussion Groups और खाने की मेज़ या दावत में कुछ भी कहा गया है वह खुफ़िया नौइयत का है और इसका इंकिशाफ़ किसी भी सूरत में किसी ग़ैर फ़र्द को इस चीज़ की वजह बन सकता है कि कौंसिल के बोर्ड उसके रुक्न की रुक्नियत ख़त्म कर दें। कौंसिल के क़वानीन के तहत और उसकी आर्टिकल एक के तहत।"

(CFR) Council of Foreign Relation's के एक बोर्ड के डाइरेक्टरों में से एक ने Christian Science Monitor को दिये गए एक बयान यकुम सितम्बर 1961 ई0 में कहा था:

"CFR में नुमाया अफ़राद में सफ़ारती, हुकूमती, तिजारती, बैंकरों, मज़दूर, सहाफ़ी, वकील और तालीम के शोअ़बों से मुंसलिक नुमायां अफ़राद हैं और इन सबको मद्दे नज़र रख कर अमरीकी ख़ारिजा पालीसी का रुख़ मुतअय्यन किया जाता है।"

यही नहीं बल्कि पचास की दहाई से लेकर अब तक जितने भी अहम हुकूमती मुशीर और सैक्रेट्री गुज़रे हैं वह CFR के कभी न कभी रुक्न ज़रूर थे, ख़ास तौर से बुश की इंतेज़ामिया में तो इसकी भरमार मिलेगी। इसी तरह अमरीकी ईवान नुमाइंदगान के एक रुक्न John Rarick ने 28 अप्रेल 1972 ई0 में कहा था:

"CFR एक इस्टेबलिशमेंट है जिसके अफ़राद ऊपर से मुशीरों और सैक्रट्रियों के ज़रीए दबाव डालते हैं। वह ऐसे लोगों को पैसे देती है और फ़ैसला करने वालों से अपने मुतालबात निकलवा लेती है।"

मशहूर अमरीकी दानिशवर गिरिफ़न भी इसी बात की तरफ़ इशारा करता है: "CIA दरहक़ीक़त CFR की ही एक शाख़ लगती है जबकि Franklin D. Rosevelt के ज़माने से अब तक जितने भी अमरीकी इंतेज़ामिया के लोग हैं उनका तअल्लुक़ CFR से ज़रूर रहा है।"

अमरीका की कहानी, एक खुलासाः

आज का तरक़्क़ी याफ़्ता और क़ाबिले रश्क समझा जाने वाला अमरीकी मुआशरा मस्ख़ कर दिया गया है। इसकी अपनी सोच नहीं, अपना इख़्तियार नहीं। इसके निज़ाम को खोखला कर दिया गया है। जो कुद भी हम देख रहे हैं वह क़ौमी सतह पर हो या फिर बैनुल अक़्वामी सतह पर वह सब इस बड़े अलूमीनाती मंसूबे का हिस्सा है जो कि Adam Weishaupt ने 1776 ई0 में पेश किया था।

यक़ीन न हो तो आइये अमरीका मुख़ालिफ़ कम्यूनिस्ट सिस्टम के अहम रुक्न की एक पेश गोई देखते हैं। एक हैरत अंगेज़ सियासी पेशन गोई 1920 ई0 की दहाई में Nikali Leni ने की थी जो कि कम्यूनिस्ट रूस की हुकूमत का एक अहम रुक्न था, उसने कहा थाः

"सबसे पहले हम मशरिक़ी यूरप को क़ाबू करेंगे इसके बाद एशिया के अवाम और फिर हम अमरीका को इस तरह से घेरे में लेंगे जो कि सरमायादारी का आख़िरी किला होगा और हमें उस पर हमला नहीं करना होगा बल्कि वह एक बहुत ज़्यादा पके हुए फल की तरह से ख़ुद ही हमारे हाथों में गिर जाएगा।"

. अगर्चे अब रूस टूट चुका है लेकिन अब ज़रा इसी बयान को उस बयान के साथ मिला कर देखते हैं जो कि 1962 ई0 में दज्जाली रियासत इस्राईल के पहले सदर David Ben Gurion (डेविड बेन गोरियान) ने दिया। इस बयान के बैनस्सुतूर में "आलमी दज्जाली रियासत" के क़याम का अज़्म और उसका ख़ाका वाज़ेह तौर पर भांपा जा सकता है:

"सोशलिस्ट बैनुल अक़्वामी इत्तिहाद जिसके पास एक बैनुल अक़्वामी पुलिस फ़ोर्स होगी और उसका मर्कज़ुल कुद्स (यरोशलम) होगा। 1987 ई0 में मेरे ज़ेहन में दुनिया का नक़्शा कुछ इस तरह से होगा। सर्द जंग माज़ी का एक क़िस्सा होगी जबकि अंदरूनी दबाव और दानिशवर तबक़े की सूरत में ऊपर से दबाव की वजह से सोवियत यूनियन आहिस्ता आहिस्ता जम्हूरियत के सफ़र पर गामज़न हो जाएगा जबकि दूसरी तरफ़ अमरीका पर मेहनत कशों और साइंसदानों के बढ़ते हुए सियासी अहमियत की वजह से अमरीका एक ख़ुश रियासत में तबदील हो जाएगा जिसकी मईशत एक Planned Economy की तरह हो जाएगी (रूसी तर्ज़ की) मश्रिक़ी और मग़रिबी यूरप में नीम आज़ाद कम्यूनिस्ट और ख़ुद मुख़्तार जम्हूरी हुकूमतों की शक्ल में होगा जबकि रूस के अलावा तमाम के तमाम मुमालिक एक बैनुल अक़्वामी इत्तिहाद का हिस्सा होंगे जिसके पास एक बैनुल अक़्वामी पुलिस फ़ोर्स होगी। सारी फ़ौजों का ख़ातमा कर दिया जाएगा और कोई जंग नहीं होगी। यरोशलम में अक़्वामे मुत्तहिदा (सही मअ़नों में अक़्वामे मुत्तहिदा) और एक पूरा निज़ाम बनाया जाएगा जिस में तमाम मुमालिक की यूनियन शामिल होगी जो कि सारी इंसानियत की सुप्रीम कोर्ट होगी ताकि उससे अपने तमाम इख़्तिलाफ़ात ख़त्म किये जा सकें जैसे कि Isaih ने

पेशनगोई की थी।"

(As, pp, 58-60)

David Ben Gurion की बात को आगे बढ़ाते हुए अगर ग़ौर किया जाए तो अमरीका अपनी अंदरूनी मईशत को सब्सिडी देने वाला सबसे बड़ा मुल्क है खुसूसन ज़राअत के शोअ़बे में। वाज़ेह रहे कि उसने यह पेशगोई 1962 ई0 में ही कर दी थी। फिर अक़्वामे मुत्तहिदा की एक अलग पीस कीपिंग फ़ोर्स (UN Peace Keeping Force) पर भी नज़र दौड़ाना चाहिये। "अक़्वामे मुत्तहिदा नए आलमी निज़ाम (New World Order) की तक्मील नहीं बल्कि इसकी शुरूआत है। इसका बुन्यादी किर्दार यही था कि ऐसे हालात पैदा किये जाएं जिनकी मदद से इससे भी ज़्यादा एक मुनज़्ज़म तन्ज़ीम को नई शक्ल दी जाए।" यह अल्फ़ाज़ और किसी के नहीं बल्कि आइज़न हावर के पहले सेक्रेट्री के हैं जिसका नाम Foster Dulles John था।

(War of Peace, Macmillan, 1950 page 40)

UNO की तमाम एजेंसियां ख़ास तौर से एक ही मक़्सद के लिये काम करती हैं यअ़नी New World Order के क़याम को आगे बढ़ाया जाए। इसी तरह ख़लीज की जंग में जो कि 1990-91 ई0 में लड़ी गई थी अमरीकी सदर जार्ज बुश ने उस वक़्त साफ़ साफ़ कहा था कि वह नए आलमी निज़ाम और उसके मक़्सद को आगे बढ़ाएंगे। गोया अब हमें साफ़ साफ़ पता चल गया है कि इस इंतिशार और ग़ैर यक़ीनी सूरते हाल की वजह क्या है? आज जो कुछ हम इक्कीसवीं सदी में देख रहे हैं, बीसवीं सदी में इसकी पूरी प्लानिंग की गई थी। इंसानी रेवड़ को एक लम्बे दौरानिये के क़ौमी और बैनुल अक़्वामी बुह्रानों की तरफ़ हंकाया गया ताकि नए

आलमी निज़ाम New World Order को क़ाइम किया जा सके।

अलूमीनाती के रहनुमा थोड़े हैं लेकिन उनका गुरूप बहुत ज़्यादा ताक़तवर है जिसमें बैनुल अक़्वामी बैंकर, सरमायादार, साइंसदान, अस्करी और सियासी रहनुमा, तालीम के माहिर और मईशतदान शामिल हैं। यह सब मिल कर लोगों को सियासी, समाजी, नस्ली, मआशी और मज़हबी गिरोहों की बिना पर हांपते हैं। वह उन गुरूपों को हथियार भी देते हैं और पैसा भी ताकि वह एक दूसरे के ख़िलाफ़ हो जाएं और आपस में लड़ पड़ें। वह चाहते हैं कि इंसानियत अपनी तबाही की तरफ़ ख़ुद चली जाए और यह उस वक़्त तक जारी है जब तक कि तमाम दीनी और सियासी इदारे तबाह न हो जाएं और कई रज़ु का इक़्तिदार बिला शिर्कत ग़ैरे उनके पास न आ जाए।

अगर कोई इस सब को यहूद साज़िश कहे तो यह कुछ ग़लत नहीं बल्कि यह तो ऐसा ही है जैसा कि हक़ीक़त को चंद अलफ़ाज़ में समेट दिया जाए। यह वाज़ेह तौर पर एक शैतानी साज़िश है ज़मीन पर इस साज़िश के नुमाइंदे यहूदी हैं क्योंकि इसको बनाने वाले Warburg, Karl Mara, Weishaupt ख़ानदान Jacob Schiff, Roths Childs वग़ैरा सबके सब यहूदी थे। बैनुल अक़्वामी साज़िशों पर लिखने वाले ज़्यादा मुसन्निफ़ीन से सबसे बड़ी ग़लती यही होती है कि वह अपने दुशमन की फ़ित्रत सही मअ़नों में बयान नहीं करते। दुनिया के ज़्यादातर लोगों का ख़्याल है कि यह लोग एक ऐसी जंग में मुब्तला हैं जो उनके ख़ून और गोश्त (यअ़नी जिस्मों) के ख़िलाफ़ है जबकि वह इस बात को मुस्तरद कर देते हैं कि उनका असल दुशमन शैतान और उसके शतविंगड़ों का जत्था है जो कि इस दुनिया में अंधेरों के बादशाह और बुराई के मर्कज़ व

महवर दज्जाले अक्बर की मुतलकुल इनान हुक्मरानी के लिये काम कर रहा है।"

इस ग़लती की वजह से अमरीका के मोअ़तदिल मिज़ाज लोग यह समझते हैं कि इस साज़िश का मुक़ाबला बिला मुहिब्बे वतन अमरीकी उस वक़्त कर सकते हैं जब वह कांग्रेस का कंट्रोल दोबारा हासिल कर लें और जब नए पुरज़ोर आवाज़, अच्छी तरह इल्म रखने वाले, अच्छी ज़हनियत वाले सियासी रहनुमा जिन्होंने इस पर काम बहुत पहले से किया हुआ हो, निज़ाम और साज़िश पर पूरी तरह से हमला करें।

उन्हें याद रखना चाहिये कि वह एक सियासी या फिर किसी माद्दी दुशमन का मुक़ाबला नहीं कर रहे हैं बल्कि उनका अस्ल दुशमन तो शैतान या (Lucifer) इबलीस है जो कि अलूमीनाती का खुदा है। अलूमीनाती इबलीसी साज़िश है। बहुत बड़े दर्जे पर इस इबलीसी साज़िश के बानियों के बारे में कोई शक नहीं कि वह इबलीस से बराहे रास्त राबते में हैं। यह वही लोग हैं जोकि खुफ़िया शैतानी तन्ज़ीमों के मुख़्तलिफ़ दर्जों से गुज़रते हुए अब दज्जाल के कारिंदे कहलाते हैं और दुनिया को एक ज़बर दस्त बुहरान की तरफ़ ले जाने की सर तोड़ कोशिश कर रहे हैं ताकि उसकी तह से अपने झूटे खुदा की हुक्मरानी की राह हमवार करें। यह शैतानी ताक़त जिसमें बदी ही बदी है, उसको सिर्फ़ एक रूहानी कुव्वत ही तोड़ सकती है जिसके पास उससे भी ज़्यादा इख़्तियार और ताक़त हो और किसे शुबा है कि अज़ीम शैतानी ताक़त के हामिल मलऊन शख़्सियतों इबलीस और दज्जाल के मुक़ाबले की ताक़त अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै0 और हज़रत मेहदी रज़ि0 को दी है। मुहिब्बे वतन और मुंसिफ़ मिज़ाज अमरीकियों या कोई और, अगर

वह इस साज़िश का तोड़ करना चाहते हैं जिसने अमरीका को और उसके तवस्सुत से पूरे कर्रह रज़ को जकड़ लिया है और जो सिर्फ़ मुसलमानों के ख़िलाफ़ नहीं, पूरे आलमे इंसानियत के ख़िलाफ़ भयानक मंसूबा है तो उन्हें रूहानी शख़्सियतों की पैरवी करना पड़ेगी जिनके हाथों अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इंसानियत को इस अज़ीम फ़ित्ने से नजात दिलाएगा। उन्हें सच्चे मसीह (सय्यदना हज़रत ईसा अलै0) पर सही सही ईमान लाना होगा। वह सच्चा मसीह जो आख़िरी सच्चे नबी पर ईमान लाने की दावत देगा और उसके उम्मतियों की क़्यादत करते हुए पूरी दुनिया को एक मुंसिफ़ाना और आदिलाना निज़ाम देगा।

दज्जाली रियासतः मश्रिक़ व मग़रिब की नज़र में

जब दज्जाल, दज्जाली निज़ाम या दज्जाली रियासत का ज़िक्र किया जाता है तो बअ्ज़ लोग इसे "मज़्हबी ज़ोहदसी" या "रूहानी हसासियत" क़रार देते हैं। उनके ख़्याल में यह एक नाक़ाबिले तवज्जो या नाक़ाबिले ज़िक्र चीज़ को ग़ैर मामूली अहमियत दिये जाने का ग़ैर ज़रूरी और ग़ैर मुफ़ीद अमल है। तअज्जुब है कि ऐसे हज़रात न हदीस शरीफ़ से रुजूअ़ करते हैं जो हमें फ़ित्नए दज्जाल से इस अहमियत और इतनी ताकीद के साथ आगाह करती है कि सामईन यूं समझते थे गोया हम मस्जिद से निकलेंगे तो ख़ुरूजे दज्जाल का वाक़िआ हो चुका होगा और न यह हज़रात अपने गिर्द व पेश में दज्जाली अलामात, दज्जाली इस्तिलाहात, दज्जाली पैग़ामात और दज्जाली अख़्लाक़ियात को कारफ़रमा देखते हैं जो हर लम्हे हमें चौकन्ना कर रही हैं कि दज्जाल के लिये स्टेज हमवार करने का अमल तेज़ तर हुआ जा रहा है। ऐसे क़ारईन के लिये हमने ज़ेरे नज़र किताब का यह हिस्सा मख़्सूस किया है ताकि वह हक़ीक़त को वह्म और सर पे आ पहुंचे ख़तरे को दूर दराज़ की अफ़वाहें क़रार न दें। फ़ित्नए दज्जाल से आगाह न होना और उसकी ज़बरदस्त मुक़ावमत के लिये तैयारी न करना बजाए ख़ुद उस फ़ित्ना में मुब्तला होने की अलामत है। मुतज़क्किरा बाला अहबाब की तसल्ली व तशफ़्फ़ी के लिये यहां मश्रिक़ व मग़रिब से एक एक तहक़ीक़ पेश की जा रही है जिस में साफ़ तौर पर और खुल कर आलमी निज़ामे हुकूमत को "आलमी दज्जाली रियासत" का ब्लू

प्रिंट कराद दिया गया है। मश्रिक़ के अह्ले इल्म व तहक़ीक़ में से हमने जो मक़ाला चुना है वह माहना मा "फ़िक्र व नज़र" में "इस्राईल से इस्राईल तक" के उन्वान से शाए हुआ। मक़ाला निगार डाक्टर अबरार मुहीउद्दीन (शोअ़ब उलूमे इस्लामिया, इस्लामिया यूनीवर्सिटी, बहावल पुर) के ज़ौक़े तहक़ीक़ और उस्लूब निगारिश को तसहीन पेश करते हुए हम शुक्रगुज़ारी के गहरे जज़्बात के साथ उनकी यह बेहतरीन काविश यहां पेश कर रहे हैं। इसके बाद एक मग़रिबी मुसन्निफ़ की किताब की तलख़ीस हमारे दावा का बेहतरीन सबूत है।

मअ़रकए इश्क़ व अक़्ल

इंहिदाम और क़्यामः

मअ़रकए इश्क़ व अक़्ल जारी है। ख़ुदा परस्ती और माद्दा परस्ती आमने सामने हैं। रहमान के बंदों और दज्जाल के चेलों के दर्मियान मअ़रकए इश्क़ व अक़्ल अपने उरूज पर पहुंचना चाहता है। वह मअ़रका......जो अज़्ल से आदम और इबलीस, इब्राहीम और नमरूद, मूसा व फ़िरऔन में जारी है......ज़ोरदार अंदाज़ में फिर बपा हो चुका है। उसकी चिंगारियां सुलगते सुलगते शोला बन गई हैं। यह शोले भड़कते भड़कते अंक़रीब आतिश फ़शां बन जाएंगे......और फिर......पूरी दुनिया रूहानियत और माद्दीयत, रहमानियत और दज्जालियत के दर्मियान बपा होने वाली इस जंग के शोलों में लपेट दी जाएगी जिसकी आग अदन में लगी होगी लेकिन उसकी रौशनी से शाम में ऊंटों की गर्दनें नज़र आएंगे। "दज्जाली रियासत" के इंहिदाम और "रहमानी रियासत" के क़्याम से पहले इस मअ़रके का मैदान सजने वाला है।

इफ़्तिताही और इख़्तितामी बुन्यादः

अस्रे हाज़िर में इस रिवायती मअ़रके की कई बुन्यादें हैं। इफ़्तिताही बुन्याद का ज़िक्र किताब के शुरू में हो चुका है। इख़्तितामी बुन्याद का तज़किरा यहां किताब के आख़िर में किया जाता है। इस मअ़रके की जिसमें रूहानियत और माद्दियत आमने सामने हैं, एक बुन्याद उस वक़्त पड़ी जब ख़िलाफ़ते उस्मानिया के सुकूत के लिये दज्जाली क़ुव्वतें मिल कर ज़ोर लगा ही थीं और इस अर्ज़ के लिये अर्ज़े हरमैन को उसकी सरपरस्ती से निकालना चाहती

थीं। जब तक ख़िलाफ़त को हरमैन की ख़िदमत की सआदत हासिल थी तब तक पूरी दुनिया के मुसलमान उसे अपना सरपरस्त और अपने बे आसरा सरों पर साएबान समझते थे। नुमांइदगाने दज्जाल का इत्तिहाद इस कोशिश में था कि हरमैन शरीफ़ैन पर अगर ख़िलाफ़ते उस्मानिया का साया नहीं रहता तो अलकुद्स लेना भी आसान हो जाएगा। बैतुम मुक़द्दस के सिहन में मौजूद मुक़द्दस चट्टान के गिर्द दज्जाल का कस्रे सदारत तामीर करने के लिये ज़रूरी था कि उस्मानी सलातीन की जगह जम्हूरी हुक्मरान या इलाक़ाई बादशाहतें क़ाइम हो जाएं। जब यह साज़िश कामियाब हुई तो "बिलादुल हरमैन" उस्मानी ख़ुलफ़ा के हाथ से जाते रहे। सरज़मीने हिजाज़ में उस्मानी ख़िलाफ़त की जगह सऊदी मम्लकत क़ाइम हा गई। ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन पूरी मिल्लते इस्लामिया के मफ़ाद का मुहाफ़िज़ होता है जबकि "जलालतुल मलिक" अपनी मम्लकत की हुदूद में अपने इक़्तिदार के तहफ़्फ़ुज़ को अव्वलीन तर्जीह देते हैं। यह अलग बात है कि उन इक़्तिदार परस्त तर्जीहात के बावजूद जलालतुल मलिक साहिबान का न जलाल बाक़ी है न मुल्क। उनका जलाल उस दिन रुख़्सत हो गया जब उनके मुल्क में माल आया था और वह खजूर और दूध वाली जफ़ाकश ज़िंदगी के बजाए तेल और गैस की आमदनी से हासिल होने वाली सहूलत पसंदी के आदी हो गए थे।

अर्ज़े कुद्स से अर्ज़े मुक़द्दस तकः

तारीख़ का रुख़ मोड़ देने वाला यह दिन 1939 ई० के मौसमे गर्मा में उस वक़्त आया जब सऊदी अरब के मश्रिक़ में "अलअहसा" नामी मक़ाम पर एक कुवें की खुदाई हो रही थी। इस खुदाई से क़ब्ल अर्ज़े हरमैन "वादी ग़ैर ज़ी ज़रअ़" थी। यहां

माद्दियत न थी, रूहानियत ही रूहानियत थी। इस खुदाई के बाद यहां माद्दियत परस्तों का झमगटा लगना शुरू हो गया। उनको अपने दज्जाली मंसूबों की तकमील के लिये जो सरमाया चाहिये था वह यहां की मुक़द्दस सर ज़मीन की नशेबी रगों में दौड़ रहा था। उनकी इस पर हरीसाना नज़र थी। दजल की हद मुलाहिज़ा फ़रमाइये कि फ़क़ीर मंश अह्ले इस्लाम की दौलत से दुशमनाने इस्लाम के दज्जाली मिशन का फ़राहम जारी रखने के मंसूबे बनाए जा रहे थे। यह पिछली सदी की चौथी दहाई की बात है। इन दोनों दज्जाल के कारिंदे एक तरफ़ तवारज़े कुद्स (सरज़मीने मेअ़राज) पर दज्जाली रियासत के क़्याम के लिये कोशां थे और दूसरी तरफ़ अर्ज़े मुक़द्दस (सरज़मीने इस्लाम हरमैन शरीफ़ैन) तक पहुंचने के लिये यहीं की उस बेपायां दौलत के हुसूल के लिये हाथ प्रांव मार रहे थे जिस के मुतअ़ल्लिक़ उनका अंदाज़ा था कि उसका हुसूल उन्हें ज़मीन पर नाक़ाबिले शिकस्त बना देगा। दज्जालियत के इस्तिहकाम के लिये इन दो मंसूबों के रास्ते में जो सबसे बड़ी रुकावट थी यअ़नी ख़िलाफ़ते उस्मानिया, उसके सुकूत के लिये वह अपना मकरूह किर्दार अदा कर चुके थे। उनको इल्म था कि अब उनके सामने "ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन" नहीं जो आलमी और ता अह्दे उफ़ुक़ वसीअ़ सोच का मालिक और अर्ज़े इस्लाम के चप्पे चप्पे का मुहाफ़िज़ है, अब उनके सामने मक़ामी और सत्ही सोच रखने वाले क़बाइली अरब सरदार हैं जिन्हें "जलालतुल मुल्क" और "ख़ादिमुल हरमैन" के अज़ीम अलक़ाब से मुलक़्क़ब कर दिया गया है।

महसूदे अरब और हासिदे ग़ुर्बः

दौरे ज़वाल के आख़िरी उस्मानी सलातीन भी, जैसे भी थे, लेकिन उन्हें नामूसे मिल्लत और इज्तिमाई फ़राइज़ का पास था,

लिहाज़ा उन्होंने क़र्ज़ों में डूबे होने के बावजूद सरज़मीने फ़लस्तीन की ख़ाके मुबारक से यहूद को एक चुटकी देने से भी इंकार कर दिया था, जबकि सुकूते ख़िलाफ़त के बाद सरज़मीने इस्लाम के टुक्ड़े जिन ज़लीलुल अज़्मत पासबाने मिल्लत में बांटे गए थे, उनकी उलूल अज़्मी और मिल्लत से पाएदार इस्तिवारी का यह आलम था कि अलक़ुद्स तो कुजा, वह अर्ज़े हरमैन में जहां सदियों से किसी ग़ैर मुस्लिम की परछाईं न पड़ी थी, वहां तेल की शैदाई यहूदी मल्टी नैशनल कम्पनियों के अह्लकारों को भेस बदलवाकर अपनी ज़ाती हिफ़ाज़त में लिये लिये फिरते थे। इस मुब्हम तब्सिरे की दिलदोज़ तफ़सील के लिये हमें "कुंवां नम्बर सात" की रूदाद तक जाना होगा। तो आइये "कुवां नम्बर एक" से बात शुरू करते हैं। यह कुंवां पीने के पानी के लिये नहीं खोदा जा रहा था। इस वीरान सेहरा में पानी का तसव्वुर ही न था। यह कुवां "सोने के पानी" की दरयाफ़्त के लिये खोदा जा रहा था। सोने के इस पानी का रंग न पानी वाला था न सोने वाला, यह तो काला सियाह था, लेकिन यह पानी की तरह आबे हयात भी था और सोने की तरह कारज़ारे हयात में काम आने वाला सय्याल सरमाया भी। इसकी दरयाफ़्त न होती तो अरब ऊंटों के दूध और खजूरों की तवानाई वाली रिवायती ज़िंदगी गुज़ारते और मज़े से रहते। जिस दिन से यह दरयाफ़्त हुआ अरबों से फ़ित्री ज़िंदगी जाती रही। यह ज़िंदगी अब सिर्फ़ क़बाइली पख़्तूनों के पास है। इसलिये अरब से दुनिया भर को हसद तो है लेकिन महसूदे अरब, हासिद गुर्ब के चुंगल में हैं। पख़्तूनों से भी दुनिया को कुदूरत है और उनमें भी महसूद है, लेकिन वह हासिदीन के चुंगल में नहीं।

तीन जुड़वां शहरों की कहानीः

आप को शायद यह बेमअ़नी और बेरबत बातें समझ न

आएंगी। इसलिये तीन जुड़वां शहरों की कहानी आप को सुनाते हैं जहां हिर्स व हवस की हंडिया, हसद व बुग्ज़ की आंच पर पकाई गई थी। सऊदी अरब के मशि्रक़ में (अगर "क़ारईन मशि्रक़" का लफ़्ज़ कालम ख़्वानी के आख़िर तक याद रखें तो उन्हें एक नुक्ता समझने में आसानी रहेगी) कुवैत की सरहद के क़रीब सऊदी अरब के तीन जुड़वां शहर वाक़ेअ़ हैं: (1) ज़ह्रान (जिसे दह्रान भी कहते हैं) (2) अलख़ुब्र और (3) दम्माम। यह पिंडी इस्लामाबाद या कोटरी हैदराबाद की तरह क़रीब क़रीब वाक़ेअ़ हैं। ज़ह्रान से अलख़ुब्र दस किलोमीटर है और दम्माम अट्ठारह किलोमीटर। तीनों के बीच में दो रविया साफ़ शफ़्फ़ाफ़, वसीअ़ और कुशादा सड़कें हैं जिनकी बदौलत चंद मिनट में एक शहर से दूसरे शहर पहुंचा जा सकता है। इन तीन शहरों के नीचे तेल का समंदर मोजिज़न है। यहां इतना तेल मौजूद है कि बक़िया पूरी दुनिया में मौजूद तेल का ग़ालिब हिस्सा इसके एक कुंवे में आ सकता है जिस का नाम "कुंवां नम्बर सात" है। यह तेल आलमे इस्लाम के मर्कज़, सरज़मीने इस्लाम, अर्ज़े हरमैन की मिल्कियत है लेकिन इसके मालिकों को न यह इख़्तियार है कि उसे निकाल सकें, न यह क़ुदरत है कि उसकी क़ीमत तै कर सकें और न ही यह हैसियत है कि उस इलाक़े में आज़ादाना आ जा सकें।

कशमकश का नक़्शा:

जब बीसवीं सदी की दहाई से तेल की तलाश शुरू हुई तो किसी ग़ैर मुस्लिम की हिम्मत न थी कि अर्ज़े मुक़द्दस में आमद व रफ़्त रखे। उस वक़्त अर्ज़े इस्लाम ख़ालिस रूहानी मर्कज़ थी जहां माद्दियत परस्ती का साया न पड़ा था और न यहां दज्जाल के कारिंदों के क़दम लगे थे। डाइरेक्टर हज आफ़ पाकिस्तान बहरुल्लाह हज़ारवी ने हुकूमते सऊदिया के बानी, शाह अब्दुल अज़ीज़ की

सवानेह लिखी है जो हुकूमते सऊदिया के शाही ख़र्च पर छपी है। इसके सफ़्हा 404 से लेकर 407 तक वह तसावीर हैं जिन में उन अमरिकियों को रिवायती अरब लिबास में मलबूस दिखाया गया है जो यहां तेल की तलाश के लिये आए थे, क्योंकि मग़रिबी लिबास में किसी शख़्स की आमद का इस इलाक़े में तसव्वुर भी न किया जा सकता था। आरामिको ऑयल कम्पनी के यहूदी डाइरेक्टर ने इस कशमकश का किसी हद तक नक़्शा खींचा है जो इस वक़्त के मुसलमानों और अमरिकियों के दर्मियान पाई जाती थी। आगे बढ़ने से पहले उस पर एक नज़र डालते हैं:

"हमसे तेल निकालने का मुआहिदा करके इब्ने सऊद ने बड़ी शुजाअत का मुज़ाहिरा किया। क्योंकि यह वह इलाक़ा है जहां किसी ग़ैर मुस्लिम ने क़दम नहीं रखा था। सेहरा के बद्दुओं के लिये किसी काफ़िर का इस इलाक़े में क़दम रखना निहायत ख़तरनाक तसव्वुर किया जाता था, लेकिन शाह अब्दुल अज़ीज़ ने न सिर्फ़ हम से तेल का मुआहिदा किया बल्कि हमें वह तहफ़्फ़ुज़ दिया जिसका हम अपने मुल्क में भी तसव्वुर नहीं कर सकते थे। हमारे बारे में अरबों को जो शुकूक थे, वह भी हक़ीक़त पर मब्नी थे। इसलिये कि इन दिनों आलमे इस्लाम और आलमे अरब के ज़्यादातर मुमालिक मग़रिबी कालोनियां थीं।"

बाद के वक़्त ने बताया कि मुसलमानों के शुकूक व शुबहात दुरुस्त थे। इस पूरे इलाक़े को भी अमरीका और बर्तानिया ने अपनी कालोनी बना लिया है और यह आज़ाद मम्लकत सऊदी अरब का हिस्सा होते हुए थी इस्तिअ़मार के मातहत हैं। जब शुरू शुरू में तेल निकलना शुरू हुआ तो तेल दरयाफ़्त करने वाली अमरीकन कम्पनी "स्टैंडर्ड ऑयल कम्पनी" को "अरबियन स्टैंडर्ड ऑयल कम्पनी" का

नाम दिया गया। बाद में जब मुस्तहकम बुन्यादों पर कुंवों पर गिरफ़्त मज़बूत कर ली गई तो वह नाम दिया गया जो पूरी दुनिया ज़बाने ज़द आम है यअ़नी "अरबियन अमरीकन ऑयल कम्पनी" (ARAMCO)। इस इलाक़े में तेल की तलाश की कहानी भी दिलचस्प है।

तेल निकालने के बारे में आरामकू ने जो तारीख़ लिखी है उसकी एक झलक यूं है: "तेल की तलाश 1933 ई0 में शुरू हुई। वह अमरीकी माहिरीन जो इस मुहिम में शिर्कत के लिये आए थे, उन्होंने दाढ़ियां बढ़ा रखी थीं और लम्बी लम्बी कमीस पहने हुए थे। (अरबी लिबास में मलबूस उन अमरीकियों की तस्वीरें मज़कूरा बाला किताब के सफ़्हा 407 पर दी गई हैं।) शाह अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी ख़ास पुलिस के ज़रीए इनकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ले ली थी ताकि बद्दू उन को नुक़सान न पहुंचा सकें। सबसे पहले जिस जगह तेल तलाश करने का काम शुरू किया गया, वहां से कुछ न मिला। इस काम के लिये न सिर्फ़ यह कि तमाम आलात अमरीका से मंगवाए गए बल्कि खाने और पानी के अलावा साबुन और तमाम मुतअल्लिक़ा सामान भी अमरीका से मंगवाया गया था। पहले तीन जगहों की निशादनदही की गई लेकिन तेल न निकला। दूसरी तरफ़ वह जिस तर्ज़े ज़िंदगी से दो चार थे वह इससे भी ज़्यादा मुश्किल थी लेकिन बहरहाल कोशिश जारी रही। अमरिकियों ने भी निहायत हौसला और सब्र से कामलिया। पहला कुंवा जिन हालात में खोदा गया उसकी तफ़सील बहुत मुश्किल है। ख़ुलासा यह है कि पहले कुवें में नाकामी के बाद दूसरा कुंवां खोदा गया, लेकिन उसमें भी कोई फ़ाएदा न हुआ। तीसरे कुवें की खुदाई में उनको यक़ीन था कि कुछ मिलेगा। उस वक़्त उस पर हज़ारों डालर ख़र्च हो चुके थे। वर्करों के

रहने के लिये शुरू में ख़ेमे होते थे। गर्मी भी ऐसी थी कि जिससे चेहरे झुलस जाते थे। बाद में रियाज़ के कच्चे घरों की तरह छोटे छोटे घर बनाए गए। यह घर बतौर आसारे क़दीमा आज भी मौजूद हैं। तीसरे कुंवें के खोदने के बाद इतना पता चला कि तेल तो है लेकिन इतना है जिसके लिये इतनी तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं की जा सकती है। तेल निकालने वाली कम्पनी के आला हुक्काम को शक होने लगा......लेकिन उनमें सब्र का माद्दा था। चूंकि तेल की तलाश में काम करने वालों के ज़्यादा अर्सा रहने की वजह से वह यहां की आब व हवा से ख़ासे मानूस हो चुके थे इसलिये घबराए नहीं। चौथा कुंवां जिस जगह खोदा गया वह पहली जगहों से मुख़्तलिफ़ था लेकिन तेल जिसके लिये इतनी उम्मीदें वाबस्ता की गई थीं, वहां न निकला। अब यह सवाल पैदा होता था कि क्या कम्पनी फ़्लाप होने का एलान करे? जो कुछ ख़र्च करना था वह तो हो चुका था। चुनांचे अमरीका में मौजूद कम्पनी के करता धरता हुक्काम की मीटिंग हुई। 1937 ई0 तक जो ख़सारा हो चुका था वह तीस लाख डालर का था लेकिन उन्होंने काम जारी रखने का फ़ैसला किया। उन्होंने नए माहिरीन को भेजा और कम्पनी में काम करने वालों को नए कंट्रेक्ट और फ़वाइद दिये ताकि वह काम जारी रख सकें। इन हालात में पांचवां कुंवां खोदने का काम शुरू हुआ। माहिरीन के पास जो तजुर्बा और कमाल था वह सब उस में झोंक दिया, लेकिन उसका भी वही नतीजा निकला, ताहम वह नाउम्मीद न हुए। उन्होंने फ़ैसला किया कि एक आख़िरी कोशिश और की जाए ताकि अगर तेल न मिले तो हसरत भी बाक़ी न रहे।

उस दौरान उन्होंने एक वक़्त में दो कुंवें खोदने का फ़ैसला किया। यह छटा और सातवां कुंवां थे। माहिरीन के अलावा कम्पनी

के आला हुक्काम भी लम्हा लम्हा की मालूमात हासिल कर रहे थे। छटे कुवें से भी कुछ नहीं मिला। जिससे उनकी नाउम्मीदी में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ। यहां तक कि ज़हरान और केलीफ़ोर्निया के दर्मियान यह गुमान होने लगा कि किसी वक़्त भी हुक्म आ सकता है तेल की तलाश बंद करके वापस आ जाओ। अचानक इत्तिला मिली कि कम्पनी के डाइरेक्टर जनरल खुद आ रहे हैं और यह भी कि कम्पनी के एकाउंट में डालर्ज़ अमरीका से मुंतक़िल हो चुके हैं। नया सामान भी रवाना हो चुका है......लेकिन सातवें कुवें को अभी पूरी तरह खोदा भी न गया था कि एक मोअ़जज़ा हुआ। जिससे अमरिकियों की आंखें चुंधिया गईं। ज़मीन से ख़ज़ाना उबल पड़ा और इतना तेल निकला जिस पर खुद अमरीकी हैरान व परेशान थे। यह मार्च 1938 ई० की बात है। अब तारीख़ का एक नया दौर शुरू हो चुका था। यह वाक़िआ सिर्फ़ न केलीफ़ोर्निया कम्पनी के लिये हैरान कुन था बल्कि पूरे जज़ीरा नुमाए अरब के लिये एक मोअ़जज़ा था। यह कुंवा आज भी सात नम्बर से पुकारा जाता है। 1933 ई० से 1938 ई० के आख़िर तक इन पांच सालों में 575 हज़ार बैरल तेल निकाला लेकिन सिर्फ़ 1939 में 39 लाख 34 हज़ार बैरल निकाला गया। यअ़नी गुज़िश्ता पांच सालों में सात गुना। यह मिक़्दार 1940 ई० में पचास लाख 75 हज़ार बैरल और 1945 ई० में यह 2 करोड़ 13 लाख 11 हज़ार बैरल तक पहुंची। दुनिया में जहां कहीं भी तेल दरयाफ़्त हुआ है यह मिक़्दार सबसे ज़्यादा है। 1946 ई० में 990 लाख 66 हज़ार बैरल हुआ यअ़नी सालाना 60 मिलियन बैरल, 1947 ई० में आठ करोड़ 98 लाख 25 हज़ार बैरल यअ़नी नव्वे मिलियन बैरल हो गया। यहां से न सिर्फ़ तेल, बल्कि गैस भी निकली।"

रहमानी रियासत की तक़सीमः

यहां से अमरिकियों को (अमरिकियों के लबादे में दज्जाली

यहूदियों को) सिर्फ़ तेल और गैस ही न मिला बल्कि दुनिया पर हुकूमत की चाबी और आलमे इस्लाम के ख़ज़ानों तक रसाई का वसीला भी हाथ आ गया। साथ ही रहमानी मर्कज़ (अर्ज़े हरमैन) में असर व नुफ़ूज़ और यहां की दौलत लूट कर दज्जाली रियासत की तामीर व तशकील का हवसनाक इबलीसी सिलसिला शुरू हो गया। अब एक तरफ़ वह "अर्ज़े कुद्स" में दज्जाली रियासत की बुन्यादें रख रहे थे और दूसरी तरफ़ वह "अर्ज़े मुक़द्दस" की दौलत को इन बुन्यादों में उंडेल कर दज्जाल के "क़स्रे सदरात" को इस्तिहकाम दे रहे थे।

अमरीकी या बरतानवी जब कहीं जाते हैं तो अपनी तहज़ीब और अंदाज़े ज़िंदगी साथ लेकर जाते हैं। जब कोई प्रोजेक्ट शुरू करते हैं तो पहले वहां अपनी कालोनी बनाते हैं। अपनी बस्ती तामीर करते हैं। इसमें उनका अपना सेक्यूरिटी सिस्टम, अपना टी वी स्टेशन, तफ़रीही मराकिज़ और अमरीकी तहज़ीब के जुम्ला लवाज़िमात बमअ़ जुम्ला सहूलियात मुहय्या किये जाते हैं। यूं समझये कि इसमें सब कुछ उनका अपना ही होता है। यहां तो सोने का दरया बहता था। लिहाज़ा सोचा जा सकता है कि उन्होंने यहां क्या कुछ न तामीर किया होगा? जंगल के सरबराह की मर्ज़ी होती है कि अंडा दे या बच्चा जने। यह दुनिया इंसानों का मसकन नहीं, हैवानों का बसीरा बन गई है जिसका सरबराह अमरीका है। बहते सोने की इस "सह शहरी" सरज़मीन में किसी ग़ैर मुल्की को क्या, मअ़ज़्ज़ज़ सऊदी बाशिंदे की मजाल नहीं कि क़दम रख सके। अमरीकी हुक्काम की मर्ज़ी है जितना तेल निकालें या इसकी जो क़ीमत मुक़र्रर करें, मुक़र्रर ही न करें बल्कि सेक्यूरिटी के अख़्राजात में या सऊदिया को बिला ज़रूरत फ़राहम किये गए ज़ाइदुल मीआद अस्लहे की क़ीमत में लगा

लें। दुनिया में जिस मुल्क की जितनी बरआमदात हों उसकी करंसी की क़ीमत उतनी ही मज़बूत होती है। सिवाए सऊदी अरब के कि उसका जितना तेल भी बाहर जाए, दज्जाली सामराज की तरफ़ यह तै है कि उसका कोई तअल्लुक़ उसकी करंसी की क़द्र से नहीं होगा। अंदाज़ा लगाइये मुसलमानों की दौलत की तलछट से मुसलमानों के कशकूल में कितना आ रहा है? मुसलमानों की सादगी और काहिली ने उन्हें किस तरह बेकस व बेबस बना रखा है? अमरीका के शहरों और दीहातों में रौशनियों की चकाचौंध है जबकि आलमें इस्लाम में कहत है, गुर्बत है, जहालत है, बदहाली और पसमांदगी है। दूसरी तरफ़ अमरीका के अपे तेल के ज़ख़ाइर महफ़ूज़ हैं और वह आलमे इस्लाम के तेल के ज़ख़ाइर से बेधड़क इस्तिफ़ादा कर रहा है। बात सिर्फ़ यहीं तक होती तो कुछ कम क़हरनाक न थी, सितम बालाए सितम यह है कि दज्जाली इस्तिअ़मार चाहता है मशरिक़ी और मग़रिबी सऊदी अरब को अलग अलग कर दे। मश्रिक़ में तेल की दौलत होगी, रूहानियत नहीं। और मग़रिब में मुसलमानों के रूहानी मराकिज़ होंगे, दौलत न होगी। इस तरह दज्जाली रियासत की तकमील आसान होती जाएगी और रहमानी रियासत का मर्कज़ तक़सीम होकर कमज़ोर होता जाएगा। जब यह कमज़ोर हो जाएगा तो मक्का व मदीना को "आज़ाद शहर" क़रार देने का नारा बुलंद करके यहां भी "दज्जाल के हरकारे" अपनी आवत जावत लगा लेंगे। तबूक से ख़ैबर तक उन्होंने हज़ारों हैकड़ ज़मीन ख़रीद कर रखी हे, ख़ैर मैं अपनी दोबारा वापसी का जश्न वह जंग ख़लीज के बाद मना चुके हैं, इन मुक़द्दस शहरों में भी वह भेस बदल कर आना जाना लगाए हुए हैं, इसके असरात अरब मुआशरे पर खुल्लम खुल्ला देखे जा सकते हैं। जब ख़ुदा न ख़्वास्ता खुली आज़ादी मिल जाएगी तो

उनकी कारसतानियां क्या कुछ सितम न ढाएंगी, इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

हरमैन शरीफ़ैन की तरफ़ पेश क़दमी की इस दज्जाली मुहिम का आग़ाज़ "अलकुद्स" को आज़ाद शहर बनाने का ग़लग़ला बुलंद करके किया जा चुका है। जब "हरमे सालिस" पर इस बहाने दज्जाली तसल्लुत तसलीम करवा लिया जाएगा तो हरमे अव्वल व सानी, अर्ज़े मक्का व मदीना (हम मह्मा अल्लाह तआला) की तरफ़ नापाक नज़रें खुल कर उठना शुरू हो जाएंगी। यह है मरहला वार मंसूबा और यह है दजल परस्तों की ज़हरीली तमन्नाएं।

नापाक आरज़ूओं का इलाजः

दजल में लुथड़ी इन नापाक आरज़ूओं का इलाज सहूलत पसंद हो जाने वाले अरब के पास नहीं, इसका इलाज अफ़ग़ानिस्तान के कुहसारों में बसने वाले उन काली पगड़ी वालों के पास है जिसके पास अरब शहज़ादों ने पनाह ली है और जहां से उठने वाला लशकर हरमैन से ज़हूर करने वाले उस अरब शहज़ादे का साथ देगा जो मुत्तबेअ़ सुन्नत और साहिबे तदबीर मुजाहिद होगा और जिसका साथ सिर्फ़ वही शख़्स दे सकेगा जिसने शौक़े शहादत से सरशार होकर जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिये सिद्क़े दिल से अमीर की तलब और इसका साथ देने का अज़्म किया होगा। दुनिया इस्लाम में से किसी ने साइंस व टेक्नालोजी में महारत को तरक़्क़ी का ज़रीआ समझा, किसी ने इक़्तिसाद व मईशत की बेहतरी का रोना रोया, किसी को यह दौर मीडिया की जंग का दौर नज़र आया, यह सब के सब मग़रिब का तआ़कुब करते हुए तरक़्क़ी का राज़ इस दुशमन के नक़्शे क़दम के तआ़कुब में तलाश करते रहे जो उनसे पांच सौ साल आगे था, जबकि कुहसारों के उन ख़ुदा मस्तों ने जिहाद की टेक्नालोजी,

ग़नीमत की मईशत और ईमान व इज़्ज़त की जंग में दीवानावार कूद कर साबित कर दिया कि इन सारी चीज़ों में तरक़्क़ी ज़िम्नी और सानवी दर्जे की चीज़ है। कुफ़्र की होश रुबा तरक़्क़ी का इलाज कुफ़्र शिकन जिहाद में है। इसके अलावा हर तदबीर गुलामी की ज़ंजीरें मज़ीद तंग तो करती है, उन्हें काटने के काम नहीं आती।

तीन इस्लामी मुल्कः

मौजूदा आलमी इस्तिअ़मार जो दज्जाली कुव्वतों की इक्सठ का दूसरा नाम है, सरज़मीने अफ़ग़ानिस्तान में इस रहमानी लशकर से मुंह की खा चुका है। उसे अच्छी तरह अंदाज़ा है कि यहां से रुसवाकुन ख़ाली हाथ वापसी के बाद अफ़ग़ानिस्तान की ग़ैर मामूली इस्तिअ़दादे हरब के साथ पाकिस्तान की टेक्नोलोजी और फ़नी महारत यक्जा हो गई तो अगला मअ़रका जिसका नुक्तए इंफ़िजार "आर्मिगाडून" की वादी में बपा होगा, उसमें यह दोनों मुल्क जिन्होंने "हिज्रत, नुसरत और जिहाद" की बेमिसाल नज़र पेश की है, इसके लिये खुदाई अज़ाब साबित होंगे, इसलिये वह यहां जाने से पहले दज्जाल के लशकर "ब्लैक वाटर" जैसी तन्ज़ीमों और क़ादियानियत जैसे गिरोहों के ज़रीए मुनाफ़िरत और निफ़ाक़ के बीज बो दिये जाएं। दुनिया में तीन इस्लामी मुल्क ऐसे हैं कि इनमें से एक की दौलत और रूहानी सरपरस्ती, दूसरे की फ़नी महारत और एटमी ताक़त, तीसरे की दिलेराना अफ़रादी कुव्वत जमा हो जाएं तो सात बर्रे आज़मों की ग़ैर मुस्लिम ताक़तें मिल कर भी उन्हें शिकस्त नहीं दे सकतीं। यह तीन मुल्क बिलतरतीब सऊदी अरब, पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान हैं। दज्जाल की नुमाइंदा कुव्वतों की कोशिश है कि यहां से हज़ीमत आमेज़ खुरूज से पहले हिज्रत व नुसरत करने वाली इन दो मिल्लतों (पाकिस्तान व अफ़ग़ानिस्तान) में इफ़्तिराक़ व

इंतिशार की ज़हरीली सूइय्यां चिभो दी जाएं। इस ग़र्ज़ के लिये दज्जाल के कारिंदे पाकिस्तान में अवामी जगहों पर बेमक़्सद धमाके करके उन्हें रहमान के जांबाज़ों के नाम थोपते हैं और दुनिया भर की मुत्तहिदा दज्जाली कुव्वतों को शिकस्त देने वाले मुजाहिदीन का इमेज उनकी नुसरत करने वाले अवाम की नज़र में ख़राब करने की कोशिश करते हैं।

इश्क़ की भट्टियों सेः

अलग़र्ज़! मग़रिब की अक़्ल और मश्रिक़ के इश्क़ का मअ़रका ज़ोरों पर है। मग़रिब दज्जाली रियासत को कामियाब देखना चाहता है और मश्रिक़ की तरफ़ से आने वाले काले झंडों वाले जांबाज़ रहमानी रियासत की तामीरे नो चाहते हैं। अक़्ल की मेअ़राज के सामने मुसलमानों को तक़्वा की मेअ़राज चाहिये। तक़्वा से इश्क़े इलाही जनम लेता है और जिस दिन मुसलमान इश्क़े इलाही में दीवाने हो जाएंगे उस दिन इश्क़ के मतवाले, अक़्ल वालों की भड़काई हुई आग में कूद कर लाज़वाल किर्दार अदा करेंगे।

यह बात तै है कि जिस दिन मअ़रकए इश्क़ व अक़्ल अपने उरूज पर पहुंचेगा उस दिन अक़्ल को, उसकी बरतरी मानने वालों को और इससे मरऊब होने वालों को कुल्ली शिकस्त हो जाएगी। सिर्फ़ यह तै होना बाक़ी है कि अक़्ल परस्ती के लशकर में कौन कौन होगा और उन्हें कितने दिनों की मोहलत मज़ीद मिलेगी? और इश्क़ के घायल कौन कौन होंगे और उन्हें इश्क़ की कितनी भट्टियों से गुज़रने के बाद मअ़शूक़े हक़ीक़ी का विसाल या फिर रूए ज़मीन पर उसकी ख़िलाफ़त नसीब होगी???

फ़ित्नए दज्जाल से बचने की तदाबीर

यह तदाबीर दज्जाल 1 में बयान की जा चुकी हैं। यहां उनका खुलासा दोहराया जाता है कि फ़ित्नों के दौर में हर मुसलमान का लाहिअये अमल और दज्जाल पर इस किताबी सिलसिले का हासिल व हुसूल है। हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमायाः "जब से अल्लाह तआला ने आदम को पैदा किया, दुनिया में कोई फ़ित्नए दज्जाल के फ़ित्ने से बड़ा नहीं हुआ और अल्लाह ने जिस नबी को भी मबऊस फ़रमाया, उसने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है, और मैं आख़िरी नबी हूं और तुम बेहतरीन उम्मत (इसलिये) वह ज़रूर तुम्हारे ही अंदर निकलेगा।" (इब्ने माजा, अबू दाऊद वग़ैरा)

इस अज़ीम फ़ित्ने से बचने के लिये क़ुर्आन व सुन्नत और नुसूसे शरीअत की अस्री तत्बीक़ से अख़्ज़ कर्दा रूहानी व अमली तदाबीर मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

रूहानी तदाबीर:

1- हर क़िस्म के गुनाहों से सच्ची तौबा और नेक आमाल की पाबंदी।

2- अल्लाह तआला पर यक़ीन और उससे तअल्लुक़ को मज़बूत करना और दीन के लिये फ़िदाइयत (क़ुर्बान होने) और फ़नाइयत (मर मिटने) का जज़्बा पैदा करना।

3- आख़िरी ज़माने के फ़ित्नों और हादसात के बारे में जानना और उनसे बचने के लिये नबवी हिदायात सीखना और उन पर अमल करना।

4- दिल की गहराइयों से अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला हमें फ़ित्नों का शिकार होने से बचाए और हक़ की मदद के वक़्त बातिल के साथ खड़े होने की बदबख़्ती और इसके वबाल व अज़ाब से महफ़ूज़ रखे। इस दुआ का एहतिमाम करना:

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ وَمَا بَطَنَ، اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ وَّارْزُقْنَا اِتِّبَاعَهٗ، وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلًا وَّارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ."

5- इन तमाम गिरोहों और नित नई पैदा शुदा जमाअ़तों से अलाहिदा रहना जो उलमाए हक़ और मशाइख़े अज़ाम के मुत्तफ़क़ा और मअ़रूफ़ तरीक़े के ख़िलाफ़ हैं और अपनी जिहालत या ख़ुद पसंदी की वजह से किसी न किसी गुमराही में मुब्तला हैं।

6- अमरीका और दीगर मग़रिबी मुमालिक के गुनाहों भरे शहरों के बजाए हरमैन शरीफ़ैन, अर्ज़े शाम, बैतुल मुक़द्दस वग़ैरा में रहने की कोशिश करना, ख़ूनी मअ़रकों में ज़मीन के यह ख़ित्ते मोमिनों की जाए पनाह हैं और दज्जाल इनमें दाख़िल न हो सकेगा। ऐसा मुम्किन न हो तो अपने शहरों में रहते हुए जय्यद उलमाए किराम के हल्क़ों से जुड़े रहना।

7- पाबंदी से तसबीह व तहमीद और तहलील व तकबीर (आसानी के लिये तीसरा और चौथा कलिमा कह लें) की आदत डाली जाए। दज्जाल के फ़ित्ने के उरूज के दिनों में जब वह मुख़ालिफ़ीन पर ग़िज़ाई पाबंदी लगाएगा, उन दिनों ज़िक्र व तस्बीह ग़िज़ा का काम देगी, लिहाज़ा हर मुसलमान सुब्ह व शाम मस्नून तसबीहात (दरूद शरीफ़, तीसरा, (या चौथा) कलिमा और इस्तिग़फ़ार की आदत डाले। अभी से तहज्जुद की आदत डालें।)

8- हज़रत ईसा अलै० के ज़िंदा आसमानों पर उठाए जाने और

खुरूजे दज्जाल के बाद वापस ज़मीन पर आकर दज्जाल और उसके पैरूकार यहूदियों का खातिमा करने (जिन्होंने हज़रत ईसा अलै0 को तकलीफ़ें दीं) पर यकीन रखे कि यह उम्मत का इज्माई अकीदा है।

9- जब हज़रत मेहदी का ज़ुहूर हुआ और उलमाए किराम उनको सही अहादीस में बयान कर्दा अलामात के मुताबिक पाएं तो हर मुसलमान उनकी बैअ़त में जल्दी करे। बातिल परस्त और गुमराह बेदीन लोग दज्जाली कुव्वतों के जिन नुमाइंदों को फ़र्ज़ी रूहानी शख़्सियात लेकर (मेहदी मौऊद या मसीह मौऊद) और उनकी तशहीर करते हैं, इनसे दूर रहना और इनके ख़िलाफ़ कलिउए हक़ कहने वाले उलमाए हक़ का साथ देना।

10- जुम्अ़ा के दिन सूरए कह्फ़ की तिलावत करना, इसकी इब्तिदाई और आख़िरी दस आयात को हिफ़्ज़ कर लेना और सुब्ह शाम उनको दोहराना, एक मशहूर हदीस में बयान किया गया है कि दज्जाल के फ़ित्ने से जो महफ़ूज़ रहना चाहता है, उसको चाहिये कि सूरए कह्फ़ की इब्तिदाई या आख़िरी दस आयतों की तिलावत करे। उनमें कुछ ऐसी तासीर और बरकत है जब सारी दुनिया दज्जाल की धोकाबाज़ियों और शोअ़बा बाज़ियों से मुतअस्सिर होकर नऊज़ु बिल्लाह उसकी ख़ुदाई तक तसलीम कर चुकी होगी, उस सूरत या उन आयात की तिलावत करने वाला अल्लाह की तरफ़ से ख़ुसूसी हिसार में होगा और यह दज्जाली फ़ित्ना उसके दिल व दिमाग़ को मुतअस्सिर न कर सकेगा, लिहाज़ा हर मुसलमान पूरी सूरए कह्फ़ या कम अज़ कम शुरू या आख़िर की दस आयतों को ज़बानी याद करे और उनका विर्द करता रहे।

अमली तदाबीरः

1- सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के

मलकूती अख़्लाक़ फैलाना:

सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की तीन सिफ़ात हैं जिन्हें अपनाने वाले ही मुस्तक़बिले क़रीब में बरपा होने वाले अज़ीम रहमानी इंक़िलाब के लिये कारआमद अन्सुर साबित हो सकेंगे:

पहली सिफ़त: सहाबा किराम के दिल बातिनी बीमारियों और रूहानी आलाइशों यअ़नी तकब्बुर, हसद, रिया, लालच, बुग्ज़ वग़ैरा से बिल्कुल पाक व साफ़ और ख़ालिस व मुख़्लिस थे, लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि सच्चे अल्लाह वाले, मुत्तबेअ़ सुन्नत बुज़ुर्ग की ख़िदमत में अपने आप को पामाल करे और इनकी इस्लाही तरबियत के ज़रीए उन मुहलिक रूहानी बीमारियों से नजात हासिल करने की कोशिश करे।

दूसरी सिफ़त: वह इल्म के एतिबार से उस आलमे इम्कान में इल्मियत और हक़ीक़त शनासी की आख़िरी हदों तक पहुंच गए थे जहां तक उनसे पहले अंबिया को छोड़ कर न कोई इंसान पहुंच सका और न आइंदा पहुंच सकता है, लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि रूहानी और रहमानी इल्म की जुस्तजू करे। यह इल्म अल्लाह वालों की सोहबत के बग़ैर हासिल नहीं होता और इस इल्म के बग़ैर काइनात और इसमें मौजूदा अशया व हवादिस की हक़ीक़त समझ नहीं आ सकती।

तीसरी सिफ़त: वह रूए ज़मीन पर सबसे कम तकल्लुफ़ के हामिल बनने में कामियाब हो गए। हर मुसलमान बेतकलीफ़ी, सादगी और जफ़ाकशी इख़्तियार करे। मग़रिब की ईजाद कर्दा तरह तरह की सहूलियात और ऐश व इशरत के अस्बाब से सख़्ती के साथ बचें। हर तरह के हालात में रहने, खाने, पीने और पहनने की आदत डालें।

(तेज़ क़दमों से) पैदल चलने, तैराकी करने, घुड़सवारी, निशाना बाज़ी और वर्ज़िशों के ज़रीए खुद को चाक व चौबंद रखने का एहतिमाम करें।

2- माल व जान से जिहाद फ़ी सबीलिल्लाहः

जिहाद इस्लाम को चोटी पर ले जाने वाली वाहिद सबील (रास्ता) और मुसलमानों की तरक़्क़ी का वाहिद ज़ामिन है। दज्जाल के कारिंदे यहूदियों की कोशिश है कि मुसलमानों के अंदर अज़ खुद पैदा शुदा अज़्मे जिहाद का रुख़ फेर कर उन्हें बेमक़्सद औ सतही इल्मी तहक़ीक़, फ़ुनून व सन्अ़त में मग़रिब के तआ़क़ुब, साइंस व टेक्नालोजी के हुसूल की ख़्वाहिश में मग़रिब के अज़्कार रफ़्ता नज़रियात की पैरवी और मईशत व इक़्तिसादी की बेहतरी में हलाल व हराम की तफ़रीक़ के बग़ैर माली सलाहियतों को बढ़ाने में मशग़ूल करके जिहाद के ज़रीए हासिल होने वाली बेमिसाल, तेज़ रफ़्तार और होश रहा तरक़्क़ी से महरूम और ग़ाफ़िल कर दें और जिहाद की तौहीन व तन्क़ीस, इंकार व तरदीद हत्ता कि जिहाद से पीठ फेर कर दूसरी चीज़ों में फ़लाह व कामियाबी और नजात तलाश करने वाले बना कर अल्लाह तआला के ग़ज़ब व इंतिक़ाम का शिकार बना दें। जिहाद वह अमल है जिससे यहूदियत की जान निकलती है। लिहाज़ा मुसलमानों की बक़ा व फ़लाह इसमें है कि अपनी नई नस्ल में जज़्बए जिहाद की रूह फूंक कर इस दुनिया से जाएं और अपने अह्ल व अयाल और मुतअल्लिक़ीन का अल्लाह के रास्ते में जान व माल क़ुर्बान करने का ज़ह्न बनाएं। जज़्बए जिहाद और शौक़े शहादत में फ़नाइयत के बग़ैर मुसलमानों की बक़ा व तरक़्क़ी का तसव्वुर पहले था, न आइंदा हो सकता है।

3- फ़ित्नए माल व औलाद से हिफ़ाज़तः

फ़ित्नए दज्जाल दरअसल है ही माल की मुहब्तबत और माद्दियत परस्ती का फ़ित्ना, इसलिये ज़रूरी है कि हर मुसलमान हलाल व हराम का इल्म हासिल करे। हर तरह के हराम से बिल्कुल इज्तिनाब करे। सिर्फ़ और सिर्फ़ हलाल कमाएं और फिर इसमें से खुद फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च करें और बच्चों से भी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करवा कर इनकी आदत डालें। औलाद की दीनी तरबियत करें और उनकी मुहब्बत को दीनी कामों और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में रुकावट न बनने दें।

4- फ़ित्नए जिंस से हिफ़ाज़तः

(1)......मर्द और औरत का मुकम्मल तौर पर अलाहिदा अलाहिदा माहौल में रहना जो शरई पर्दे के ज़रीए ही मुम्किन है।

(2)......औरतों को ज़्यादा से ज़्यादा शरई मुराआ़त देना और उनकी मख़्सूस ज़िम्मादारियों के अलावा दीगर ज़िम्मादारियों से उन्हें सुब्कदूश करना, जो उनकी फ़ितरत और शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं।

(3)......बालिग़ होने के बाद मर्दों और औरतों की शादी में देर न करना।

(4)......निकाह को ज़्यादा से ज़्यादा आसान बनाना और फ़स्ख़ निकाह को ज़्यादा मुंज़बित बनाना।

(5)......किसी भी उम्र में जिंसी व नफ़सियाती महरूमी को कम से कम वाक़ेअ़ होने देना, लिहाज़ा बड़ी उम्रों के मर्दों और औरतों को भी पाकीज़ा घरेलू ज़िंदगी गुज़ारने के लिये निकाहे सानी की आसानी फ़राहम करना।

(6)......कसरते निकाह और कसरते औलाद को रिवाज देना, वर्ना उम्मत सुकड़ते सुकड़ते दज्जाली फ़ित्ने के आगे सरनिगूं हो

जाएगी।

(7)......मर्दों की एक से ज़्यादा शादी। दूसरी शादी तरजीहन बेवा, मुतल्लक़ा, खुलअ़ याफ़्ता या बेसहारा औरत से की जाए।

(8)......बेवा मुतल्लक़ा औरतों की जल्द शादी।

(9)......शादी को ख़र्च के एतिबार से आसान तर बनाना और निकाहे सानी और बेवा व मुतल्लक़ा से शादी पर हर तरह की मुआशरती पाबंदियों का ख़ातिमा करना।

(10)......मुआशरे में आसान व मस्नून निकाह की हिम्मत अफ़ज़ाई करना और मुश्किल निकाह से (जिससे ग़ैर शरई रुसूमात और फ़ुज़ूल ख़र्ची पर मुशतमिल रिवाज होते हैं) नापसंदीदगी का इज़्हार करना।

(11)......माहिर और तजुर्बाकार दाइयों की ज़ेरे निगरानी घर में विलादत का इंतेज़ाम करना और ज़चगी के आप्रेशन से हत्तल वुस्अ़ इज्तिनाब करना।

5- फ़ित्नए ग़िज़ा से हिफ़ाज़तः

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के सामने सबसे ज़्यादा आसान शिकार हलाल व तय्यब के बजाए हराम माल और ख़बीस ग़िज़ा से परवरदा जिस्म होता है, लिहाज़ा जिन चीज़ों को शरीअ़त ने हराम क़रार दिया है उनसे अपने आप को सख़्ती से बचाया जाए। हराम लुक़्मा, हराम घूंट और हराम लिबास से ख़ुद को आलूदा न होने दिया जाए। मस्नूई तौर पर Hybridization और Cross-Polination के ज़रीए पैदा कर्दा ग़िज़ाओं नीज़ डिब्बा बंद ग़िज़ाई अशया और जीनियाती व कीमियावी तौर पर तैयार कर्दा ग़िज़ाओं से सख़्ती से परहेज़ किया जाए। उम्मते मुस्लिमा अपने इलाक़ों में फ़ित्री और क़ुदरती ग़िज़ा के हुसूल के लिये ज़राअ़त, बाग़बानी, शजरकारी और

हैवानात की कुदरती अफ़ज़ाइशे नस्ल पर तवज्जो दे ताकि कीमियावी अज्ज़ा से पाक अज्नास, फल, गोश्त और दूध हासिल करके उन मुज़िर असरात से बच सके जो यहूदी सरमायादारों की मल्टी नेशनल कम्पनियों के ज़रीए इन कुदरती चीज़ों को रफ़्ता रफ़्ता मस्नूई बना कर इंसानों में इंजेक्ट किये जा रहे हैं।

6- फ़ित्नए मीडिया से हिफ़ाज़तः

दज्जाली कुव्वतों का सबसे अहम हथियार "दजल" है यअ़नी झूट और मकर व फ़रैब। झूटा प्रोपेगन्डा, झूटी अफ़वाहें, झूटी इल्ज़ामात, झूटे दावे, झूटा रोअ़ब, झूटी धमकियां। मुसद्दिका झूटी ख़बरें जो ग़लत का सही बताएं और मुबीना छोटी रिपोर्टें जो सच को झूट में छिपाएं। आला उहदों पर फ़ाइज़ बावकार शख़्सियात के नन्कााराना झूट में मल्फ़ूफ़ बयानात, जादू बयान एंकर पर्सन के ज़रीए फैलाए गए ज़हरीले ख़्यालात व नज़रियात......यह सब कुछ और इस जैसा और बहुत कुछ दज्जाली हरकारों के मख़्सूस हर्बे हैं। इस दौर के इंसानों पर लाज़िम है कि जदीद ज़राए अबलाग़ के फ़ित्ने से ख़ुद को बचाएं। और इसका तरीक़ा यह है कि (सुब्ह शाम) सूरए कह्फ़ की इब्तिदाई व आख़िरी आयात पढ़ कर अल्लाह तआला से दुआ मांगें कि उन्हें हक़ व बातिल में और असल व दजल में तमीज़ की सलाहियत अता करे।

2- इस दुआ के साथ हर तरह के गुनाहों से बचें और ज़ाहिर व बातिन में तक़्वा का एहतिमाम करें कि इसकी बरकत से अह्ले ईमान को "फ़ुर्क़ान" अता होता है यअ़नी ऐसी फ़ह्म व फ़रासत जिससे सही और ग़लत, सच और झूट में फ़र्क़ की सलाहियत पैदा हो जाए।

3- मीडिया पर इंहिसार करने के बजाए हक़ीक़ते हाल मालूम

करने के निजी तरीके इस्तेमाल लाए जाएं, मसलनः जो साहिबे ईमान दज्जाली कुव्वतों के ख़िलाफ़ काम कर रहे हैं या मैदाने जिहाद में बरसरे पैकार है, इनसे रबत ज़ब्त रखा जाए। उनसे ज़मीनी हक़ाइक़ मालूम किये जाएं। उलमाए हक़ की ख़िदमत में आमद व रफ़्त रखी जाए और सालिहीने वक़्त के हल्के में सीना बा सीना चलने वाली ख़बरों से मुत्तलअ़ रहा जाए।

4- अगर जदीद मीडिया से ख़बरें सुननी ही पड़ जाएं तो उनकी रौ में बह जाने के बजाए उनका तज्ज़िया किया जाए। जिन इस्लामी मुमालिक, दीनी अफ़राद, नज़रियाती तालीमात, जिहादी तहरीकात या दीनी इदारों के मुतअल्लिक़ अफ़वाही ख़बरें फ़राहम की जा रही हैं, उनसे तहक़ीक़ की जाए। अगर तज़ाद या तआ़रुज़ दिखाई दे तो अहले इल्म व सलाह की बात पर एतिमाद किया जाए न कि झूटी ख़बरें बेच कर दजल फैलाने वालों के इसरार पर।

5- दीन व मज़हब और मुल्क व मिल्लत के मफ़ाद के ख़िलाफ़ किसी बात को आगे न फैलाया जाए। किसी नेक नियत शख़्सियत या इदारे, तहरीक व तन्ज़ीम के ख़िलाफ़ मुहिम में शरीक होने बनने के बजाए ख़ैर की बात फैलाई जाए और हुस्ने ज़न पर मब्नी तब्सिरा व दो टूक अंदाज़ में बयान किया जाए। अफ़वाहों का आसान शिकार बनने की बजाए मोमिनाना फ़रासत का इज़्हार किया जाए।

7- फ़ित्नए शैतानियत से हिफ़ाज़तः

शैतान ने जन्नत से निकाले जाने के वक़्त क़सम खाई थी कि वह आदम की औलाद को गुमराह करने का हर वह जतन करेगा जिसके ज़रीए वह उसे जन्नत में दाख़िले से रोक सके और उसमें कोई कसर नहीं छोड़ेगा। शैतान का सबसे बड़ा हथियार चूंकि दज्जाल है, इसलिये शैतान की पूजा और दज्जाल की झूटी खुदाई को तसलीम

करना दोनों हम मअ़नी बातें हैं। इन दोनों चीज़ों यअ़नी शैतानियत और दज्जालियत की तअ़ज़ीम व तशहीर के लिये आज कल कुछ शैतानी अलामात और दज्जाली निशानात दुनिया भर में बाक़ाएदा मंसूबे के तहत फैलाए जा रहे हैं और उनको फ़रोग़ देकर अंक़रीब ज़ुहूर करने वाले "यक चश्म शैतान" से लोगों को मानूस किया जा रहा है। अपने गिर्द व पेश में फैली हुई इन अलामात को पहचानना और इनकी नुहूसत से खुद को और दूसरों को बचाना और उनके पीछे छिपे ख़ुफ़िया शैतानी पैग़ाम मुस्तरद करके रहमान के मुबारक पैग़ामात फैलाना हर मुसलमान की ज़िम्मादारी है। इन अलामात में सबसे मशहूर इक्लौती आंख है। जो दज्जाल की मअ़यूब और क़ाबिले नफ़रत पहचान है लेकिन दज्जाल के हरकारे उसे ताक़त का सरचश्मा बता कर दुनिया भर के लोगों को उससे मानूस और मरऊब कर रहे हैं। इसके अलावा अहरामे मिस्र जैसी तिकोनी अलामात या इमारात, सांप, आग (शैतान आग से बना है) शैतान के सींग, खोपड़ी और दो हड्डियां, दो उमूमी सतून (यअ़नी ख़ैर के मुक़ाबले में शर की कुव्वत) फ़र्श पर चौकोर सियाह और सफ़ेद ख़ाने (यअ़नी रौशनी के मुक़ाबले में तारीकी का इज़्हार) 666 का अदद, गानों और पाप म्यूज़िक के शैतानी बोल और फ़िल्मों के वह मनाज़िर जिन में शैतानी अलामात और निशानात की तशहीर की जाती है। सबसे बढ़ कर यह कि दो शैतानी कामों से बचने की कोशिश जो शैतान की पूजा करने वालों और दज्जाली की राह हमवार करने वालों का सबसे आज़मूदा गु हैं: (1) फ़हाशी यअ़नी जिंसी बेराह रवी, जिसकी कोई इंतेहा नहीं और यह इंसान को हैवानियत (कुत्ते, बिल्ली) की सतह तक ले जाती है। यअ़नी "अस्फ़ल अस्साफ़िलीन" तक जहां वह बआसानी दज्जाल का ग़ुलाम और शैतान का पुजारी बन जाता है। (2) जादूगरः शैतान को

खुश करके दुन्यावी फ़वाइद (दौलत, शोहरत, जिंसी तसकीन) लौटने और माफ़ौकुल फ़ितरत शैतानी कुव्वतों से यह मदद हासिल करने के लिये आज कल जादू को साइंटिफ़िक तरीके से फ़रोग़ देने के लिये शैतान के चेले जदीद तरीन अंदाज़ इख़्तियार कर रहे हैं। इस शैतानी जाल से बचिये जिसमें फंसने वाला ईमान से हाथ धोकर धोके और सराब में पड़ा रहता है, यहां तक कि उसे मौत के सकरात आन घेरते हैं।

सवालात व जवाबात

बाइबल की पेशगोइयां, मस्जिदे अक़्सा या हैकल सुलैमानी, ईसाई हज़रात का एक बेतुका सवाल

अस्सलामु अलैकुम!

हम चंद दोस्त मिलकर मुफ़्ती साहब को यह ख़त लिख रही हैं। हम एक मिशनरी स्कूल में पढ़ती हैं जिसको एक सिस्टर चलाती हैं। हम सब आप का कालम बहुत शौक़ से पढ़ती हैं और इससे रहनुमाई और आगाही हासिल करने की कोशिश भी करती हैं। हमारा ख़त लिखने का मक़्सद चंद एक सवालात करना और कुछ बातों के बारे में रहनुमाई हासिल करना है। उम्मीद है आप तसल्ली बख़्श जवाब देंगे। गुज़ारिश है कि आसान उर्दू में जवाब दीजियेगा।

(1) पहला सवाल आप के क़िस्तवार कालम "मेहदवियात" के बारे में जिस कालम में आप ने "हज़रत दानियाल" का क़िस्सा बताया था। इस कालम में कुछ पेशगोइयां भी बताई गई थीं। इसमें जो आप ने 2300 साल बाद एक रियासत के क़्याम का बताया था वह समझ में तो आ गया था लेकिन आप ने 333 साल निकाले थे वह बात सही समझ में नहीं आई। इस बात का सिकंदरे आज़म के एशिया फ़तह करने से क्या तअल्लुक़ है? क्या यह यूनान का सिकंदरे आज़म है?

(2) इस्राईली जो बैतुल मुक़द्दस को मुंहिदम करना चाहते हैं इस बारे में क्या अहादीस में ज़िक्र है? क्या वाक़ई मस्जिदे अक़्सा मुंहिदम हो जाएगी और इसकी जगह तीसरा हैकल सुलैमानी तामीर होगा?

(3) तीसरा सवाल आप के कालम "ज़ीरो प्वाइंट" से

मुतअल्लिक़ है। उसमें एक जगह आप ने ज़िक्र किया था कि यहूदियों ने जो ज़मीन के कुदरती निज़ाम के साथ छेड़ख़ानी शुरू कर रखी है है इससे ज़मीन की कशिश ख़त्म हो जाएगी और ज़मीन रुक जाएगी। इसके बाद ज़मीन मुतज़ाद सिम्त में घूमना शुरू हो जाएगी। जिसकी वजह से सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा। जब कि कहा जाता है कि हज़रत मसीह अलै0 के नुज़ूल और फिर इसके बाद उनकी वफ़ात के काफ़ी अर्सा बाद सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा तो क्या तब ही तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा? क्या सूरज दो बार मग़रिब से तुलूअ़ होगा?

(4) चौथा सवाल हम यह करना चाहेंगे कि क्या कुर्आने करीम का नुस्ख़ा किसी सहाबी के हाथ का लिखा हुआ है? या फिर जब हुज़ूर पाक सल्ल0 कातिबे वह्य को बुलवा कर कुर्आन की आयात लिखवाते थे तो क्या वह कोई चीज़ जिस पर यह आयात लिखी गई हों अब मौजूद हैं? यह सवाल हम से अक्सर ईसाई लड़कियां पूछती हैं हम उनको जवाब तो दे देते हैं लेकिन वह मानती नहीं। और ऊपर किया गया सवाल दोहराती हैं? इस सवाल से हम अपनी भी मालूमात में इज़ाफ़ा करना चाहते हैं? क्या हम इन ईसाई लड़कियों को अपने दीन की तबलीग़ कर सकते हैं? असल बात कुछ इस तरह है कि हमारी जमाअत की एक ईसाई लड़की छुट्टियों में ईसाइयत की तरफ़ कुछ ज़्यादा ही माइल हो गई थी। छुट्टियों के बाद जब वह स्कूल वापस आएं तो वह पहले से काफ़ी हद तक बदल चुकी थी हत्ता कि उसने गाना गाने तक छोड़ दिया था। इसके बाद उसने जमाअत की बाक़ी ईसाई लड़कियों को भी तबलीग़ शुरू कर दी। उसने हम से भी कुछ सवालात किये। हमारे मज़हब से मुतअल्लिक़ और काफ़ी दिनों तक लगी रही। हमने उसके सवालात के जवाबात

भी दिये और साथ में हमने भी उससे कुछ बातें पूछीं। उसको यह भी कहा कि इंजील में रसूलुल्लाह सल्ल0 की आमद से मुतअल्लिक़ पेशगोइयां अभी भी मौजूद हैं लेकिन वह इससे इंकार करती। हम लोगों ने आपस में बहुत बहस की लेकिन वह न मानी। तब हमने यह सोच कर कि यह बहस ला हासिल है और इससे तबलीग़ का मक़्सद पूरा नहीं हो रहा तो हमने उससे दीन के बारे में बात काफ़ी हद तक कम कर दी। हम ख़ुद भी उसको इस्लाम की तबलीग़ करना चाहते हैं लेकिन इसके लिये सही तरीक़ा क्या है? वह हम आप से पूछना चाहते हैं? वैसे अगर अख़्लाक़ के लिहाज़ से देखा जाए तो वह बहुत अच्छी है लेकिन वह सिर्फ़ कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला है। वह फ़िर्क़े के लिहाज़ से "प्रोटेस्टंट" है। प्लीज़! आप हमें यह ज़रूर बताएं कि हम इसको अल्लाह की वहदानियत और इस्लाम के हक़ होने का यक़ीन कैसे दिलाएं?

(5) हमारे स्कूल में सुब्ह असम्बली के वक़्त "पी टी" यअ़नी वर्ज़िश करवाई जाती है। पहले तो यह "पी टी" बग़ैर म्यूज़िक के होती थी लेकिन एक दो साल पहले "पी टी" एक अंग्रज़ी गाने पर शुरू करवाई गई और "पी टी" भी पहले से मुख़्तलिफ़ हो. गई जो कि डांस से मुशाबहत रखती थी। हम लोग पहले तो यह "पी टी" करते रहे लेकिन अब जबकि हमारे ज़ह्न दीन की तरफ़ थोड़ा माइल हुए तो हमने सोचा इस तरह की पी टी करना भी एक गुनाह ही है। हम मुसलमान दोस्तों से पहले इसी ईसाई लड़की ने "पी टी" करना छोड़ी तो हमें भी हौसला मिला और हमने छोड़ दी। जब चंद टीचर्ज़ ने यह देखा और हम से दरयाफ़्त किया कि हम "पी टी" क्यों नहीं करते तो हमने कह दिया कि यह "पी टी" नहीं बल्कि डांस है और हमें इस तरह की पी टी पसंद नहीं। हमने प्रिंसिपल से भी बात की

तो वह हमें समझाती रहीं कि इसमें कोई ख़राबी नहीं। इंसान को तंग नज़र नहीं होना चाहिये। यहां तक तो बात ठीक थी लेकिन इसके बात जब हमारी इस्लामियत की टीचर ने भी हम से "पी टी" करने को कहा तो हम परेशान हो गए कि अब क्या करें? हमने इस्लामियात की टीचर से इस मौज़ूअ़ पर बात की कि यह पी टी नहीं बल्कि डांस है और वह भी म्यूज़िक के साथ। तो मिस ने कहाः यह स्कूल के उसूलों में शामिल है और आप को यह ज़रूर करना पड़ेगी। मिस ने मज़ीद कहा इस्लाम इतनी पाबंदियां नहीं लगाता और म्यूज़िक के बारे में इस्लामियात की उस्तानी ने कहा आप खुद देखें जब हुज़ूरे पाक सल्ल0 खुत्बा हज्जतुल विदाअ़ के मौक़ा पर तशरीफ़ ले गए तो बच्चियों ने दुफ़ बजा कर और गीत गाकर उनका इस्तिक़बाल किया। यह बात सुन कर पहले तो हम अपने ज़ह्नों पर ज़ोर डालते रहे कि खुत्बा हज्जतुल विदाअ़ के मौक़ा पर कब दुफ़ बजाया गया था? जब हमने मिस को असल वाक़िआ और म्यूज़िक की मुमानिअ़त के बारे में बताया तो उन्होंने हमारी बात मानने से ही इंकार कर दिया और मज़ीद कहाः ढोल का जो मैटेरियल है वह दुफ़ वाले मैटेरियल जैसा ही होता है। मिस ने यह भी कहा पी टी वग़ैरा करने से कोई आप लोग ईसाई नहीं हो जाएंगे? मज़हब तो दिल के अंदर होता है उसको ज़ाहिर नहीं किया जाता। ख़ैर! काफ़ी देर बहस के बाद मिस ने हमारी बात मानने से इंकार कर दिया और हम दोस्तों को "नाफ़रमांबरदार" का ख़िताब दे दिया गया। क्योंकि मिस के कहने के मुताबिक़ सब मुसलमान लड़कियां तो यह करती हैं लेकिन हमने यह पी टी न कर के टीचर्ज़ का हुक्म नहीं माना।

अब आप ही बताएं कि हम ऐसी सूरते हाल में क्या करें? क्या वाक़ई हम यह सब न करके अपने असातिज़ा की नाफ़रमानी के

मुर्तकिब हो रहे हैं? हमने सिर्फ़ आप को ही इसलिये ख़त लिखा लिखा क्योंकि हम आपको अपना बड़ा और हमदर्द समझ कर आप से मशवरा मांगना चाहते हैं। बराए मेहरबानी इन सवालों के तसल्ली बख़्श जवाब देकर हमारी रहनुमाई फ़रमाएं क्योंकि हम बहुत परेशान हैं। अल्लाह हम सब का हामी व नासिर हो। आमीन। आख़िर में यह कहेंगे कि आप इस ईसाई लड़की के लिये हिदायत की दुआ कीजियेगा।

वस्सलाम......कुछ परेशान मुसलमान बच्चियां

सबसे पहले तो मुझे इस बात के इज़्हार की इजाज़त दीजिये कि आप और आप की सालिहात मोमिनात साथियों का ख़त मेरे लिये बड़ी ख़ुशगवार और मुसर्रत का बाइस बना। एक ईसाई मिशनरी स्कूल में पढ़ने वाली बच्चियां अपने दीन से इस क़दर गहरा तअल्लुक़, इसकी दुरुस्त मालूमात का इतना शौक़, उसके तमाम अहकामात पर अमल का इस क़द्र जज़्बा और उसके बारे में शुऊर व वाक़फ़ियत और आगही हासिल करने के लिये इतनी कोशिश कर सकती हैं, यह बात मेरे लिये इस क़दर ख़ुशी और इतमीनान का बाइस है कि मैं उसके इज़्हार पर मजबूरा हों। आप जिस माहौल में ज़ेरे तालीम हैं वहां अपने किर्दार, अपनी नशिस्त व बरख़ास्त और सही इस्लामी तहज़ीबी व अख़्लाक़ी तस्वीर पेशं करके जिस क़दर तबलीग़ कर सकती हैं शायद किसी और ज़रीआ से मुम्किन न हो। आप ख़ुद एक "रोल माडल" हों। आप के Actions और Deeds ही तबलीग़ का सबसे मुअस्सिर ज़रीआ हैं। आपने मशहूर मुहावरा सुन रख होगा: Action speak louder then words "अमल अलफ़ाज़ से ज़्यादा बुलंद आहंग होता है।" जब आप दीन की हर हर चीज़ पर अमल पैरा होंगी तो यह चीज़ दूसरों

के लिये अव्वलन तो बाइसे तजस्सुस होगी और यही तजस्सुस उनको आप के क़रीब लाएगा……सवालात की सूरत में। फिर आप को भरपूर तब्लीग़ का मौक़ा मिलेगा। अलहम्दु लिल्लाह! आप के ख़त की सतर सतर से जिन दीनी जज़्बात और मज़हबी ग़ैरत व हमियत का इज़्हार हो रहा है इस नेअ़मे उज़्मा पर आप अल्लाह का जिस क़दर शुक्र अदा करें, कम है। यह इस्लाम की हक़्क़ानियत और सच्चाई की दलील पर मिशनरी इदारे जो ईसाइयत की तरवीज और फ़रोग़ के लिये बनाए गए हैं वहां आप जैसी नेक मुअम्मात पहुंच कर उनके वसाइल को अपने मक़ासिद के लिये इस्तेमाल करें। आप को इल्म होगा कि मैं अपने नाम आने वाली बेशुमार डाक में से कुछ का जवाब तहरीर कर पाता हूंगा मगर आप के ख़त ने मुझे जवाब पर मजबूर कर दिया है। दिल से दुआ गो हूं कि अल्लाह तआला आप का मददगार हो और आप की ताईद व नुसरत के ग़ैबी अस्बाब मुहय्या फ़रमाए। अब आप अपने सवालात का जवाब सुन लीजिये।

(1) इसका ज़िक्र अहादीस में नहीं, अलबत्ता शिद्दत पसंद यहूदी रहनुमाओं ने अपनी क़ौम को यह बावर कराया है कि ऐसा किये बग़ैर "मसीहा" नहीं आएगा। जबकि यह ऐसी फुज़ूल बात है कि एतिदाल पसंद यहूदी भी उसे नहीं मानते। उनका कहना है कि मसीहा जब आएगा, तब वह हमें ज़िल्लत से नजात दिलाएगा, इस्राईली रियासत क़ाइम करेगा और हैकल तामीर करेगा। हमें उसके आने से पहले फ़लस्तीन के बाशिंदों पर इतना ज़ुल्म करने की क्या ज़रूरत है? लेकिन शिद्दत पसंद यहूदी न तौरात की पेशगाइयां मानने पर तैयार हैं न अपने ही क़ौम के मोअ़तदिल मिज़ाज लोगों की बात सुनने पर……अल्लाह का फ़ज़्ल है कि उनका मुक़ाबला फ़लस्तीनी मुसलमानों जैसे खरे मुजाहिदीन से है जो इंतिहाई नामुसाइद हालात

के बावजूद हज़रत ईसा अलै0 के नुज़ूल तक यहूदियों के ख़िलाफ़ डटे रहेंगे और इस्राईल के लिये मैदान ख़ाली नहीं छोडेंगे......उनकी कुर्बानियों की बदौलत मस्जिदे अक़्सा क़ाइम व दाइम रहेगी और खुश नसीब मुजाहिद मुसलमान मुश्किल तरीन हालात में भी यहूद के सारे मंसूबों को नाकाम बनाते रहेंगे। इंशा अल्लाह तआला।

(2) मज़्मून में बात कुछ मुब्हम रह गई है। इसका पसमंज़र कुछ यूं है कि हज़रत दानियाल अलै0 ने नफ़रत की रियासत (यअ़नी इस्राईल) के क़्याम की तारीख़ बताते हुए फ़रमाया थाः "फिर मैंने दो मुक़द्दस ग़ैबी आवाज़ों को यह कहते सुनाः "यह मुआमला कब तक इसी तरह चलेगा कि मेज़बान और मुक़द्दस मक़ाम को क़दमों तले रौंद दिया जाए?" इस पर दूसरी आवाज़ ने जवाब दियाः "दो हज़ार तीन सौ दिनों तक के लिये। फिर मुक़द्दस मक़ाम पाक साफ़ कर दिया जाएगा। "इससे मालूम हुआ कि नफ़रत की रियासत 2300 दिनों बाद क़ाइम होगी। (दानियालः बः8, आयतः 13-14) एक पेशगोई में है कि यह 45 दिनों बाद ख़त्म हो जाएगी। (दानियालः बः 12, आयतः 8-13) अब इन 2300 साल का आग़ाज़ कब से होगा और यह 45 दिनों में कैसे ख़त्म होगी? शारिहीन के मुताबिक़ इन 2300 साल का आग़ाज़ यूनानी बादशाह सिकंदर (एलेक्ज़ेंडर) के एशिया यअ़नी ईरान पर हमले से होता है। यह हमला 333 क़ब्ल मसीह में हुआ। इसको 2300 साल 1967 ई0 में पूरे होंगे। (2300-333=1967) इस्राईल अगर्चे क़ाइम 1948 ई0 में हुआ लेकिन उसने अलक़ुद्स पर क़ब्ज़ा 1967 ई0 में किया। 1967 ई0 के 45 साल बाद (तौरात की एक आयत के मुताबिक़ कलामे इलाही में दिन से मुराद साल होते हैं) यअ़नी 2012 ई0 में इस्राईल रियासत का ख़ातमा......या ख़ातमे का आग़ाज़......हो जाएगा। इसकी तफ़सील

डाक्टर अब्दुर्रहमान अलहवाली की किताब यौमुल ग़ज़ब, तर्जुमाः रज़िउद्दीन सय्यद में देखी जा सकती है।

(3) यूं लगता है कि यहूद की इस मुदाख़लत और काइनात की तसख़ीर की फुज़ूल कोशिशों से दो असरात रूनुमा होंगेः

(1) ज़मीन की गर्दिश में गड़बड़ से दिन रात के बनने में तीन दिन के लिये फ़र्क़ आ जाएगा। पहला दिन एक साल, दूसरा एक महीने और तीसरा हफ़्ते हो जाएगा। यह दज्जाल के ख़ुरूज के वक़्त होगा।

(2) ज़मीन की महवरी गर्दिश रुक जाएगी फिर मुतज़ाद सिम्त में घूमेगी। ऐसा एक दिन के लिये होगा फिर इसके बाद यह गर्दिश मामूल के मुताबिक़ हो जाएगी। यह दज्जाल की हलाकत के बाद क़रीब क़्यामत में होगा और इसके बाद तौबा के दरवाज़े बंद हो जाएंगे। यह दो अलग अलग वाक़िआत हैं जिनकी मुम्किना साइंसी वजूह आलमी सतह पर किये जाने वाले वह तजर्बात हैं जो यहूदी सरमाए के बलबूते पर पूरी दुनिया के साइंसदान यहूदी साइंस दानों की सरबराही में कर रहे हैं। यह इन उलूम की रौशनी में एक इम्कानी तौजीह है जिन तक आज की दुनिया पहुंच सकी है, कोई हतमी तहक़ीक़ या आख़िरी राए नहीं। हक़ीक़त का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है।

मौलाना इस्माईल रैहान साहब ने भी बंदा से यह सवाल किया था। इसलिये बंदा इसकी कुछ मज़ीद तशरीह ज़रूरी समझता है। पहले तो यह मलहूज़ रहे कि हर चीज़ का असल सबब तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हुक्म है। ज़ाहिरी सबब कोई भी चीज़ हो सकती है। दज्जाल के ख़ुरूज से पहले ज़मीन की गर्दिश थम कर तीन दिन के लिये सुस्त हो जाएगी। पहला दिन साल, दूसरा महीने और तीसरा

हफ़्ते के बराबर हो जाएगा। दज्जल के ख़ातमे के बाद क़्यामत के क़रीब ज़मीन गर्दिश ज़रा देर को रुक कर फिर मुख़ालिफ़ सिम्त में शुरू हो जाएगी। एक दिन के लिये सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा और तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा। इसके बाद वह मअ़मूल के मुताबिक़ फिर मशिरक़ से तुलूअ़ होगा। इन दो वाक़िआत का हक़ीक़ी सबब तो ख़ालिक़े काइनात का अम्र होगा। ज़ाहिरी सबब यहूदी साइंसदानों की सरबराही में तसख़ीरे काइनात के लिये किये जाने वाले वह तजर्बात हैं जो फ़ित्री निज़ाम में मुदाख़लत करके उसे अपने ताबेअ़ बनाने के लिये किये जा रहे हैं। कोई बईद नहीं कि ख़ुरूजे दज्जाल से पहले ज़मीन का थम जाना उनका एक फ़ौरी असर हो और हलाकते दज्जाल के बाद ज़मीन का उल्टी सिम्त गर्दिश करना उनका दूसरा असर हो जो ज़रा देर से ज़ाहिर हो। वल्लाह अअ़लम बिस्सवाब

इस मज़मून में जो कुछ लिख गया यह महज़ इम्कानी तौजीह है। नाक़िस समझ का नाक़िस इज़्हार है। हक़ीक़त अल्लाह तआला जानता है। हमारा मक़्सद सिर्फ़ "तज़कीर" है यअ़नी बिरादराने इस्लाम को अलामाते क़्यामत के तज़किरे के ज़रीए क़्यामत के याद दिलाना और आख़िरत की तरग़ीब देना। आप का शुक्रिया कि इस तरफ़ तवज्जो दिलाई।

(4) हां! दुनिया में जितने भी क़ुर्आन करीम हैं वह सहाबा के हाथों के लिखे हुए नुस्ख़े की कापी हैं और सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम का लिखा हुआ नुस्ख़ा इस्तंबूल, तुर्की की म्यूज़ियम (तोप कापे) में महफ़ूज़ है। ईसाईयों की बदक़िस्मती है कि इंजील का एक भी नुस्ख़ा असल इबरानी ज़बान में महफ़ूज़ नहीं (ख़ुद इबरानी ज़बान ही

महफ़ूज़ नहीं)। हज़रत ईसा अलै0 का लिखवाया हुआ तो रहने ही दें। लेकिन मुसलमानों से वह यह फुजूल सवाल करते रहते हैं जो आप से किया गया। कुछ अर्सा कब्ल एक ईसाई पादरी मुसलमान हुआ था। उसने बताया कि मेरे मुसलमान होने का सबब यह हुआ कि मैंने एक मुसलमान आलिम से मुनाज़िरे के दौरान सवाल किया कि जो कुर्आन मजीद आज मौजूद है वह तो नुस्ख़ए उस्मानी है यअ़नी हज़रत उस्मान रज़ि0 ने उसे लिखवा कर पूरे आलमे इस्लाम में भिजवाया। कुर्आन करीम का नुस्ख़ए मुहम्मदिया कहां है? पादरी कहता है बज़ाहिर यह सवाल बड़ा मअ़कूल है कि मौजूद कुर्आन उस्मानी मुस्हफ़ है, मुहम्मदी मुस्हफ़ नहीं......लेकिन हक़ीक़त में इतना फुजूल है कि मुझे सारी रात इस पर बेचैनी रही। बिलआख़िर मैंने इस्लाम कबूल कर लिया। यह सवाल ऐसा है जैसे कोई कहे कि ताज कम्पनी जो नुस्ख़ा छापती है, यह तो नुस्ख़ए ताजिया है, नुस्ख़ए उस्मानिया नहीं। जब कोई शख़्स कोई किताब लिखे फिर उसे शाए करवा दे जो बि ऐमिही उसकी लिखी हुई तहरीर के मुताबिक़ हो तो इस शाए शुदा किताब को उसी शख़्स की तसनीफ़ कहा जाता है। यह कोई अक़्लमंद नहीं कहता कि उसकी किताब सिर्फ़ वह है जो उसने ख़ुद लिखी या लिखवाई। बिल्कुल यही सूरते हाल कुर्आन करीम की है। ईसाई हज़रात के पास तो इंजील की अस्ल ज़बान का पूरी दुनिया में एक भी इबरानी नुस्ख़ा नहीं। "ईसवी नुस्ख़ा" का उनसे क्या मुतालबा किया जाए? अस्ल नुस्ख़ा तो दूर की बात है, अस्ल ज़बान का......एक भी नुस्ख़ा......पूरी दुनिया में......कहीं भी......किसी म्यूज़ियम में भी मौजूद नहीं। मुसलमानों की किताब की अस्ल ज़बान भी महफ़ूज़ है, इब्तिदाए इस्लाम के लिखे हुए नुस्ख़े भी महफ़ूज़ हैं।

यह नुस्ख़े आज के मौजूदा नुस्ख़ों से......और आज के और सारी दुनिया के कुर्आन करीम एक दूसरे से हरफ़ ब हरफ़ मिलते हैं। यह इसके अस्ली और हक़ीक़ी होने की ऐसी दलील है कि इससे कोई इंकार नहीं कर सकता। जबकि दूसरी तरफ़ ईसाई हज़रात के यहां सूरते हाल यह है कि खुद इसमें भी इख़्तिलाफ़ है कि इंजील में मौजूद चार मुख़्तलिफ़ किताबों में से अस्ल इंजील कौनसी है? और वह किस ज़बान में नाज़िल हुई थी? दुनिया भर में इंजील के तर्जुमे चल रहे हैं और हर तर्जुमा दूसरी ज़बान के तर्जुमे से काफ़ी कुछ मुख़्तलिफ़ है, लेकिन कौनसा तर्जुमा अस्ल के ज़्यादा मुताबिक़ या इससे क़रीब है, इसे चैक करने का कोई ज़रीआ नहीं, क्योंकि अस्ल नुस्ख़ा तो दूर की बात है, अस्ल ज़बान का एक भी नुस्ख़ा पूरी दुनिया में......कहीं भी......किसी अजाइब घर में भी मौजूद नहीं।

आप को इंजील में मौजूद हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुतअल्लिक़ पेशगोईयों की कापी भेजी जा रही है। इसकी मदद से आप अपनी दोस्त को इस्लाम की दावत भी दे सकती हैं और जो क्लास फेलोज़ आप से कुर्आन करीम से मुतअल्लिक़ मन्फ़ी सवालात करती हैं उनका जवाब भी इसी के ज़रीए मुम्किन है। ग़ैर मुस्लिमों के सामने इस्लाम के तआरुफ़ के लिये हज़रत मौलाना मंज़ूर नोअ़मानी साहब की किताब "इस्लाम क्या है?" बहुत मुफ़ीद है। हज़रत मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम की किताब "बाइबल से कुर्आन तक" और ईसाइयत क्या है?" नीज़ मअ़रूफ़ नो मुस्लिम दानिशवर "अल्लामा असद ल्यूपोड की "रोड टू मक्का" भी लाजवाब किताबें हैं। मुअख़्ख़िरुज़ ज़िक्र का उर्दू तजुर्मा "तूफ़ान से साहिल तक" के नाम से छप चुका है।

(5) आप हरगिज़ इस डांस नुमा पी टी में हिस्सा न लें। यह असातिज़ा की नाफ़रमानी नहीं। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल0 की फ़रमांबरदारी का तक़ाज़ा है। अपने ईमान की हिफ़ाज़त इस्तिक़ामत के साथ करें। रक़्स और मौसीक़ी दोनों शैतानी काम हैं। यह शैतान के ख़ास हथियार हैं। इनके ज़रीए से वह दिल में निफ़ाक़ की बीज बोता और बेहयाई के कामों का शौक़ पैदा करवाता है। हमारे रहमानी मज़हब में रक़्स और मौसीक़ी के क़तअन कोई गुंजाइश नहीं। हुज़ूर सल्ल0 जब हिज्रत करके मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो बच्चो ने दुफ़ बचा कर आप का इस्तिक़बाल किया था। अब जब हुज़ूरे पाक अलै0 ने दुफ़ की इजाज़त दी और ढोल को शैतान की आवाज़ क़रार दिया तो दुफ़ और ढोल को एक जैसा कहने वाले कितनी बड़ी जिहालत का शिकार हैं? अगर इंसान मज़हब की बातों को अपनी नाक़िस अक़्ल से तरह तरह के सवालात करके जांचता रहेगा तो नुबुवत की ज़रूरत क्या रह जाती है? जो बात हमारे मज़हब में तै हो गई बस वह हर्फ़े आख़िर है। किसी को यह हक़ नहीं कि मनमानी ख़्वाहिशात पूरा करने के लिये पूछता फिरे कि ऐसा क्यों है और ऐसा क्यों नहीं?

अल्लाह तआला आप की मदद फ़रमाए। मज़हब दिल में भी होता है और सर से पांव तक हर अज़्व पर भी लागू होता है। वह और लोग होंगे जो अपने मज़हब को दिल में छिपा कर रखते हैं और जिस्म पर ज़ाहिर करने से शर्माते हैं। उन्होंने अपना मज़हब बदल दिया है और अब हम को भी इस बदनसीबी में मुब्तला करना चाहते हैं।

दिल से दुआ करता हूं अल्लाह तआला इसको भी और हम सब

को भी नेक हिदायत नहीं फ़रमाए। ईमान व इस्लाम की मुहब्बत और उस पर अमल, उसकी तबलीग़ का शौक़ हमारे रग व पै में, रेशे रेशे में उतार दे। आमीन

☆☆☆

मस्लिहत या ग़ैरत, क्लोनिंग या शुआएं, सौ साल बाद

मुहतरम मुफ़्ती मुहम्मद साहब
अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह

मैं गुज़िश्ता सात साढ़े सात साल से आप का क़ारी हूं। आप के मज़ामीन "अक़्सा की पुकार", "बोलते नक़्शे" वग़ैरा मेरे लिये बाइसे तवज्जोह हैं। आज मैं चंद निकात पर अपने इश्कालात की वज़ाहत चाहता हूं।

(1)……आप की किताब "आलमी यहूदी तन्ज़ीमें" में सफ़्हा 53 पर लिखा है: "सो जिद्दत पसंद पूरी दिल सोज़ी और मुकम्मल ख़ैर ख़्वाही से मुसलमान नौजवानों को तहम्मुल व बर्दाश्त और वुस्अत नज़री व रवादारी की तलक़ीन करते नज़र आते हैं। वह मुसलमानों को हिक्मते अमली सीखने और सुलह हुदैबिया वाला नर्म रवय्या अपनाने की तरबियत देते हैं और यह भूल जाते हैं कि सुलह हुदैबिया के मौक़ा पर मुसलमान दुश्मन के ज़ेरे नगीन इलाक़े "मक्का मुकर्रमा" में जा रहे थे जबकि दौरे हाज़िर में दुश्मन चढ़ाई करके मुस्लिम मुमालिक को रौंद आ निकला है।"

जनाब मुफ़्ती साहब! आज से साल तीन माह क़ब्ल "इज़्ज़त मआब जनाब परवेज़ मुशर्रफ़ साहब" ने भी कुफ़्र व इस्लाम के मअ़रका में सुलह हुदैबिया का हवाला दिया था और कहा था इस मौक़ा पर ज़रूरत हिक्मत से काम लेने की है। हुदैबिया के मौक़ा पर

हज़रत उमर रज़ि0 भी बहुत जज़्बाती हो रहे थे।

यह बात भी सही है कि मुसलमान उस वक़्त कुफ़्फ़ार से तादाद में कम थे, यह भी सही है कि वह लड़ने के इरादे से नहीं बल्कि उम्रा की ग़र्ज़ से मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुंचे थे, उनके पास हथियार भी नाकाफ़ी थे। वह अपने बीस कैम्प से तक़रीबन 400 किलोमीटर दूर थे। उनकी कोई दिफ़ाई लाइन न थी। उनको कुमक का पहुंचना तक़रीबन नामुम्किनात में से था। वह मुश्किल हालात में पलट कर किसी दिफ़ाई हिसार में पनाह भी नहीं ले सकते थे। मगर मैं समझता हूं कि सुलह हुदैबिया का तज़किरा बैअ़ते रिज़वान के बग़ैर मुकम्मल हो ही नहीं सकता। यह वह बैअ़त है जिसके ऊपर अल्लाह तआला का हाथ है। इस बैअ़त से उन तमाम दावों, तज्ज़ियों और अंदेशों से क़लई उतर जाती है जो यह कहते हैं कि चूंकि हालात मुसलमानों के मुवाफ़िक़ न थे इसलिये रसूलुल्लाह सल्ल0 और सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन ने वक़्त और हालात देखते हुए "हिक्मत" से काम लेते हुए कुफ़्फ़ार के तमाम मुतालबे मानते हुए सुलह कर ली।

मुसलमानों ने सुलह हुदैबिया इसलिये नहीं की कि हालात मुसलमानों के लिये साज़गार न थे और वक़्त को टालने के लिये मजबूरन उन्हें सुलह करना पड़ी। सुलह हुदैबिया महज़ अल्लाह की वह्य की रौशनी में रसूलुल्लाह सल्ल0 के हुक्म से हुई। इसलिये कि अल्लाह तआला ने उसे मुसलमानों के लिये फ़त्हे मुबीन क़रार दिया। बाक़ी यह सवाल कि सूरह फ़तह तो सुलह हुदैबिया के बाद नाज़िल हुई। वह्ये मतलू की तरह वह्ये ग़ैर मतलू पर ईमान रखने वालों के लिये इस तरह के एतिराज़ात कुछ मअ़नी नहीं रखते। "हज़रत परवेज़ मुशर्रफ़" की हिक्मत क़त्अन हज़रत उमर रज़ि0 से ज़्यादा नहीं हो

सकती। मैं समझता हूं कि हज़रत उमर रज़ि0 की हिक्मत को सिर्फ़ और सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल0 ने वह्ये इलाही की रौशनी में वीटो किया।

मुफ़्ती साहब की किताब से लिये गए मुंदरजा बाला इक़्तिबास से भी मुझे महसूस होता है कि जैसे सुलह हुदैबिया इसलिये हुई क्योंकि मुसलमान दुशमन के ज़ेरे नगीन इलाक़े में जा रहे थे। मुअद्दिबाना अर्ज़ है कि मेरी इस्लाह फ़रमा दीजिये और दिल के तरद्दुद को दूर कर लीजिये। अल्लाह तआला आप को जज़ाए ख़ैर दे। मैं यह भी कहना चाहूंगा अगर आईंदा भी किसी सुलह से मुसलमानों की फ़त्हे मुबीन और इस्लाम का ग़ल्बा यक़ीनी हो तो फ़ब्हा हमें बिला वजह ख़ून बहाने का शौक़ नहीं है (अपना भी और दुशमनों का भी) वर्ना हमारा रास्ता तो बदर व हुनैन, ग़ज़्वा, बनू क़नीक़ाअ़, बनू क़रीज़ा व ख़ैबर से होता हुआ क़ादसिया, नहाविनद और यरमूक से गुज़रता है। हमारा रास्ता सोमनात से गुज़रता है न कि पलटन मैदान से।

(2)......मुफ़्ती के सिलसिला "दज्जालियात" से मुतअल्लिक़ ज़र्बे मोमिन 19 ता 26 ज़िल हिज्जा 1429 हि0 में मज़मून छपा है: "दज्जाल कहां है?" उसके इब्तिदाई पैराग्राफ़ में लिखा है: "दज्जल कुछ मवाक़ेअ़ पर कुछ अर्से के लिये इस क़ाबिल होगा कि लोगों को हलाक़ और फिर ज़िंदा कर सके और यह इस मामूली इल्म की बदौलत होगा वह उसे किस तरह करेगा ग़ालिबन क्लोनिंग के ज़रीए।"

मेरी नाक़िस राए में यह अंदाज़ा सही महसूस नहीं होता। क्लोनिंग तो आजकल ही काफ़ी शोहरत पा चुकी है। दज्जाल कुछ मवाक़ेअ़. पर नहीं बल्कि एक अज़ीम इंसान को क़त्ल करेगा। फिर

उसे दोबारा ज़िंदा कर देगा। (नऊज़ु बिल्लाह) फिर ज़ब दोबारा उसी शख़्स का मारना चाहेगा तो उस पर क़ादिर न होगा। वह जो मुसलमान को दोबारा ज़िंदा करेगा तो कुछ इस अंदाज़ से होगा कि पहले यह काम किसी ने किया होगा। इसी को तो मिसाल बना कर वह ख़ुदाई का दावा करेगा। दूसरी बात यह है कि क्लोनिंग के ज़रीए एक जानदार ख़लिया लेकर जो जानदार पैदा किया जाता है वह हूबहू पहले की हमशक्ल होता है लेकिन यह वही पहला जानदार नहीं होता। बल्कि यह एक बच्चे की शक्ल में होता है। जो वक़्त के साथ परवान चढ़ेगा और बड़ा होकर हूबहू अपने साबिक़ा जानदार की नक़्ल होगा जबकि दज्जाल जिस शख़्स को मारेगा उसी को ज़िंदा करेगा। वह बच्चा नहीं होगा, उसी उम्र का वही शख़्स होगा और बेबांके दहल कहेगा कि अब तो मुझे तेरे दज्जाल होने का यक़ीन और भी पुख़्ता हो गया। अपने इस ख़्याल में इस्लाह का तालिब हूं।

(३)......इसी मज़मून के आख़िर में एक हदीस नक़्ल की गई है जिसमें हज़रत तमीम दारी रज़ि0 के सफ़र के बारे में बताया गया है कि एक जज़ीरा पर उनकी मुलाक़ात जसासा और दज्जाल से हुई। दज्जाल ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था। एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः आज से सौ साल बाद हम में से कोई नहीं होगा। (हदीस के सही अल्फ़ाज़ मुझे याद नहीं हैं। मफ़हूम तक़रीबन यही है) यअ़नी उस वक़्त रूए ज़मीन पर जो इंसान बस्ते थे, 100 साल बाद यअ़नी 110 हि0 तक उनमें सब का इंतिक़ाल हो गया। इसी बिना पर उलमा का एक बड़ा तब्क़ा हज़रत ख़िज़र अलै0 की हयाते दुनिया की नफ़ी करता है कि अगर उस वक़्त भी हज़रत ख़िज़र अलै0 ज़िंदा थे तो भी 100 साल बाद वह भी वफ़ात पा गए और अब ज़िंदा नहीं हैं। इन दो अहादीस का ज़ाहिरी तआ़रुज़ तरद्दुद में डालता है। आप

से मुअद्दिबाना दरख़्वास्त है कि मुनासिब तत्बीक़ फ़रमा कर ज़ाहिरी इशकाल को दूर कर लीजिये।

दूसरी बात यह कि दज्जाल यक़ीनन एक इंसान ही है, जिन्न नहीं है। क्योंकि जिन्नों में सब से बड़ा शदीद शैतान है। उसमें भी यह ताक़त नहीं कि ज़बरदस्ती किसी को गुनाह पर आमादा कर ले। दज्जाल इंतिहाई ज़हीन और साइंसी उलूम में कमाल महारत रखता होगा। वह अगर किसी गुमनाम जज़ीरा पर क़ैद है तो वह यह उलूम कहां से सीखेगा? नीज़ इस दुनिया पर रहते हुए क्या उसकी उम्र में इज़ाफ़ा होगा? अब तक तो वह हज़ारों साल का बूढ़ा हो चुका होगा?

(4)......गुज़िश्ता कुछ मज़ामीन में "हज़रत मेहदी" के ज़ुहूर की अलामत यह बताई थी कि इसी साल माहे रमज़ान में चांद गिर्हन और सूरज गिर्हन एक महीना में होंगे। 1424 हि० में ऐसा ही हो भी चुका है मतगर अहम बात यह कि इस साल चांद गिर्हन दर्मियाने महीना नहीं बल्कि शुरू महीना में होगा।

यह बात तो एक स्कूल का तालिबे इल्म भी जानता है कि सूरज गिर्हन हमेश क़मरी महीना की आख़िरी तारीख़ों 28 या 29 तारीख़ को होता है जबकि चांद गिर्हन हमेशा वुसते महीना यअ़नी 13 या 14 तारीख़ को होता है और इसकी वजह चांद और ज़मीन की मख़्सूस हरकात हैं। पहली तारीख़ को चांद गिर्हन होना ख़िलाफ़े आदत होगा। मुझे ख़िलाफ़े आदत किसी वाक़िए के होने से इंकार नहीं है। क़्यामत के क़रीब बेशुमार ख़िलाफ़े आदत वाक़िआत होंगे मगर जो बात मेरे ज़ह्न में है वह है कि पहली तारीख़ के चांद के चांद गिर्हन का मुशाहिदा कैसे किया जाएगा? पहली तारीख़ का चांद निहायत बारीक होता है। बअ़ज़ औक़ात नज़र भी नहीं आता, बहुत कम वक़्त के लिये उफ़ुक़ पर रहता है। ऐसे में अगर उस पर गिर्हन हो भी रहा हो

तो आम आदमी के लिये इसका मुशाहिदा नामुम्किन है। ऐसा ही महसूस होगा कि किसी वजह से आज चांद नज़र नहीं आया। किसी का ज़ेहन मा सिवाए साइंसदानों के गिर्हन की तरफ़ नहीं जाएगा। लिहाज़ा यह खुली हुई निशानी महसूस नहीं होती। नीज़ यह चांद गिर्हन हर साल पहले से जैसे अभी से यह बता दिया गया है कि 2009 ई0 में दो सूरज गिर्हन और चार चांद गिर्हन होंगे, इन्ही में से होगा या यह बिल्कुल हिसाब से हट कर होगा।

उम्मीद करता हूं आप जवाबात देकर मेरे इशकालात को दूर करेंगे।

वस्सलाम......डाक्टर मुहम्मद आरिफ़, हैदराबाद

जवाब:

याद आवरी, रहनुमाई और सलाह व इस्लाह का अज़हद शुक्रिया। अल्लाह तआला आप को इस का अजर अता फ़रमाए और आप को अपनी, अपने रसूल सल्ल0 की सच्ची मुहब्बत नसीब फ़रमाए। आमीन

(1)......इस जुम्ले में जिद्दत पसंदों से मुराद वह स्कालर थे जिन्होंने मुशर्रफ़ साहब को वह तक़रीर तैयार करके दी थी जिसमें उन्होंने मशहूर ज़माना इस फ़ासिद तावील से काम लेकर अपने नाजाइज़ अफ़आल को सनदे जवाज़ फ़राहम करने की कोशिश की थी। आप की बात बिल्कुल बजा और दुरुस्त है। बंदा के इस जुम्ले का मक़सद हर्गिज़ नाम निहाद हिक्मत पसंदी और बुज़दिली बनाम मस्लिहत कोशी की किसी भी दर्जे में हिमायत न था, बल्कि वही था जिसकी तफ़सील आप ने की और इज्माल मैंने बयान किया, लेकिन मुब्हम जुमले की शक्ल में। साफ़ बात यह है कि सुलह हुदैबिया हुई इसलिये थी कि मुसलमानों के सिपह सालारे आला (सल्ल0) ने एक

मुसलमाना (हज़रत उस्मान रज़ि0) के इंतेक़ाम के लिये 14 सौ मुसलमानों से मौत तक लड़ने का अहद ले लिया था। इस ग़ैरत और ईमानी उख़्वत के बेमिसाल मुज़ाहिरे ने कुफ़्फ़ार को मजबूर किया कि वह आकर सुलह की बातचीत करें। आज हमने ईमानी ग़ैरत को एक तरफ़ रख कर खुद सुलह हुदैबिया की ही ऐसी तशरीह शुरू कर दी है जो हमारी बुज़दिली और बेईमानी को सनद फ़राहम कर सके। इससे बड़ी बदनसीबी की बात क्या होगी? किताब के अगले एडीशन में इस तहरीर के इब्हाम को दूर कर दिया है। जज़ाकुमुल्लाहु तआला

(2)......इस जुम्ले को यूं कर देना चाहिये......"ग़ालिबन क्लोनिंग की किसी तरक्क़ी याफ़्ता शक्ल के ज़रीए।" और वाक़िआ यह है कि यह सब कुछ दज्जाल की ताक़त की साइंसी तौजीह है क्योंकि इस दारुल अस्बाब में उसको जो ताक़त मिलेगी वह बिलकुल्लिया माफ़ौक़ुल फ़ितरत न होगी बल्कि फ़ितरी क़ुव्वतों पर ग़ैर मामूली तहक़ीक़ के ज़रीए हासिल होगी जिसे आम लोग करिशमए क़ुदरत समझ कर यहूदी साइंसदानों के इस शोअ़बदा बाज़ को खुदा मान लेंगे जैसा कि आप ने लिखा है: "दज्जाल साइंसी उलूम मे कमाल महारत रखता है।" अगले मज़ामीन में राक़िम यह बात कह चुका है कि बरमूडा ट्राइएंगल में कारफ़रमा शुआओं को यहूदी साइंसदानों ने किसी हद तक महफ़ूज़ कर लिया है। मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़ करने को और हस्बे मंशा इस्तेमाल करने की कोशिशें जारी हैं। इन शुआओं के ज़रीए मुहय्यल कूल काम पलक झपकते में किये जा सकते हैं और अन्क़रीब दुनिया दज्जाल के ज़ुहूर से क़ब्ल ही झूटी खुदाई के यह तमाशे देखेगी।

(3)......इन अहादीस मे तआरुज़ नहीं इसलिये कि यह आम बनी नोअ़ इंसान की बात हो रही है जो उस वक़्त ज़िंदा थे। इसके

बाद भी उमूमन सौ साल बाद ज़मीन पर वह इंसान नहीं रहते जो आज ज़िंदा हैं। उनकी जगह नई मख़्लूक़ ले लेती है। हज़रत ख़िज़र अलै० जैसा "पैकरे ख़ैर" और दज्जाल अलैहिल लअ़नता जैसा "सरापाए शर" इससे मुस्तसना हैं।

दज्जाल गुमनाम जज़ीरे में बंद है, उसे यह उलूम सीखने की ज़रूरत नहीं, कुछ तो उसकी सलाहियतें बेमिसाल होंगी (अगर्चे सिर्फ़ शर में ही इस्तेमाल होंगी) और कुछ यहूदी साइंसदान अपनी तमाम ईजादात उसके क़दमों में ला डालेंगे ताकि वह उनकी आलमी हुकूमत क़ाइम कर सके। जहां तक उसकी उम्र की बात है......या तो ज़मान व मौसम उस पर असर अंदाज़ नहीं या फिर अल्लाह तआला ने इस फ़ित्ने को बनाया ही ऐसा है कि मुद्दतें गुज़रने के बावजूद वह शर के कामों को नुक्तए उरूज तक पहुंचाने के लिये ऐसा ही चौकस व बेदार होगा जैसा कि कोई जवानुल उम्र होता है।

(4)......यह हिसाब से बिल्कुल हट कर होगा। इसके वक़्त को साइंसदान पहले से मुतअय्यन नहीं कर सकते। ग़ालिबन बारीक होने के बावजूद इसका आम और खुला एहसास ही इसकी इंफ़िरादियत होगा। والله أعلم بما هو كائن فى كائناته۔

जिहाद की अमली तदबीर, अमीर की तलाश

मुहतरम मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर साहब

......अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि

फ़लस्तीन और अक़्सा के मौज़ूअ़ पर आप के मज़ामीन एक अर्से से मेरे ज़ेरे मुतालआ़ रहे हैं। मैं यह सब कुछ पढ़ता था और सोचता था कि अक़्सा का मर्सिया तो सुनाया जा रहा है, मगर मुझ जैसा आदमी इस सिलसिले में क्या कर सकता है? इस सिलसिले में कोई गाइड लाइन नहीं थी। आपकी किताब "दज्जाल" के शाए होने के बाद यह कमी दूर हो गई। इसमें मेरे जैसे शख़्स के करने के लिये बहुत मवाद है। अल्लाह तआला आप को इसकी जज़ाए ख़ैर दे और आप आईंदा भी हमारी रहनुमाई का काम सरअंजाम देते रहें। इसका तअ़य्युन अमीरे जमाअ़त करता है। इस वक़्त हमारे लिये जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का अमीर कौन है? मैं जिहाद की तैयारी किस तरह करूं? नमाज़, तस्बीह व तहमीद, ज़िक्रुल्लाह और हराम से इज्तिनाब के अलावा मैं क्या अमली इक़्दामात कर सकता हूं? वाज़ेह नहीं हैं। डाक्टरों का जो वफ़्द ग़ज़्ज़ा के लिये गया था मेरे अंदाज़े के ऐन मुताबिक़ कुछ न कर सका। मिस्री हुकूमत ने उसे ग़ज़्ज़ा जाने ही न दिया। मेरे ख़्याल में इस वक़्त मुसलमानों में जिहाद की जो दाख़िली रुकावट है उसे दूर करना पहले मरहला में ज़रूरी है, मगर इसकी सूरत क्योंकर हो सकती है?

(3)......रिवायात में है कि कुर्बे क़्यामत में मुसलमान और ईसाई मिल कर एक जंग लड़ेंगे, उस में उन्हें कामियाबी होगी। मुसलमान कहेंगे कि यह कामियाबी हमारी वजह से हुई और ईसाई इसका

क्रेडिट खुद लेने की कोशिश करेंगे। बाद में मुसलमानों और ईसाईयों के दर्मियान जंग शुरू हो जाएगी। मैं कोई आलिम तो नहीं हूं। बस ऐसे ही ज़हन में ख़्याल आता है कि शायद यह जंग कम्यूनिज़्म (रूस) के ख़िलाफ़ अफ़ग़ानिस्तान की सरज़मीन पर लड़ी जा चुकी है जो दरहक़ीक़त कुफ़्र के ख़िलाफ़ जिहाद था, मगर अमरीका ने ढेढ़ दो बरस की ख़ामोशी के बाद जब देखा कि अफ़ग़ान मुजाहिदीन तने तन्हा कामियाबी से यह जंग लड़ रहे हैं तो अपने मफ़ाद की ख़ातिर महज़ अस्लहे की सूरत में मदद की जबकि उसका कोई फ़ौजी लड़ने नहीं आया। बाद में ईसाई अब इस फ़तह का क्रेडिट लेते हैं कि हमने वेतनाम का बदला ले लिया। मैं अपनी इस राए की तसहीह चाहता हूं। अगर वाक़ई रूस के ख़िलाफ़ जंग वही जंग है जिस का ज़िक्र रिवायात में है तो फिर आख़िरी मअ़रका का मैदान सज चुका है। ऐसे में एक अमीरे जमाअत और क़ाइद का मुतलाशी हूं जो मेरी और मुझ जैसे हज़ारों आम मुसलमानों की रहनुमाई करे और बताता रहे कि हर अगले मरहले में हमें क्या करना चाहिये। उम्मीद है कि आप मेरी मुअस्सिर रहनुमाई फ़रमाएंगे।

डाक्टर मुहम्मद, हैदराबाद

जनाब डाक्टर साहब!

वअलैकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाहि वबरकातुहु

2- यह रुकावटें अब बढ़ती ही जाएंगी और साहिबे अज़ीमत मुसलमानों का इम्तिहान सख़्त से सख़्त तर होता चला जाएगा। बिलआख़िर जो लोग सच्चे अक़ीदे, पाकीज़ा ज़िंदगी और जिहाद के रास्ते में आने वाली हर मशक़्क़त बर्दाश्त करने पर डटे रहेंगे, उन्हें (या उनकी नस्बी व रूहानी नस्ल को) अल्लाह तआला इस लशकर में शामिल होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा जिसके हाथों तीसरी आलमी जंग में कामियाबी के बाद आलमगीर सतह पर "ख़िलाफ़ते इलाहिया" क़ाइम होगी। हमारे करने का काम यह है कि आलमी अमीर के ज़ुहूर से क़ब्ल मक़ामी सालेह अमीर की तलाश के साथ साथ अल्लाह तआला को हाज़िर व नाज़िर जानते हुए अपनी ज़ाती ज़िम्मादारियां अदा करें और हम में से हर एक इज्तिमाई कामों में अपना हिस्सा डाले। अपनी ज़बान से इस्लाहे नफ़्स और क़िताल फ़ी सबीलिल्लह की दावत को ज़िंदा रखे। उठते बैठते उनका तज़किरा करे। मुजाहिदीन के हक़ में ज़ह्न हमवार करे। जो कुछ भी आमदनी हो उसका कुछ न कुछ फ़ीसद राहे ख़ुदा में देने की आदत डाले। अपने बच्चों और घर वालों से भी यह आदत डलवाये। मिलने जुलने वालों को भी इसकी तरग़ीब दे। जिहाद बिलमाल के फ़रीज़े को ज़िंदा रखे ताकि चिराग़ की रौशनी भी जलती रहे और इसके लिये दरकार ईंधन भी कम न हो। और जब जिहाद बिन्नफ़्स का मौक़ा आए तो हम अपनी हक़ीर जान को अल्लाह के दीन की सरबुलंदी के लिये इस्तेमाल करते हुए किसी की मलामत की परवाह करें न किसी के दबाव या रोअ़ब से उसे छोड़ें।

3- रूस के ख़िलाफ़ जंग यह जंग न थी......लेकिन......आख़िरी मअ़रके का मैदान दरयाए उर्दुन के मग़रिबी किनारे से थोड़ा आगे "आर्मीगाडून" की वादी में सजना शुरू हो चुका है। इसके लिये वही

ख़ुशनसीब जा सकेंगे जिन्होंने दिल की गहराइयों से, रात की तन्हाइयों में, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर एक सच्चे और हिदायत याफ़्ता क़ाइद का साथ देने के लिये उसका साथ मिल जाने की दुआ की हो और फिर अपनी ज़बान को हरामगोई से, अपने पेट को हराम ख़ोरी से और शर्मगाह को हराम कारी से बचाए रखा हो। जिहाद की लगन रखने और क़ाइद की तड़प रखने वालों की आहे सहर गाही की बदौलत अल्लाह तआला एक मुत्तबेअ़ सुन्नत, बेदार मग़ज़ और शुजाअ़ व दिलेर क़ाइद को उम्मते मुस्लिमा का नजात दहिंदा बना कर भेजेंगे। जब तक कुदरत की तरफ़ से वह हिदायत याफ़्ता अमीर नहीं आता तब तक मुसलमानों को मक़ामी मुतबअ़ सुन्नत अमीर की क़्यादत में माल व जान से जिहाद भी करते रहना चाहिये और उमूमी अमीर की तलाश भी जारी रखना चाहिये। जिहाद किसी भी हाल में साक़ित नहीं है और अमीर के मिलने तक उसे छोड़ बैठने वालों को अमीर के ज़ुहूर के वक़्त उसे जारी रखने की तौफ़ीक़ न मिलेगी। वह तो दुनिया के फ़ित्नों में फंस चुके होंगे।

पच्चीस सवालात एक तज्वीज़

मुहतरम जनाब मुफ़्ती साहब!

अस्सलामु अलैकुम वरमतुल्लाहि वरहमतुल्लाहि वबरकातुहु

मेरे इस ख़त का मक़्सद अपने ज़ह्न में पाए जाने वाले कुछ इश्किलात के मुतअल्लिक़ रहनुमाई हासिल करना है जबकि चंद एक बातों की वज़ाहत भी मतलूब है। अलावा अर्ज़ी में कुछ तजावीज़ भी दे रहा हूं। हो सकता है कि कुछ इशकालात और तजावीज़ ग़ैर अहम हों, लेकिन जो मुनासिब मालूम हों तो "दज्जाल" नामी किताब के दूसरे एडीशन में इफ़ादए आम के लिये उन्हें शामिले इशाअत किया जा सकता है।

(1)......"मेहदवियात" की पहली क़िस्त में आपने पहले पैराग्राफ़ में हज़रत मेहदी के बारे में लिखा है: "वह अभी पैदा नहीं हुए। आम इंसानों की तरह पैदा होंगे।"

क्या अहादीस में उनके वक़्ते पैदाइश की अलामात के मुतअल्लिक़ भी कोई रिवायत मिलती है? यह आपने किस बुन्याद पर लिखा है? बिलफ़र्ज़ अगर हम मान भी लें कि वह उसी सन हिज्री यअ़नी 1429 हि0 में ही पैदा हो गए हों तो फिर उनके ज़ुहूर का साल 1469 हि0 बनता है जो निस्फ़ सदी के बाद आता है जबकि आपने लिखा है कि सदी के मुजद्दिद होने की रू से निस्फ़ सदी से पहले पहले उनका ज़ुहूर होगा।

(2)......आपने मज़ीद फ़रमाया है: "मेहदी उनका नाम नहीं, लक़ब है बमअ़नी "हिदायत याफ़्ता।" यअ़नी उम्मत को इनके दौर में जिन उमूर की ज़रूरत होगी और जो चीज़ें उसकी कामियाबी और

बरतरी के लिये ज़रूरी होंगी और पूरी रूए ज़मीन के मुसलमान बेतहाशा कुर्बानियों देने के बावजूद महज़ इन चंद चीज़ों के न होने की वजह से कामियाब न हो रहे होंगे, (उम्मत को कामियाबी और बरतरी के लिये किन चीज़ों और उमूर की ज़रूरत होगी?) हज़रत मेहदी को कुदरती तौर पर इनका इदराक होगा। (क्या कुर्आन व हदीस में मुसलमानों के हर मस्ले का हल मौजूद नहीं है? और क्या हम कह सकते हैं कि पूरी दुनिया के तमाम मुजाहिदीन इन तमाम सिफ़ात से आरी हैं जिनकी बदौलत वह कामियाबी हासिल कर सकें?) और वह इन कोताहियों की तलाफ़ी और इन चंद सिफ़ात को बआसानी अपनाकर उम्मत के लिये मिसाली किर्दार अदा करेंगे और वह कुछ चंद सालों में कर लेंगे जो सदियों से मुसलमानों से बन न पड़ रहा होगा। (क्या इस तहरीर और इस हदीस शरीफ़ में तदाद नहीं है जिसमें हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमायाः "मेरी उम्मत में से एक जमाअत क़्यामत तक मुसलसल हक़ पर क़िताल करती रहेगी (और) ग़ालिब रहेगी।")

(3)......हज़रत मेहदी को हरमैन में तलाश करने वाले सात उलमा में से अलाहिदा अलाहिदा हर एक के हाथ पर 310 से कुछ अफ़राद ने बैअ़त कर रखी होगी या सब सात उलमा के हाथ पर मज्मूई तौर पर 310 से कुछ ऊपर अफ़राद ने बैअ़त कर रखी होगी? क्योंकि आपने एक जगह तहरीर फ़रमाया हैः "हत्ता कि वह सात उलमा जो दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों (मुम्किना तौर पर पाकिस्तान व अफ़ग़ानिस्ता, उज़्बेकिस्तान, तुर्की शाम, मराकश, अलजज़ाइर, सूडान) से हज़रत मेहदी की तलाश में आए होंगे और हर एक के हाथ पर तीन सौ दस से कुछ ऊपर अफ़राद ने बैअ़त कर रखी होगी।" जबकि आगे एक पैराग्राफ़ में लिखा हैः "इसी तरह यह सात

उलमा भी इनकी जुस्तजू में बेचैन व बेताब होंगे। इनके साथ मौजूद तीन सौ के लगभग अफ़राद भी दुनिया भर से उनकी तलाश में हरमैन पहुंच चुके होंगे।"

(4)......"1940 ई० में एक अमरीकी साइंसदान निकोला टैसला ने "Deathray" ईजाद करने का एलान किया।" यह "Deathray" क्या है?

(5)......"जब हज़रत मेहदी की यूरपी ईसाइयों से जंग होगी, उसमें हज़रत के साथ बारह हज़ार के करीब मुजाहिद होंगे।"

क्या खुरासान के लशकर के अफ़राद भी इस लशकर में शामिल होंगे या उनकी तादाद अलाहिदा होगी?

(6)......"मुत्तहिदा यूरपी फौज का 9 लाख 60 हज़ार लशकर यूरप के दरवाज़ा कुस्तुन्तुनिया (इस्तन्बूल) से गुज़र कर शाम की ज़मीन पर आया होगा।"

इस फ़िक़रे में शाम की मौजूदा जुग़राफ़ियाई हुदूद बयान की गई हैं या वह हुदूद जो इस्लाम के इब्तिदाई ज़माने में थीं? अगर वही थीं तो उस ज़माने के मुल्के शाम में कौन कौन से मुमालिक या इलाके शामिल थे?

(7)......"जब तुम देखो कि खुरासान की जानिब से सियाह झंडे निकल आए तो उस लशकर में शामिल हो जाओ, चाहे तुम्हें इसके लिये बर्फ़ पर घिसट कर (क्रालिंग करके) क्यों न जाना पड़े, कि इस लशकर के आख़िरी ख़लीफ़ा मेहदी होंगे।"

इस हदीस शरीफ़ में सियाह झंडों का जो ज़िक्र किया गया है वह हक़ीक़तन सियाह होंगे या मुहावरतन? यअ़नी क्या उसमें सियाह झंडों से मुराद काली पगड़ियों को लिया गया है या हक़ीक़तन सियाह झंडे?

(8)......आपने तहरीर फ़रमाया है कि ज़ुहूरे मेहदी की आठवें साल दज्जाल ज़ाहिर होगा और उसी साल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नुज़ूल फ़रमाएंगे। मशहूर हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ जब दज्जाल निकलेगा तो ज़मीन पर चालीस दिन रहेगा। पहला दिन एक साल के बराबर दूसरा एक महीने के बराबर और तीसरा हफ़्ते के बराबर होगा। बक़िया 37 दिन आम दिनों के बराबर होंगे।

पूछना यह है कि क्या अहादीस में इसकी तअय्युन मिलती है कि हज़रत ईसा अलै० खुरूजे दज्जाल के पहले दिन नाज़िल होंगे, दूसरे दिन, तीसरे दिन या बक़िया 37 दिनों में से किसी दिन?

(9)......सूरज का अपने गुरूप के मक़ाम से तुलूअ़ होना, दज्जाल का ज़ुहूर और ज़मीन के जानवर का नमूदार होना। क्या यह तीनों वाक़िआत हदीस शरीफ़ में बयान कर्दा तरतीब के मुताबिक़ नमूदार होंगे या ज़ुहूरे दज्जाल से पहले सूरज अपने गुरूप के मक़ाम से तुलूअ़ होगा या ज़ुहूरे दज्जाल से पहले ज़मीन का जानवर नमूदार होगा?

(10)......"हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० अन्हुम से पूछाः "क्या तुमने किसी ऐसे शहर के मुतअल्लिक़ सुना है जिसके एक जानिब खुशकी और दूसरी जानिब समंदर है?" सहाबा ने अर्ज़ कियाः "जी हां! या रसूलुल्लाह!" फ़रमाया "क़्यामत उस वक़्त तक क़ाइम नहीं होगी जब तक कि बनी इस्हाक़ के 70 हज़ार अफ़राद उस शहर के लोगों से जिहाद न कर लें।"

इस हदीस शरीफ़ में किस शहर का तज़किरा किया गया है?

(11)......"जब तुम देखो कि खुरासान की जानिब से सियाह झंडे निकल आए तो उस लशकर में शामिल हो जाओ, चाहे तुम्हें इसके लिये बर्फ़ पर घिसट कर (क्रालिंग करके) क्यों न जाना पड़े, कि इस लशकर में अल्लाह के आख़िरी ख़लीफ़ा मेहदी होंगे।"

इस जुम्ले से ज़ाहिर होता है कि हज़रत मेहदी का ज़ुहूर ख़ुरासान के लशकर में होगा, जबकि पहले आप ने लिखा है कि हज़रत मेहदी का ज़ुहूर बैतुल्लाह शरीफ़ में होगा? इसका क्या मतलब है? क्या ख़ुरासान की जानिब से निकलने वाला लशकर हज़रत मेहदी से मदीने में जाकर मिल जाएगा या यह लशकर ग़ैर मुस्लिमों और इर्तिदादी फ़िक्र के शिकार नाम निहाद मुस्लिम हुक्मरानों के ख़िलाफ़ ही जिहाद करेगा?

(12)......"फ़ज्र की नमाज़ की पाबंदी नहीं हो रही (यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल का वक़्त है) या अस्र की जमाअत का एहतिमाम नहीं (यह यहूदियों के कुल्ली ख़ातमें का वक़्त है)।"

अगर हम मौजूदा ज़माने को देखें तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि फ़ज्र की नमाज़ में इतने नमाज़ी नहीं होते जितने कि नमाज़े जुम्आ में होते हैं और अस्र की जमाअत का एहतिमाम भी नहीं हो रहा, बल्कि वक़्त गुज़रने के साथ साथ कुफ़्फ़ार की मेहनत रंग ला रही है और लोग दीन से दूर होते जा रहे हैं। तो क्या इससे यह समझना चाहिये कि नुज़ूले ईसा अलै0 से पहले पहले ही वह तमाम मुसलमान ख़त्म हो जाएंगे जो नमाज़ जैसे फ़र्ज़ की पाबंदीनहीं करते या तमाम लोग नमाज़ की अदाइगी का एहतिमाम करने लगेंगे?

(13)......हज़रत मेहदी के लशकर के जिन तीन गिरोहों का ज़िक्र किया गया है यअ़नी भाग जाने वाला एक तिहाई लशकर, शहीद होने वाला एक तिहाई लशकर और फ़तह हासिल करने वाला एक तिहाई लशकर, क्या इन तीन गिरोहों और हज़रत के मुक़ाबले में आने वाले नाम निहाद मुसलमानों के अलावा भी मुसलमानों में से लोग होंगे जो ग़ैर जानिबदार रहे हों और जिन्होंने जंग में हिस्सा ही न लिया हो? इनके बारे में अहादीस में कोई वज़ाहत है कि इनका क्या

हश्र होगा? क्या इनका शुमार कुफ़्फ़ार में होगा या वह मोमिनों में शुमार किये जाएंगे?

(14)......"अहादीस से वाज़ेह तौर पर मालूम होता है कि हज़रत के ज़माने में नाम निहाद मुसलमानों का एक तब्क़ा और होगा जो हज़रत का साथ छोड़ कर भागने वालों से भी ज़्यादा बदबख़्त होगा। वह इस्लाम का दावेदार होने के बावजूद हज़रत के मुख़ालिफ़ीन में से होगा और ऐ अल्लाह तआला सारी दुनिया की आंखों के सामने दर्दनाक अज़ाब में गिरफ़्तार करेगा। वह ज़िंदा जिस्मों के साथ ज़मीन में धंसा दिये जाएंगे। यह वह लोग होंगे जो आजकल के सबसे बड़े फ़ित्ने यअ़नी "फ़िक्री इर्तिदाद" का शिकार हो चुके होंगे और उनका सरबराह "अब्दुल्लाह सुफ़यानी" नामी शख़्स होगा।"

फिर आगे चल कर लिखते हैं:

"तो जनाबे मन! शराब व ज़िना को हलाल और सूद व जुए को जाइज़ समझने वाले और सुन्नते नबवी को हक़ीर जानने वाले वह बदनसीब रौशन ख़्याल होंगे जो हज़रत मेहदी की तलवार का शिकार होंगे। यही फ़िक्री इर्तिदाद का अंजाम है। यह लोग जानवरों की तरह ज़ब्ह किये जाएंगे। आजकल ख़ंजर से ज़ब्ह की ख़बरें बहुत आती हैं। हज़रत मेहदी उनके सरदार सुफ़यान नामी शख़्स को एक चट्टान पर बकरी की तरह ज़ब्ह कर देंगे।"

इससे पहले एक जगह उनसे हासिल होने वाले माले ग़नीमत का भी तज़किरा है। अब सवाल यह पैदा होता है कि जब वह लोग ज़िंदा जिस्मों के साथ ज़मीन में धंसा दिये जाएंगे तो मुसलमान उनके साथ बग़ैर जंग किये उनका माल, माले ग़नीमत के तौर पर कैसे हासिल करेंगे? और वह लोग जानवरों के जैसे किस तरह ज़ब्ह किये जाएंगे?

इन दोनों पैराग्राफ़ में तज़ाद क्यों है?

(15)......"खुरासान पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के चंद इलाक़ों पर मुश्तमिल इलाक़े का क़दीम जुग़राफ़ियाई नाम है।"

इसमें पाकिस्तान के कौन कौन से इलाक़े और अफ़ग़ानिस्तान के कौन कौन से इलाक़े शामिल हैं?

(16)......"हज़रत दानियाल अलै0 की इस पेशगोई के जिस हिस्से से हमें दिलचस्पी है वह यह है: "शुमाली बादशाह की जानिब से फ़ौजें तैयार की जाएंगी और वह मुहतरम क़िले को नापाक कर देंगी। फिर वह रोज़ाना की क़ुर्बानियों को छीन लेंगी और वहां नफ़रत की रियासत क़ाइम करेंगे।"

"और अफ़वाज उसकी मदद करेंगी और वह मुहकम मुक़द्दस को नापाक और दाइमी क़ुर्बानी को मौक़ूफ़ करेंगे और उजाड़ने वाली मक्रूह चीज़ नसब करेंगे। और वह अहदे मुक़द्दस के ख़िलाफ़ शरारत करने वालों को बरगश्ता करेगा लेकिन अपने ख़ुदा को पहचानने वाले तक़वियत पाकर कुछ कर दिखाएंगे।" (तौरात: स0 846......दानियाल: ब 11, आयत: 31-32)

इन दो फ़िक़रों से तो यह ज़ाहिर हो रहा है कि इस्राईली अफ़वाज मस्जिदे अक़्सा पर क़ाबिज़ हो जाएंगी। क्या वाक़ई ऐसा ही होगा और क्या हज़रत मेहदी अलै0 इसके बाद ज़ाहिर होंगे? या पेशगोई के इस हिस्से में भी यहूद व नसारा ने तहरीफ़ कर दी है?

(17)......हदीस शरीफ़ में जो "मावराउन्नहर" से "हारिसे हर्रास" (किसान) के चलने का तज़किरा किया गया है तो यह इलाक़ा कहां वाक़ेअ़ है? और इसमें कौन कौन से मुमालिक आते हैं? क्या खुरासान को ही "मावराउन्नहर" कहते हैं या यह कोई और इलाक़ा है?

(18)......"हज़रत मेहदी के साथी वही होंगे जो आख़िरी वक़्त तक सारी दुनिया की मुख़ालिफ़त व मलामत की परवा किये बग़ैर जिहाद की बाबरकत सुन्नत पर डटें रहेंगे।"

ख़ुदारा! एहसास कीजिये क्या मौजूदा हालात के तनाज़ुर में जिहाद के साथ "सुन्नत" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करना दुरुस्त है या इस पर "फ़र्ज़" का इत्लाक़ होता है?

(19)......नफ़रत की रियासत के 23 सौ साल बाद क़्याम के मुतअल्लिक़ जो पेशगोई है तो इन सालों का शुमार सिकंदरे आज़म के एशिया फ़तह करने से ही क्यों होता है? और शारिहीन इसकी क्या तौजीह बयान करते हैं?

(20)......"मसीहियात" की पहली क़िस्त "मसीहा का इंतेज़ार" में है: "दज्जाल हज़रत मेहदी और उनके साथ मौजूद फ़ातिहीने यूरप व ईसाइयत मुजाहिदीन को सख़्त मशक़्क़त में डाल चुका होगा?"

यहां सिर्फ़ फ़ातिहीन यूरप व ईसाइयत ही क्यों? सवाल यह पैदा होता है कि क्या हज़रत मेहदी ख़ुरूजे दज्जाल से पहले सिर्फ़ ईसाइयों से जंग करेंगे और यहूदियों के साथ उनका कोई मअ़रका नहीं होगा? क्या ईसाइयों के साथ होने वाली इन जंगों में यहूदी ईसाइयों का साथ नहीं देंगे?

(21)......"मसीहियात" की दूसरी क़िस्त "बीच की कड़ी" में लिखा है: "वह आख़िरी बार उर्दुन के इलाक़े में "अफ़ीक़" नामी घाटी पर नमूदार होगा। मुसलमानों और दज्जाल के लशकर के दर्मियान जंग होगी और जब मुसलमान नमाज़े फ़ज्र के लिये उठेंगे तो हज़रत ईसा अलै0 उनके सामने नाज़िल हो जाएंगे।"

जबकि "मसीहियात" की तीसरी क़िस्त "क़्यामत कब आएगी?" में है कि अल्लाह तआला ठीक उस वक़्त ख़ास तौर पर

मसीह इब्ने मरयम को भेजेगा कि जब दज्जाल एक नौजवान को मार कर ज़िंदा करने का तमाशा दिखा रहा होगा। जबकि इसी क़िस्त में है कि हज़रत ईसा अलै0 दमिश्क़ की जानिब मश्रिक़ में सफ़ेद मीनारे (या दमिश्क़ के मश्रिक़ी दरवाज़ा पर सफ़ेद पुल) के पास नाज़िल होंगे।

"दज्जालियत" की दूसरी क़िस्त "दज्जाल का शख़्सी ख़ाका" में है कि मुसलमान शाम के "जबले दुख़ान" की तरफ़ भाग जाएंगे। वहां फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त ईसा बिन मरयम नाज़िल होंगे।

तो हज़रत ईसा अलै0 के मौज़ूअ़ नुज़ूल की इन रिवायात में इख़्तिलाफ़ क्यों है?

(22)......"दज्जाल के साथ अस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी होंगे जो ईरानी चादरें ओढ़े हुए होंगे।"

क्या ईरान में इतने बड़ी तादाद में यहूदी आबाद हैं? या ईरानी लोग यहूदियत क़बूल कर लेंगे? या फिर यहां 70 हज़ार से अरबी मुहावरे के मुताबिक़ कसीर तादाद मुरादा ली गई है?

(23)......ज़ीरो प्वाइंट में आपने लिखा है: "हदीस शरीफ़ में आता है तीन वाक़िआत ऐसे नमूदार होंगे जो एक दूसरे के बाद रूनुमा होंगे और फिर फ़ारिग़ वक़्त वालों के पास भी वक़्त न रहेगा। "अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: जब यह तीन बातें रूनुमा होंगी तो फिर किसी ऐसे शख़्स का ईमान लाना उसको कोई फ़ाएदा न देगा जिसने पहले ईमान क़बूल नहीं किया था या उसने अपने ईमान से कोई ख़ैर का काम नहीं किया था: (1) जब सूरज अपने गुरूब होने के मक़ाम से तुलूअ़ होना शुरू कर देगा। (2) दज्जाल नमूदार होगा। (3) और ज़मीन का जानवर नमूदार होगा।" (सही मुस्लिम)

इस हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर हो रहा है कि ख़ुरूजे दज्जाल के

साथ ही तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा जबकि "क़ारईन की नशिस्त" में "पेशगोइयां, हैकल सुलैमानी, ईसाई हज़रात का एक बेतुका सवाल" के उन्वान के तहत आपने वज़ाहत की है कि दज्जाल की हलाकत के बाद क़रीबे क़्यामत में ज़मीन की मह्वरी गर्दिश रुक जाएगी फिर मुतदासिमत में घूमेगी। इसके बाद तौबा के दरवाज़े बंद हो जाएंगे। (यअ़नी दज्जाल की हलाकत के बाद) इन दोनों बातों में तज़ाद क्यों है?

(24)......"कुफ़्र का ज़ोर टूट रहा है न कुफ़्रियात का ग़ल्बा ख़त्म हो रहा है। इसकी वजह महज़ किसी जरी और अह्ले क़ाइद का न होना है।"

क्या इस फ़िक़रे से क़ाइदे मुजाहिदीन अमीरुल मोमिनीन मुल्ला मुहम्मद उमर मुजाहिदे दामत बरकातुहुम और तालिबान की जिहाद के लिये और मुहाजिर मुजाहिदीन के लिये दी गई अज़ीमुश्शान कुर्बानियों को ज़क नहीं पहुंच रही? क्या यह फ़िक़रा यह तअस्सुर नहीं दे रहा कि मौजूदा ज़माने में भी कोई अह्ले क़ाइद मुजाहिदीन को मयस्सर नहीं?

(25)......"उनको यक़ीन था कि अगर शिकस्त हुई तो सुलतान उनको छोड़ कर भागेगा नहीं। अगर फ़तह हुई तो इसके फ़वाइद सुलतान खुद हर्गिज़ नहीं समेटेगा, बल्कि यह सारे सम्रात व नताइज इस्लाम की झोली में जाएंगे। अगर आज की क़्यादत अपने कारकुनों को यह यक़ीन दिला दे तो खुदा की कसम! काया पलटने में उतने ही दिन लगेंगे जितने क़ाइद को अपनी बेनफ़्सी और इस्लाम के लिये फ़नाइयत साबित करने में लगते हैं।"

इस फ़िक़रे से भी या तअस्सुर मिलता है कि दुनिया भर में जारी जिहादी तहरीकों और तालिबन की क़्यादत अपने मक़्सद में मुख़्लिस

नहीं है हालांकि अमीरुल मोमिनीन मुल्ला मुहम्मद उमर मुजाहिद दामत बरकातुहुम ने सिर्फ एक मुहाजिर मुजाहिद को कुफ़्फ़ार के हवाले न करने के लिये पूरी सलतनत छोड़ दी। आपकी राए के मुताबिक मुजाहिदीन की नाकामी की वजह उनकी क़्यादत में खुलूस का फुक़दान है जबकि मेरी नाक़िस राए के मुताबिक़ जब तक मुसलमान कुफ़्फ़ार के लिये इस्तेमाल होते रहेंगे (चाहे वह मुस्लिम मुमालिक के हुक्मरान हों या अवामुन्नास) उस वक़्त तक फ़तह का तसव्वुर भी मुहाल है। मेरे अपने मुशाहिदे के मुताबिक़ अफ़ग़ान मुजाहदीन को पहुंचने वाले नुक़्सानात में से 90 फ़ीसद से भी ज़्यादा हिस्सा उन नाम निहाद पाकिस्तानी और अफ़ग़ानी मुसलमानों का है जो तालिबान के ख़िलाफ़ जासूसी करते हैं और शुमाली इत्तिहाद के वह मुसलमान फ़ौजी जो नीटो अफ़वाज की हिफ़ाज़त करते हैं। अगर यह कुफ़्फ़ार नुमा मुसलमान बीच से हट जाएं और लशकरे कुफ़्फ़ार की इआनत न करें तो नीटो अफ़वाज अफ़ग़ानिस्तान में एक हफ़्ते के अंदर अंदर शिकस्त से दो चार होकर अपना बोरिया बिस्तर लपेटने पर मजबूर हो जाएंगे।

आख़िर में अर्ज़ है कि आपने अपने मज़मून में बहुत गाढ़ी उर्दू और मुश्किल इस्तिलाहात इस्तेमाल की हैं जिसे आम पढ़ा लिखा आदमी नहीं समझ सकता। ख़ास कर सूबा सरहद और बलूचिस्तान के बाशिंदे तो समझने में और भी मुश्किल महसूस करते हैं, इसलिये अगर आप मुनासिब समझें तो इन मज़ामीन की किताबी शक्ल में इस तरह तस्हील कर लें कि ख़्यालात की रवानी में भी फ़र्क़ न आए और आम क़ारी भी इससे इस्तिफ़ादा कर सके। नहीं तो कम अज़ कम किताब के आख़िर में "बच्चों का इस्लाम" की तरह फ़रहंग दे सकते हैं ताकि कम पढ़े लिखे अफ़राद भी फ़रहंग में मअ़नी देख कर

मफ़हूम से मुस्तफ़ीद हो सकें।

वस्सलाम

खलीलुर्रहमान, टांक

अलजवाबः

1- आप इस जुम्ले का मतलब नहीं समझे। यह जुम्ला एक मख़्सूस तब्क़े के उस नज़रिये की तरदीद के लिये था जिसके मुताबिक़ हज़रत मेहदी आज से सदियों पहले पैदा हो चुके थे फिर किसी ग़ार में पोशीदा हो गए और फिर कुर्बे क़्यामत में ज़ुहूर करेंगे। इस जुम्ले को यूं बना देना चाहियेः "वह पैदा होकर रूपोश नहीं हुए बल्कि आम इंसानों की तरह पैदा होंगे।" बाक़ी उनके वक़्ते ज़ुहूर की बड़ी अलामात दुनिया भर के मुसलमानों के गिर्द घेरा तंग हुए जाना और चंद एक मुसलमानों का कुफ़्र के ख़िलाफ़ डटे रहना और उम्मत की फ़िक्र रखने वाले दर्दमंद मुसलमानों का बारगाहे इलाही में किसी क़ाइदे जरी के ज़ुहूर की दुआएं दर्द और लगन से मांगना है। जब फ़ित्ना इतना बढ़ जाए कि आम क़ाएदीने जिहाद और मुस्लिहीने वक़्त उलमा के बस में न रहे और मिलकर किसी मुत्तबअ़ सुन्नते क़वियुत्तासीर रूहानी व जिहादी शख़्सियत की दिल की गहराइयों से तमन्ना करने लगें तब उनका ज़ुहूर होगा। वल्लाह आलम।

2- इस तहरीर और हदीस शरीफ़ में तज़ाद नहीं, तवाफ़ुक़ व तायीद है। मुसलमानों की जो जमाअ़त हक़ की ख़ातिर क़िताल करती रहेगी हज़रत मेहदी उसके अमीर होंगे और यह जमाअ़त जो क़ुर्बानियां दे रही होगी, वह उनको नतीजा ख़ेज़ बना कर फ़तह व नुस्रत से फ़राज़ होकर ख़िलाफ़ते इस्लामिया क़ाइम करेंगे। उनके ज़ुहूर से पहले मुसलमानों को जिस कामिल दर्जे की इत्तिबाए शरीअ़त, इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और दिलों की हसद व बुग्ज़, कीना

व इनाद से मुकम्मल तत्हीर की ज़रूरत होगी, वह हज़रत मेहदी की इस्लाह व तरबियत और सोहबत व तासीर के ज़रीए हासिल हो जाएगी। यह वह चंद चीज़ें हैं जिनकी अमलन कमी आपके ज़ुहूर से पहले हर मुसलमान महसूस कर रहा है। बाक़ी नज़रियाती तौर पर दीन मुकम्मल है, बस उसे मुकम्मल तौर पर अपनाने की ज़रूरत है।

3- ग़ालिब इम्कान अलाहिदा अलाहिदा सात उलमा के हाथ पर मुख़लिसीन की बैअ़ते जिहाद और इस्तिक़ामत हत्तल मौत का है। दुनिया में जहां जहां इस्लाह व जिहाद की तहरीकें चल रही हैं, जो अह्ले इल्म व सलाह उनकी क़यादत कर रहे हैं और जो मुजाहिद व मुरीदान उनके साथ डटे हुए हैं, उन्हें अल्लाह तआला यह सआदत अता करेगा कि बिलआख़िर उनकी ताक़त, सलाहियत और क़ुर्बानियों की बरसात जमा होकर जिस परनाले में इकट्ठी होकर बहेगी, वह हज़रत मेहदी के क़दमों पर गिर रहा होगा।

4- यह मौत की शुआएं हैं। दरअसल बरमूदा ट्राएंगल में जो तेज़ तरीन मक़्नातीसी शुआएं कारफ़रमा हैं, यहूदी साइंसदान उनको जमा करने और हस्बे मंशा इस्तेमाल करने की सर तोड़ कोशिश कर रहे हैं। यह शुआएं अगर किसी इंसान के बस में आ जाएं तो उनसे हैरत अंगेज़ काम लिये जा सकते हैं जिनको मुहव्वला वाला मज़्मून में बयान किया जा चुका है। यहूदियत के चोटी के दिमाग़ इस रूए ज़मीन पर इन शुआओं की ताक़त को सबसे मुअस्सिर तरीन और मुहलिक तरीन टेक्नालोजी समझते हैं। हत्ता कि दज्जाल के ख़ुरूज के एलान को उन्होंने उनके हुसूल पर मौक़ूफ़ कर रखा है। वह उसके हुसूल में जुज़्वी तौर पर कामियाब हो चुके हैं और जिस दिन वह इसमें ख़ातिर ख़्वाह कामियाबियां हासिल कर लेंगे, दज्जाल के ख़ुरूज और बज़ुअमे ख़ुद दुनिया पर बेताज बादशाही और नाक़ाबिले चैलंज

इक्तिदार का एलान कर दिया जाएगा।

5- ज़ाहिर तो यही है कि यह अफ़राद इस लशकर का अहम तरीन अन्सुर होंगे।

6- उस ज़माने में शाम की हुदूद में आज के चार मुल्क शामिल थे: (1) मौजूदा शाम (2) उर्दुन (3) फ़लस्तीन (4) लबनान। आख़िरी ज़माने के अहम तरीन वाक़िआत इसी ख़ित्ते में पेश आएंगे जो इन चार मुल्कों पर मुशतमिल है।

7- असल तो यह है कि हर लफ़्ज़ से उसका हक़ीक़ी मअ़नी मुराद लिया जाए, जब तक मिजाज़ी मअ़नी का क़रीना न हो हक़ीक़ी मअ़नी ही मुराद होगा। सियाह झंडे का हक़ीक़ी मअ़नी तो सियाह अलम ही है, काली पगड़ियां इज़ाफ़ी शिआ़र या सानवी मुमासिले अलामत हो सकती हैं।

8- अहादीस में आता है कि जब दज्जाल अपने उरूज की आख़िरी हद पर होगा और मुसलमानों को फ़लस्तीन की एक घाटी "अफ़ीक़" में महसूर करके उन पर आख़िरी वार की सोच रहा होगा, उन दिनों एक रात मुसलमान आपस में तै करेंगे कि सुब्ह "फ़तह या शहादत" के लिये आख़िरी हमला करते हैं। यह लोग अपनी वसीयतें एक दूसरे को लिखवा कर मौत पर बैअ़त करेंगे और अपना इज़ाफ़ी सामान मिलकियत से निकाल कर "ज़िंदगी या मौत" की जंग लड़ने के लिये तैयार हो जाएंगे। उनकी जांबाज़ी की बरकत से उस दिन सुब्ह फ़ज्र में हज़रत ईसा मसीह अलै0 नाज़िल हो जाएंगे। मुसलमानों को तसल्ली देंगे और उन्हें साथ लेकर जिहाद शुरू करेंगे। दज्जाल उन्हें देख कर भागेगा और नमक की तरह पिघलेगा। बिल आख़िर बेमिसाल ज़िल्लत और रुसवाई के साथ अपने अंजाम को पहुंच जाएगा। इससे मालूम होता है कि नुज़ूले ईसा अलै0 का पहला दिन

फ़ित्नए दज्जाल का आख़िरी दिन होगा यअ्नी चालीसवां रोज़। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

9-......यह दो चीज़ें फ़ित्नए दज्जाल बल्कि हज़रत ईसा अलै0 की वफ़ात के बाद और क़्यामत के क़रीब के आख़िरी दिनों की हैं। इसलिये इनको "अलामाते क़रीबा" कहा जाता है।

10- यह मौजूदा इस्तंबूल का नाम है जो एशिया व यूरप का संगम है। यूरपी यूनियन यहीं से अर्ज़े इस्लाम यअ्नी जज़ीरतुल अरब और हिजाज़ व शाम वग़ैरा का रुख़ करेगा। इस शहर को सातवीं हिज्री में उस्मानी हुक्मरान सुलतान मुहम्मद फ़ातेह ने फ़तह करके खुद को नबवी बशारत का हक़दार ठहराया था और अब आख़िरी वक़्त में इस्लाम व कुफ़्र के इस संगम पर दोबारा मअ्रकए अज़ीम लड़ा जाएगा।

12- आम लोग तो इन नमाज़ों में बहुत ज़्यादा सुस्ती कर रहे होंगे और ख़्वास मुजाहिदीन इनकी पूरी पाबंदी करने की बरकत से राहे रास्त पर क़ाइम रहते हुए जिहाद का अलम बुलंद रखेंगे।

13- उस वक़्त जो लोग इस जिहादे अज़ीम से ला तअल्लुक़ रहेंगे वह वही लोग होंगे जो मौजूदा मीडिया की फ़राहम कर्दा मालूमात को हर्फ़े समझने की बिना पर फ़ित्नए दज्जाल का शिकार हो चुके होंगे। ज़मीन पर उस वक़्त का अज़ीम तरीन जिहाद हो रहा होगा और वह जादू बयान "एंकर पर्सन" के झांसे में आकर उसके क़ाइल न होंगे या क़ाइल होते हुए भी उस पर आमिल न होंगे। उनका हुक्म वही होगा जो फ़ित्नए दज्जाल और दज्जाली प्रोपेगंडे का शिकार होकर जिहाद को दहशत गर्दी समझने वालों का है। यअ्नी वह अगर फ़रीज़ए जिहाद के नज़रियाती तौर पर मुंकिर होंगे तो ईमान से महरूम होंगे और अमली तौर पर तारिक होंगे तो सख़्त

गुनहगार होंगे।

14- उस गिरोह का हरावल दस्ता हज़रत मेहदी रज़ि0 से लड़ने जाएगा, वह ज़मीन में धंसा दिया जाएगा, जो पीछे रह जाएंगे वह हज़रत और उनके मुजाहिदीन के हाथों अपने सरबराह समेत क़त्ल होंगे और उनका माले ग़नीमत तबर्रुक की तरह तक़सीम होगा।

15- जुग़राफ़ियाई तौर पर तो पूरा अफ़ग़ानिस्तान बशमूल पाकिस्तान का सूबा और क़बाइली इलाक़े नीज़ वसते एशिया के मुमालिक इसमें आएं हैं। बाक़ी गिर्द व पेश यअ़नी बक़िया मुल्कों, सूबों और शहरों से भी खुश नसीब अफ़राद इसमें शरीक होंगे।

16- मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ों का मौक़ूफ़ होना शदीद जंग की बिना पर भी हो सकता है और इस्राईली अफ़वाज की तरफ़ से आरज़ी बंदिश की बिना पर भी। बहरहाल यह अलकुद्स पर तसल्लुत के लिये जारी दज्जाली मुहिम का नुक्तए उरूज होगा और इसी "फ़्लैश प्वाइंट" से कुर्रे अर्ज़ तन्नूर की तरह गर्म होकर तीसरी और शदीद तरीन जंगे अज़ीम का नज़ारा करेगा।

17- "मावराउन्नहर" का लफ़्ज़ दो लफ़्ज़ों पर मुशतमिल है। "मावराअ़" के मअ़नी पीछे और "अन्नहर" दरया को कहते हैं। "मावराउन्नहर" का मअ़नी हुआ: दरया के पीछे। इस दरया से दरयाए आमो मुराद है जिसके उल्टी तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान और पर्ली तरफ़ तीन मुमालिक मुत्तसिल हैं। ताजकिस्तान, उज़बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान। उन तीन के साथ वसते एशिया के बक़िया मुमालिक कर्ग़िज़िस्तान, क़ाज़किस्तान और आज़र बाईजान, चैचनिया, चेचीना, जारजिया उस नहर से मुत्तसिल नहीं लेकिन नहर के पार ही वाक़ेअ़ हैं। ख़ुरासान का इतलाक़ दरयाए आमो के इस तरफ़ वाक़ेअ़ अफ़ग़ानिस्तान पर भी होता और उस तरफ़ वाक़ेअ़ इस वसत

एशियाई मुमालिक पर भी होता है।

18- जिहाद इस्लाम की अहम इबादत है। अल्लाह तआला ने इसका हुक्म दिया है और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस हुक्म पर अमल करके दिखाया है। इस एतिबार से यह "फ़र्ज़" है कि इसे अल्लाह तआला ने लाज़िम किया है और इस एतिबार से इसे "सुन्नत" कहा जाता है कि यह नबी अलै० का मुबारक तरीक़ा है। दोनों लफ़्ज़ अपनी जगह दुरुस्त हैं। सुन्नत कहने का मतलब "फ़रज़ियत का इंकार" नहीं बल्कि इसे हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से मंसूब करके इसकी हैसियत को मुक़द्दस व मुतबर्रक साबित करना है। "दज्जाल" नामी किताबी सिलसिले का लफ़्ज़ लफ़्ज़ इस पर गवाह है।

19- इस वक़्त दुनिया में मुख़्तलिफ़ कैलंडर राइज थे। इस तारीख़ के आग़ाज़ के लिये जिस कैलंडर के साथ मुवाफ़िक़त बैठती वह सिकंदरे आज़म की फ़तह के दिन से शुरू होने वाला कैलंडर है।

20- यहूदियों ने हमेशा दीवार के पीछे से दूसरों के कंधे पर बंदूक़ रख कर लड़ा है। ईसाइयों के जज़्बात बरअंगेख़्ता करके उन्हें मुसलमानों से लड़वाना और दुनिया को सलीबी जंगों का तोहफ़ा देना यहूदियत की क़दीम इंसानियत कश रिवायत है। आख़िर ज़माने में भी ऐसा होगा कि वह ईसाइयत को मुत्तहिद करके मग़रिबी दुनिया को मुसलमानों के मुक़ाबले में लाएगी और जब मुसलमानों के हाथों ईसाइयत निढाल होकर अधमूई हो जाएगी और खुद मुसलमान भी थके मांदे और जंग की तबाह कारियों से मुतअस्सिर हो चुके होंगे तब यहूदी मौक़ा ग़नीमत जान कर दज्जाल के ख़ुरूज का एलान कर देंगे और इसकी क़्यादत में पूरी दुनिया पर हुकूमत का ख़्वाब आंखों में सजाए मैदान में आ जाएंगे। इस वक़्त मुसलमान सख़्त मशक़्क़त

में होंगे और यहूदियों के साथ "आर्मीगाडून" की वादी में "मअ़रकए अज़ीम" बरपा करेंगे। इससे पहले यहूदियों के साथ झड़पें तो चलती रहेंगी मगर ज़ोरदार मअ़रका इसके बाद ही होगा।

21- इन रिवायात में इख़्तिलाफ़ नहीं, तअ़बीर का फ़र्क़ है। हज़रत ईसा अलै0 दमिश्क़ के मशिरक़ी जानिब सफ़ेद मीनारे के पास नाज़िल होंगे और फिर वहां मौजूद मुजाहिदीन के साथ "अफ़ीक़" नामी घाटी की तरफ़ रवाना होंगे जहां दज्जाल ने मुजाहिदीन को महसूर कर रखा होगा। उन दिनों दज्जाल की जादू आमेज़ साइंसी टेक्नालोजी उरूज पर होगी और वह लोगों को मार कर ज़िंदा करने के शोअ़बे दिखा कर अपनी ख़ुदाई तसलीम करवाने की आख़िरी कोशिश में मसरूफ़ होगा। अलग़र्ज़ हज़रत ईसा अलै0 के नुज़ूल की जगह मुतअय्यन है अलबत्ता नुज़ूल के वक़्त आगे पीछे मुतअद्दद वाक़िआत हो रहे होंगे। किसी हदीस में एक का बयान किया गया है किसी में दूसरे को।

22- हां! ईरान में अस्फ़हान के क़रीब "यहूदिया" नामी इलाक़े में बड़ी तादाद में अस्ली और कट्टर क़िस्म के यहूदी आबाद हैं। यह वह यहूदी हैं जो फ़लस्तीन से उस वक़्त जिला वतन होकर यहां आए थे जब उनकी शामते आमाल के नतीजे में उन पर इराक़ के बादशाह "बख़्ते नस्सर" की शक्ल में अज़ाब मुसल्लत हुआ। यह लोग यहां के बड़े ताजिर शुमार होते हैं और ईरानी मुआशरे में उनका अच्छा ख़ासा असर व रुसूख़ है। पिछले दिनों उन्होंने इस्राईल के क़ौमी दिन के मौक़ा पर इस्राईल के हक़ में ज़बरदस्त इज्तिमाअ़ किया जिसकी तस्वीर हमने अख़्बार में छापी थी। यह लोग नस्ली एतिबार से ख़ालिस यहूदी हैं। इनमें ग़ैर यहूदियों के ख़ून की आमेज़िश नहीं हुई और जो जितना ख़ालिस और मुतअ़स्सिब यहूदी होगा वह दज्जाल के

उतना ही क़रीब होगा।

23- तौबा का दरवाज़ा इस दुनिया के बिल्कुल आख़िरी दिनों में (ऐंड आफ़ टाइम) बंद होगा। ख़ुरूजे दज्जाल इससे पहले का वाक़िआ है। मुतज़क्किरा बाला सवाल का जवाब इसी किताब में तफ़सील से दिया गया है। इसको मुलाहिज़ा फ़रमा लें। इंशा अल्लाह तसल्ली हो जाएगी।

24- इस फ़िक़रे का मक़्सद आलमी सतह पर ऐसे क़ाइद की ज़रूरत और जब वह ज़ाहिर हो जाए तो उसकी तकमीले इताअत की तरग़ीब दिलाना है जो अपनी हिम्मत व जुर्अत से कुफ़्र का ज़ोर ख़त्म कर के पूरे कुर्रहये अर्ज़ पर ख़िलाफ़ते इस्लामिया क़ाइम करेगा। इसका मतलब उन लोगों की कुर्बानियों का इंकार हरगिज़ नहीं जो उसके ज़ुहूर से पहले हुक्मे इलाही को ज़िंदा करने के लिये अज़ीम तरीन कुर्बानियां पेश कर रहे होंगे। आप इन्ही सतरों से आगे की चंद सतरें पढ़ लेते तो आप को यह ग़लत फ़ह्मी न होती। पूरी किताब में जाबजा जिन लोगों की कुर्बानियों को सलाम पेश किया गया है, उनसे सर्फ़े नज़र करते हुए एक मुब्हम जुम्ले को सियाक़ व सबाक़ से काट कर किसी और मअ़नी में लेना क़रीने इंसाफ़ नहीं।

25- नहीं हरगिज़ नहीं! इस तअस्सुर की नफ़ी पूरी किताब कर रही है, और पूरी किताब इस चीज़ की गवाही दे रही है कि काले झंडे वाले वह ख़ुशनसीब लोग जो आख़िर ज़माने के मुत्तबअ़ सुन्नत और जरी व शुजाअ़ क़ाइद के साथ मिल कर जिहाद करेंगे, यह वही लोग......या इन बुलंद मर्तबा लोगों की बाक़ियात......होंगे जिन्होंने आज तने तन्हा, बे सर व सामानी के आलम में पूरी दुनिया की उन चालीस से ज़्यादा हुकूमतों का बेजिग्री से सामना किया है जो तागूते अअ़ज़म की छतरी तले अल्लाह के नूर को मिटाने आई थीं। और न

सिर्फ़ सामना किया है बल्कि व जुर्अत और तदबीर व शुजाअत का ऐसा बेमिसाल मुज़ाहिरा किया है जिसने दुनिया की तारीख़ बदल डाली है। उन ख़ुदा मस्त बोरिया नशीनों ने नाम निहाद माहिरीन के तमाम अंदाज़े ग़लत कर दिखाए हैं, और दुनिया को क़ुर्बानी व ईसार के ऐसे ईमान अफ़रोज़ और रूह परवर नज़ारे दिखाए हैं कि अह्ले ईमान के मुर्झाए हुए दिल फिर से खिल उठे हैं, इनके हौंसलों को ताज़ा वलवला और ईमानी जोश नसीब हुआ है और पूरे आलमे इस्लाम को ही नहीं, पूरी आलमे इंसानियत को सामराजी इस्तेअ़मार के चुंगल से निकलने की किरन दिखाई देनी लगी है। यह दुनिया के वह अज़ीम और सआ़दतमंद लोग हैं जिन्होंने अपनी ईमानी ग़ैरत और हिक्मत व बसीरत से सहाबा किराम रज़ि0 अन्हुम अज्मईन के दौर की याद ताज़ा कर दी है और क़ुरूने ऊला के मुसलमानों के किर्दार की वह झलक दुनिया परस्तों और कम हौसला लोगों के सामने पेश की है जिसने किताबों में मज़्कूरा ईमानी कैफ़ियात और तारीख़ में नुस्रते इलाही पर मुशतमिल फ़ुतूहात को अमली सूरत में मुजस्सम करके आंखों के सामने ला खड़ा किया है। बाक़ी जहां तक कुछ मुसलमानों का कुफ़्फ़ार के लिये इस्तेमाल होने की बात है तो यह बजाए ख़ुद एक तारीख़ी अलमिया है। जिहाद ऐसा फ़रीज़ा है जो ग़ैरों के ज़ुल्म व सितम और अपनों के जोर व जफ़ा के बावजूद हर हाल में जारी व सारी रखना लाज़िम है। यह एक जुह्दे मुसलसल है, अमल पेहम है, वफ़ा व ईसार का लाज़वाल इज़्हार है। क़ुर्बानी और ख़ुलूस की लाफ़ानी मिसाल है। इसका झंडा जब तक बुलंद है, मुसलमानों के सरबुलंद होने की ज़मानत बाक़ी है, लिहाज़ा हम सब ने मिल कर इसी झंडे को उस वक़्त बुलंद रखना है जब तक इस्लाम और मुसलमान बुलंद नहीं हो जाते।

जहां तक उर्दू के गाढ़ेपन की बात है तो किताब के नए एडीशन में चुन चुन कर मुश्किल अल्फ़ाज़ की जगह आसान अल्फ़ाज़ रखे गए हैं। गोया बाकाइदा तमाम मज़ामीन की तसहील की गई है। अगर आप या दूसरे साहब भी मुश्किल महसूस करें तो ऐसे अल्फ़ाज़ की निशानदही फ़रमाएं। उनके मुतबादिल पर ग़ौर कर लिया जाएगा। बराकोमुल्लाह तआला।

मग़रिब की घड़ी हुई फ़र्ज़ी

शख़्सियात और दज्जाल

मुहतरम मुफ़्ती साहब

अस्सलामु अलैकुम

आप से एक सवाल करना था। आपने अपनी किताब में लिखा है कि दज्जाल सुपर मैन या टरमीनेटर क़िस्म का आदमी होगा। यह तो मग़रिबी दुनिया की तख़्लीक़ कर्दा फ़र्ज़ी क़िस्म की मख़्लूक़ात हैं जबकि दज्जाल तो पहले से पैदा शुदा एक हक़ीक़ी मख़्लूक़ है। इन दोनों का बाहमी क्या तअल्लुक़ हो सकता है? उम्मीद है तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब इनायत फ़रमाएंगे।

अलजवाबः दज्जाल में कुछ ग़ैर मामूली कुव्वतें और सलाहियतें तो कुदरती तौर पर होंगी कि उसे अल्लाल ने पैदा ही इंसानों की आज़माइश के लिये किया है और कुछ सलाहियतें उसमें मग़रिब की तजुर्बागाहों में मसरूफ़े कार फ़ित्ना दिमाग़ यहूदी साइंसदानों की उन ईजादात की बदौलत होंगी जिनकी मदद से वह उसे "बादशाहे आलम" की हैसियत से कामियाब बनाने के लिये दिन रात कोशिश कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि कुदरती सलाहियतों और मसनूई पेवंद कारियों के इम्तिज़ाज से उसको नाक़ाबिले तसख़ीर बनाने की कोशिश की जाएगी, मगर बिल आख़िर मुजाहिदीने इस्लाम के लाज़वाल जज़्बे और पुरख़ुलूस कुर्बानियों की बदौलत क़ौमे यहूद का सूदी सरमाया उनके थिंक टैंक्स का साज़िशी दिमाग़ सब धरा रह जाएगा और

फ़तह उन अल्लाह वालों की होगी जो बेसरो सामान होने के बावजूद मग़रिब की महीरुल अक़ूल तरक़्क़ी से मरऊब होने और उनके सामने झुकने से इंकार करके दस्तियाब वसाइल को इस्तेमाल करते हुए महज़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के भरोसे पर शैतान और उसके कारिंदों के ख़िलाफ़ अलमे बग़ावत बुलंद कर देंगे। वल्लाहु आलम

बाक़ी यह बात याद रहे कि सुपर मैन और टरमीनेटर वग़ैरा जैसी फ़र्ज़ी तहक़ीक़ात दज्जाल के ख़ुरूज से पहले इंसानी ज़हनों को हमवार करने और उसकी शैतानी ताक़त के सामने झुक कर मरऊब हो जाने के लिये घड़ी जाती हैं। अहले इस्लाम को चाहिये कि तौहीदे बारी तआला का सबक़ बार बार दोहराते रहें ताकि अल्लाह रब्बुल आलमीन की अज़ली व अदबी सिफ़ात उनके ज़हन में ऐसी रासिख़ हों कि फिर कोई उनको ख़ौफ़ज़दा या मरऊब कर सके, न किसी की झूटी ख़ुदाई उनको धोखा दे सके।

काउंट डाउन

मुहतरम मौलवी शेर मुहम्मद साहब

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह

अल्लाह तआला रोज़े क़लम और ज़्यादा करे। पिछले दिनों एक किताबचा बउन्वान "मस्जिदे अक़्सा, डेढ़ अरब मुसलमानों का मस्ला" नज़र से गुज़रा जिसे जनाब हामिद कमालुद्दीन ने तसनीफ़ किया है। उन्होंने इस मौज़ूअ़ का हक़ अदा करने की पूरी कोशिश की। मज़कूरा किताबचे में सफ़्हा नम्बर 53, 54 में मस्जिदे अक़्सा की तवल्लिय और मिल्कियत के यहूदी दावा का मज़हबी नुक्तए नज़र से जवाब दिया गया है, मगर यहां से मेरे ज़ह्न में एक उलझन पैदा हुई जिसकी वज़ाहत के लिये आप को तकलीफ़ दे रहा हूं। मेरा सवाल दो हिस्सों में है। पहला हिस्सा इस इक़्तिबास से मुतअल्लिक़ है जो दर्जे ज़ेल है:

"अर्ज़े मुक़द्दस पर यहूद के 'आबाई हक़' के ज़िम्न में यह हक़ीक़त भी पेशे नज़र है, जो कि अपनी जगह बेइंतिहा अहम है, कि आज दुनिया में जो यहूदी पाए जाते हैं उनमें "बनी इस्राईल" के यहूद एक निहायत छोटी अक़ल्लियत जाने जाते हैं और क़्यादत के मंसब पर भी क़रीब क़रीब कहीं फ़ाइज़ नहीं। आज के यहूद की अक्सरियत अशकिनाज़ी Ashkenazi कहलाती है जिनके आबाअ़ ख़ज़र Khazarians हैं। इन्हीं को "कोकेशियन" Caucasians भी कहते हैं (कोक़ाज़ से निस्बत के बाइस)। यह नीली आंखों और सुनहरे बालों वाली गोरी अक़्वाम हैं जो कभी बहीरा ख़ज़र के मग़रिबी जानिब ख़ित्तए कोक़ाज़ में आबाद थीं और कोई

दसवीं और ग्यारहवीं सदी ईसवी (चौथी और पांचवीं सदी हिज्री) में जाकर दाख़िले यहूदियत हुईं, बअ़द अज़ां यह हंगरी, पोलैंड और मास्को में जाकर बैठीं और फिर रफ़्ता रफ़्ता पूरे यूरप में फैल गईं और हर जगह मीडिया, मईशत और सियासत के जोड़ तोड़ पर इजारह क़ाइम कर लेने की हैरत अंगेज़ इस्तिअ़दाद दिखाने लगीं।

उनको कोई ऐसी शैतानी कुव्वत हासिल थी कि जहां गए वहीं पर पत्तियां नचाने लगे। अलावा अज़ीं दुनिया के मुल्हिद तरीन मुफ़क्किर और फ़लसफ़ी इन्हीं ने पैदा किये। चूंकि यह अक़्वाम ज़्यादातर और ख़ासा तवील अर्सा पोलैंड में रही थीं इसलिये किसी वक़्त Poland of Jews बोल कर भी यह सब की सब अक़्वाम मुराद ले ली जाती हैं। बहरहाल यहूदियों के अंदर नस्ली तौर पर यह बिल्कुल एक नया अन्सुर है। यहूदियत पर आज यही गोरी अक़्वाम हावी हैं। दुनिया के अंदर पाए जाने वाले आज के यहूदियों में 80 फ़ीसद यहूद, अश्किनाज़ी (गोरे यहूदी) हैं और यहूद की बाक़ी सब की सब अजनास मिला कर सिर्फ़ 20 फ़ीसद। बाक़ी दुनिया की तरह बनी यअ़क़ूब अलै0 भी जो कि तारीख़ी तौर पर असल यहूद हैं, इन्हीं अश्किनाज़ी (ग़ैर बनी इस्राईली) यहूदियों के महकूम हैं। अक्सरियत भी यहूद के अंदर आज इन्हीं की है और ज़ोर और इक़्तिदार भी। इस्राईली क़्यादत हो या अमरीका और यूरप में बैठी हुई यहूदी लाबियां "बनी इस्राईल" का यहूदी कहीं ख़ाल ख़ाल ही इनके माबैन नज़र आएगा।

यहां से यह मुआ़मला और भी दिलचस्प हो जाता है। "गोरे यहूदियों" (जो कि आज उनमें की अक्सरियत है) का इब्राहीम अलै0 के नुत्फ़ा से दूर नज़दीक का कोई तअ़ल्लुक नहीं, "सामी" नस्ल से इनका कोई वास्ता नहीं मगर "सामी" नस्लियित की सब ठेकेदारी

और "सामियत" के जुम्ला हुकूक यूरप और अमरीका में इन्ही के नाम महफ़ूज़ हैं! कोई इन यहूद के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ तो बोले "साम दुशमनी" Anti-Semitism के इलज़ामात की लठ लेकर यह उसके पीछे पड़ जाते हैं, हत्ता कि किसी वक़्त अदालत के कटहरों में खड़ा कर लेते हैं। हारूडाइसी जामिआत से लोगों को इस बिना पर ख़ारिज करवा देने के वाकिआत हुए हैं। किसी को इनकी हक़ीक़त बयान करना ही हो तो बहुत घुमा फिरा कर बात कहना होती है ताकि Anti-Semitism के "ख़तरनाक" दाइरे में न आने पाए।

आज के दौर की सबसे बड़ी जअ़लसाज़ी और नोसरबाज़ी शायद इसी को कहा जाएगा। पोलैंड, बुलग़ारिया, हंगरी और आस्ट्रिया से आई हुई, तिल अबीब के उर्या साहिलों पर फिरती नीली आंखों और सुनहरे बालों वाली बिकिनी पोश गोरियां, जो सक़ाफ़ती ही नहीं नस्ली लिहाज़ से भी क़तई और यक़ीनी तौर पर यूरप ही का फैलाव हैं और यूरप ही की तलछट, आज बैतुल मुक़द्दस पर इब्राहीम अलै0 और याक़ूब अलै0 के नस्ब का हक़ मांग रही हैं! और इनके इस "आबाई हक़" के लिये यहां सदियों से आबाद, इब्राहीम के तरीक़े पर अक़्सा में ख़ुदा की इबादत करने वालों को, मस्जिद ख़ाली करने के नोटिस दिये जा रहे हैं। क्योंकि ज़मीन मुक़द्दस पर "कन्आनियों" का नहीं "औलादे इब्राहीम" का हक़ है!!!"

इसे पढ़ कर मुंदरजा ज़ेल सवाल ज़ह्न में आते हैं।

(1) यह तमाम चक्कर और नस्ली तक़सीम (इस्राईली और ग़ैर इस्राईली) क्या मुआमला है? हम तो इतना ही जानते हैं कि यहूद बस यहूदी होते हैं और वह हमारे हक़ पर क़ाबिज़ हैं और यह दुनिया की अरज़ल तरीन क़ौम है जो अल्लाह के ग़ज़ब की मुंतज़िर है। जैसा

कि अहादीस में है।

(2) इस्राईली और ग़ैर इस्राईली यहूदी का पढ़ कर ज़ह्न में यह आता है कि चूंकि फ़लस्तीन पर अस्ली बनी इस्राईली यहूदी क़ाबिज़ नहीं बल्कि कोई और क़ौम जो बाद में यहूदी बनी, क़ाबिज़ है। यह भी हम जानते हैं कि यहूदी अपने मज़हब की तबलीग़ नहीं करते क्योंकि वह सिर्फ़ यहूदी माल से पैदा होने वाले बच्चे को ही यहूदी मानते हैं कि बज़रीआ तबलीग़ यहूदी होने वाले को। तो वह तमाम अहादीसे नबवी जिन में यहूदियों पर आख़िरी वक़्त में नाज़िल होने वाले ग़ज़ब का ज़िक्र है। इन ग़ैर बनी इस्राईली यहूदियों पर कैसे इनका इत्लाक़ हो सकता है?

(3) इस इक़्तिबास को पढ़ कर यह भी ज़ह्न में आता है कि अस्ली बनी इस्राईल तो ख़ुद महकूम हैं किसी अश्किनाज़ी यहूदियों के। तो वह तो ख़ुद क़ाबिले रहम हैं। चेजाइकि उनको क़ाबिज़ और मग़ज़ूब गर्दाना जाए।

(4) आजकल इंटरनेट पर तमाम बड़ी बड़ी वेब साइट्स पर 21 दिसम्बर 2012 का काउंट डाउन चल रहा है। कोई इसे किसी "जैन मज़हब" में ज़िक्र कर्दा Doom Day कह रहा है। तो बहुत से ईसाई हज़रात इस साल को Rapture का साल कह रहे हैं और कुछ लोग 2012 ई० को 7 सालों के मज्मूए यअ़नी 2012 ई० ता 2019 ई० का आग़ाज़ समझ रहे हैं। वह इन 7 सालों को Jublie Years कहते हैं और उनका अक़ीदा है कि उनका मसीह इन्ही सात सालों में से किसी साल आएगा। क्या इन सब अंदाज़ों का मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर साहब की किताब "दज्जाल" में ज़िक्र कर्दा दानियाल अलै० के बयान के साथ कोई तअ़ल्लुक़ है जिस में "नफ़रत की रियासत" का इख़्तिताम......या......इख़्तिताम का आग़ाज़

2012 ई0 बताया गया है। इसकी रू से हज़रत मेहदी का वक़्त मौऊद भी यही हो सकता है। वाज़ेह रहे कि इस वक़्त यूरप और अमरीका में रोज़मर्रा के इस्तेमाल की अशया 2012 ई0 की प्रिंटिड तारीख़ के साथ फ़रोख़्त के नए रीकार्ड क़ाइम कर रही हैं। वस्सलाम......दानियाल ख़ालिद, पिशावर

जवाबः

(1) हर क़ौम की तरह यहूद में भी नस्ली तबक़ात पाए जाते हैं बल्कि दूसरी क़ौमों की बनिस्बत कुछ ज़्यादा ही पाए जाते हैं। यह दूसरी क़ौमों को तो कमतर समझते हैं। आपस में भी एक दूसरे पर नस्ली तफ़ाख़ुर जताने तमें जाहिलाना तअ़स्सुब का बदतरीन मुज़ाहिरा करते हैं। बहरे कैफ़! इस नस्ली तअ़स्सुब के बावजूद दोनों फ़लस्तीनी मुसलमानों से ज़मीन छीन कर उन्हें अर्ज़े मुक़द्दस से जिला वतन करके उनकी जगह पर ख़ुद आबाद हो रहे हैं और यहां के अस्ली बाशिंदों का क़त्ले आम कर रहे हैं। दोनों दज्जाल को नजात दहिंदा समझ कर उसकी आमद के लिये राह हमवार कर रहे हैं और इसके लिये मस्जिदे अक़्सा के इंहिदाम को ज़रूरी समझते हैं। तमाम जराइम में यह तमाम नस्ली तबक़ात बराबर के शरीक हैं। इसलिये अल्लाह तआला की जो लअ़नत और ग़ज़ब यहूद नामी क़ौम के लिये मख़्सूस है, उसमें इन सब का मुतवाज़िन हिस्सा है।

(2) यहूदी उनको अपने नस्ली तअ़स्सुब की बिना पर अगर्चे यहूदी तसलीम न करें लेकिन अल्लाह तआला के नज़दीक तो हर वह शख़्स जो किसी मग़ज़ूब क़ौम के साथ खड़ा होगा वह भी ग़ज़ब का मुस्तहिक़ होगा। आज यह दर्जा दोम के यहूदी इस्राईली आबादी में इज़ाफ़े का ज़रीआ न बनें और फ़लस्तीनी मुसलमानों की क़ब्ज़ा की हुई ज़मीनें छोड़ दीं तो अस्ल क़ाबिज़ यहूदी चंद दिन भी फ़लस्तीनी

मुजाहिदीन के सामने न ठहर सकें। लअ़नत शुदा क़ौम तक़वियत पहुंचाने वाला भी मलऊन है।

(3) यह लोग अस्ल ग़ासिबों के आलाकार हैं और फ़लस्तीनी मुसलमानों की बार बार तंबीह के बावजूद और उन पर अपनी आंखों से ज़ुल्म होता देखने के बावजूद यह ज़ालिमों की ताक़त में इज़ाफ़े और उनकी मदद से बाज़ नहीं आते। इसलिये जो हुक्म उनके आक़ाओं का है वही उनका भी है।

(4) अस्ली बात यह है कि हर मुसलमान तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा करके अपने आप को दीन की सरबुलंदी के लिये वक़्फ़ कर दे। बाक़ी यह बात कि किस सन में क्या होगा? इसे आलमुल ग़ैब और क़ादिर मुतलक़ पर छोड़ दे। जिन लोगों को इस तारीख़ से दिलचस्पी है, क्या उन्होंने इस तारीख़ को किसी एतिबार से अहमियत देने के बाद और आख़िरत की तैयारी की कोई फ़िक्र की? ज़ाहिर है कि नहीं की। यह हिमाक़त है या अक़्लमंदी? यह शरीअ़त व सुन्नत पर फ़िदाइयत है या फ़ित्ना ज़ुदगी? फ़ित्ने में मुब्तला होने की अलामत यह है कि इंसान ग़ैर मक़्सदी चीज़ों की खोज लगाए और मक़्सदी चीज़ों को सामने होते हुए भी नज़र अंदाज़ किये रखे। अल्लाह तआला हम सब को अक़्ले सलीम और क़ल्बे सलीम अता फ़रमाए। आमीन।

तज़ाद या ग़ल्ती?

मुहतरम मौलवी शेर मुहम्मद साहब

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह

मुफ़्ता अबू लुबाबा शाह मंसूर साहब की तालीफ़ कर्दा किताब "दज्जाल। कौन? कब? कहां?" नज़र से गुज़री। अलहम्दु लिल्लाह! यह कोशिश क़ाबिले क़द्र है। पढ़ कर यह मालूम हुआ कि दुनिया अपनी रंगीनियों के साथ किस तरफ़ जा रही है और हम कहां खड़े हैं? इंशा अल्लाह यह किताब हर पढ़ने वाले को मुतअस्सिर करेगी और अल्लाह तआला, दज्जाल के शर से हमें अपनी पनाह में रखे और ईमान पर ख़ातिमा अता फ़रमाए। आमीन

मुफ़्ती साहब की इत्तिला के लिये अर्ज़ है कि किताब में सफ़्हा नम्बर 87 और 88 पर बादशाह नेबू शा ज़ार के ख़्वाब की तशरीह, जो हज़रत दानियाल अलै० ने फ़रमाई थी का ज़िक्र किया है, इसमें थोड़ा सा तज़ाद नज़र आ रहा है जैसा कि सफ़्हा नम्बर 88 पर है। "क्योंकि दुनिया में ऐसी रियासत नहीं जो 2300 दिनों के बाद क़ाइम हुई और महज़ 45 दिन क़ाइम रहने के बाद ख़त्म हो गई हो।" (1290-1235=45)

यहां जो हिसाब लगाया गया है वह सही नहीं। क्योंकि अगर 1290 से 1235 काट दिये जाएं तो 45 नहीं बल्कि 55 रह जाते हैं। (1290-1235=55)

आगे चलें तो लिखा है: "चुनांचे नफ़रत की रियासत का क़याम 333 क़ब्ल मसीह के 2300 साल बाद होगा। (2300-333) और यह

दज्जाल और गुस्ताख़ा यहूदियों के कुल्ली ख़ातमे पर ख़त्म होगा। फिर बअज़ मुहक़्क़ीन का कहना है कि (1967+45=2012) के फ़ार्मूले से नफ़रत की इस गुनहगाह मम्लिकत का इख़्तिताम या इख़्तिताम के आग़ाज़ का ज़माना 2012 ई0 के आसपास बनता है। यहां पर जो यह फ़ार्मूला लिखा गया है वह ग़लत है क्योंकि मेरे अंदाज़े से जो पचपन साल बनते हैं, अगर वह 1967 ई0 में जमा किये जाएं तो यह 2020 बनता है। (1967+55=2022)

नफ़रत की यह रियासत जून 1967 ई0 में क़ाइम की गई है। अगर इसमें 55 जमा किये जाएं तो यह जून 2022 बनता है। अगर यह इस तारीख़ पर इस्लामी कलैंडर के हिसाब से देखा जाए तो यह तारीख़ कुछ इस तरह बनती है: "ईसवी: 11-06-2022। हिज्री: 10-11-1443।

अगर इस इस्लामी तारीख़ को हदीसे नबवी की रू से देखा जाए तो मुंदरजा ज़ेल बातें सामने आती हैं। जैसा कि एक हदीस में है हज़रत मेहदी की उम्र ज़ुहूर के वक़्त तक़रीबन 40 साल होगी। दूसरी हदीस में है कि अल्लाह तआला हर सदी की शुरूआत में एक मुजद्दिद पैदा फ़रमाते हैं जो इस्लाम की कुव्वत का बाइस बनता है। इन अहादीस से यह दो बातें सामने आती हैं।

(1) हज़रत मेहदी की उम्र 40 साल होगी। (2) मुजद्दिद की पैदाइश सदी की शुरूआत में होनी चाहिये। यह दोनों बातें 2022 में बज़ाहिर पूरी होती नज़र आती हैं न कि 2012 में, क्योंकि 2012 ई0 में हिज्री साल 1433 हि0 बनता है।

इस गुफ़्तगू से इस बात का पता चलता है कि नफ़रत की रियासत इस्राईल के ख़ातमें का आग़ाज़ ठीक 55 साल बाद जून

2022 ई0 में शुरू होगा। इसके बाद अंक़रीब ही हज़रत मेहदी ज़ाहिर होंगे। यहां पर एक और हदीसे मुबारका को बयान करना मुनासिब समझूंगा "तीसरी जंगे अज़ीम और दज्जाल" में सफ़्हा नम्बर 60 पर है। ज़रा मुलाहिज़ा फ़रमाइयेः "वाक़िआत के तरतीब यह है कि आवाज़ रमज़ान में होगी और मअ़रका शव्वाल में होगा और ज़ी क़अ़दा में अरब क़बाइल बग़ावत कर देंगे। रहा मुहर्रम का महीना तो मुहर्रम का इब्तिदाई हिस्सा मेरी उम्मत के लिये आज़माइश है और मुहर्रम का आख़िरी हिस्सा मेरी उम्मत के लिये नजात है।"

अगर आप इस हदीस पर ग़ौर करेंगे तो मालूम होगा कि यहां जो हदीसे मुबारका में पेशगोइयां की गई हैं: (1) आवाज़ रमज़ान में होगी (यह तारीख़ बनती है): 15-09-1443 हि0......(2) मअ़रका शव्वाल में होगा: 10-10-1143 हि0......13-05-2022 ई0

(3) ज़ी क़अदा में अरब क़बाइल बग़ावत करेंगे: 10-11-1143 हि0......11-06-2022 ई0

(4) ज़िल हिज्जा में हाजियों को लूटा जाएगा: 15-12-1443 हि0......16-07-2022 ई0

(5) हज़रत मेहदी का ज़ुहूर: 10-01-1444 हि0......09-08-2022 ई0

(6) जिहाद की शुरूआत: 21-01-1444 हि0......20-08-2022ई0

(7) मुहर्रम का इब्तिदाई हिस्सा मेरी उम्मत के लिये आज़माइश है यअ़नी मुहर्रम की इब्तिदाइ में जब हज़रत मेहदी ज़ाहिर होंगे तो उनकी बैअ़त करना और उनके लशकर में शामिल होना एक बड़ी आज़माइश है।

(8) "इसका आख़िरी हिस्सा मेरी उम्मत के लिये नजात है।"

यअ़नी 21 मुहर्रम को हज़रत मेहदी जिहाद का आग़ाज़ करेंगे अपनी कमान के नीचे। इक्कीस मुहर्रमुल हराम को अगर कैलंडर के हिसाब से देखेंगे तो यह ईसवी तारीख़ 20 अगस्त 2022 बनता है। यहां पर यह बात ग़ौर तलब है कि 20 अगस्त वह तारीख़ है जिस दिन मस्जिदे अक़्सा में आतिश ज़दगी का हौलनाक वाक़िआ पेश आया था।

इस सारी गुफ़्तगू से यह बातें अख़्ज़ होती हैं: (1) नफ़रत की रियासत 55 साल क़ाइम रहेगी। (2) नफ़रत की रियासत जून 1967 ई0 में क़ाइम हुई और पचपन साल बाद जून 2022 मुताबिक़ 5 ज़ी क़अ़दा 1443 हि0 में इसके ख़ातमे का आग़ाज़ होगा। (3) ज़ुहूरे मेहदी, मुहर्रम 1444 ई0 मुताबिक़ अगस्त 2022 ई0 में होगा। (4) हज़रत मेहदी के कमान के नीचे कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ जिहाद की शुरूआत मुहर्रम 21, 1444 हि0 मुताबिक़ 20 अगस्त 2022 को होगी। याद रहे कि 20 अगस्त वह तारीख़ है जिस दिन मस्जिदे अक़्सा को 1969 ई0 में यहूदियों ने नज़्रे आतिश किया था।

हज़रत मुफ़्ती साहब से इल्तिमास है कि किताब में यह तसहीह फ़रमाएं। अल्लाह तआला उन्हें जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाएं। आमीन

वस्सलाम……कलीमुल्लाह मैमन, ख़ैर पूर मीरस

जवाब:

अअ़दाद लिखने में कम्पोज़ की ग़ल्ती की वजह से यह तदाद नज़र आया है। असल में यूं है: 1335-1290। इस सूरत में 45 साल ही बाक़ी बचे हैं न कि पचपन। यह ग़ल्ती सिर्फ़ अअ़दाद लिखने ही में हुई है वर्ना इससे पहले की इबारत देखने से कोई इशकाल बाक़ी नहीं रहता। किताब के नए एडीशन में इस ग़ल्ती की इस्लाह की जा

चुकी। आप का और उन तमाम क़ारईन का शुक्रिया जिन्होंने इस तरफ़ तवज्जो दिलाई। अल्लाह तआला सबको अपनी और अपने हबीब सल्ल0 की सच्ची मुहब्बत नसीब फ़रमाए, अपने और अपनी मर्ज़ियात और नबी अलै0 की हिदायात पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

ऐ खुदा! महफ़ूज़ फ़रमा फ़ित्नए दज्जाल से

इम्तिहां लेना न या रब बंदए बदहाल से
ऐ खुदा! महफ़ूज़ फ़रमा फ़ित्नए दज्जाल से

क्यों न इसके शर से बचने की दुआ करते गुलाम!
जब पनाह आक़ा सल्ल0 ने मांगी फ़ित्नए दज्जाल से

उस बुराई से रहेंगे दह्र में महफ़ूज़ वह
जो मुज़य्यन खुद को फ़रमाएंगे नेक आमाल से

इसलिये सहीवनियों ने की हैं सब तैयारियां
शाद होना चाहते हैं इसके इस्तिक़बाल से

एक मग़ज़ूबे अलैहिम, दूसरा है ज़ाल्लीन
शाद है ईसाइयत सहीवनियत के माल से

आज दुनिया को बनाना चाहते हैं यरग़माल
कल तलक दुनिया में थे जो हर तरफ़ पामाल से

अह्ले हक़ से मस्जिदे अक़्सा की यह फ़रयाद है
अब करें आज़ाद मुझ को क़ब्ज़ए दज्जाल से

गुलशन सरकार सल्ल0 की तज़ईन कीजिये उम्र भर
माल से आमाल से अफ़आल से अक़वाल से

बू लुबाबा के लबालब जाम ने की लब कुशाई
क़ौम को वाक़िफ़ किया दज्जालियत के जाल से
करगसूं की मुर्दा ख़ोरी पर लगेंगी क़दग़नें
इसलिये ख़ाइफ़ हैं वह शाहीन के इक़्बाल से

असर जौनपूरी

☆☆☆